

परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री
सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर
सुविधि-परिवार के द्वारा आयोजित
जिन्नवाणी-महोत्सव

.....
सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19-03-1971

* मुनिदीक्षा-11-05-1989

* आचार्यपद- 20-06-2004

पट्टाधीशपद- 24-12-2010 (20-06-2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:-

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी-जुलाई 2004) (अक्षयज्योति-अक्तूबर 2004)





मूलतान द्विगम्बर जैन समाज इतिहास के आलोक में

लेखक

डॉक्टर कस्तूरचन्द कासलीवाल



प्रकाशक

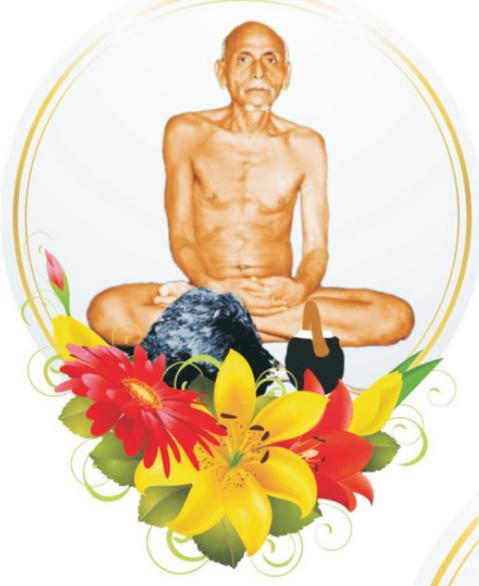
मुलतान दिगम्बर जैन समाज

दिल्ली-जयपुर

(परम्परानायक)



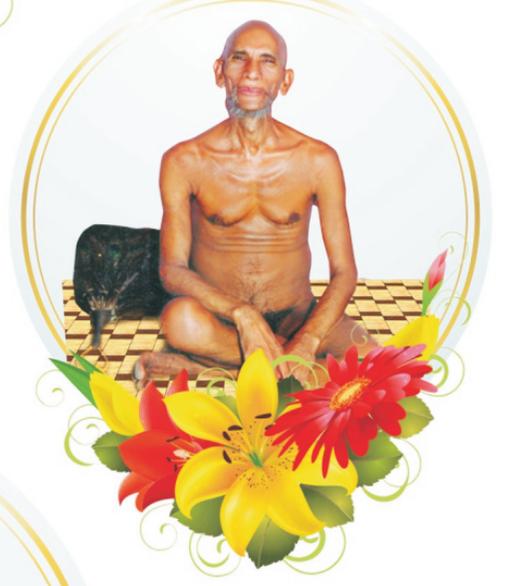
(द्वितीय पट्टाधीश)



परम पूज्य तीर्थभक्त-शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

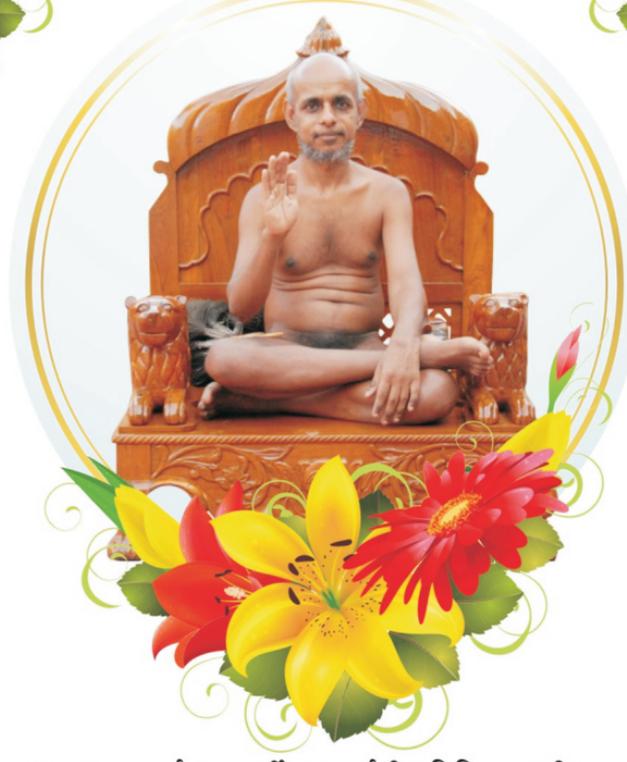
परम पूज्य चारित्र-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(तृतीय पट्टाधीश)



परम पूज्य सिद्धान्त-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)



परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें। मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि-परिवार

मुलतान दिगम्बर जैन समाज इतिहास के आलोक में

लेखक एवं सम्पादक

इतिहास रत्न डॉ० कस्तूरचन्द कासलीवाल
एम० ए०, पी० एच० डी०, शास्त्री

श्री जय कुमार जैन
मंत्री, मुलतान दिगम्बर जैन समाज

प्रकाशक

मुलतान दिगम्बर जैन समाज
दिल्ली - जयपुर

लेखक ँव सडुडलदक

डुँ. कसुतुर कुनुद कलसलीवल

ँड ँ डी ँकु. डी., शलसुतुरी

कुकुडुडलर कुँन

डुतुरी डुलतलन दलगडुडर कुँन सडलक

डुीर नलरुवलण सनुवतु 2506

वलकुरड सनुवतु 2037

वैसलख सुदुी 12 शनलवलर

दलनलंक 26-4-80

डुरकलशक :

शुी डुलतलन दलगडुडर कुँन सडलक

दललुली - ककडुडर

डुदुरक :

ँलर. के. डुरलणुडसुँ

ककडुडर

डुरलणुडल सुथलन :

शुी डुलतलन दलगडुडर कुँन सडलक

शुी दलगडुडर कुँन डनुदलर

ँलदरुशुँ नगर, ककडुडर

प्रतीपत्नी

आदर्श समाज के सदियों से बढ़ते चररा

गुलाबी नगरी जयपुर में आदर्श-नगर स्थित दि० जैन मन्दिर के मुख्य द्वार पर जब मैं आकर रुकी तो ऐसा लगा जैसे किसी चित्रपट गृह में आई हूँ। मन्दिर के बाहर का दृश्य ही बड़ा मोहक एवं आकर्षक है। इस मन्दिर की पावन भूमि का यह तिकोना पथिकों को भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर आव्हान करता हुआ सुशोभित होता है। महावीर-कीर्ति स्तम्भ ने इस तिकोने की शोभा में चार चाद लगाये हैं। बरबस ही दर्शक का मन मन्दिर में प्रवेश पाने को बेचैन हो जाता है। मन्दिर में सफाई ऐसी कि पत्थर चांदनी सा चमकता है, जिसमें मुह देख लो। गर्भगृह में वीतराग प्रभु की अनेक छवियों में चमकता एवं ज्ञाकता परमात्मा का सौम्य रूप सहज ही दर्शक को भीतर तक आप्लावित कर देता है। भक्तजन अनजाने में ही कहने को विवश हो जाते हैं कि मन्दिर बहुत ही सुन्दर बनाया है। जयपुर में आकर जिसने यह मन्दिर नहीं देखा उसने कुछ नहीं देखा। ये सभी मूर्तियां देश विभाजन के समय ई 1947 में वायुयान द्वारा पाकिस्तान स्थित मुलतान एवं डेरागाजी खान से आई हैं। यह सुनकर यात्री आश्चर्यान्वित हो श्रद्धा सहित कह उठता है धन्य है इन लोगों की धार्मिक निष्ठा को।

मन्दिर के साथ स्वाध्याय भवन, सरस्वती भण्डार तथा रोगियों की सक्रिय सेवा के अर्थ महावीर-कल्याण केन्द्र इसकी पूर्णता को प्रदर्शित कर रहा है जिसमें वैद्यरत्न श्री सुशील जी एवं उनके सुशिष्य श्री अशोक जी गोधा निष्ठापूर्वक मानव सेवा करते हैं। सुदूर प्रदेश में शंका के समाधान रूप विद्वद्वर पंडित टोडरमल जी की रहस्यपूर्ण चिट्ठी इस समाज के तत्वप्रेम, आध्यात्मिक जिज्ञासा एवं मानव सेवा के परिचायक है।

यू तो वर्ष के तीन सौ पैंसठ दिन यहाँ सामूहिक पूजन एवं शास्त्र-सभा चलती है। परन्तु दशलक्षण, अष्टान्हिका एवं दीपावली आदि पर्वों के दिनों में जिस सुर-ताल से गाजे-बाजे के साथ सामूहिक पूजन एवं साध्य आरती होती है, उसको सुनकर मूक भी मुखर हो उठता है। वह दृश्य देखते ही बनता है। पर्व के दिनों में सभी लोग एकाशन पूर्वक हरी-पन्जियों का त्याग करते हैं। इस समाज में साधु-भक्ति भी कम नहीं है। साधुओं के आवास की सुन्दर व्यवस्था है तथा लोगों को साधु-सेवा व आहार-दान में बड़ा आनन्द आता है।

मुट्ठी-भर जैन घर से बेघर होकर जयपुर व दिल्ली में आकर बसे। अपने व्यापार को जमाया, घर बनाये और फिर इतने अल्प समय में विशाल मन्दिर का निर्माण वास्तव में ही ढुंकर परन्तु प्रशंसनीय कार्य है। इसलिए कहा है—“धर्मो रक्षति रक्षितः”।

श्री मन्दिर जी के रजन जयन्ती एवं महावीर कीर्ति स्तम्भ की वेदी प्रतिष्ठा समारोह के उपलक्ष्य में “मुल्तान दिगम्बर जैन समाज-इतिहास के आलोक में” पुस्तक का प्रकाशन अति प्रसन्नता का विषय है। इस इतिहास से समाज का ओसवाल होते हुए दिगम्बर होने की प्राचीनता का सम्यक् परिचय मिलता है। इस अवलोकन से काफी प्राचीन तत्व इसके समर्थन में प्रकाश में आये हैं। इनमें से कुछ मुख्य ऐसे हैं—जैसे श्री 1008 भगवान पार्श्वनाथ की सवत् 1481 की मुल्तान दि० जैन मन्दिर की मूलनायक प्रतिविम्ब थी। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि वहा भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा प्रचलित थी। मुल्तान दुर्ग से प्राप्त भगवान पार्श्वनाथ की ही सवत् 1548 वैशाख सुदी 3 की प्रतिष्ठित प्रतिविम्ब इस बात को और पुष्ट करती है। इसके अतिरिक्त सवत् 1565, 1638, 1883, 1 आदि की प्रतिमाये वहा दिगम्बर जैन धर्म की प्राचीनता का प्रमाण है। इस प्रकार सवत् 1745, 1748, 1750, 1778 के हस्तलिखित ग्रन्थों से पता लगता है कि वहा का समाज दिगम्बरत्व में आस्था रखता था। मुल्तान से 60 मील दूर सिन्धु नदी के किनारे ेरागाजीखान में भी दि० जैन समाज इतना ही प्राचीन है। जिसके मन्दिर की मूलनायक प्रतिमा (मूर्ति) सवत् लिखने की पद्धति से भी पूर्व की है। ऐसा प्रतीत होता है कि दिगम्बर साधुओं का मध्यकाल में लोप प्रायः होने से जैन समाज के पारस्परिक सम्बन्ध उतने निकट नहीं रह पाये। परन्तु प० टोडरमल जी की रहस्यपूर्ण चिट्ठों परस्पर तात्त्विक एवं वैचारिक सम्बन्धों को प्रदर्शित करती है।

ब्र. कुमारी कौशल

३.५ जैन और से

मुझे इस पुस्तक के सन्दर्भ में यह कहना है कि इसके सकलन तथा संपादन एवं प्रकाशन में यदि किसी भी प्रकार की कोई त्रुटि रह गई हो तो उसे मेरी अल्पबुद्धि ही मानकर क्षमा करने की कृपा करे। यद्यपि मेरी ओर से यथाशक्ति यही चेष्टा रही है कि समाज से सम्बन्धित उल्लेखनीय विवरण अप्रकाशित न रहे पर फिर भी पूर्वाभ्यास, सीमित बुद्धि, शारीरिक स्वास्थ्य, एवं सन्तोषप्रद मनोनुकूल परिस्थितियाँ नहीं होने से अज्ञान में यदि किसी परिवार परिचय में तथा विशिष्ट जन के विवरण में कोई विशेष वृत्तात का समावेश होने से रह गया हो तो उसकी भूल के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। मेरी ओर से पूरी सतर्कता बरतने में कोई कसर नहीं रखी है फिर भी किसी की दृष्टि में कोई अभिष्ट प्रकरण प्रकाशित होने से रह गया हो अथवा यथास्थान न हो तो क्षम्य समझा जावे।

ओसवाल दि० जैन परिवारों का बाहुल्य प्रायः मुलतान डेरागाजीखान, मुजफ्फरगढ़ आदि (वर्तमान पाकिस्तान) नगरों तक ही सीमित था। यह समाज कब से वहाँ था यह खोज का विषय है किन्तु 15 वीं शताब्दी से अस्तित्व के सकेत अवश्य मिलते हैं, तथा तथ्यों के आधार पर यह भ्रान्ति भी निर्मूल हो जाती है कि यह सब श्वेताम्बर से दिग्गम्वर हुए होंगे।

मुलतान दि० जैन समाज का अब तक कोई क्रमवद्ध इतिहास लिपिबद्ध नहीं था, जबकि यह नितान्त आवश्यक है और इसका अभाव निरन्तर अखर रहा था। इतिहास कालावधि में समाजिक कार्यकलापों का दिग्दर्शन कराता है और स्वरूप बोध कराने में सहायक होने से उपादेयता की दृष्टि से भी आवश्यक होता है। इसी दृष्टि से यह पुस्तक लिखी गई है। इसमें मुलतान प्रदेश को धार्मिक, आर्थिक एवं सामरिक दृष्टि से महत्व वर्धमान नौलखा का पांडित्य, उनकी सुपुत्री कवयित्री अमोलका बाई की कृतियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं। जयपुर से मुलतान में दी गई प्रवर पंडित टोडरमल की महान रहस्यपूर्ण चिट्ठी वर्तमान सिंगवी परिवार के जनक यशस्वी श्री लुणिन्दामल जी की जीवनी का दिग्दर्शन, मुलतान में हुए कवि दौलतराम जी को भी उजागर किया गया है। समाज की प्राचीनता पर तो प्रकाश डाला ही है, गत शताब्दी के कतिपय कुछ महानुभावों की जीवन झाँकियों का भी समावेश किया गया है। भारत विभाजन का कर्ण दृश्य दिल्ली तथा जयपुर बसने का वृत्तान्त एवं आदर्शनगर, जयपुर में बने दि० जैन मन्दिर, महावीर कीर्ति स्तम्भ, महावीर कल्याण केन्द्र एवं सामाजिक गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसके अतिरिक्त विशेष व्यक्तियों एवं समाज के परिवारों का परिचय दिए जाने का प्रयास किया गया है। मुलतान दि० जैन समाज के विषय में भारतवर्षीय दि० जैन विद्वानों के विचार भी उद्धृत किए गये हैं।

16 वर्ष पूर्व पंडित श्री अजितकुमार जी ने श्री न्यामतराम जी को मुलतान दि० जैन समाज का इतिहास लिपिवद्ध कराने की अभिलाषा व्यक्त की थी । किन्तु उनका अचानक दुर्घटनाग्रस्त होकर देहावसान हो जाने से इतिहास लिखवाने वाली बात उन्ही के साथ समाप्त हो गई । किन्तु कार्य होने का समय निश्चित होता है और जैसा होने का होता है वही होता है उसके निमित्त भी वैसे ही बनते हैं । कम से कम इस प्रकरण में तो ऐसा ही हुआ ।

अनायास ही कुछ समय पूर्व दिल्ली में श्री गुमानीचन्द जी से मेरी बात हुई कि एक ऐसी पुस्तक प्रकाशित कराई जाय जिसमें हमारी समाज में प्रचलित पद्धति से पूजाये, स्तोत्र पूर्वजों से चले आ रहे भक्ति, अध्यात्म, उपदेशात्मक प्राचीन गीतों का क्रमबद्ध सकलन हो तथा कुछ अपना इतिहास भी लिखा जाय जिससे भविष्य में समाज पूर्व परम्परागत धर्म साधन कर सके अथवा पूर्वजों के विषय में जानकारी प्राप्त कर सके ।

इस योजना को उपयोगी जानकर इसे मूर्तरूप देने के लिए वहां समाज के कुछ विशिष्ट महानुभावों से सम्पर्क किया गया । आर्थिक सहायता उपलब्ध होने के आश्वासन स्वरूप इस कार्य का शुभारम्भ हुआ ।

जयपुर आकर जब श्री न्यामतराम जी को इसकी जानकारी दी तो वे आनन्द विभोर हो गये और कहा कि मेरा दीर्घकालीन स्वप्न साकार हुआ तथा उन्होंने पंडित श्री अजितकुमार जी की बात दोहराई, समाज की कार्यकारिणी की बैठक आयोजित कर वस्तुस्थिति से अवगत कराया गया जिस पर प्रायः सभी ने प्रसन्नता प्रकट की तथा परिवार परिचय प्रकाशन के रूप में धन राशि की प्राप्ति हेतु प्रस्ताव की भी स्वीकृति प्रदान कर अनुमोदित किया ।

श्री न्यामतराम जी के साथ पुस्तक प्रकाशन की रूपरेखा तैयार किए जाने के सम्बन्ध में जब श्रीमान् डा० हुकुमचन्द भारिल्ल से मिले तो उन्होंने पूजन आदि की पुस्तक नित्य उपयोग में लिए जाने की दृष्टि से इतिहास की पुस्तक का पृथक् प्रकाशन कराये जाने का परामर्श दिया । इतिहास के लिए समाज-सेवी डा० कस्तूरचन्द जी कासलीवाल से सम्पर्क स्थापित किया गया तथा उनसे इतिहास लेखन का कार्य करने की प्रार्थना की गई जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर हमें कृतार्थ कर दिया जिसके लिए समस्त समाज उनका आभारी रहेगा । डा० कासलीवाल जी ने निरन्तर आदर्श-नगर मन्दिर आकर वहाँ रखी हस्तलिखित पाण्डुलिपियों तथा मूर्तियों के प्रगल्भ लेखों से अभीष्ट सामग्री एकत्रित करने में जो अथक परिश्रम किया उसके लिए मुलतान दि० जैन समाज सदैव ऋणी रहेगा ।

मुलतान दि० जैन समाज को आशीर्वाद रूप गुरुजनो, विद्वानो एव श्रीमानो ने शुभ सदेश एव लेख भेजकर जो उपकृत किया है, समाज सदैव उनका आभारी रहेगा ।

इस पुस्तक प्रकाशन की योजना के प्रणेता मुलतान दि० जैन समाज के प्राणी श्री गुमानीचन्द जी दिल्ली वाले विशेष धन्यवाद के पात्र है जिन्होंने न केवल मुझे प्रारम्भ में प्रेरित किया अपितु उनका सहयोग रूढ़ि प्राप्त होता रहा। इसी भांति श्री तोलाराम जी गोलेछा, श्री मनमोहन जी सिगवी, श्री रोशनलाल जी गोलेछा आदि का सराहनीय सहयोग प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जा सकता। जयपुर में श्रद्धेय श्री न्यामतराम जी जिस स्फूर्ति एवं लगन से सभी योजनाओं को हमेशा क्रियान्वित कराने में अग्रणी रहकर प्रेरणाप्रद पथ-प्रदर्शक रहे यह सर्व विदित है उनको समाज कभी भुला नहीं सकता।

श्री बाबूलाल जी सेठी अध्यापक श्री महावीर विद्यालय प्रेस कापी बनवाने एवं श्रीमान् सुरेन्द्रकुमार जी जैन वाचनालयाध्यक्ष श्री दि० जैन महावीर उच्चतर मा० विद्यालय जयपुर ने प्रकाशन में जो अपूर्व सहयोग दिया वे बहुत-बहुत धन्यवाद के पात्र हैं।

जयपुर में इस पुस्तक के प्रकाशनार्थ अर्थ संग्रह कराने में श्री शम्भुकुमार जी, श्री जवाहरलाल जी, श्री शीतलकुमार जी आदि ने जो सहयोग दिया उन सभी को मैं धन्यवाद देता हूँ तथा श्री रामकल्प जी पाण्डेय का पुस्तक प्रकाशन में जो सहयोग रहा वह भी सराहनीय है।

अन्त में मैं समस्त मुलतान दि० जैन समाज दिल्ली, जयपुर को जिन्होंने धनराशि, परिवार परिचय विवरण तथा अन्य सामग्री उपलब्ध कराकर पुस्तक प्रकाशन में सहयोग दिया, हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। क्षमा प्रार्थी।

६. जय शिव

जयकुमार जैन

मंत्री-मुलतान दि० जैन समाज

लेखक...

मुलतान आदि नगरो (वर्तमान पाकिस्तान) से आने के कारण इस समाज का नाम मुलतान दि० जैन समाज पड़ गया है। इसमें डेरागाजी खान आदि से आये समाज का भी इतिहास जुड़ा है।

किसी भी देश, समाज एवं जाति का इतिहास उसके अतीत की घटनाओं का क्रमवद्ध प्रस्तुतीकरण है। उस इतिहास के आधार पर भविष्य का सुन्दर महल खड़ा किया जा सकता है। जिन समाज का जितना उज्ज्वल इतिहास है वह उतना ही गर्वोन्नत होकर चल सकता है। जैनधर्म एवं जैन समाज के इतिहास के अभी तक अधिकांश पृष्ठ धर उधर बिखरे हुए हैं जिनके सफल एवं सुसम्पादन की महती आवश्यकता है। आज समूचा जैन समाज विभिन्न सम्प्रदायो, पथो, जातियो एवं उपजातियो में बटा हुआ है इसलिये एक दूसरे को पहिचानना भी कठिन प्रतीत होता है। खडेलवाल, अग्रवाल, ओसवाल, परवाल, जैसवाल, पल्लीवाल आदि चौरासी जातियो में विभक्त समाज आज कुछ ही जातियो तक सीमित रह गया है और शेष जातियां ही नहीं उनका इतिहास भी अतीत के पृष्ठों में विलुप्त हो चुका है उनके बारे में जानने को न तो हम उत्सुक हैं और न उनके इतिहास को सामग्री ही सहज रूप से उपलब्ध होती है। इसलिये अवशिष्ट जातियो एवं प्रकाशन को यदि कोई योजना बन सके तो हमारी आगे आने वाली पीढी उससे प्रेरणा ले सकेगी।

मुलतान दिगम्बर जैन समाज एक जीवित एवं धर्मनिष्ठ समाज है। गत 500-600 वर्षों से जैन धर्म एवं समाज को अनुप्राणित रखने के लिये उसने अपना महान योगदान दिया है। यह समाज प्रारम्भ से ही दिगम्बर समाज के रूप में रहा है और कभी कम कभी अधिक सख्या में अपना अस्तित्व बनाये रखा है। सन् 1947 में मुलतान से जयपुर में आने के पश्चात् इस समाज ने अपने अस्तित्व को बनाया ही नहीं रखा किन्तु उसको उज्ज्वल बनाने का भी प्रयास किया है। ऐसे समाज के इतिहास को महती आवश्यकता थी जो प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन से बहुत कुछ रूप में पूरी हो सकेगी। जब मुलतान समाज के अध्यक्ष एवं मंत्री मेरे पास आये और उन्होंने महावीर कीर्तिस्तम्भ की वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव एवं मन्दिर के रजत जयंती समारोह के आयोजन के समय मुलतान दि० जैन समाज के इतिहास को लिखने एवं प्रकाशन में सहयोग देने का प्रस्ताव रखा तो मुझे प्रसन्नता हुई और मैंने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया।

लेकिन इतिहास लेखन के लिये सामग्री का उपलब्ध होना आवश्यक है क्योंकि बिना तथ्यों के किसी जाति अथवा समाज का इतिहास लिखा भी कैसे जा सकता है। मुलतान तो अब पाकिस्तान का अंग बन चुका है इसलिये मुलतान समाज का इतिहास किस

आधार पर लिखा जावे। इसके अतिरिक्त मुलतान समाज के बारे में हमारे मन में बड़ी गलत धारणा यह रही कि मुलतान समाज ओसवाल होने के नाते श्वेताम्बर से दिगम्बर धर्म का अनुयायी हुआ होगा। इस गलत धारणा ने समाज को शेष भारत की दिगम्बर समाज से दूर रखा और अलगाव का भाव बनाये रखा। लेकिन मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि मुलतान दिगम्बर जैन समाज गत 500-600 वर्षों से तो पूर्णतः दिगम्बर समाज रहा और इसके पूर्व भी वह इसी रूप में था। इसमें कोई संदेह नहीं है। श्वेताम्बर ओसवाल समाज के गोत्र होने पर भी वह अपने उद्भवकाल से ही दिगम्बर था और फिर दिगम्बर ही रहा इसमें कोई संदेह नहीं है।

मुलतान समाज के इतिहास लेखन में मैंने समाज के शास्त्र भंडार एवं मूर्ति लेखों के सहारे इतिहास के रूप में कुछ तथ्य रखने का प्रयास किया है। मैं उसमें कितना सफल हो सका हूँ यह विद्वानों के निर्णय करने की वस्तु है। फिर भी समाज का इतिहास संक्षिप्त रूप में ही सही प्रस्तुत हो सका है इसीकी मुझे प्रसन्नता है।

अन्त में मुलतान समाज के, अध्यक्ष श्री न्यामतरामजी एवं मंत्री श्री जयकुमारजी जैन का आभारी हूँ जिन्होंने इतिहास लेखन में कितने ही तथ्यों को बतलाकर मुझे पूर्ण रूप से सहयोग दिया है। प्रस्तुत पुस्तक में हमने समाज के परिवारों का परिचय देने का भी प्रयास किया है उसका प्रमुख उद्देश्य यही है कि आज का परिचय ही कल के इतिहास की एक कड़ी होगी।

“इतिहास के आलोक में” पुस्तक के लिये हमने समाज के कुछ विद्वानों के समाज से संबंधित संस्करणों को भी प्रस्तुत पुस्तक में देने का प्रयास किया है। वे सभी इतिहास के ही अंग हैं और भविष्य के लिये महत्वपूर्ण तथ्य हैं। मैं सभी विद्वानों का आभारी हूँ जिन्होंने हमारे निवेदन को स्वीकार करके अपने विचार भेजने का कष्ट किया है।

डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल

अध्यक्ष की कलम से

मुलतान डेरागाजीखान (वर्तमान पाकिस्तान) में दि० जैन प्राचीन काल से रहते चले आ रहे हैं, जिसका इतिहास इस पुस्तक में भली भाँति बताया गया है।

पाकिस्तान बनने के बाद ये सब परिवार भारत आकर जयपुर, दिल्ली, बम्बई आदि में अपनी सुविधानुसार व्यवसाय की दृष्टि से बस गये। धीरे धीरे अपनी शक्ति के अनुसार आवासीय भवन आदि बना लिये। राजस्थान सरकार ने आदर्शनगर बसाया उसमें हम लोगों को प्लॉट भी मिले और मन्दिर के लिए एक भूखण्ड भी आवंटित कराया गया। जब सब लोग अपने को पुनर्स्थापन करने, रोजगार आदि जमाने में लगे थे उसी समय धर्म साधन के लिए मन्दिर निर्माण की भी आवश्यकता उसी तरह आवश्यक समझ रहे थे।

माघ सुदी पंचमी सन् 1954 ई० को श्रीमान् कवरभान जी ने समाज के सहयोग से श्रीमान् पंडित चैनसुखदास जी जिनकी कि हमारे समाज पर विशेष धर्मस्नेह एवं कृपा थी, के सानिध्य में श्रीमान् सेठ गोपीचन्द्र जी ठोलिया के कर-कमलों द्वारा इस मन्दिर का शिलान्यास कराया गया। सर्वप्रथम समाज श्री कवरभान जी का सदैव आभारी रहेगा कि जिन्होंने अथक प्रयत्न से मन्दिर की जमीन ली तथा धर्म साधन का बीजारोपण किया।

मन्दिर का निर्माण कार्य आगे बढ़ा। समस्त मुलतान दि० जैन समाज दिल्ली, जयपुर एवम् बम्बई आदि के महानुभवों ने विपन्न परिस्थितियों में भी अपनी सामर्थ्य से अधिक जो आर्थिक सहयोग दिया उसके लिए मैं उन सबको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।

श्री आसानन्दजी वगवाणी दिल्ली का जीवन पर्यन्त बड़े उत्साह के साथ तन मन धन से मन्दिर निर्माण में सहयोग रहा इसके लिए वह श्री पल्टूसिंह जैन आर्चीटेक्ट को कईबार लेकर जयपुर आये। इसी प्रकार श्री घनश्याम दासजी जब तक जयपुर रहे पूर्ण सहयोग देते रहे। दिल्ली चले जाने पर भी उनका सहयोग कम नहीं हुआ वहाँ बैठे-बैठे भी उन्होंने इस कार्य को पूरा कराने में पूर्ण रुचि ली तथा गुमानी चन्द्रजी, श्री तोलारामजी आदि ने स्वयं तो हर प्रकार का सहयोग दिया ही समाज से भी अर्थ संग्रह के लिए समय-समय पर योजनाएँ बनाकर धन एकत्रित कराया। इस तरह श्रीमान् शिव नाथमल जी, श्री दीवान चन्द्रजी, श्री श्रीनिवासजी, श्री शंकर लालजी आदि समस्त मुलतान दिगम्बर जैन समाज दिल्ली ने इस मन्दिर के निर्माण में सभी प्रकार का तन मन धन से जो सहयोग दिया उन सबको जितना भी धन्यवाद दिया जाय थोड़ा है।

महावीर कीर्ति स्तम्भ के निर्माण में श्री रगूलाल जी वगवांणी एवं श्रीमती विशनी देवी धर्मपत्नी स्व० श्री घनश्याम दास जी सिंगवी तथा उनके पुत्र श्री इन्द्रकुमार, श्री वीर कुमार ने आर्थिक सहयोग देकर जो यह महान कार्य पूरा कराया मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ ।

जयपुर मन्दिर में श्री मोतीराम कवरभानजी ने स्वाध्याय भवन, श्री माधोदास, श्री बलभद्र कुमार ने मुख्य द्वार, श्रीमती पदमो देवी एवं उनके पुत्र श्री शीतल कुमार ने महावीर कल्याण केन्द्र भवन की नीचे की मंजिल बनवाकर एवं श्री रमेश कुमार, श्री बंशीलाल जी ने ऊपर की मंजिल में आर्थिक सहयोग देकर तथा श्रीमती रामो देवी धर्मपत्नी श्री आसानन्दजी सिंगवी एवम् उनके पुत्रों ने अतिथि गृह, अपने ससुर श्री आसानन्दजी सिंगवी की स्मृति में श्री महेंद्र कुमारजी ने मन्दिर भवन के आगे चौक का फर्श बनवाकर जो सराहनीय कार्य किये वह अद्वितीय है । तथा समस्त मुलतान दिगम्बर जैन समाज जयपुर के सभी महानुभावों ने मन्दिर निर्माण के दायित्व को तन मन धन से सहयोग देकर बड़ी कुशलता दृढता एवं उदारता के साथ पूर्ण किया । समाज का अध्यक्ष होने के नाते मैं अपना कर्तव्य मानता हूँ कि उन सभी महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद दूँ । जिन्होंने इसको पूर्ण कराने में सहयोग दिया है ।

इस विशाल भव्य एवं सुन्दर मन्दिर को मूर्तरूप दिया मंत्री, श्री जयकुमारजी ने अपने जीवन के बहुमूल्य समय के 25 वर्ष देकर और साथ दिया श्री बलभद्रकुमारजी ने मन्दिर आदि के निर्माण कार्य को पूरा कराने में । मैं तो क्या समस्त मुलतान दि० जैन समाज उन दोनों की जितनी प्रशंसा करे थोड़ी है । जिसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं और समाज उनका सदैव आभारी रहेगा ।

जैसे ही मन्दिर निर्माण का कार्य पूरा होने को आया मुझे याद आई उस पत्र की जो आज से करीब 16 वर्ष पूर्व पंडित श्री अजितकुमार जी ने दिनांक 1-4-64 ई० को मुझे लिखा था कि "मुलतान के ओसवाल दि० जैन समाज का कोई लिपिबद्ध इतिहास नहीं है मेरी इच्छा है कि वह अवश्य लिखा जाना चाहिए । अगर आप तैयार हों तो मैं उसे लिखना चाहता हूँ जिसमें पूर्ण इतिहास एवं परिवारों की फोटू सहित जानकारी दी जावे ।" जिसकी याद मेरे मन में बार-बार उठती थी किन्तु मन्दिर निर्माण के कठिन कार्य को देखते हुए अन्दर ही अन्दर रह जाती थी ।

वज्रपात पड़ा उस दिन जब अचानक सुना कि पंडित जी का महावीर जी में दुर्घटना से देहावसान हो गया, इच्छा कुछ मर सी गई कि अब यह काम शायद कभी न पूरा हो पायेगा ।

अनायास एक दिन मंत्री श्री जयकुमार जी ने मुझसे आकर यह कहा कि मेरे विचार से एक ऐसी पुस्तक प्रकाशित कराई जाय जिसमें हमारी समाज में प्रचलित पूजाएं, भक्ति, आध्यात्मिक एवं उपदेशक गीत आदि हो तथा उसमें समाज का इतिहास भी हो ।

इसके लिए दिल्ली में श्री गुमानीचन्द जी से बात हुई थी जिसे उन्होंने बहुत पसन्द किया तथा मेरे साथ चलकर कुछ लोगों से आर्थिक सहयोग देने का वचन भी ले लिया ।

सुनते ही मुझे अन्दर से कुछ ऐसी खुशी की अनुभूति हुई कि जिस कार्य को मैं अब असम्भव मान बैठा था उसके होने की कुछ किरण दिखाई देती है, सगहना की और साथ देने का निर्णय लिया इस काम को पूरा करने का ।

इतिहास का प्रारूप तैयार करने के लिए डा० श्री कस्तूरचन्द जी कासलीवाल के पास गये उन्होंने कार्य को करने की सहर्ष स्वीकृति दी—कार्य प्रारम्भ हुआ ।

पूजा पाठ सग्रह की पुस्तक समाज के सामने आ चुकी है । इतिहास आपके सामने है । श्री कासलीवाल जी ने तीन महीने तक जयकुमार जी को साथ बिठाकर मुलतान से आये लिखित शास्त्रभण्डार तथा वहाँ से आई मूर्तियों के लेखों में जो सामग्री प्राप्त की है उस आधार पर कठिन परिश्रम से यह इतिहास का ग्रन्थ तैयार किया गया है । यह हमारी समाज के लिए एक अद्वितीय कार्य हुआ है । इसका लाभ सैकड़ों वर्षों तक समाज को मिलता रहेगा । मैं डा० श्री कस्तूरचन्द जी कासलीवाल का बहुत-बहुत आभारी हूँ तथा उन्हें कोटिश धन्यवाद देता हूँ एवं इसमें अन्य उन सभी महानुभावों को जिन्होंने दिल्ली जयपुर में अर्थ सग्रह एवं सामग्री एकत्रित करने में सहयोग दिया, उन सबका भी मैं बहुत-बहुत आभारी हूँ ।

—
न्यायनराय

अध्यक्ष

मुलतान दि० जैन समाज

श्री मुलतान दि० जैन समाज
की
कार्यकारिणी के सदस्य

श्रीमान् न्यामतराम जी	अध्यक्ष
„ अर्जुनलाल जी	उपाध्यक्ष
„ जयकुमार जी	मंत्री
„ ईश्वरचन्द जी	कोषाध्यक्ष
„ बलभद्रकुमार जी	संगठन मंत्री
„ गिरधारी लाल जी	सदस्य
„ जयकुमार जी (रगवाले)	„
„ ज्ञानचन्द जी	„
„ भागचन्द जी	„
„ महेन्द्रकुमार जी	„
„ नथमल सोगानी	„

पंथानुसंधानिका

1: इतिहास खण्ड	1 से
भगवान महावीर के पश्चात्	1
पंजाब मे जैन धर्म	2
मुलतान प्रदेश	4
वर्धमान नौलखा	7
अमोलका वाई	11
पंडित प्रवर श्री टोडरमलजी	24
रहस्यपूर्ण चिट्ठी	25
लुणिन्दामल एवं उनकी वंशावली	33
कवि दौलतराम ओसवाल	36
संवत् 1901 से 2004 तक (भारत विभाजन)	39
कल्याणी वाई	42
बीसवी शताब्दि के कुछ विशिष्ट महानुभाव	43
पंडित अजित कुमारजी शास्त्री	50
मुलतान का दिगम्बर जैन मन्दिर	53
मुलतान छावनी	60
स्वतन्त्रता वर्ष 1947	61
डैरागाजीखान	64
जयपुर मे मुलतान दिगम्बर जैन समाज	76
भगवान महावीर 2500वां निर्वाण महोत्सव	76
महावीर कीर्तिस्तम्भ	76
महावीर कल्याण केन्द्र	77

(ii)

पंडित चैन सुखदासजी एवं मुलतान दिगम्बर जैन समाज के सदस्यों की आदर्शनगर मन्दिर मे मुनि विद्यानन्दजी से प्रथम भेट	79
महावीर कल्याण केन्द्र औषधालय	82
महावीर जीव कल्याण समिति	85
दिल्ली मे मुलतान दिगम्बर जैन समाज	86
2. श्री मुलतान दिगम्बर जैन समाज	
भारत वर्षीय दिगम्बर जैनविद्वानो की दृष्टि में	88
3. व्यक्ति परिचय	101
4. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्श नगर का रजत जयन्ती समारोह	108
5. परिवार परिचय	109
श्री मुलतान दिगम्बर जैन समाज जयपुर	
6. परिवार परिचय	165
श्री मुलतान दिगम्बर जैन समाज दिल्ली	

ଶ୍ରୀମତୀ-ଝି ଝଠଝ

हाय प्रभो

मुलतान दिगम्बर जैन समाज— इतिहास के आलोक में

विश्व के प्राचीनतम धर्मों में जैन धर्म का विशेष स्थान है। इतिहासातीत काल से इस धर्म ने विश्व की सभी संस्कृतियों को प्रभावित किया है और अपने उदार सिद्धान्तों एवं परम्पराओं के आधार पर उनके विकास में योगदान दिया है। इसी अवसर्पिणी काल में इस धर्म में 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती सम्राट्, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण, 9 बलभद्र एवं हजारों पुण्य-पुरुष हुए हैं जिन्होंने देशवासियों को जीने की कला सिखायी, बुराईयों, गलत परम्पराओं एवं अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना सिखाया तथा जाति-भेद एवं वर्ग-भेद समाप्त कर प्राणी मात्र से प्रेम करने का मार्ग बतलाया। इन्हीं कारणों से जैन धर्म देश के सभी भागों में समान रूप से “जन-धर्म” के रूप में लोकप्रिय बना रहा। इसके प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने देशवासियों को विज्ञान युग में प्रवेश करना सिखलाया तथा अग्नि, मृत्ति, कृषि, वाणिज्य, विद्या एवं शिल्प का ज्ञान देकर उन्हें स्वावलम्बी बनना सिखाया। यही नहीं भगवान् ऋषभदेव का सम्पूर्ण जीवन ही भारतीय भावनाओं का जनक बन गया। यही कारण है कि वे प्रथम तीर्थंकर के रूप में ही पूज्य नहीं, अपितु वैदिक मन्त्रों में तथा पुराण एवं भागवत में आठवें अवतार के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। ऋषभदेव के पश्चात् इस देश में 23 तीर्थंकर और हुए, जिनमें तीर्थंकर नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर की ऐतिहासिकता में किसी को सन्देह नहीं है। भगवान् पार्श्वनाथ का निर्वाण महावीर के 250 वर्ष पूर्व हुआ था। पार्श्वनाथ के समय अन्धविश्वासों का जोर था। पंचाग्नि तप तथा कमठ का उपसर्ग इस बात का द्योतक है। भगवान् पार्श्वनाथ ने इनका घोर विरोध किया और आध्यात्म का प्रचार किया। भगवान् महावीर के युग में हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा था। उसके विरुद्ध उन्होंने आवाज उठायी और अहिंसा धर्म की श्रेष्ठता की स्थापना की। साथ ही सह-अस्तित्व का पाठ पढ़ाकर सब धर्मों से प्रेम करना सिखलाया तथा अपरिग्रहवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन कर वर्ग भेद की लड़ाई को कम करने का प्रयास किया। उन्होंने सृष्टि कर्तृत्ववाद समाप्त कर पुरुषार्थ का पाठ पढ़ाया और प्रत्येक प्राणी के लिए परमात्मा बन सकने की घोषणा की। इस प्रकार तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित जैन धर्म इस देश में हजारों वर्षों से गंगा और यमुना की तरह देश की संस्कृति में घुला हुआ है और अपने पावन सदेशों से यहाँ के निवासियों के जीवन को समुज्ज्वल बनाने की दिशा में अग्रसर है।

भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात्

भगवान् महावीर के परिनिर्वाण के समय से जैन धर्म उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम की ओर फैल गया। उत्तर में पंजाब एवं सीमा-प्रान्त तक इस धर्म के मुनि, उपाध्याय

और आचार्य विना किसी प्रकार की बाधा के बिहार करते थे तथा जन-जन को अहिंसा और विश्व-मैत्री का पाठ पढाते थे। दक्षिण में अनेक राजाओं ने जैनधर्म स्वीकार कर उसके प्रचार-प्रसार में योग दिया। इसी तरह महाराजा खारवेल एवं सम्राट चन्द्रगुप्त जैसे और भी अनेक शासक हुए जिन्होंने अपने शासनकाल में इस धर्म को चलाया एवं उसका विस्तार किया।

जैन धर्म भारत तक ही सीमित नहीं रहा अपितु भारत से बाहर विदेशों में भी इसका अच्छा प्रचार हुआ। अफगानिस्तान में जैन मन्दिर तथा जैनधर्म को मानने वाले थे, इस बात की पुष्टि कितने ही ऐतिहासिक तथ्यों से मिलती है। इसी तरह मिश्र, ईरान, लका, नेपाल, भूटान एवं तिब्बत और बर्मा आदि देशों में भी जैनधर्म का प्रचार था। यह इन देशों में समय-समय पर प्राप्त मूर्तियों एवं अन्य सामग्री के आधार पर कहा जा सकता है।

पंजाब भारतीय सस्कृति का प्रमुख केन्द्र माना जाता है। वैदिक आर्यों के भारत आने से पूर्व यहाँ जो सस्कृति विद्यमान थी वह श्रमण सस्कृति थी और उसका भी पहिले पंजाब में प्रमुख स्थान था। सभी इतिहासकारों का विश्वास है कि ऋग्वेद की रचना भी इसी प्रदेश में हुई थी। इसलिए इस प्रदेश में श्रमण-सस्कृति और वैदिक-सस्कृति साथ-साथ पल्लवित होती रही। लेकिन अग्नेयों के पूर्व जितने भी आक्रमणकारी आये उन्होंने सिन्ध और पंजाब की सस्कृति को सबसे अधिक हानि पहुँचायी और इसे विकसित होने का अवसर नहीं दिया। इसलिए जब कभी इस प्रदेश में खुदाई होती है तो प्राचीनतम सस्कृति के नये-नये तथ्य सामने आते हैं।

पंजाब में जैन धर्म

मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की खुदाई से भारतीय सस्कृति बहुत प्राचीन सिद्ध हो चुकी है। उक्त दोनों स्थान वर्तमान सिन्ध प्रदेश के लरकाना जिले में तथा पंजाब के मोन्टगुमरी नामक स्थान के समीप स्थित हैं। उस समय इस प्रदेश का नाम पंजाब नहीं था किन्तु पंजाब प्रदेश विभिन्न प्रदेशों के नाम से विख्यात था। अकबर के शासन काल में लाहौर, मुलतान, सरहिन्द एवं भटिण्डा ये चार प्रान्त थे। बाद में अकबर ने और भी स्थानों पर विजय प्राप्त करली। इसलिये ऐसा मालूम पड़ता है कि पंजाब शब्द मुस्लिम बादशाहों का दिया हुआ है क्योंकि इस प्रदेश में सतलुज, व्यास, रावी, चिनाव एवं झेलम ये पाँच नदियाँ हैं। पंजाब शब्द फारसी एवं उर्दू भाषा में पंज + आव इन दो शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ होता है पाँच नदियों वाला प्रदेश। लेकिन प्राचीन साहित्य में इस प्रदेश का नाम "वाहिक प्रदेश" था जिसका उल्लेख महाभारत में किया गया है।¹ भगवान महावीर के परम भक्त राजा श्रेणिक को वाहिक वासी कहा गया है। राजा श्रेणिक गिणुनाग वंशी था। ईसा से 642 वर्ष पूर्व गिणुनाग ने इस वंश की स्थापना की थी और श्रेणिक इस वंश का पाँचवाँ राजा था। इसके पूर्वज पंजाब से मगध में कब वस गये थे यह अभी खोज का विषय है। इसके अतिरिक्त सिन्ध, विलोचिस्तान, कच्छ, उत्तरी-पश्चिमी-सीमान्त प्रान्त एवं अफगानिस्तान आदि प्रदेशों में चन्हु-दड़ो, लोहुजदड़ो, कोहीरो, नम्री, नाल, अलीमुराद सक्कर-जो-दड़ो, काहु जो-दड़ो आदि विभिन्न स्थानों पर जो खुदाई हुई है, जिसके आधार पर भारतीय सस्कृति की विपुल सामग्री प्राप्त हुई है। पुरातत्वविज्ञान ने इस सभ्यता की सिन्धु

1 पञ्चानां सिन्धु षोडशानां नदीनां ये अन्तराश्रिताः वाहिकानाम देश —

महाभारत अ० 44 श्लोक 7

घाटी की सभ्यता नाम दिया। मोहनजोदड़ो से प्राप्त मिट्टी की सीलो (मुद्राओं) पर एक तरफ खड़े आकार में भगवान ऋषभदेव की कायोत्सर्ग मुद्रा में मूर्ति बनी हुई है तथा दूसरी तरफ बैल का चित्र बना हुआ है। इसी तरह हडप्पा की खदाई में कुछ खण्डित मूर्तियां प्राप्त हुई हैं जिसके आधार पर विद्वानों ने लिखा है कि ये हडप्पा काल की जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां जैन धर्म में वर्णित कायोत्सर्ग मुद्रा की ही प्रतीक हैं। इसी तरह सिंहपुर में भी जो खदाई हुई थी इसमें भी बहुत सी “जैन मूर्तियों” “जैन मन्दिरों” एवं स्तूपों के अवशेष प्राप्त हुए हैं जो आजकल लाहौर के म्यूजियम में सुरक्षित हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पंजाब में वैदिक आर्यों के आने से पूर्व प्राग्वैदिक काल से अर्थात् भगवान ऋषभदेव के समय से लेकर आज तक पंजाब में जैन धर्म विद्यमान है। हाँ, यह अवश्य है कि कभी वह सर्वोच्च स्थान पर रहा तो कभी उसने अपना क्षीण रूप भी देखा।

पंजाब में विक्रम की 11वीं शताब्दि से 15वीं शताब्दि तक तथा महमूद गजनवी से बादशाह सिकन्दर लोदी तक जितने भी मुसलमान शासक हुए उन्होंने हिन्दू, जैन एवं बौद्ध सम्प्रदायों के मन्दिर एवं शास्त्रों को बुरी तरह नष्ट किया तथा मन्दिरों की बहुमूल्य सम्पत्ति लूट कर अपने यहाँ ले गये। यहाँ की अधिवाश प्रजा को मौत के घाट उतार दिया गया तथा अवशिष्ट को मुसलमान बना लिया गया। आज भी काबुल के मुसलमानों में एक ओसवाल भावडा पठान नाम की जाति है जो यह नहीं जानती है कि उसके पूर्वज कभी जैन थे।¹

पाकिस्तान बनने से पूर्व रावलपिण्डी-छावनी, स्यालकोट-छावनी, लाहौर छावनी, लाहौर नगर फिरोजपुर, फिरोजपुर छावनी, अम्बाला एवं अम्बाला छावनी, मुल्तान, डेरागाजीखान आदि नगरों में दिगम्बर जैनों के घर एवं मन्दिर थे। इन जैनों में ओसवाल, खण्डेलवाल एवं अग्रवाल जातियां प्रमुख थीं दिगम्बर एवं श्वेताम्बर जैन ओसवालों को ‘भावड़ा’ कहा जाता था तथा खण्डेलवाल एवं अग्रवाल जाति वाले श्रावक, अथवा वनिये कहलाते थे। पंजाब-प्रदेश में मुस्लिम शासन-काल में भट्टारक जिनचन्द्र भट्टारक-प्रभाचन्द्र एवं भट्टारक-शुभचन्द्र ने अवश्य विहार किया था तथा वहाँ दिगम्बर जैन धर्म का प्रचार किया था। इसके अतिरिक्त सन् 1577 (सन् 1520) में काष्ठासधी एवं माथुरान्वयी भट्टारक गुणभद्रसूरी से सोनीपत में ‘अमरसेन चरित्र’ की साधु छल्लह एवं उसकी पत्नी कर्मचन्दही अग्रवाल जैन ने प्रतिलिपि बनवायी थी। ‘अमरसेन चरित्र’ में सिकन्दर लोदी का उल्लेख किया गया है और रोहतक नगर के श्रावकों की प्रशंसा की गयी है।²

इसी तरह सन् 1723 में लाहौर में खडगसेन कवि ने त्रिलोकदर्पण कथा की रचना की थी ऐसा उल्लेख ग्रन्थ प्रशस्ति में मिलता है। लाभपुर (लाहौर) में एक दिगम्बर जैन मन्दिर था वही बैठकर वे धार्मिक चर्चा किया करते थे। उनकी सैली थी जिसके

1. मध्य एशिया एवं पंजाब में जैनधर्म, पृष्ठ सं० 146

2. प्रशस्ति संग्रह डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, पृष्ठ 80

पंडित हीरानन्द, जगजीवन सिंघवी, रत्नपाल, अनूपराम, दामोदर, माधोदास, हीरानन्द द्वितीय, तिलोकचन्द, विशनदास, प्रतापमल्ल मोहनदास, हृदयराम एवं त्रिलोकचन्द सक्रिय सदस्य थे तथा सभी शास्त्र-स्वाध्याय एवं धार्मिक चर्चा करते थे।¹ उस समय देश में गाहजहा का शासन था और चारो ओर सुख शान्ति थी। उस सैली में खण्डेलवाल, अग्रवाल एवं दिगम्बर ओसवाल तीनों ही जातियों के श्रावक थे। पंडित खड्गसेन खण्डेलवाल जाति के श्रावक थे तथा पापडीवाल उनका गोत्र था।

पजाव के अन्य नगरों में भी ग्रन्थों की रचना हुई तथा कितने ही ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ की गईं जो आज भी राजस्थान, देहली, पंजाव एवं हरियाणा प्रदेश के शास्त्र भण्डारों में संप्रहीत हैं और अपने को प्रकाशित देखने की प्रतीक्षा में हैं।

मुल्तान प्रदेश

मुल्तान का प्राचीन नाम मूलस्थानपुर था। महाभारत रामायण एवं अन्य प्राचीन ग्रन्थों में इनका 'मालव' के नाम से उल्लेख किया गया है तथा बादशाह सिकन्दर के इतिहास लेखकों ने इसे "मल्लियों की भूमि" लिखा है। जैन ग्रन्थों में इसको 'मूलत्राण' के नाम से सम्बोधित किया गया है। पुराणों के अनुसार नरसिंहावतार इसी नगर में हुआ था जिसने प्रह्लाद के पिता हिरण्यकश्यप को मारा था। यहाँ के पुराने किले में भारत विभाजन के पूर्व नरसिंहदेव का मन्दिर था जिसे प्रह्लादपुरी कहा जाता था। मुल्तान में 50 मील दूर 'सुलीमान पर्वत' का एक भाग है। कहते हैं वही से प्रह्लाद को नीचे फेंक दिया गया था। मुल्तान से 4 मील दक्षिण में एक कुण्ड है जिसे श्रीकृष्णजी के पुत्र साम्ब ने बनवाया था। जिसे देवताओं का वरदान प्राप्त था तथा जिसके जल से कोढ़ की बीमारी दूर होती थी। इस कुण्ड का नाम सूरजकुण्ड है जो तीर्थ के रूप में पूजित था। ह्वेनसांग जब मुल्तान गया था तो वहाँ एक सूर्य मन्दिर था जिसमें उसने भगवान की सोने की प्रतिमा के दर्शन किये थे। वह प्रतिमा बहुमूल्य पदार्थों से निर्मित थी। उसमें अलौकिक शक्ति थी तथा उसके गुण दूर-दूर तक फैल गये थे। वहाँ पर स्त्रियाँ निरन्तर वारी-वारी से गायी-बजाया करती थीं। समस्त

1. पंडित हीरानन्द प्रवीण, चौदह विद्या में लवलीन।
संघवी जगजीवन गुणखाण, सकल शास्त्र मय अरथ सुजाण
रत्नपाल ज्ञाता बुधवत, हिरदे ज्ञान कला गणवंत।
अनुपराय अनूपम रूप, बाल पणो जिम मोहे भूप।
दामोदर दंसण गुण लीन, माधोदास मधुर प्रवीण।
हीरानन्द हिरदे परगास, तिलोकचन्द तहां ज्ञान विलास।
विषणदास बुद्धि तीक्षण सरी, प्रतापमल्ल पूरण मतिधरी।
मोहनदास महागुणलीन, हसरज जि हिरदे प्रवीन।
कुन्दन कनक नारायणदास, ज्ञान कला आगम परकास।
पांडे हिरदे पूजा करे, हिरदे हरष सेव चित धरे
हृदय राम भो जग हितकार, सेवा करै सुजिन गुणधार।
ए सब ज्ञाता अतिगुणवंत, जिन गुण मुणै महाविकसंत।
सब श्रावक अति ही गुणवत, सुणै ग्रन्थ पावै विरतंत ॥

—त्रिलोक दर्पण प्रशस्ति

भारत के राजा महाराजा वहा जाते और मूर्ति पर बहुमूल्य पदार्थ चढाते थे । इस मन्दिर मे हर समय विभिन्न देशो के लगभग एक हजार यात्री प्रार्थना के लिए मौजूद रहते थे । जैन मत्री वस्तुपाल एव तेजपाल ने विक्रम की 13वीं शताब्दी मे इस सूर्य मन्दिर का स्वद्रव्य से जीर्णोद्धार करवाया था । तब भी इसका नाम 'मूलत्त्राण' ही लिखा मिलता है । 5वीं शताब्दी के उपलब्ध सिक्कों मे सूर्य की प्रतिमा मिलती है तथा उसे परसिमन राजा की वेशभूषा मे चित्रित किया गया है तथा पुरोहितों को जो मूलतान के इस मन्दिर मे सूर्य की पूजा करते थे, बतलाया गया है ।¹ भविष्य पुराण के अनुसार इन पुरोहितों को शक द्वीप से लाया गया था । 'मूलस्थान' नाम साम्बपुराण, भविष्य-पुराण, बराहपुराण एव स्कन्दगुप्त में भी मिलता है । मुलतान का पुराना नगर रावी नदी के किनारे बसा हुआ था तथा वर्तमान मुलतान घिनाब नदी के समीप स्थित नगर है ।

उद्योतन सूरि की कुवलयमाला में 'मूलस्थान' भट्टारक' का उल्लेख है तथा उसे सूर्य उपासना के केन्द्र का स्थान बताया है । मथुरा के 'अनाथ-मण्डल' में कोढियो का जमघट था । उसमे चर्चा चल रही थी कि कोढ रोग नष्ट होने का क्या उपाय है ? एक कोढी ने कहा था "मूलस्थान भट्टारक-लोक मे कोढ के देव है, जो उसे नष्ट कर देते है" ।² मूलस्थान का यह सूर्य मन्दिर राजस्थान में प्रसिद्ध था । प्रतिहारो ने मुलतान पर जब कब्जा करना चाहा तो अरब के शासको ने धमकी दी सूर्य मन्दिर को नष्ट कर दिया जायेगा जिससे प्रतिहारो को पीछे लौटना पडा । क्योंकि वे सूर्य के उपासक थे । इस मन्दिर का अलबरूनी को भी पता था । उसका 17वीं शताब्दी तक अस्तित्व रहा बाद में औरगजेब ने इसे पूरी तरह नष्ट कर दिया । इस सूर्य मन्दिर के बाद भारत मे अनेक सूर्य मन्दिरों का निर्माण कराया गया ।³ जयपुर में गलता की पहाडी के सूर्य मन्दिर को दीवान झूथाराम ने निर्माण करवाया था । झूथागम दिगम्बर जैन धर्म का अनुयायी था ।

मुलतान अत्यधिक प्राचीन नगर है । सिकन्दर द्वारा अधिकृत भारत के क्षेत्रों मे इसका भी नाम था । इसके पश्चात प्रायः सभी मुस्लिम शासको को मुलतान के लिए लडाई लडनी पडी । सन् 1527 मे बाबर ने इसे मुगल साम्राज्य के अन्तर्गत कर लिया ओर सन् 1619 (सन् 1562) मे अकबर ने इस पर पुनः कब्जा कर इसे एक सूबा बना दिया । इसमे मोन्टगुमरी से लेकर सक्कर तक का प्रदेश सम्मिलित था । सन् 1868 मे सिक्खराजा रणजीतसिंह ने इसे अपने अधिकार मे कर लिया । इसके पश्चात् गुजरावाला के दीवान सावनमल को इसका हाकिम बना दिया गया । इसके पहले सुखदयालसिंह को भी वहा का हाकिम बना कर भेजा गया था । इन दोनों के सुप्रबन्ध से मुलतान की अच्छी उन्नति हुई । रणजीतसिंह ने डैरा-गाजीखान को भी सूबा मुलतान मे सम्मिलित कर लिया था । सावनमल के पश्चात् उसका लडका मूलराज हाकिम बना । लेकिन अंग्रेजो ने मुलतान पर अधिकार कर मूलराज को कैद कर लिया और उसे कलकत्ता भेज दिया जहा उसकी हत्या कर

1. दी जोगराफीकल डिक्शेनरी आफ एनसियन्ट एण्ड मिडाइविल इंडिया पेज-132
2. मूलत्त्राणु भंडारउ कोढइं जे देइ उद्दालइज्जे लोयहुं कुवलयमाला 55.16
3. कुवलय माला का सांस्कृतिक अध्ययन · डा० प्रेमसुमन जैन, पृ० 391

दी गई तथा 1848 से 1947 तक यह ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत रहा और सन 1947 में देश के विभाजन के बाद यह पाकिस्तान का अंग बन गया ।

मुलतान नगर प्राचीन काल से ही जैन धर्म का केन्द्र रहा है । जैन ग्रन्थों में इसे मूलत्तान एव मूलचन्द्र के नाम से भी सम्बोधित किया गया है । भगवान ऋषभदेव के समय से ही मुलतान होकर पजाब एव सीमान्त के अन्य नगरों में जैन सन्त धर्म प्रचार करते रहे । जब भगवान ऋषभदेव ने दीक्षा धारण की तो उन्होंने अयोध्या के पट्ट पर भरत का राज्याभिषेक किया और बाहुवलि को पोदनपुर-तक्षशिला के पट्ट पर विठलाया । पोदनपुर गान्धार प्रदेश की राजधानी थी । इसलिए ऋषभदेव मुलतान होकर पोदनपुर गये होंगे तथा वहाँ बाहुवलि का राज्याभिषेक किया होगा । भगवान ऋषभदेव की स्मृति में बाहुवलि ने उनके चरण स्थापित किये थे ।¹ आदिपुराण में सौवीर जनपद का उल्लेख आता है । डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ने सिन्धु प्रान्त या सिन्धु नगर के निचले कोठे का पुराना नाम सौवीर माना है ।² इसकी राजधानी रोद्रव वर्तमान रोडी मानी जाती है । पाणिनी ने सौवीर देश का निर्देश किया है । मुलतान सौवीर जनपद में था ।³ बाहुवलि के पश्चात् गान्धार प्रदेश भरत के साम्राज्य का अंग बन गया ।

भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् इस प्रदेश में दिगम्बर जैन मुनियों का बराबर विहार होता रहा । जब सिकन्दर बादशाह तक्षशिला में गया था तो वहाँ उसने कितने ही जैन मुनियों को देखा था तथा एक कालानस नामक दिगम्बर मुनि को अपने साथ ले गया था इससे यह स्पष्ट है कि वहाँ दिगम्बर मुनियों का विहार होता रहता था । सम्राट् चन्द्रगुप्त, अशोक एव हर्षवर्धन के समय तक जैन मुनियों के विहार में कोई बाधा नहीं पड़ी, लेकिन मुस्लिम आक्रमणों के पश्चात् लाहौर से आगे दिगम्बर जैन मुनियों का विहार नहीं हो सका ।

मुलतान नगर कई बार उजडा और कई बार बसा । इसलिए इसमें प्राचीनता की दृष्टि से कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं मिलती । बार बार होने वाले मुसलमानों के बर्बर आक्रमणों से वहाँ न कोई मन्दिर बचा और न शास्त्र भण्डार सुरक्षित रह सका । प्रारम्भ में अकबर को भी मुलतान पर अधिकार बनाये रखने के लिये कितने ही युद्ध करने पड़े इसलिये अकबर के पूर्व की जैन सस्कृति के चिन्ह पट बहुत कम रह सके ।

मुलतान नगर उत्तरी पजाब में दिगम्बर जैन सस्कृति का महान केन्द्र था । यहाँ का ओसवाल समाज प्रारम्भ से ही दिगम्बर धर्मानुयायी रहा । ऐसा मालुम पडता है कि ओसिया से जब ओसवाल जाति देश के विभिन्न भागों में कमाने के लिए निकली और पजाब की ओर बसने को आगे बढ़ी तो उसमें दिगम्बर धर्मानुयायी भी थे । उनमें से अधिकांश मुलतान, डेरागाजीखान, लैथ्या एव उत्तरी पजाब के अन्य नगरों में बस गये और वही व्यापार करने लगे । अन्य नगरों में बार बार के आक्रमण के सामने वे टिक नहीं सके इसलिये या तो वे वहाँ से और कहीं जाकर बस गये या फिर

1. पाणिनी कालीन भारत, पृष्ठ 64

2. आदि पुराण में प्रतिपादित भारत

3. तक्षशिलाया बाहुवली विनिर्मित धर्मचक्रमः विविध तीर्थ कल्प पृष्ठ 75

आक्रमण के शिकार हो गये। यही कारण है कि डेरागाजीखान क आगे के भाग मे दिगम्बर जैनी कि बस्तिया नही के बराबर मिलती है। इसलिये यह कहना कि मुलतान मे ओसवाल जैन वारहवी शताब्दी मे आकर बसे, सत्य प्रतीत नही होता।

मुलतानवासी दिगम्बर जैनों मे धार्मिक जाग्रति, आध्यात्मिकता, के प्रति प्रेम प्रेम एवं दिगम्बरत्व के प्रति कट्टरता रही है। वहा के प्राचीन किले मे मन्दिर होना तथा उसमे सवत 1481, 1502 एवं 1548 की मूर्तिया उपलब्ध होना तथा 1548 वाली मूर्ति के चमत्कारो की कहानी इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि मुलतान मे दिगम्बर धर्म के अनुयायी अच्छी सख्या मे थे और केवल ओसवाल जाति के थे। महाकवि बनारसीदास की अध्यात्मिक लहर का सबसे अधिक स्वागत मुलतान के दिगम्बर जैन समाज ने किया। आगरा के जैन समाज की तरह वहा भी आध्यात्मिक शैली स्थापित की गयी। जिसमे समयसार नाटक, प्रवचनसार जैसे ग्रन्थो का स्वाध्याय एवं उस पर चर्चा होने लगी। प० नाथूराम प्रेमी ने भी लिखा है कि “मुलतान शहर आध्यात्मिक था जो बनारसीदास के अनयायियो का प्रमुख स्थान रहा है। यहा के ओसवाल श्रीमाल इसी मत के अनुयायी रहे है।” “लेकिन हमारी मान्यता यह है कि यहां के ओसवाल परिवार दिगम्बर जैन थे। उस समय मे मुलतान मे विहार करने वाले श्वेताम्बर साधु भी आध्यात्मिक बन गये थे तथा दिगम्बर ओसवाल भाईयो के साथ बैठकर आध्यात्मिक चर्चा किया करते थे।

बनारसीदास का समय सवत 1700 के पूर्व का रहा है। संवत 1693 में उन्होने समयसार नाटक को पूर्ण क्रिया और उसके पूर्ण होते ही सारे देश मे इसका स्वाध्याय होने लगा। आगरा से वह लहर एक ओर मुलतान को भी पार कर डेरागाजीखान तक पहुची तो दूसरी ओर आमेर, सागानेर कामा मे अध्यात्म शैली स्थापित की गयी। फिर क्या था। सारे मुलतानी - फिर चाहे वे दिगम्बर ओसवाल हो या श्वेताम्बर, अध्यात्म रस के रसिक बन गये। श्वेताम्बर साधुओं ने भी समयसार नाटक बनारसी विलास जैसे ग्रन्थो की प्रतिलिपिया करके उनके प्रचार प्रसार में बहुत योग दिया। बनारसीदास के समय मे ही लिखी हुए एक तारातबोल की पत्रिका मिलती है जिसमे मुलतान निवासी प० बनारसीदास खत्री ने देश देशान्तरो की यात्रा की ओर वहा से वापिस आने पर उसने अपनी यात्रा का जैसा वृतान्त सुनाया वैसा ही पत्रिका मे लिपिवद्ध कर दिया गया। पत्रिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सवत 1714 की समयसार नाटक की प्रतिलिपि मुलतान दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्श नगर मे संग्रहित है। उस समय श्रावक चाहडमल, नवलखा वर्द्धमान, करमचन्द, जेठमल, ऋषभदास आदि अनेक दिगम्बर श्रावक अध्यात्म रस के रसिक बन गये थे और संवत 1722 मे उन्ही के आग्रह से प्रबोध चिन्तामणि चौपाई एव योगशास्त्र चौपाई की रचना की गयी थी।

वर्द्धमान नवलखा

मुलतान मे अनेक विद्वान भी थे। इनमें वर्द्धमान नवलखा का नाम उल्लेखनीय है। ये पाहिराज के पुत्र थे तथा वर्द्धमान के साथ साथ वस भी उनका नाम था। ये ओसवाल

दिगम्बर जैन श्रावक थे तथा नवलखा इनका गौत्र था । संवत् 1746 माघ सुदी पचमी के शुभ दिन इन्होंने वर्धमान वचनिका की रचना की थी जिसकी प्रतिलिपि चैत्र सुदी 1 स० 1747 को विशालोपाध्याय गणि के शिष्य ज्ञानवर्धन मुनि द्वारा मुलतान नगर मे ही की गयी थी । ग्रन्थ की प्रशस्ति में सर्वप्रथम बनारसीदास को धर्मचार्य एव धर्मगुरु के नाम से सम्बोधित किया है जिनके प्रयास से इन्होंने आचार्य कुन्दकुन्द, अमृतचन्द्र, एव पं० राजमलजी का उल्लेख किया है और उनके ग्रन्थो की प्रशंसा की है तथा इन आचार्यों की स्याद्ववादमय वचन मे श्रद्धा करने को कहा गया है ।¹ इसी तरह चतुर्विध संघ स्थापना मे दिगम्बर धर्म की प्रशंसा की है तथा उसे ही मोक्ष प्राप्ति का साधन बताया गया है ।² सम्वत् 1750 मे मुलतान मे प० धर्मतिलक ने नाटक समयसार की स्वाध्याय के लिए प्रतिलिपि की थी ।³ इसी पुस्तक के एक दूसरे उद्धरण से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि वर्धमान नवलखा बनारसीदास का कट्टर भक्त हो गये थे जिन्होंने भेद विज्ञान बतलाया था । उन्होने मुनि दयासागर की भी प्रशंसा की है तथा उन्हे सच्चा

1. धरमाचारिज धर्मगुरु, श्री बनारसीदास ।
जामु प्रसादे मैं लहयो, आतम निज पदवास ॥1॥
बंदू हूं श्री सिद्धगण, परमदेव उतकिष्ट ।
अरिहंत आदि ले धार गुरु, भविक मांहि ए शिष्ट ॥2॥
परम्परा ए ग्यान की, कुंदकुंद मुनिराज ।
अमृतचन्द्र राजमलजी, संबहूँ के सिरताज ॥3॥
ग्रन्थ दिगम्बर के भले, भीप (1) सेताम्बर चाल ।
अनेकान्त समझे भला, सो ज्ञाता की चाल ॥4॥
स्याद्ववाद जिनके वचन, जो जानै सो जान ।
निश्चै व्यवहारी आत्मा, अनेकान्त परमान ॥5॥
2. अब चतुर्विध संघ स्थापना लिख्यते साध्वी 1 श्रावक 2
श्रविका 3, अंबरसहित जाणवा । जघन्ये
3. साध लज्या जीत न सके तिणवास्ते श्वेताम्बर होवे ।
साधवी पण निस्संकिता अंगरै वास्ते श्वेताम्बर होवे ।
उतकृष्ठा मुनीस्वर 6 गुणठाणे आदि ले केवली भगवंत
सीम दिगंबर परम दिगंबर होवे । परम दिगंबर छै तिको
मोक्षसाधनरो अंग छै । भावकर्म 1. द्रव्यकर्म 2 नोकर्म
३ री त्यागभावना भावै । मेष भाव जिसो हुव । परम
दिगम्बर मोक्ष साधे । दिगम्बर मुनीस्वर ओलखवारो
लिंग जाणवौ । इतरौ चौथे आरेरी बात लिखी छै ।
जिआं मुनीस्वरारा संघयण सबला हुता ताहिवै पांचमा
आरारी लिख्यते । अर्थ कथानक पृष्ठ 109

साधु बतलाया है क्योंकि वे सदैव अध्यात्म ग्रन्थों का स्वाध्याय करने लगे थे । और क्योंकि स्वयं वर्धमान आत्मज्ञानियों के दास थे इसलिये वे उनके लिए सच्चे मुनि थे । उनकी सैली में धरमदास, मिट्ठू, सुखानन्द, नेमिदास, शान्तिदास आदि साधर्मि जन भी थे ।¹ इस शैली का नाम अध्यात्म सैली था ।

अध्यात्म सैली मन लाय, सुखानन्द सुखदाइ जी ।

साह नेमिदास नवलखा ने संवत् 1761 में अपने पुत्र के पढने के लिये पंचास्तिकाय भाषा पाण्डे हेमराज कृत की प्रतिलिपि लघु वजीरपुर में करवाई थी ।² प्रतिलिपिकार थे मोहन, जो जैन थे । प्रस्तुत पाण्डुलिपि मुलतान दिगम्बर जैन समाज जयपुर के शास्त्र भण्डार में सुरक्षित है ।'

अध्यात्म शैली क दूसरे सदस्य मिट्ठूमल थे जो पहले बीकानेर के रहने वाले थे । उन्ही के पुत्र श्री सूरजमल के पठनार्थ संवत् 1761 में प्रवचनसार भाषा हेमराज कृत की प्रतिलिपि मुलतान नगर में की गयी थी । प्रतिलिपि करने वाले थे

1. जिनधरमी कुलसेहरो, श्रीमालां सिगणार ।
वाणारसी बहोलिया, भविक जीव उद्धार ॥1॥
बाणारसी प्रसादतै, पायो ज्ञान विज्ञान ।
जग सब मिथ्या जाणकरि, पायी निज स्वथान ॥2॥
वाणारसी सुपसाय ले, लाधो भेद विज्ञान ।
परगुण आस्यां छेडिके, लीजे सिव की थान ।
दयासागर मुनि चूँप बताई, बद्धू के मन साचीं आई ।
दयासागर साचो जती, समझे निज नय संग ।
अध्यात्म वाचै सदा, तजो करम को रंग ॥3॥
पाहिराज साहिको सुतन, नवलख गोत्र उदार
आत्म ज्ञानी दास हैं वर्धमान सुखकार ॥4॥
धरमदास आत्म धरम, साचो जग में दीठ ।
और धरम भरमी गिणे, आत्म अमीसम सीठ ॥5॥

2. संवत् 1761 वर्षे मितो फागुण सुदी 3 तिथौ बृहस्पतिवारे रेवती नक्षत्रे श्रीमन्मूल त्राण नगरे पं० श्री श्री वीरदास जी तत् शिष्य मुख्य पं० विमलदास लिपिकृतम् बीकानेर वास्तव्यं भडसाली गोत्रे सा० श्री मिट्ठूमल जी तत्पुत्र सूरजमल जी पठनार्थ ।

पं० वीरदास के प्रमुख शिष्य विमलदास । मिट्ठूमल भडसाली गोत्र के दिगम्बर जैन श्रावक थे । सवत 1770 मे मुलतान मे ही उन्होने ब्रह्म विलास की प्रतिलिपि करायी थी जिसमे साह श्री मिट्ठूमल को जिन धर्मदीपक, शुद्धात्म स्वरूप सवेदक की उपाधि से अलकृत किया है ।¹

अध्यात्मी श्रावक चाहुडमल जिसके लिए सुमतिरग ने सवत 1722 मे प्रबोध चिन्तामणि चौपाई एवं योगशास्त्र चौपाई की रचना की थी वह चाहुडमल खेचादेश में उत्पन्न हुए थे । वे श्रावक थे, पुण्यप्रभावक एवं देव शास्त्र गुरु के भक्त थे । उनके पुत्र साह लीलापति थे जो भी आध्यात्मिक चर्चाओं मे विशेष रुचि लेते थे । उन्होने अपने पढने के लिये संवत 1750 कार्तिक शुक्ल पंचमी के शुभ दिन धर्म चर्चा ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई थी । प्रतिलिपि करने वाले पं० राजसी थे जिन्होंने मुलतान मे ही धर्मचर्चा ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी । उसके पश्चात् मुनि मेरुगणि के शिष्य स्थिर हर्षगणि तथा उनके शिष्य पं० प्रवर श्री कीर्तिसोभाग्यगणी के भी शिष्य पं० रत्नधीर ने प्रतिलिपि की थी ।² संवत् 1753 मे फिर साह लीलापति के पढने के लिये मुलतान नगर मे ही वचनसार की प्रतिलिपि की गयी । प्रतिलिपि करने वाले पं० खेमचन्द के मुख्य शिष्य पं० अजैराज थे जो मुलतान निवासी ही थे ।³

इसी चाहुडमल के दूसरे पुत्र थे साह भैरवदास । वे भी अध्यात्म प्रेमी श्रावक थे । उन्होने अपने लिये संवत 1748 मे बनारसीदास विलास एवं समयसार नाटक की प्रतिलिपि कराई थी ।⁴ एक दूसरी प्रशस्ति में भैरवदास के पुत्र भौजराज भेलामल्ल का उल्लेख आया है । उनके स्वाध्याय के लिये “चतुर्विंशति जिनचरण गीत” की इसी सवत

1. संवत् 1770 मंगसिर सुदी 13 दिने पुस्तकमिदं लिपिकृतं मूलस्थाने शुभं भवतु । ब्रह्मविलास पत्र सं० 258 उसवाल जातीय श्री जिनधर्मोपदीपक शुद्धात्मस्वरूप संवेदक भणशाली गोत्रे साह श्री मिट्ठूमल जी ने लिखाया है । श्री जिनायनमः ।
2. संवत् 1750 वर्षे कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे पंचमी तिथौ धर्म चर्चा लिखितः श्रावण पुण्य प्रभावक देव गुरु भक्तिकारिक सुभासिणि गारकरा चेखा को साह चाहुडमल्ल जी तत्पुत्ररत्न साह श्री लीलापति जी वाचनार्थं पं० राजसी लिखायते श्री मोलित्राण मध्ये लिखतम् ।
3. संवत् 1753 वर्षे शाके मिति आषाढ सुदी दिने तिथौ शनिवारे पुष्यनक्षत्रे श्रीमान् मूलत्राण नगरे पं० श्री श्री खेमचन्द जी तत् शिष्य मुख्य पं० अजैराज जी लिपिकृतम् । राखेचा गोत्रे सा० श्री चाहुडमल जी तत् पुत्र सा० श्री लीलापति जी ।
4. संवत् 1748 वर्षे शाके 1613 मंगसिर मासे शुक्लपक्षे बीजतिथौ लिखिता जसेजा साह भैरवदास जी पठनाय शुभं ।

म प्रतिलिपि कराई गयी थी । प्रतिलिपि करने वाले स्थिर हर्षगणि के शिष्य एवं कीर्तिसौभाग्यगणि के शिष्य प० खेतसी थे ।¹

मुलतान नगर मे ही श्राविका माणिकदेवी भी सुशिक्षित महिला थी । वह भी अध्यात्म ग्रन्थो के पठन पाठन मे रुचि लेती थी । श्राविका माणिकदेवी ने समयसार नाटक अपने स्वाध्याय के लिये संवत् 1778 आसोज सुदी 11 को उपाध्याय देवधर्मगणि से लिखवाया था ।²

धर्मचर्चा ग्रन्थ को लिखाने वाले सोमजी साह के सुपुत्र के श्रावक गगाधर । इन्होंने भैया भगवतीदास के ग्रन्थ “ब्रह्म विलास” की संवत् 1797 मे प्रतिलिपि करायी थी । सोमजी एवं गगाधर कनोडा गोत्र के श्रावक थे । इस प्रकार हम देखते हैं कि संवत् 1700 से 1800 तक मुलतान एव उसे बाहर अन्य नगरों मे ग्रन्थो की प्रतिलिपियां करवाने का क्रम बराबर जारी रहा जो मुलतान निवासियो के स्वाध्याय प्रेम का स्पष्ट द्योतक है ।

अमोलका बाई

प० वर्धमान नवलखा स्वयं तो पंडित थे ही उनकी पुत्री अमोलका बाई भी सुशिक्षित स्वाध्याय प्रेमी एव कवयित्री थी । अपने पिता के समान उन्हे साहित्य रचना से प्रेम था । लेकिन पूर्वोपार्जित अशुभ कर्मोदय से वह छोटी अवस्था मे विधवा हो गई । पति के स्वर्गवास के पश्चात् जब एक ओर कुटुम्बी जन शोक सतप्त थे तथा हार्दिक दुःख प्रकट कर रहे थे उस समय अमोलका बाई ने ससार की असारता पर विचार करते हुए शोक नहीं किया किन्तु अत्यधिक शान्ति एव धैर्य के साथ स्वपर कल्याण के लिये बारह भावना, बासा, वधावा आदि छोटी कविताएँ निबद्ध करती रही । जिनका प्रकाशन मुलतान समाज की ओर से “जैन महिला गायन” नामक एक लघु पुस्तक के रूप मे वीरनिर्वाण संवत् 2462 में कराया गया था । पंडित अजित कुमार जी शास्त्री ने इस पुस्तक का सम्पादन किया था ।

1—बासा

इसमे 26 पद्व है जिनमे 24 तीर्थकरो के माता-पिता, आदि का परिचय है । बासा की भाषा बड़ी सरल एव मधुर है । बासा मे मुलतान एवं डेरागाजीखान का भी जगह-जगह उल्लेख किया है तथा वहा के मन्दिरों की प्रतिमाओ का वर्णन मिलता है । उसमें

1. संवत् मूसररिषीदु वर्ष 1748 मार्गसिर मासे कृष्ण पक्षे द्वितीया कर्मवास्यां भृगुवासरे वाचनाचार्य वर्षधुप्ये श्री श्री 108 श्री श्री स्थिरहर्षगणी वराणां तत्शिष्य पण्डित श्री कीर्ति सोभाग्यगणी तत् शिष्य पण्डित नेतसी एतत् पुस्तिका धरितास्ति । राखेचा गोत्रे साह श्री चाहुडमल्ल जी तत्पुत्र साह श्री भैरवदास जी तत्पुत्र भोजराज भेलामल्ल वाचनार्थ ।

2— समयसार नाटक—लिपि संवत् 1778 आसोज बुदी 11 उपाध्याय श्री देवधर्मगणि ने श्राविका श्री माणिकदेवी जी पठनार्थ लिखा ।

वहा की अध्यात्म शैली का भी वर्णन किया है। 'वासा' मूल रूप में पाटको के अव-
लोकनार्थ प्रस्तुत है।

नाभि राजा मरुदेव्या रानी, जिन माता जन्म्यो श्री आदिनाथ स्वामी ।

आदिनाथ स्वामी सब कर्म खिपायो, जुगल्या बुद्धि मेटी जिन धर्म बतायो ॥१॥

जित शत्रु राजा विजया देवी रानी, जिन माता जन्म्यो श्री अजितनाथ स्वामी ।

अजितनाथ स्वामी इक शुद्ध रस लीधा, समरस भावे अष्ट कर्मनि जीत्या ॥२॥

दृढराज राजा सुसेना देवी रानी, जिन माता जन्म्यो श्री संभवनाथ स्वामी ।

संभवनाथ स्वामी निज अनुभव रसिया, सुख अनन्त में अह निश लसिया ॥३॥

स्वयम्बर राजा सिद्धार्थ रानी, जिन माता जन्म्यो श्री अभिनन्दन नाथ स्वामी ।

अभिनन्दन नाथ स्वामी अभय पद लीधा, राग द्वेष सब दूरे कीधा ॥४॥

मेघरथ राजा मंगला देवी रानी, जिन माता जन्म्यो श्री सुमति नाथ स्वामी ।

सुमतिनाथ स्वामी सुमति के दाता, भाव सु परन्यो सम्यक ज्ञाता ॥५॥

धरण राजा सुसीमा देवी रानी, जिन माता जन्म्यो श्री पद्मप्रभ स्वामी ।

पद्मप्रभ स्वामी जी पद्म सुभावे, सहस्र सागर वय सु प्रभावे ॥६॥

सुप्रतिष्ठ राजा पृथिवी सेना रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री सुपारशनाथ स्वामी ।

सुपारशनाथ स्वामी जी अन्तरयामी, कर्म क्षिपाये पंचम गति प्राणी ॥७॥

महासेन राजा सुलक्षणा देवी रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री चन्द्र प्रभु स्वामी ।

चन्द्रप्रभ स्वामी जी की अमृत वानी, सुनत्या सुख पावे जे पण्डित ज्ञानी ॥८॥

राजा सुग्रीव जया रामा रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री सुविधिनाथ स्वामी ।

सुविधिनाथ स्वामी नमो जिनदेवा, इन्द्र नरेन्द्र करे सब सेवा ॥९॥

दृढरथ राजा सुनन्दा देवी रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री शीतलनाथ स्वामी ।

शीतलनाथ स्वामी समोशरन विराजे, वाणी सुनत्यां मिथ्या मल भाजे ॥१०॥

विष्णु राजा नन्दा देवी रानी, जिनमाता जन्म्यो श्रेयांस नाथ स्वामी ।

श्रेयांसनाथ दोष अष्टदश रहिता, गुण छ्यालीस सु प्रभु जी सहिता ॥११॥

वासुपूज्य राजा जयावती रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री वासुपूज्य स्वामी ।

वासुपूज्य स्वामी जी के दर्शन पावे, वैर विरोध सभी नश जावे ॥१२॥

कृत वर्म राजा जयभामा रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री विमलनाथ स्वामी ।

विमलनाथ स्वामी का निर्मल ध्याना, लोक अलोक प्रकाशक ज्ञाना ॥१३॥

सिंहसेन राजा जयश्यामा रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री अनन्तनाथ स्वामी ।

अनन्तनाथ स्वामी नन्त चतुष्टय धारी, कर्म निसकता अनन्त बल धारी ॥१४॥

भानु राजा सुप्रभा देवी रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री धर्मनाथ स्वामी ।

धर्मनाथ स्वामी जी धर्म बताया, वस्तु सभावे जिन रचना दिखलाया ॥१५॥

विश्वसेन राजा ऐरा देवी रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री शान्तिनाथ स्वामी ।
 शान्तिनाथ स्वामी नमो जिन ध्याइये, विकल्प मेदि शांत रस पाइये ॥१६॥
 सूरसेन राजा कांता देवी रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री कुंथुनाथ स्वामी ।
 कुंथुनाथ स्वामी के चरणां मै बन्दू, चिर संचित सब पाप निकन्दू ॥१७॥
 सदर्शन राजा मित्रसेना रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री अरनाथ स्वामी ।
 अरनाथ स्वामी ने अरि सब जीते, कर्म समाधि सुख मांहि लीधे ॥१८॥
 कुम्भ सु राजा पद्मावती रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री मल्लिनाथ स्वामी ।
 मल्लिनाथ स्वामी जी बालब्रह्मचारी, पुरुष शिरोमनि आनन्द बलधारी ॥१९॥
 सुमित्र राजा सोमा देवी रानी, जिनमाता जन्म्यो मुनि सुब्रतनाथ स्वामी ।
 मुनि सुब्रतनाथ स्वामी मनसूधे जी ध्याइये; संसार सागर तै पार जु पाइये ॥२०॥
 विजय सेन राजा विप्रा देवी रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री नमिनाथ स्वामी ।
 नमिनाथ स्वामी के चरणां पूजे, नव अतिकारी नव लाहो लीजे ॥२१॥
 समुद्र विजय राजा शिवादेवी रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री नेमिनाथ स्वामी ।
 नेमिनाथ स्वामी जी के नव अतिकारी, सहस्र सरोवर सखी राजुल नारी ॥२२॥
 अश्वसेन राजा वामा देवी रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री पारशनाथ स्वामी ।
 पारशनाथ स्वामी का बिम्ब सोहे मुलाताना, मिथ्या रजनी दूर करवे को भाना ॥२३॥
 सिद्धार्थ राजा त्रिशाला देवी रानी, जिनमाता जन्म्यो श्री महावीर स्वामी ।
 महावीर स्वामी जी ना धर्म पालो, मोक्षमार्ग जो सीधा भालो ॥२४॥
 ये चौबीस जिनवर करूं परिणामा, ये चौबीस जिन उत्तम ठामा ।
 ये चौबीस जिन केवल ज्ञाना, ये चौबीस पहुँचे निर्वाणा ॥२५॥

1. बधावा—

इसमे पाच बधावा है जिनमे भगवान की पूजा एवं भक्ति करने की प्रेरणा दी गयी है । मुलतान नगर मे पार्श्वनाथ स्वामी की मूलनायक प्रतिमा की अधिकांश बधावों मे स्तुति की गयी है । इससे स्पष्ट है कि अमोलका बाई भक्त कवयित्री थी । वे मुलतान के दिगम्बर जैन मन्दिर मे विराजमान पार्श्वनाथ स्वामी की पूर्ण उपासिका थी तथा उन्हें मूर्ति के अतिशय मे विश्वास था ।

(1)

वयन्तर भवना ज्योतिषी, वैमानिक तिर्यचो जिनवर पूजें जी भावसूँ ।
 अष्टापद आदिनाथा पूजसां भावसूँ, चंपापुर वासुपूज्य देवा सु भावसूँ ।
 सम्मेदशिखर जिन पूजसां, तहां बीस तीर्थङ्कर पूजूं भावसूँ ॥१॥
 गिरनार पै नेमिनाथ पूजसां, पावापुर महावीर पूजूं भावसूँ ।
 मुलतान श्री पारशनाथ पूजसां, इह देव दिगम्बर पूजूं जी भावसूँ ॥२॥

पंच महाविदेह जिन पूजसां, इह विहरमान वीसूँ जिनवर पूजूं जी भावसूँ ।
पंच महाविदेह गुरु वंदसां, आचारज उवभाय भावसूँ ॥३॥

इह पंचदश करम भूमिने वंदों, साधु निरग्रन्था जिनवर पूजूं जी भाव सूँ ।
वंदों साधु निरग्रन्था, जिनवर पूजूं जी भाव सूँ ॥४॥

(2)

धन धन जिनवर धर्म बताया, चौबीस तीर्थङ्कर मुक्ति सिधाया ।

धन धन जिनवर... ..

पंच कल्याणक शत इन्द्र आया; विनय सूँ विधि करी जय 2 थाया । धन धन जिनवर ॥१॥

उत्पाद व्यय ध्रौव्य सर्व बताया; द्वादश अंग में गणवार गाया । धन धन जिनवर ॥२॥

पट् द्रव्य नीतत्व भेद समझाया, श्रावक मुनिवर लिंग जनाया । धन धन जिनवर ॥३॥

देव धरम गुरुत्व सुनाया, भव्य जीवां सुन समकित पाया । धन धन जिनवर ॥४॥

सम्यक दर्श ज्ञान चरित कहाया, नेरु जानहिय ध्यान लवलाया । धन धन जिनवर ॥५॥

वचन अनक्षर अमृत पिलाया, जरा मरन मिटा, सुख सवाया । धन धन जिनवर ॥६॥

चौबीस तीर्थकर मुक्ति सिधाया, धन धन जिनवर धर्म बताया । धन धन जिनवर ॥७॥

(3)

मुलतान नगर में चैत्य जिन शोभे, जिसमें अचल वधावन ।

तेवीसमों जिन बिम्ब विराजे, समोसरन सूँ आवन ॥

नर नारी मिल वन्दन आवें, बलि धारो मन भावन ।

तीन प्रदक्षिण भावसूँ दीजे, आठ अंग भूमि लगावन ॥

अष्ट प्रकारी सदा होवे पूजा, नित्य होवे पूजा ।

सदा होवे पूजा, करत महा भविजन आरती ।

आरती करतां पाप सब जावें, दोष सब जावें, गीत गाओ भले भावसूँ ।

जिनवर वाणी अर्थ विचारो, पढो सुनो भवि जन भला,
मिथ्या मतकूँ दूर निवारो, दिन दिन यश अति की करन । दिन दिन यश अति की करन ॥

(4)

देवा पूजन रो चाव हो, हम अष्टापद में जायस्यां जी ।

मायारी मरुदेव्या जी रो पुत्र हो, हम आदिनाथ देव जुहारस्यां जी ।
हम पहले गमत्यां पूजसां जी, देरा पूजन रो चाव हो ॥१॥

हम चम्पापुर में जायस्यां जी, माया जयावती रो पुत्र हो ।
हम वासुपूज्य जुहारस्यां जी, हम पहले गमत्यां पूजस्यां जी ।

हम शिखर सम्मेद में जायस्यां जी, माया री सुहावा जी रो पुत्र हो ।
हम बीस तीर्थकर पूजस्यां जी, देवा पूजन रो चाव हो ॥२॥

हम गढ गिरनार जी जायस्यां जी, माया री शिवा जी रो पुत्र हो ।
हम नेमिनाथ देव जुहारस्यां जी, हम पहले गमत्यां पूजस्यां जी,
हम पावापुर में जायस्यां जी, माया री त्रिशला जी रो पुत्र हो ।
हम वर्धमान देव जुहारस्यां जी, हम पहले गमत्यां पूजस्या जी,
हम गढ मुलतान में जायस्यां जी, माया री वामा जी रो पुत्र हो ।
हम पारसनाथ देव जुहारस्यां जी, हम पहले गमत्यां पूजसां जी,
हम पंच महाविदेह जायसां जी, माया री सुहावा जी रो पुत्र ।
हम विहरमान वीसों वंदसां जी, हम पहले गमत्यां पूजसां जी
हम पंच महाविदेह जायसां जी, माया री सुहावा जी रो पूत ।
हम आचारज गुरु वंदसां, हम उपाध्याय गुरु वंदसां जी,
हम पहले गमत्यां पूजसां जी, हम करमा भूमि जायसां जी,
मायारी सुहावा जीरो पूत । हम गुरु निरग्रन्थ वन्दसां जी, हम पहले गमत्यां पूजसां जी ।

(5)

सखी डेरे दिगम्बर सैली में मंगल । पहले बधावे पंच पद नमो,
जिस नमत्यां ये लखिये पंच पद सार । मोह मिथ्यात डेरे होवे; ज्ञान लायरो केवल सिद्धकार
सखी डेरे दिगम्बर... ..

बीजे बधावे जिन बिम्ब नमूँ, कृताकृत्रम ऐ तीनों लोक मई सार ।

सुर नर पूजे भावसूँ, जिन पूजें सदा जय जयकार । सखी डेरे दिगम्बर.....
अगले बधावे जिनवाणी नमों, वाणी सुनत्यां भवि जना, पालो सखी सत तत्व ।

सहिते षट्द्रव्य नव पदा, हो लखिये उपाध्याये लहिये निर्मल बोध ॥३॥

सखी डेरे दिगम्बर... ..

मोय ये भव भव सुखकार, सखी जी का उत्तम ऐ अच्छो चारों सरना, जब सज सभान ॥४॥

सखी डेरे दिगम्बर सैली में मंगल हो । पंचवें बधावे रत्नत्रय नमों,

वैवर निश्वय ऐ सदा, उपाध्या भारषट् सिर्फ विवेकी आनिया,
भेदाभेद ए निज वस्तु निहार । सखी डेरे दिगम्बर... ..

छठे बधावे श्रावक श्राविका, नित वंदये एकेदश विधि धार ।

सखी चारों विधि दान जे करै, लाभो ऐ जैसे शुद्ध आचार । सखी डेरे दिगम्बर.. ..

सखी सातवें बधावे भो भावना, भावन भाताऐ भवि जन भलो ।

सखी सरफ दिवस मुझ आज है, ऐ गुण गावे ऐ मैं अपने काज ॥७॥

सखी डेरे दिगम्बर

बारह भावना

यह अमोलक बाई की अच्छी कृति है जिसमे प्रत्येक भावना का अलग वर्णन किया गया है। बाई जी जगत से सर्वथा उदासीन हो चुकी थी इसीलिये प्रत्येक भावना के वर्णन मे कवयित्री ने अपना हृदय खोलकर ही रख दिया है। भाषा बहुत सरल एवं मधुर है। कही-कही कवयित्री ने अपना परिचय देते हुए “वर्द्धमान जी पंडित विचारी तास सुता गुण गावे” पक्तिया लिखी हैं।

बारह भावनाओ के अन्त मे अमोलका बाई ने महाकवि बनारसीदास एव पंडित राजमल को जानदाता के रूप में स्मरण किया है तथा अपने पिता वर्द्धमान को धर्मसन्त की उपाधि दी है जिसने स्वाध्याय की प्रेरणा दी तथा सस्कृत का ज्ञान कराया।

शुद्ध सरूपे परनये ते परमात्म जान । आत्मभावना हूं नमूं भाव भगति उर आन ॥१॥
जिनवाणी सरसुति नमूं, बिजिये सास्वति माय ।

मविक लोक में हित बनी जयवन्तों जग मांहि ॥२॥

गुरुजन चरण कमल नमूं, तिन मुझ कियोरे प्रकाश ।

आत्म मुझ संतोषियो, अमृत वचन रसाय ॥३॥

मैं बालक मतिहीन हूं वेद नही मुझ पास । बारह भावन भायसां पंडित करें न हास ॥४॥

रस मई रचना कविकला, ते नाहीं मुझ शुद्ध । सीमन्धर परसादतै प्रगटी निर्मल बुद्ध ॥५॥

चंचलता मनतै हरो, संकल्प विकल्प दूर । ध्यान निरंजन आत्मा, ते आपा भरपूर ॥६॥

दान शील जप तप किया, कर कर नाना भेय ।

आत्म शुद्ध प्रगट्यो नहीं, किम संसार तिरेय ॥७॥

अनित्य भावना

ये तो जिनवर आज्ञा लेवोरे प्राणी पहली भावना भाय,

नित्य सदा ए सासता रे अविनाशी अविकार,

निश्चय नयकरि आत्मा रे भेद नहीं लगाय ॥१॥ प्राणी पहली भावना भाय ।

ये ससार सदा सासता रे दरबित नय करि जानि ।

परजाय नय तै परिनमै, ऐसी जिनवर वानि ॥२॥ प्राणी पहली भावना भाय ।

माता पिता सुत कामिनी रे परिजन सो परिवार,

करम उदय आवी मिला रे अन्त होय सब छांड ॥३॥ प्राणी पहली भावना भाय ।

परिग्रह दस परकार नी रे, बल नोकर्म शरीर,

छिन २ आवे छोजतो रे, जैसे अंजलि नीर ॥४॥ प्राणी पहली भावना भाय ।

दर्शन ज्ञान चरित्र मांहिरे, अनुभव एक रस लीन,
 भेद विज्ञानी जे लखे रे ते ज्ञाता परवीन ॥५॥ प्राणी पहली भावना भाय ।
 पांचों द्रव्यन तै जुदा रे, चेतन उपयोग शुद्ध ।
 राग द्वेष पुद्गल तजो रे प्रगटे निर्मल बुद्ध ॥६॥ प्राणी पहली भावना भाय ।
 एकै मनमें किल वसैरे, ध्यान अर विषय विकार ।
 श्री योगीन्द्र बखानिया रे, बे खांडे की धार ॥७॥ प्राणी पहली भावना भाय ।

अशरण भावना

एक जी आतम मेरा, शरना कोई नहीं तेरा । शरन कोई नहीं तेरा एक जी आतम मेरा ॥
 जन्म मरण चेतन मे नाहीं, ऐसी विधि कर ध्यावो,
 एक अरूपी ज्योति सरूपी, निश्चय नय करि पावो ॥१॥
 सुख दुख कर्म उदयवश भोगें, सब संसारी प्राणी ।
 कर्ता हर्ता कोई न किसका ऐसी जिनवर वाणी ॥२॥
 परुषोत्तम अंत केवल ज्ञानी, तिन अशरन पद लीधा ।
 मै मूरख मतिहोन हूं ज्ञानो वल जो कच्चा हीया ॥३॥
 विषय कषाय इक त्यागी प्राणी, रागादिक निरवारी ।
 उदासीन भावना नित भावें, ते ज्ञाता अधिकारी ॥४॥
 मन बच काया पुद्गल छाया, निज सरूप मत ध्यावो ।
 एक अरूपी ज्योति स्वरूपी, निश्चय नय करि पावो ॥५॥
 चरम संहनन दुषमा काले, ध्यान कहां से ध्यावे ।
 निकट संसारी कर्म बिडारी, महा विदेह ते पावें ॥६॥
 वर्द्धमान जी पंडित विचारी तास सुता गुण गावे ।
 अशरण भावना बीजी भावे, आतम रुचि मन लावे ॥७॥
 आतम मेरा सरना कोई नहीं तेरा ।

संसार

संसरण तै संसार, चेतन पुद्गल मय भ्रम्यो ।
 व्यवहार नय इमि जान, निश्चय निज निज गुण रभ्यो ॥१॥
 संसार अर नव माय, तरवा सम उद्यम धरो,
 जिम छाए दुःख नास, शिवरमणी सनमुख वरो ॥२॥
 पांच प्रकार संसार, वार अनन्ता मै लिया ।
 विन सुध आतम भाव, अजथारय बुद्धि सूँ चाह्या ॥३॥
 द्रव्य क्षेत्र काल भव भाव, पंच भेद जग जानिये ।
 इनसे रहो रे उदास, शुद्ध आत्म मन आनिये ॥४॥
 आप सरूप में जान, पर बुद्धि में नहीं लीनता ।
 स्यादवाद परमान, शिवपद साधे धीमता ॥५॥

अविरत समकित धार देशवती वखानिये ।
मुनिवर दोय प्रकार, निज निज भेद वखानिये ॥6॥
ये ही साधक जीव, ते साधे शुद्ध आतमा ।
सम्यक भेद अनेक, सर्व ज्ञान परमातमा ॥7॥

एकत्व

एकत्व भावना भावियारे लाल, कर कर्म ते खीन रे सुभागी,
मन विच काया थिर करी रे ले आतम गुण लीन ।
शुद्ध आतम ध्यावतां रे लाल, ते कर कर्मन खीनरे ।
नय निक्षेप तहाँ नहीं रे, न व्यवहार को भेद;
त्रय गुण आतम एकता रे, गये शुभाशुभ खेद रे सुभागी ।
चेतनता प्रगटी थई रे, ज्ञान गुणे कर वीर,
समरथ भाव भरी रे, अर ला निरंजन पद धीर ।
एकत्व भाव करि तरचा, आगे जे सरवग रे । सुभागी
वे तो महाविदेह मे, लीजा छे निज रग रे सुभागी
चिदानन्द परमातमा रे, ध्यावै छे मुनि जे रे, सुभागी
जो नर निश्चय पावसी; लहे अभय पद जीव रे सुभागी ।
निरविकल्प समाधि मे रे, स्वासन वेदन शुद्ध,
श्री वीतराग सुधारसी रे; प्रगटिये निर्मल बुद्ध ।
ज्ञान गम्य सबगुण अच्छे रे सम्यक धारी जोग,
अज्ञानी जाने नहीं रे, कर्म उदय वस भोग । सुभागी
गुण अनन्त अपार छे रे, बुद्धि नहीं कहू केम,
श्री जिन वचन प्रसाद तै रे, धर्म ऊपर छे प्रेम ।
वर्द्धमान सुता दीपतां रे तीन रतन परधान,
इस भावना को चिन्तवो रे कब पाऊ निर्वान ।
एकत्व भावना भाविया रे लाल, कर कर्म ने खीन रे । सुभागी

अन्यत्व

अन्यपने जिया जगमे डोल्यो त जागो विरला कोय ।
काललब्धि पाय भविजना सम्यकधारी होय ।
निश्चयनयतीन काल मे, ते आतम एक स्वभाव जी ।
पर जाये चहुंगति भ्रम्यो, पण न गयो पर भाव जी ।
जीव स्वभाव रागादिक नाहीं ते मूढमति घर भ्रम्योजी
एक स्वभाव करीने मानो ते उदय महावल कर्म जी ।
चेतनरूपी ते अलख अरूपी ते ज्ञान सरूपी जान जी ।
तीन कर्म ते भिन्न पिछानो ते सुख दुख मन मत आनोजी

दिन दिन निज गुणवद्ध अधिकारी मोहमिथ्यात निकंदजी,
 एही रीति जथा घट मांही जैसे दुतिया चन्द्र जी ।
 शुद्ध सरूप में लीन त नाहीं तब उपाधि ये विचारजी
 परम समाधि प्रगट सुख पाया ते ज्ञाता हितकार जी
 अन्यत्व भावना एही बखानी ते आत्म पर उपकारजी
 सुनोरे प्राणी ते मोक्ष निशानी ते पुग्दल प्रीति निवारजी ।

अशुचि

शुचपने शरीरा नख शिख सहित परमात्मा । सात धातु करि धारचा इनसे धरो मत राग ।
 ये क्षणभंगुर अष्ट कर्मकरि धारचा ।
 चूरा चन्दन चम्पा बेला बलिए जे शुभ द्रव्या, इन संग कर मल जानिये ।
 छूट के दिखावो छेला चेतो चेतन, दुर्जन संग बखानिये ।
 न्हावण धोवण नित मर्दन अति घना, फूल केशर सिंगारिये सिंगार बनायो नित्य ।
 विषय रस लोभिया चहुँ गति दुख वधाविया, रोग शोक दुख नाना ।
 भरा कर भर भारा । जन्म मरण चहुँ गति कीता नीको निर्मल देह ॥
 घट में सोधे जो; साध सिद्ध पणे लह्या, प्यां नही धम लाओ लेसा ।
 मूढ़ मति न्यारा, त्यों तन छय छांड्या जी ।
 शरण पर रहो धर्मात्मा, लखे जे शुद्ध माटी आत्मा
 जो बै आत्म आरसी, क्रिया करत शठ घोरा ।
 बाहर शुचिपणे, कर्म विपति फांसे मे पड़ा ।
 देह देवल देवा भिन पूजूं भावसूँ । व्यवहार साधे जिया क्रिया, ममता मदिरा रेत ।
 सम्यक्त भूले से, दासी समझे राखिया, आदि संहनन संस्थाना । भली जे ज्ञाता देह ।
 संसार सागर सूँ तिरचा ॥

आस्रव

आस्रव हेतु रागादी छै रे, ज्ञानी ने कर, त्याग रे, सुज्ञानी
 द्रव्य आस्रव बंध को नही रे, राग विषे मत लाग रे, सुज्ञानी
 अष्ट कर्म जुग बल घणा रे, फैला रह्या लोक मांहि रे । सुज्ञानी
 पण तो बंध सके नही रे, सिद्ध अवस्था मांहि रे । सुज्ञानी
 द्रव्य आस्रव बण घणा रे, विषय कषाण अधनि रे । सुज्ञानी
 मूढ़ आत्म भवि आस्रवी रे, सुख दुखमे रहि लीन रे । सुज्ञानी
 पास रहित जो पट अछेरे, रंग न लागे चोया रे । सुज्ञानी
 राग रहित प्राणी ति केरे; बन्ध न थाये कोय रे । सुज्ञानी

समकित सूर प्रगट थया रे, मिथ्या रजनी दूर रे । सुज्ञानी
 पूर्व ला बन्ध भोगव्या रे, नवा न प्रगटे अंकुर रे । सुज्ञानी
 संसारी जे प्राणिआं रे, आगम ने धर आसरे । सुज्ञानी
 आज तां विरला जान जो रे, आस्रव ने कर त्याग रे । सुज्ञानी
 शास्त्र गमत्या अल्प छै रे, त्रिया बृद्धि अनुसार रे । सुज्ञानी
 कहन शक्ति मुझ मन्द छै रे, गुण अनन्त अपार रे । सुज्ञानी
 मेरे बात ऐसी मन मानी, मै तो गुरु वचना यो जाणी ।

कब नाशे दुविधा सुसती दूर रे । सुज्ञानी

संवर

संवर पायके भेद विज्ञानी रे, ए वल निश्चय नय इम जाणो रे ।
 वल नर कोई संशय आनोरे, तातै निज गुण नही पिछान्यो रे ॥

संवर रसिया कि मुनि सुख पावे र लाल ।

संवर रसिया कि इन्द्रिय मन जीत्या रे, आत्म ध्यानसूँ लागे डीपा रे ।
 संवर केरा के सुख अगाधा रे, अंतर तिल भर नहीं है बाधा रे ।

संवर रसिया ।

प्रथम अवस्था मोह खिपावे रे, भेद विज्ञानी प्रगट सुख पावे रे ।
 पर गुण त्यागी संवर थिरता रे, पूर्वला सो शुभाशुभ खिरता रे ॥

संवर रसिया ०

किया कोड़ि तपस्या सूर रे, पंच महाव्रत पाले पूरा रे ।
 जब लग आपा के भेद न पावे रे, तब लग संवर भाव न आवे रे ।

संवर रसिया ०

एक शुद्धात्म तणा सुख पावे रे, ध्यान निरंजन निर्मल ध्यावे रे ।
 बाहर अभिन्तर परिग्रह त्यागी रे, वीतराग भाव सदा विरागी रे ॥

संवर रसिया ०

स्वसंवेदी त समरस लीधा रे, भेद अभेद विकल्प छड लीधा रे ।
 हेय उपादेय नहीं विचारचा रे, परमात्म प्रगट सुख धारचा रे ।

संवर रसिया ०

उपसर्ग सहित या कर्म खिपावे रे, कई अन्तकृत केवल पावे रे ।
 मुनिव्रत चरण कमल मुनि पासे रे, ये ही अवस्था मुझ कब आसे रे ।

संवर रसिया मुनि सुख पावे रे ।

निर्जरा

निर्जरा रस लीधो, रस लीधो रस लीधो,

तीन कर्म क्षय कीधो, ज्ञाता मुनि निर्जरा रस लीधो ।

निर्जरा दोय प्रकार नीरे, एक सकाम अकाम रे,

सकाम संसारी वण्या रे, ज्ञानी जीव अकाम रे । निर्जरा

सकाम दोय भेद आपापर जान जोरे, बाहर कर्म विपाक रे ।
सुख दुःख निरबांछित म्हारे; ते निर्जरा व्यवहार रे । निर्जरा
पंच प्रमाद हणी करचा रे, वीतराग भावे सूर रे ।
मिथ्या रजनी कायर वणी रे, भव सरवरकी दूर रे । निर्जरा०
आतम ध्यान सुरंग धरीरे, परगुणकूं करे नाश है,
निश्चय निर्जरा ते कही जे, लाभे लीला विलास है । निर्जरा०
अष्टम गुणथाने धरीजे, क्षयक श्रेणी गुणखान रे,
शुकल ध्यान वण दीपता रे, कर्म ईंधन कूं नाश रे । निर्जरा०
प्रगट विन्दु सागर थया रे, अनंतं चतुष्टय धार रे ।
तेरहवें केवल पामीया रे, प्रकृति पचासी छांड रे । निर्जरा०
पंच लघु अक्षर में कहा रे, चेतन रूप प्रकाश रे ।
हृदय कमल नितहूँ नमूँ रे, कब पाऊं शिव वास रे ॥
निर्जरा रस लीधा ।

लोक भावना

लोक सरूपजाणी करचा ममता बुद्धि ने डाल रे ।
स्वर्ग मध्य पाताल में, जीव रल्या अनंतं काल रे ॥
पाताल नरके दुख सुण्या रे, चिन्ता सूं नहीं काम रे ।
स्वर्ग सुख सुर सम्पत दुख, भरमत चहुं ठाम रे । लोक०
असंख्याता लोक छै अलोक अन्त आकाश रे ।
ज्ञान अनंतानंत छै एक समय प्रतिभास रे ॥ लोक०
द्रव्य अनतां लोक छै, खीर नीर ज्यों देख रे ।
पण सत्ता व्यापै नहीं, निश्चय नय इस लेख रे ॥ लोक०
पुरुष आकारा लोक छै षट द्रव्य भरो विचार रे ।
ज्ञेय रूप सब जानिये, चेतन उपजे सार रे ॥ लोक०
घट घट अंतरं चेतना, सिद्ध अवस्था व्याप रे ।
निज ज्ञाता निज ज्ञान शुद्ध है, सिद्ध पद आप रे ॥ लोक०
लोकां के अंतं सिद्ध रमें, अनंतं गुणे अभिराम रे ।
एक में नेक रहा पिण, अब घणा निज पाम रे ।
लोक भावना जानिये ।

बोधि दुर्लभ

बोधि लाभ भावना भली, जीवा बूझो री, जीवा०
आतम ने हितकार । जीवा बूझो री ।
निज घट मांही पावसा जीवा बूझो री, जीवा बूझो ।
निज गुण पर गुण ज्ञान भविक जीवा बूझो री
दस दृष्टान्ते दोहेला जीवा बूझो री
मानुष भव अवतार भविक जीवा बूझो री ।
जैन सिद्धान्त सुणो करचा, जीवा बूझो री
आलस चित्त निवार भविक जीवा बूझो री
संशय विमोह विभ्रम तजो; जीवा बूझो री
सरधान शुद्ध धार, भविक जीवा बूझो री
एक पक्षे दृष्टान्त छे जीवा बूझो री
मिथ्या रजनी दूर भविक जीवा बूझो री
विषय महा मंभार; निज गुण सुख संभाल । भविक०
सवै सिद्धान्ता ने सार छै जीवा बूझो री
अन्तर दृष्टि उधार भविक जीवा बूझो री
नवां कर्म बन्धे नही जीवा बूझो री जीवा०
पूर्वला क्षय आन अविक् जीवा बूझो री
रुचि श्रद्धा परतीत, जीवा बूझो री जीवा बूझो री

धर्म भावना

धर्म जिनेश्वर भाषिया जी, व्यवहार निश्चय जान,
निरबांछित वाहिज रहा जी, निश्चय अन्तर धार ।
जैन धर्म छे सार भविक नर जैनधर्म छे सार ।
द्रव्य क्षेत्र काल भव भ्रमणी भावे, धर्म सोधन भ्रणा लेख,
चार वार अनंत मै पाया, आतमभाव अदेख । भविक नर ...
आपापर नव भेद पिछानो, शिव दा कारण सो ही जानो
चारो कारण आवी मिलसा, तब लेसूँ निर्वान । भविक नर . .
धर्म शब्द बोले है सब जग, पण तो उदय विभाव ।
ता कारण जन पाम्या नाहीं, धर्म है वस्तु स्वभाव । भविक नर ...
अव्रति सम्यक गुण धारी, धर्म आराधे जे ।
देशब्रती श्रावक सूँ विचारी, अनुभव स्वादी ते । भविक नर. ...
करणी दशाविधि मुनि आराधे, अन्तर आतम शुद्ध ।

अतीन्द्रिय सुखके वेता, प्रगटीये निर्मल बुद्ध । भविक नर
 धर्म करतां शिव सुख पावे, चहुं गति दुःख निवार ।
 नर सुर संपत्ति सहजें मिलसी, धर्म विना जग फास ।
 भविक नर जैनधर्म छे सार ।

★ ★ ★

जिन चौबीस नमूं सुखकारी, परम धर्म धन धारी जी
 जिन ये बारह भावन भावी, शिवपुर इच्छा नाही जी ।
 बल त्रयकाल जैन बल अनंता श्री विहरमान जयवंता ।
 निश्चय व्यवहार वंदना मोरी कर्मकी टूटी डोरी जी ॥
 परम्पराय मोटा उपकारी जैनधर्म धन धारी जी ।
 बनारसीदास राजमल विख्याता, ज्ञानदान के दाता ॥
 वर्द्धमान वाचन शुभ्र अक्षया, धर्मसन्त मुभ्र भास्या जी
 बीजा उपकार मोटा कीना, संस्कृत वचन मुभ्र दीनाजी
 अक्षर अर्थ पुनि मात्र दोष जोई, मिथ्या दुःकृत होई जी
 एछो अंधको में कछु भाख्या, तीक्षण जोंजन साखीजी
 ग्रीष्म ऋतु चौमासा होई, समभे चतुर नर जोई जी ।
 कृष्ण पक्ष पंचम शुद्ध वारा, त्रिदश ढाल अधिकारी जी ।
 जिन चौबीस नमूं सुखकारी ।

कवयित्री का डेगगाजीखान से सम्बन्ध था, इसलिये 2-3 स्थानों पर वहाँ के मन्दिर का भी उल्लेख किया है । वहा अध्यात्म सैली थी जिसमे भी मंगल होना लिखा है ।¹

मुलतान नगर मे बनारसीदास के अध्यात्म स्वरूप की पावन गंगा बराबर बहती रही । समयसार, प्रवचनसार, पचास्त्रिकाय जैसे ग्रन्थों की स्वाध्याय का प्रचार बढ़ता गया । उनकी पाण्डुलिपियों को माँग बढ़ती गयी और एक के पश्चात दूसरे ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ की जाती रही । इन 100 वर्षों मे मुलतान नगर अध्यात्म प्रेमियों का केन्द्र बना रहा और ओसवाल दिगम्बर जैन श्रावको ने प्रमुख रूप से धार्मिक चर्चाओं मे भाग लेना जारी रखा । मुलतान के श्रावको का आगरा से बराबर सम्बन्ध बना हुआ था । वे वहाँ जाते आते रहते थे । आगरा के कविराज भैया भगवतीदास से भी वे प्रभावित थे इसलिये उनके ग्रन्थों की भी प्रतिलिपियाँ करायी जाती थी । वास्तव मे सवत 1700 से 1800 तक का समय मुलतान नगर को दिगम्बर जैन समाज के लिये पूर्णतः शान्ति एवं अध्यात्मिक विकास का समय रहा । इस अवधि मे दिगम्बर एव श्वेताम्बर दोनो ही पूर्ण सद्भावना के साथ धार्मिक चर्चाओ मे भाग लेते रहे । श्वेताम्बर सम्प्रदाय के खतर खतरगच्छ

1. सखी डेरे दिगम्बर सैली मै मंगल

के साधु भी दिगम्बर श्रावको के लिये पाण्डुलिपि करते रहे। मुलतान में कितने ऐसे भी पंडित भी थे जो शास्त्र प्रवचन के साथ-साथ प्राचीन ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ करने का कार्य भी करते थे, ऐसे पंडितों में प वीरदास, पं रामदास, प दानचन्द के नाम उल्लेखनीय हैं।

संवत् 1801 से 1900 तक—

संवत् 1800 के पश्चात् मुलतान दिगम्बर जैन समाज का देश के सभी नगरों से सम्बन्ध हो गया। मुलतानी भाई ग्रन्थों की तलाश में चन्देरी, मालपुरा (राजस्थान) वाराणसी, हनुमानगढ़, इन्दौर, सागानेर, जयपुर, पालम—दिल्ली, ललितपुर जैसे नगरों से ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ करवा कर अपने शास्त्र भण्डार के लिये पाण्डुलिपियों का संग्रह करते रहे। जयपुर एवं आगरा से उनका विशेष सम्बन्ध था। अध्यात्म की लहर तेजी से चल रही थी।

अध्यात्म की इस लहर के प्रमुख प्रस्तोता थे महाकवि बनारसीदास जिनके कारण उत्तर भारत के दिगम्बर जैन समाज की काया ही पलट गयी। वे अध्यात्म ग्रन्थों के पाठक बन गये और रात दिन आत्मा और शरीर पर चर्चा करने लगे। इसके पश्चात् सागानेर से बनारसीदास की मृत्यु के कोई 25 वर्ष पश्चात् ही हिन्दी कवि जोधराज गोदीका के पिता अमरा भौसा ने तेरहपथ के नाम से एक नवीन पथ की स्थापना की और दिगम्बर जैन भट्टारको द्वारा प्रचलित शिथिलाचार के विरुद्ध आवाज उठाई गयी। यह पहिला अवसर था जब एक पन्थ की स्थापना किसी श्रीमन्त श्रावक द्वारा की गयी हो। अमरा भौसा ने अदभुत संगठन शक्ति थी इसलिये उसे भट्टारको के युग में भी उन्हीं के विरुद्ध एक नयी विचारधारा को जन्म दिया।

इस तेरहपथ विचारधारा का केन्द्र धीरे-धीरे सागानेर से जयपुर बन गया और यहाँ एक नयी विभूति का उदय हुआ। वह विभूति महापंडित टोडरमलजी के रूप में समाज के सामने आयी। टोडरमलजी अपने समय के सर्वाधिक लोकप्रिय पंडित थे, जैन धर्म के ज्ञाता थे तथा गोमट्टसार, समयसार, त्रिलोकसार, लब्धिसार जैसे उच्चस्तरीय प्राकृत ग्रन्थों के मर्मज्ञ विद्वान थे। वे श्री शान्तिनाथ दि जैन बडामन्दिर तेरहपथियान् धी वालो का रास्ता, जौहरी बाजार में नित्य प्रवचन किया करते थे। जब वे शास्त्र प्रवचन करते तो सैकड़ों हजारों स्त्री-पुरुष उनकी प्रवचन सभा में होते और उनकी अपूर्व प्रवचन शैली से अध्यात्म तत्व चर्चा का आनन्द लेते। संवत् 1811 के पहिले ही उनकी ख्याति राजस्थान की सीमा पार करके उत्तर में मुलतान तक पहुँच गयी थी।



महा पंडित टोडरमलजी

वहाँ के श्रावक पहिले से ही अध्यात्म ग्रन्थो के मर्मज्ञ थे तथा समयसार, प्रवचनसार, पचास्तिकाय जैसे ग्रन्थो का स्वाध्याय करते रहते थे। वहाँ भी नियमित सैली थी जिसमे समाज के सभी स्त्री पुरुष भाग लेते थे। शका समाधान भी होते थे लेकिन कुछ शंकाये ऐसी होती थी जिनका समाधान पूर्णरूप से नही हो पाता था। जब उन्हें पं टोडरमल जी की विद्वत्ता, पांडित्य एवं चर्चा सम्बन्धी ज्ञान की जानकारी मिली तो उन्होने अपनी शकाओं के समाधान चाहने के लिये भारी उत्सुकता प्रकट की। उन्होने पत्र द्वारा अपनी शंकाओं को लिखकर भेजने का निश्चय किया। आखिर पत्र लिखा गया और वह पंडित टोडरमलजी के पास पहुँचा दिया गया। वह मूल पत्र तो किसी शास्त्र भण्डार में प्राप्त नही हुआ है लेकिन पं टोडरमलजी ने जो उनकी शकाओ का समाधान किया वह चिट्ठी के रूप में है और वह जयपुर एवं मुलतान के शास्त्र मे भण्डारो सुरक्षित है। उस चिट्ठी का नाम रहस्यपूर्ण चिट्ठी है जो वास्तव से ही रहस्यपूर्ण है। पं. टोडरमलजी की सम्भवतः यह प्रथम रचना है जो मुलतान एवं जयपुर जैन समाज के लिये धरोहर के रूप में सुरक्षित है।

महापंडित टोडरमलजी ने रहस्यपूर्ण चिट्ठी सवत 1811 माघ वदी 5 के दिन तथा मुलतान निवासी खानचन्दजी, गंगाधरजी, श्रीपालजी, सिद्धार्थदासजी एवं अन्य साधर्मि भाइयो के नाम लिखी थी। इनमे गंगाधर श्रावक तो साह सोमजी के पुत्र थे जिन्होने सवत 1797 मे ब्रह्मविलास की प्रतिलिपि कराई थी तथा जो मुलतान दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्शनगर जयपुर के शास्त्र भण्डार मे सुरक्षित है। ये सभी दिगम्बर जैन श्रावक थे क्योकि पं. टोडरमलजी ने अपनी चिट्ठी मे इन्हे साधर्मि भाई लिखा है। इसके अतिरिक्त पं टोडरमलजी ने भाई श्री रामसिंहजी एवं भुवानी दास का भी पत्र जो जिहानावाद से आया था उसका भी उल्लेख उक्त पत्र या चिट्ठी मे किया है। प्रस्तुत पत्र पं टोडरमलजी के पास किसके माध्यम से आया था इसका कोई उल्लेख नही किया गया है।

रहस्यपूर्ण चिट्ठी पूर्णतः चर्चा प्रधान है तथा उसमे गोम्मटसार समयसार, अष्टसहस्वी, तत्त्वार्थसूत्र आदि ग्रन्थो के आधार पर शकाओं का समाधान किया गया है। यह चिट्ठी अत्यधिक महत्वपूर्ण है तथा मुलतान एवं जयपुर दोनो के लिये स्मरणीय पाती है जिसे हम अविकल रूप से पाठको की जानकारी के लिए यहाँ उद्धृत कर रहे हैं।

रहस्यपूर्ण चिट्ठी

सिद्ध श्री मुलताने नग्न महाशुभस्थान विषै, साधर्मि भाई अनेक उपमा योग्य अध्यात्मरस रोचक भाई श्री खानचन्दजी, गंगाधरजी, श्रीपालजी, सिद्धार्थदासजी, अन्य सर्व साधर्मि योग लिखतं टोडरमल के श्री प्रमुख विनय शब्द अवधारना। यहाँ यथा सभव आनन्द है तुम्हारे चिदानन्द धनके अनुभव से सहजानन्दकी वृद्धि चाहिये।

अपरंच पत्र I तुम्हारे भाईजी श्री रामसिंघजी भुवानीदासजी को आया था तिसके समाचार जहानावादते और साधम्मियोने लिखे थे सो भाईजी ऐसे प्रश्न तुम सारिखें ही लिखे । अवार वतमान काल मे अध्यात्मके रसिक बहुत थोडे है । धन्य है जे स्वात्मानुभवकी वार्ता भी करै है, सौ ही कहा है :—

तत्प्रतिप्रीतचित्तेन, तस्य वार्तापि हि श्रुता ।

निश्चित स भवेद् भव्यो, भावनिर्वाणभाजनं ॥

अर्थ—जिहि जीव प्रसन्न चितकरि इस चेतनस्वरूप आत्मा की बात भी सुनी सो जीव निश्चय कर भव्य है । अल्प काल विषे मोक्ष का पात्र है । सौ भाई जी तुम प्रश्न लिखे तिस कर मेरी बुद्धि अनुसार कुछ लिखिए है सो जानना । और अध्यात्म आगम की चर्चा गर्भित पत्र तो शीघ्र^२ देवों करो । मिलाप कभी होगा तब होगा । और निरन्तर स्वरूपानुभव मे रहना । श्रीरस्तु ।

अर्थ स्वानुभव दशा विषै प्रत्यक्ष परोक्षादिक प्रश्ननिके उत्तर बुद्धि अनुसार लिखिये है ।

तहां प्रथम ही से स्वानुभवका स्वरूप जानने निमित्त लिखिये है ।

जीव पदार्थ अनादिते मिथ्यादृष्टी है सो आपापर के यथार्थरूप विपरीत श्रद्धानका नाम मिथ्यात्व है । वहरि जिस काल किसी जीव के दर्शन मोहके उपशम, क्षयोपशमते आपापरका यथार्थ श्रद्धान रूप तत्त्वार्थ श्रद्धान होय, तब जीव सम्यक्ती होय है । याते आपापरका श्रद्धान विषै शुद्धात्म महान रूप निश्चय सम्यक्त गर्भित है । वहरि जो आपापरका श्रद्धान नहीं है और जिनमत विषे कहे जे देव, गुरु, धर्म तिनको ही माने है, अन्य गत मत विषै कहे देवादिक वा तत्त्वादिक तिन जिनको नहीं माने है तो ऐसे केवल व्यवहार सम्यक्त करि सम्यक्ती नाम पावे नाही । ताते स्वपर भेदविज्ञान को लिये जो तत्त्वार्थ श्रद्धान होय सो सम्यक्त जानना ।

वहरि ऐसा सम्यक्ती होते सते जो ज्ञान पचेन्द्री, पांच इन्द्री छटा मनके द्वारा, क्षयोपशमरूप मिथ्यात्व दशा में कुमति, कुश्रुति रूप होय रहा था सोई ज्ञान अब मति श्रुतिरूप सम्यज्ञान भया । सम्यक्ती जेता कुछ जाने सो जानना सर्व सम्यग्ज्ञान रूप है ।

जो कदाचित घट पटादिक पदार्थनकू अयथार्थ भी जानें तो वह आवरण जनित उदयको अज्ञान भाव है सो क्षयोपशम रूप प्रकटज्ञान है सो तो सर्व सम्यग्ज्ञान ही है । जाते जानने विषै विपरीत रूप पदार्थनकों न साधे है । सो यह सम्यग्ज्ञान केवल ज्ञान का अण है । जैसे थोडासा मेघपटल विलय भयै कछ प्रकाश प्रकट है सौ सर्व प्रकाशक अण है ।

जो ज्ञान मति श्रुतिरूप प्रवर्ते है सौ ही ज्ञान वधिता-वधिता केवलज्ञान रूप होय है । ताते सम्यग्ज्ञान की अपेक्षा तो जाति एक है । वहरि इस सम्यक्ती के परिणाम विषै सविकल्प तथा निर्विकल्परूप होय दो प्रकार प्रवर्ते तहा जो विषय कपायादिरूप वा पूजा, दान शास्त्राभ्यासादिक रूप प्रवर्ते है सो सविकल्परूप जानना यहां प्रश्न .—

जो शुभाशुभरूप प्रशामते सम्यक्तका अस्तित्व कैसे पाइए ।

ताका समाधान—जैसे कोई गुमास्तौ साहूके कार्य विषै प्रवर्ते है, उस कार्य को अपना भी कैहे है हर्ष विषादको भी पावे है, तिस कार्य विषै प्रवर्ते है, तहा अपनी और साहू की जुदाई को नाही विचारे है परन्तु अतरंग श्रद्धान ऐसा है कि यह मेरा कारज नाही । ऐसा कार्यकर्ता गुमास्ता साहूकार है ।

परन्तु साहू के धनकूँ चुराय अपना मानै तो गुमास्तौ चौर ही कहिए । तैसे कर्मोदयजनित शुभाशुभरूप कार्य को कर्ता हुआ तदरूप परणमे तथापि अन्तरंग ऐसा श्रद्धान है कि यह कार्य मेरा नाही । जो शरीराश्रित व्रत सयम कौ भी अपना माने तो मिथ्यादृष्टि होय । सो ऐसे सविकल्प परिणाय होय है ।

अव सविकल्प ही के द्वारकरि निर्विकल्प परिणाम होने का विधान कहिए है :—

सो सम्यक्ती कदाचित् स्वरूप ध्यान करने को उद्यमी होय है तहां प्रथम भेद विज्ञान स्वपर स्वरूप का करै, नौकर्म, द्रव्यकर्म, भावकर्म रहित चैतन्य चित्त चमत्कार मात्र अपना स्वरूप जाने, पीछे परका भी विचार छूट जाय, केवल स्वात्मविचार ही रहे है । तहां अनेक प्रकार निजस्वरूप विषै अहबुद्धि धारै है । मै चिदानन्द हू, शुद्ध हू, सिद्ध हूँ इत्यादि विचार होतें सते सहज ही आनन्द तरंग उठै हैरोमाच होय है ता पीछे ऐसा विचार तो छूट जाय, केवल चिन्मात्र स्वरूप भासने लागे । तहा सर्व परिणाम उस रूप विषै एकाग्र होय प्रवर्ते । दर्शन ज्ञानादिकका वा नय प्रमाणादिकका भी विचार विलय जाय ।

चैतन्य स्वरूप जो सविकल्प ताकरि निश्चय किया था तिस ही विषै व्याप्य व्यापक रूप होय ऐसे प्रवर्ते । जहा ध्याता ध्यायपनो दूर भयो सो ऐसी दशा का नाम निर्विकल्प अनुभव है । सो वडे नयचक्र विषै ऐसा ही कहा है .—

गाथा

ताच्चारणें सण काले समय बुज्झहि जुत्ति मग्गेणा ।

णो आराइण समये पञ्चक्खो अणुहवो जम्हा ॥

अर्थ—तत्त्वका अवलोकन का जो काल ता विषै समय जो है शुद्धात्मा ताको जुत्ता जो नय प्रमाण ताकरि पहलै जानै । पीछे आराधना समय जो अनुभव काल, तिहि विषै नय प्रमाण नाही है । जातै प्रत्यक्ष अनुभव है । जैसे रत्न को खरीद विषे अनेक विकल्प करै है, प्रत्यक्ष वाको पहिरिये तब विकल्प नाही, पहिरने का सुख ही है । ऐसे सविकल्प के द्वारे निर्विकल्प अनुभव होय है ।

वहुरि निर्विकल्प अनुभव विषै जो ज्ञानपञ्चेन्द्री, छट्टा मनके द्वारे प्रवर्ते था सो ज्ञान सब तरफ सो सिमटकर केवल स्वरूप सन्मुख भया । जातै वह ज्ञान क्षयोपशाम रूप है सो एक काल विषे एक ज्ञेयही को जाने, सो ज्ञान स्वरूप जाननै को प्रवर्त्या, तब अन्य का जानना सहज ही रह गया तहा ऐसा दशा भई जो ब्राह्म विकार होय तो भी स्वरूप ध्यानीको कछु खबर नाही, ऐसे मतिज्ञान भी स्वरूप सन्मुख भया । वहुरि नयादि के विचार मितते

श्रुतज्ञान भी स्वरूप सन्मुख भया । ऐसा वर्णन समयसार की टीका आत्मख्याति विषै किया है तथा आत्मा अवलोकनादि विषै है, इस ही वास्ते निर्विकल्प अनुभवको अतेन्द्रिय कहिए है, जाते इन्द्रीनको धर्म तो यह है जो फरस, रस, गन्ध, वर्णको जाने सो यहां नाहीं । अर मन का धर्म यह है जो अनेक विकल्प करे सो भी यही नाही, ताते जव जो ज्ञान इन्द्री मन के द्वारे प्रवर्ते था सो ही ज्ञान अनुभव विषै प्रवर्ते है तथापि ज्ञानको अतीन्द्रिय कहिये है । वहरि इस स्वानुभव को मन द्वारे भी भया कहिये जाते इस अनुभव विषै मतिज्ञान श्रुतज्ञान ही है, और कोई ज्ञान नाहीं ।

मतिश्रुत इन्द्री मनके अवलम्ब विना होय नाहीं सो इन्द्री मन का तो अभाव ही है जाते इन्द्रियका विषय मूर्तिक पदार्थ ही है । वहरि यहां मतिज्ञान है जाते मन का विषय मूर्तिक अमूर्तिक पदार्थ है, सो यहां मन सम्बन्धी परिणाम स्वरूप विषै एकाग्र होय अन्य चिन्ता का विरोध करै है ताते याको मन द्वारे कहिए है ।

‘एकाग्रचिंतानिरोधो ध्यानम्’ ऐसा ध्यान का भी लक्षण है, ऐसा अनुभव दशा विषै सभनै है । तथा नाटक के कवित विषै कहा है :—

दोहा

वस्तु विचारत भावसँ ध्यावते, मन पावै विश्राम ।

रस स्वादित सुख ऊपजै, अनुभव याको नाम ॥

ऐसे मन विना जुदा परिणाम स्वरूप विषै प्रवर्ता नाही ताते स्वानुभवको मन्त जनित भी कहिए । सो अतेन्द्रिय कहने मे अरु मन जनित कहने मे कछु विरोध नही; विवक्षा भेद है ।

वहरि तुम लिख्या “जो आत्मा अतेन्द्रिय है” सो अतेन्द्रिय ही कर ग्रहा जाय, सो भाईजी मन अमूर्तिक का भी ग्रहण करै है, जाते मति श्रुत ज्ञानका विषय सर्व द्रव्य कहै है । उक्त च तत्त्वार्थसूत्रे—

“श्रु गतिक्षु तयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ।”

वहरि तमुने “प्रत्यक्ष परोक्षका प्रश्न लिख्या” सो भाईजी, प्रत्यक्ष परोक्ष के तो भेद हैं नाही । चौथे गुणस्थान में सिद्ध समान क्षायक सम्यक्त हो जाय है, ताते सम्पक्त तो केवल यथार्थ श्रद्धानरूप ही है वह जीव शुभाशुभ कार्यकर्ता भी रहे है ताते तुमने जो लिख्या था कि “निश्चय सम्यक्त प्रत्यक्ष है व्यवहार सम्यक्त परोक्ष है” सो ऐसा नाही है, सम्यक्त के तो तीन भेद है तहा उपशम सम्यक्त अरु क्षायक सम्यक्त तो निर्मल है, जाते मिथ्यात्व उदय इस सम्यक्त विषै क्षयोपशम सम्यक्त समल है । वहरि करि रहित हैं, अर प्रत्यक्ष परोक्ष भेद तो नाही है ।

श्रायक क्षायिक सम्यक्तके शुभाशुभ रूप प्रवर्तता वा स्वानुभवरूप प्रवर्तता सम्यक्त गुण तो सामान्य ही है ताते सम्यक्त तो प्रत्यक्ष परोक्ष भेद न मानना । वहरि प्रमाण के प्रत्यक्ष परोक्ष भेद हैं सो प्रमाण सम्यग्रज्ञान है ताते मतिज्ञान श्रुतज्ञान तो परोक्ष प्रमाण है । अवधि मन पर्यय केवल ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

“आद्ये परोक्षं प्रत्यक्षमन्यत्”

ऐसा सूत्र कहा है तथा तर्कशास्त्र विषे ऐसा लक्षण प्रत्यक्ष परोक्षका है —

“स्पष्टप्रतिभासात्मकं प्रत्यक्षमस्पष्टं परोक्षं”

जो ज्ञान अपने विषयको निर्मलतारूप नीके जाने सो प्रत्यक्ष अर स्पष्ट नीके न ने सो परोक्ष, सो मतिज्ञान श्रुतज्ञान का विषय तो घना परन्तु एक ही ज्ञेयको सम्पूर्ण न न सकें तातै परोक्ष है और अवधि मन पर्यय के विषय थोरे हैं, तथापि अपने विषयको स्पष्ट नीके जाने ताते एक देश प्रत्यक्ष है, अर केवल ज्ञान सर्व ज्ञेयको आप स्पष्ट जानै ताते व प्रत्यक्ष है ।

बहुरि प्रत्यक्ष के दोय भेद है । एक परमार्थ प्रत्यक्ष दूसरा व्यवहार प्रत्यक्ष है । अवधि मन पर्यय केवल तो स्पष्ट प्रतिभासरूप है ही ताते पारमार्थिक है । बहुरि ॥६६॥ वरणादिकको जानिए है । ताते इनको साव्यवहारक प्रत्यक्ष कहिए, जाने जो वस्तु मे मिश्र अनेक वर्ण है ते नेत्र कर नीके ग्रहे जाय है ।

बहुरि परोक्ष प्रमाण के पाच भेद है—1. स्मृति, 2 प्रत्यभिज्ञान, 3. तर्क, अनुमान, 5 आगम ।

तहा जो पूर्व वस्तु जानी कौ याद करि जानना सो स्मृति कहिये ।

दृष्टात कर वस्तु निश्चय कीजिये सो प्रत्यभिज्ञान कहिये ।

हेतुके विचारते लिया जो ज्ञान सो तर्क कहिए ।

हेतुतै साध्य वस्तुका जो ज्ञान सो अनुमान कहिए ।

आगमते जो ज्ञान होय सो आगम कहिए ।

ऐसे प्रत्यक्ष परोक्ष प्रमाण के भेद किये है सोई स्वानुभव दशा मे जो आत्मा को निर सो श्रुतज्ञान कर जानिए है । श्रुतज्ञान है सो मतिज्ञान पूर्वक ही है, सो मतिज्ञान श्रुतज्ञान परोक्ष कहै तातै यहा आत्मा का जानना प्रत्यक्ष नाही । बहुरि अवधि मन पर्यय का विषय रूपी पदार्थ ही है अर केवलज्ञान हृदयरूप के है नाही ताते अनुभव विषे अवधि मन पर्यय केवल करि आत्मा का जानना ना हो । बहुरि यहां आत्माकं स्पष्ट नीके नाही जाने है, ताते पारमार्थिक प्रत्यक्षपना तो सम्भव नाही, बहुरि जैसे नेत्रादिक जानिए है ताते एक देश निर्मलता लिये भी आत्मा के असख्यात प्रदेशादिक न जानिए है ताते साव्यवहारिक प्रत्यक्षपणे भी सम्भव नाही ।

यहां पर तो आगम अनुमानादिक परोक्ष ज्ञानकरि आत्मा का अनुभव होय है । जैनागम विषे जैसा आत्माका स्वरूप कहा है ताकूं तैसा जान उस विषे परिणामो कों मग्न करै हैं ताते आगम परोक्ष प्रमाण कहिए, अथवा मे आत्मा ही हूं ताते मुझ विषे ज्ञान है । जहा-जहां ज्ञान तहा-तहां आत्मा है जैसे सिद्धादिक है । बहुरि जहां आत्मा नाही तहां ज्ञान भी नाही जैसे मृतक क्लेवरादिक है । ऐसे अनुमान करि वस्तु का निश्चय कर उस विषे परिणाममग्न करै है, ताते अनुमान परोक्ष प्रमाण कहिए अथवा आगम अनुमानादिक कर जो वस्तु जानने मे आया तिसहीको याद रखके उस विषे परिणाम मग्न करै है ताते

स्मृति कहिए । ऐसे इत्यादिक प्रकार स्वानुभव विषै परोक्ष प्रमाण कर ही आत्मा विषै परिणाम मग्न हो ताका कछु विशेष जानपान होता नाही । बहुरि यहा प्रश्न :—

जो सविकल्प निर्विकल्प विषे जानने का विशेष नाही तो अधिक आनन्द कैसे होय है ।

ताका समाधान—सविकल्प दशा विषै ज्ञान अनेक जेयको जानने रूप प्रवर्तै था ते निर्विकल्प दशा विषै केवल आत्मा को ही जानने में प्रवर्त्या, एक तो यह विशेषता है, दूसरी यह विशेषता है जो परिणाम नाना विकल्प विषै परिणामै था सो केवल स्वरूप ही सौ तदात्मरूप होय प्रवर्त्या, तीजी यह विशेषता है कि इन दोनों विशेषताओं के होते वचनातीत अपूर्व आनन्द होय है । जो विषय सेवन विषे उसके अश की भी जात नाही ताते उस आनन्दकी अतेन्द्रिय कहिये । बहुरि यहां प्रश्न :—

जो अनुभव विषे भी आत्मा सो परोक्ष ही है तो ग्रन्थन विषे अनुभवकूँ प्रत्यक्ष कैसे कहिए ।

ऊपर की गाथा विषै ही कहा है । “पच्चाखा अणहवो जम्हौ ताका समाधान अनुभव विषै आत्मा तो परोक्ष ही है. कछु आत्मा के प्रदेश आकार तो भासते नाही परन्तु जो स्वरूप विषे परिणाम मग्न होते स्वानुभाव भया, सो वह स्वानुभव प्रत्यक्ष है । स्वानुभवका स्वाद कछु आगम अनुमानादिक परोक्ष प्रमाणादिक कर न जाने है । आप ही अनुभव के रस, स्वादको वेदै है । जैसे कोई अन्धा पुरुष मिश्रीको आस्वादे है, तहा मिश्रीके आकारादिक तो परोक्ष है, जो जिहवाकरि जो स्वाद लिया है सो वह स्वाद प्रत्यक्ष है ऐसा जानना ।

अथवा जो प्रत्यक्ष की सी नाईं होय तिसको भी प्रत्यक्ष कहिए । जैसे लोक विषे कहिये है—हमने स्वप्न विषै वा ध्यान विषै फलाने पुरुषको प्रत्यक्ष देखा, सो प्रत्यक्ष देखा नाही, परन्तु प्रत्यक्षकीसी नाईं प्रत्यक्षवत् यथार्थ देखा ताते प्रत्यक्ष कहिए । तैसे अनुभव विषे आत्मा प्रत्यक्ष की नाईं यथार्थ प्रतिभासे है ताते इस न्याय करि आत्माका भी प्रत्यक्ष जानना होय है ऐसे कहिए है सो दोष नाही । कथन तो अनेक प्रकार होय परन्तु वह सर्व आगम अध्यात्म शास्त्रनसो विरोध न होय तैसे विवक्षा भेद करि कथन जानना । यहा प्रश्न .—

जो ऐसे अनुभव कौन गुणस्थानमें कहे हैं ।

ताका समाधान—चाँथे ही से होय है परन्तु चाँथे तो बहुत कालके अन्तरालमें होय है । और ऊपरके गुणठाने शीघ्र होय है । बहुरि प्रश्न —

जो अनुभव तो निर्विकल्प है तहा ऊपर के और नीचे के गुणस्थाननि में भेद कहा ।

ताका उत्तर—परिणामन की मग्नता विषै विरोध है । दोय पुरुष नाम ले है अर दो ही का परिणाम नाम विषै हैं तहा एककै तो मग्नता विशेष है अर एककै स्तोक है तैसे जानना । बहुरि प्रश्न :—

जो निर्विकल्प अनुभव विषै कोई विकल्प नाही तो शुक्ल ध्यान का प्रथम भेद

प्रथक्त्ववितर्क वीचार कहा, तहां प्रथक्त्व वितर्कवीचार-नाना प्रकार श्रुत अर वीचार, अर्थ व्यजन योग, सक्रमन ऐसे रूप क्यो कहा ?

तिसका उत्तर —कथन दोय प्रकार है एक स्थूलरूप है, एक सूक्ष्मरूप है। जैसे स्थूलता करि तो छटे ही गुणस्थाने सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत कहा, अर सूक्ष्मताकर नवमे गुणस्थान ताई मैश्रुमैथुनत्तसज्ञा कही तैसे यहा अनुभव विषै निर्विकल्पता स्थूलरूप कहिये है। वहुरी। सूक्ष्मता करि प्रथक्त्ववितर्क वीचारादिक भेद वा, कषायादि दशामाताई कहे है। सो अब्र आपके जानने मे वा अन्य खे जानने मे आवे ऐसा भाव का कथन स्थूल जानना, अर जो आप भी न जाने केवली भगवान ही जाने सो ऐसे भावका कथन सूक्ष्म जानना, अर करणानुयोगादिक विषै सूक्ष्म कथन की मुख्यता है अर चरणानुयोगादिक विषे स्थूल कथन की मुख्यता है ऐसा भेद और भी ठिकाने जानना। ऐसा निर्विकल्प अनुभव का स्वरूप जानना।

बहुरि भाईजी, तुम तीन दृष्टान्त लिखे वा दृष्टान्त विषै लिखा प्रश्न सो दृष्टान्त सर्वांग मिलता नाही। दृष्टान्त है सो एक प्रयोजनकौ दिखावै है सो यहा द्वितीया का विधु (चन्द्रमा) जलबिन्दु, अग्निकणिका, एतो एकदेश है, अर पूर्णमासी को चन्द्र महासागर अग्निकुंड एक सर्वदेश है। तेसे ही चौथे गुणस्थानवर्ती आत्मा को ज्ञानादि गुण एक-देश प्रकट भये है तिनकी अर तेरहवे गुणस्थानवर्ती आत्मा के ज्ञानादिक गुण सर्व प्रकट होय है तिनकी एक जाति है। तहा तुम प्रश्न लिखा.—

जो एक जाति है जैसे केवली सर्व ज्ञेयोको प्रत्यक्ष जाने है तेसे चौथे गुणस्थान वाला भी आत्माको प्रत्यक्ष जानता होगा ?

ताका उत्तर-सो भाईजी, प्रत्यक्ष ताकी अपेक्षा एक जाति नाही सम्यज्ञान की अपेक्षा एक जाति है। चौथे वाले के मति श्रुतरूप सम्यज्ञान है और तेरहवे वाले के केवलरूप सम्यज्ञान है, बहुरि एकदेश सर्वदेश का तो अन्तर इतना ही है जो मति श्रुतवाला अमूर्तिक वस्तुको अप्रत्यक्ष मूर्तिक वस्तुको भी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष किञ्चित अनुक्रमसो जाने है। अर सर्वथा सर्वको केवलज्ञानी धुगपत् जाने है वह परोक्ष जाने यह प्रत्यक्ष जानै, इतना विशेष है अर सर्व प्रकार एक ही जाति कहिए तो जैसे केवली धुगपत् प्रत्यक्ष अप्रयोजन [ज्ञेयोको निर्विकल्प रूप जानै तैसे ए भी जाने सो तोहै नाही, ताते प्रत्यक्ष परोक्ष मे विशेष जानना।

उक्तं च प्रष्टसहस्री मध्ये—श्लोक—

स्याद्वादकेवलज्ञाने सर्वतत्त्वप्रकाशने।

भेदसाक्षादसाक्षाच्च ब्रह्मवस्त्वन्यतमं भवेत् ॥

याका अर्थ—स्याद्वाद जो श्रुतज्ञान अर केवलज्ञान ते दोय सर्व तत्त्वनके प्रकाशनहारे हैं, विशेष इतना—केवलज्ञान प्रत्यक्ष है, श्रुतज्ञान परोक्ष है। वस्तु रूप से यह दोनो एक दूसरे से भिन्न नाही है। बहुरि तुम निश्चय सम्यक्त्व का स्वरूप अर व्यवहार सम्यक्त्वका स्वरूप लिख्या।

सो सत्य है, परन्तु इतना जानना सम्यक्त्ववी के व्यवहार सम्यक्त्व विषे निश्चय सम्यक्त्व गभित है सदैव गमनरूप है। बहुरि लिखी साधर्मी कहे हैं आत्मा को प्रत्यक्ष जाने तो कर्म वर्गणा को प्रत्यक्ष क्यों न जाने।

सो कहिए है आत्माको प्रत्यक्ष तो केवली ही जानें कर्मवर्गणाको अवधि-ज्ञानी भी जाने है। बहुरि तुम लिखा—

द्वितीया के चन्द्रमा की ज्यों आत्मा के प्रदेश थौरे खुले कहा। ताका उत्तर—

यह दृष्टान्त प्रदेशन की अपेक्षा नाही, यह दृष्टान्त गुण की अपेक्षा है। अर सम्यक्त्व विषे अनुभव विषे प्रत्यक्षादिक के प्रश्न लिखे थे तुमने, तिनका उत्तर मेरी बुद्धि अनुसार लिखा है। तुम हू जिनवानीतै अपनी परणतिसे मिलाय लेना। अर विशेष कहा ताई लिखिये। जो बात जानिए सो लिखने मे आवे नाही। मिले कुछ कहिये भी सो मिलना कर्माधीन, तातें भला यह है कि चैतन्य स्वरूप की प्राप्ति के उद्यम मे रहना व अनुभव मे वर्तना सो वर्तमानकाल विषे अध्यात्म तत्व तो आत्मा ही है।

तिस समयसार ग्रन्थ की अमृतचन्द्र आचार्यकृत टीका सस्कृत विषे है अर आगम की चर्चा गोमट्टसार विषे है तथा और भी अन्य ग्रन्थ विषे है, सो जानी है, सो सर्व लिखने मे आवे नाहि। तातें तुम अध्यात्म आगम ग्रन्थ का अभ्यास रखना अर स्वरूप विषे मग्न रहना अर तुम कोई विशेष ग्रन्थ जाने होवे तो मुझको लिख भेजना। साधर्मी के तो परस्पर चर्चा ही चाहिए, अर मेरी तो इतनी बुद्धि है नाही। परन्तु तुम सारिखे भाइनसो परस्पर विचार है, सो अब कहा तक लिखिये। जेतै मिलना नही तेतै पत्र तो शीघ्र ही लिखा करो।

मिती फागुन बदी 5 विक्रम सं. 1811

—टोडरमल

उक्त चिट्ठी के अतिरिक्त संवत् 1811 का वर्ष मुलतान समाज के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा। इसी संवत् मे किशनसिंह के क्रियाकोश की प्रतिलिपि की गयी।¹ यह प्रतिलिपि भी जयपुर मे ही करायी गयी और फिर उसे मुलतान के शास्त्र भण्डार मे विराजमान किया गया। क्रियाकोश श्रावको की क्रियाओं का ग्रन्थ है। यह इस बात का भी द्योतक है कि मुलतान के जैन बन्धु क्रियाकोश में प्रतिपादित क्रियाओ के पक्षपाती थे तथा उनकी जानकारी प्राप्त करना चाहते थे। क्रियाकोश के अतिरिक्त संवत् 1811 मे पूज्यवाद की सर्वार्थसिद्धि की भी प्रतिलिपि करवा कर शास्त्र भण्डार मे विराजमान की गयी। उस समय मुलतान मे सस्कृत के पाठक भी हो गये थे। संवत् 1811 मे ही तत्त्वार्थ सूत्र की आचार्य कनककीर्तिकी भाषा टीका की प्रति करवाकर शास्त्र भण्डार मे विराजमान की गई।

लुरिन्दामल

इसी समय मुलतान में श्रावक लुरिन्दामल हुए जो दिगम्बर जैन ओसवाल जाति के थे तथा सिंघवी जिनका गोत्र था। लुरिन्दामल अच्छे पढ़े लिखे थे तथा स्वाध्याय में अत्यधिक रुचि रखते थे। वे देश के कितने ही स्थानों में धूम-धूम कर ग्रन्थों की प्रतिलिपि स्वयं करके अथवा दूसरों से करवाकर उनको स्वाध्याय करने के पश्चात् मुलतान के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में विराजमान करते रहते थे। लुरिन्दामल सर्वप्रथम आगरा गये और वहां उन्होंने महाकवि भूधरदास जी के पार्श्वपुराण की प्रतिलिपि की। उस दिन संवत् 1817 पोष सुदी 1 मंगलवार था।¹

संवत् 1818 में लुरिन्दामल आगरा से सूरत बन्दरगाह गये और वहां जाकर भी आपने “तारातबोल की पत्रिका” की प्रतिलिपि की। इस पत्रिका में मुलतान नगर का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि ठाकुर बुलाकीदास खत्री मुलतान का ही रहने वाला था। वह मुलतान से अहमदाबाद आया था और फिर 5500 मील की यात्रा की थी। और फिर उसने वापिस अहमदाबाद जाकर अपनी यात्रा समाप्त की थी। इस पत्रिका की सारी सामग्री महत्वपूर्ण है और भूगोल के कितने ही तथ्यों को प्रस्तुत करती हैं।² सूरत में लुरिन्दामल आठ वर्ष से भी अधिक रहे। संवत् 1825 में उन्होंने सबोधसत्तरी, नयचक्र, षट्पाहुड एवं पंचास्तिकाय जैसे ग्रन्थों की

1. पार्श्वपुराण—भूधरदास, लिखतु लुरीदानु सवाल सिंघवी वस्ति मुलतान श्री आगरे विच सं० 1817 मिति पोह सुदि 1 बार मंगलवार शुभ दिन समाप्त कीनां।

2. तारातंबोल की पत्रिका : संवत् 1684 मिति मंगसर सुदी 13 स्याह-जहान तखत बंठा। पीछे नी बात छ श्री मुलतान को वासी ठाकुर बुलाकीदास जात को खतरी ते देस देसांतर फिर के देखी न घर आवा तिन बात कही सो लिखी छे।

प्रथम श्री गुजरात मध्ये अहमदाबाद की तारातंबोल नामे नगर कोष 5550 छे श्री मुलतान को वासी ठाकुर बुलाकिदास जात को खतरी ते फिर आउ तिन बात कही छे ते लिखी छे श्री करंज मध्ये श्री राजा अर्भेसिंह लिख यो कही छे ते बात विसतरी छे पिछे खरी खोटी श्री बीतराग जी जाणे सो 1818 मिति माह सुदी 6 वारस सूरत बंदर विच लुरन्दानारी।

प्रतिलिपि समाप्त की और उन्हें लाकर मुलतान के शास्त्र भण्डार में विराजमान किया ।¹

इसके पश्चात् लुरिन्दामल को कथाओं को पढ़ने की इच्छा हुई इसलिए सवत् 1836 की फाल्गुण वृदी एकम को "पुण्याश्रव कथाकोश" की प्रतिलिपि कराई । लिपिकर्ता महात्मा गुमानीराम थे । इसमें प्रतिलिपिकार ने लुरिन्दामल को श्रावक उपाधि से सम्बोधित किया है ।² इसी वर्ष उन्होंने अपने लिये प० वशीधर कृत द्रव्य सग्रह भाषा टीका की प्रतिलिपि श्वेताम्बर मोतीराम से कराई ।

लुरिन्दामल सब नगरों में भ्रमण करके वापिस मुलतान आ गये और वहाँ अपने लिये सवत् 1843 में परमात्म प्रकाश भाषा की प्रतिलिपि करवायी ।³ प्रणस्ति के अनुसार लुरिन्दामल ओसवाल दिगम्बर जैन थे तथा कणोडे सिंघवी उनका गौत्र था । उन्हें दिगम्बर धर्म के प्रचार प्रसार की अत्यधिक चिन्ता थी तथा वे चाहते थे कि देश में स्वाध्याय का प्रचार हो और जैन बन्धु जैन धर्म के महात्म्य को जाने । इसीलिए प्रणस्ति के अन्त में लिखा है—

जिनधरम के प्रभाव वरधमान होउ ।

दिन दिन विषै जैवन्त होउ ॥

लुरिन्दामल के वंशज वर्तमान समय में आदर्श नगर जयपुर एवं दिल्ली में रहते हैं उनके पश्चात् होने वाली सन्तान का परिचय निम्न प्रकार है—

1. संबोधसतरी—1-19, नयचक्र मूल टीका 1-27, षट्पाहुड 28-48, पंचास्तिकाय 82 तक, संवत् 1825 मिति सावन प्रथम सुदि 15 वार सुक्रवार सूरत बंदर मध्ये लिखत लुरीदामल सिंघवी ओसवाल मुलतानी ।
2. पुण्याश्रव कथाकोष पृष्ठ 233, संवत् 1836 का वर्षे शाके 1801 मासोत्तम मासे उत्तम मासे फाल्गुण मासे शुभे कृष्ण पक्षे पुन्यतिथौ 12 गुरुवासरे इदं पुस्तकां लिपिकृता महात्मा गुमानीराम श्रावक लुरीदामल जी आत्म पठनार्थे शुभं भवतु ।
3. परमात्म प्रकाश भाषा श्री मूलताण नगर मध्ये संवत् 1843 : अठारहमई तेतालीस मासोत्तम मासे असाढ मासे कृष्णा पक्षे सप्तमी 7 दिने रविवारे संपूरण भया श्री जिनधरम के प्रभाव वरधमान होउ दिन दिन विषै जैवन्त होउ । श्री मूलत्राण नगरवासी सा० उडीन्दामल कणोडे उसवाल वचनार्थ लिपिकृतं नैनसुख ।

दौलतराम ओसवाल

दौलतराम नाम के कितने ही कवि हुये हैं इनमें जयपुर के दौलतराम कासलीवाल एव अलीगढ़ के दौलतराम सर्वाधिक लोकप्रिय विद्वान हैं । दौलतराम कासलीवाल का समय संवत् 1749 से 1829 का माना गया है । दूसरे दौलतराम का समय संवत् 1855 से 1923 का है । लेकिन अभी मुलतान दिगम्बर जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार को देखते समय एक नये दौलतराम की कृति मिली है जो मुलतान के ही निवासी थे । मुलतान नगर में स्वाध्याय प्रेमियों, ग्रन्थ लिपिकारों तथा जैन साधुओं के अतिरिक्त संवत् 1800 अथवा इसके पूर्व "दौलतराम" नामक कवि हुये जिनको संस्कृत ग्रन्थों की भाषा टीका करने में रुचि थी । उनका जन्म कब हुआ तथा उनके माता पिता आदि कौन थे इस सम्बन्ध में अभी खोज नहीं हो सकी है लेकिन इतना अवश्य है कि वे मुलतानवासी थे, ओसवाल जाति के दिगम्बर जैन श्रावक थे तथा विद्वान थे । संवत् 1828 में जब उनका इन्दौर नगर जाना हुआ तो वहाँ पर मल्लिनाथ चरित्र की भाषा टीका लिखी । यह ग्रन्थ अभी तक अज्ञात था तथा इसके सम्बन्ध में हमें प्रथम बार जानकारी प्राप्त हुई है । मल्लिनाथ चरित्र भट्टारक सकलकीर्ति द्वारा रचित संस्कृत का काव्य ग्रन्थ है जिसकी इन्होंने हिन्दी गद्य में टीका लिखी थी । इसकी एक प्रति मुलतान दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्श नगर जयपुर के शास्त्र भण्डार में सुरक्षित है जो संवत् 1955 भाद्रपद सुदी 14 की लिखी हुई है ।

जयपुर में होने वाले महाकवि दौलतराम कासलीवाल का भी यही समय है । उनकी अन्तिम रचना पुरुषार्थसिद्धयुपाय भाषा टीका है जिसको महापंडित टोडरमल जी अपूर्ण ही छोड़ गये थे और जिसका रचना काल संवत् 1827 है ।

इसके अतिरिक्त दौलतराम कासलीवाल एवं दौलतराम ओसवाल की भाषा में भी काफी अन्तर है इसलिए दौलतराम ओसवाल भिन्न कवि हैं । मल्लिनाथ चरित्र भाषा टीका के अन्त में उन्होंने अपना परिचय निम्न प्रकार दिया है—

संवत् अठारसत अठवीस भौम दिन तिथि निरवाण महावीर निरग्रन्थ है ॥
जिनको इन्दौर में निमित्त बुद्धि दौलत की बुद्धि की विलास भयो मल्लिनाथ ग्रन्थ है ॥
देववानी अर्थ प्रमाणी भाषा ठानी जामे ता करि के खुले भव्य मेधा मधि ग्रन्थ है ॥
तदपि सकल कवि कोविद किया के मेरी मदता को हरो कछू लगत न ग्रन्थ है ॥

इति श्री सकलकीर्ति आचारज विरचित संस्कृति श्री मल्लिनाथ चरित्र अनुसार समाप्त । इह टीका भाषा वचनिका दौलतराम ओसवाल मुलतानी कही है श्री मिति भाद्रपद सुदी 14 संवत् 1955 शके 1820 शुभ ।

मल्लिनाथ चरित्र की भाषा यद्यपि ढंढारी है किन्तु उस पर मुलतानी प्रभाव है उसका एक उदाहरण इस प्रकार है—

प्रातः समय सूर्य का प्रकाश भया । वंदीजन मधुर मधुर स्वर सहित गीति गायते हुते । अनेक प्रकार घर घर विपै मंगल होते भये । ता समय भेरी का शब्द सुनि कटि क्षीण भई है निन्द्रा जाकी ऐसी प्रजावती राणी समस्त मंगल की धरण हारी, प्रबोध प्राप्ति भई । सती जिन पत्यंक से उठि करि समस्त मंगल की सिद्धि अर्थ सामायिकादि धर्मध्याण करती हुई ।

मल्लिनाथ चरित्र भाषा का आदि भाग निम्न प्रकार है—

ॐ नमः सिद्धेभ्यः । अथ मल्लिनाथ चरित्र लिख्यते । प्रथम ही मंगलाचरण निमित्ति चौबीस तीर्थकरनि को नमस्कार करे है ।

दोहा

श्री आदीश्वर आदि पुनि अंत समय जिनवीर ।
नमो जोरि करि ते हमै, देउ बुद्धि गम्भीर ॥

जिनवाणी को नमस्कार—

श्री जिनवर वागीश्वरी सप्तभंग मय सार ।
नमो जोरि करि सो हमै होहु सुमति दातार ॥

गुरुनि को नमस्कार—गतागत दोहा—

नमौ जतन वसि वपु तजौ तपु वसि वन तजि भौन ।
नमो चरण गुरुवर तपी तरवर गुण रचि मौन ॥

दोहा—

मल्ल जिणोस असत्य होइ, पायो अविचल थान ।
सति माफिक तिनि कौ अगम, कहो चरित्र बधान ॥

संवत् 1851 से 1900 तक

संवत् 1851 से 1900 का काल मुलतान समाज के लिए अधिक उत्साहवर्धक सिद्ध नहीं हुआ । इन वर्षों में विभिन्न श्रावकों द्वारा ग्रन्थों की प्रतिलिपियां करवा कर शास्त्र भण्डार में विराजमान की गयी । लेकिन स्वाध्याय की उस परम्परा में कुछ शिथिलता आयी लगती है । यद्यपि बनारसीदास का समयसार नाटक समाज में सर्वाधिक लोकप्रिय कृति मानी जाती रही लेकिन मुलतान जैन समाज का इसके प्रति पहिले जैसा आकर्षण नहीं रहा ।

संवत् 1868 में उकेश वंश में प्यारामल दुग्गड हुए । ये धार्मिक प्रवृत्ति के श्रावक थे । इन्होंने अपने स्वयं के पढ़ने के लिए मुलतान में ही तत्त्वार्थ सूत्र सस्कृत टीका की प्रतिलिपि करवायी । प्रतिलिपि से यह स्पष्ट है कि मुलतान में उस समय सस्कृत के पाठी श्रावक थे ।¹

1. तत्त्वार्थ सूत्रटीका—सर्वार्थसिद्धिः, अपूर्ण, पत्र संख्या 149 । संवत् 1868 वर्ष फागण सुदी 5 मूलचक्र मध्ये लिखावंत उक्केशवंशे जेकामल जी तत्पुत्र सूबेराय जी तत्पुत्र प्यारामल दुगर पठनार्थ ।

संवत् 1871 में तत्त्वार्थ सूत्र की पुनः प्रतिलिपि करवायी गयी और उसे शास्त्र भण्डार में विराजमान किया गया। प्रतिलिपि सागानेर (जयपुर) में हुई थी तथा प्रतिलिपि करवाने वाले थे सुश्रावक दयाचन्द ।¹

मुलतान में श्रावक रूपलाल थे। उन्हें स्वाध्याय की रुचि थी इसलिये संवत् 1880 में नेमिचन्द्रिका की एक पाण्डुलिपि उन्होंने वजरंगलाल कन्नोज वाले से प्राप्त की तथा स्वाध्याय के पश्चात् उसे मुलतान के शास्त्र भण्डार को भेंट कर दी ।² रूपलाल ने मनोहरलाल खण्डेलवाल कृत धर्म परीक्षा की पाण्डुलिपि फरक्कावाद में लिखवा कर प्राप्त की और उसे भी स्वाध्याय के पश्चात् शास्त्र भण्डार को भेंट कर दी ।³ संवत् 1911 में चौबीस महाराज मण्डल पूजा की प्रतिलिपि देहली में करवायी गयी ।⁴

जयपुर प्रतिष्ठा में भाग लेना—

संवत् 1861 में जयपुर नगर में एक बड़े भारी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन हुआ। उसके आयोजक थे श्री नन्दलाल जी छावडा। यह प्रतिष्ठा महोत्सव एक दृष्टि से राजस्थान में होने वाले पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सवों में विशाल स्तर पर मनाये जाने वाले प्रतिष्ठा महोत्सवों में से एक था। जिसमें हजारों की संख्या में

1. सूत्र टीका : हिन्दी । पत्र संख्या 190

संवत् क्षपानाथ गजाद्रिचंद्रे पोषे सिते भूत तिथौ कवौ च ।
व्यलेखि संग्रामपुरे मयैषा ग्रन्थश्चिरं तिष्ठतु वाच्यमान ।
सुश्रावक दयाचन्द जी लिखायिता स्ववाचनार्थं ।

2. नेमचन्द्रिका : एक सहस्र अथ अठ सत वरष असीती और ।

याही संवत् मों करी पूरन यहु गुनगौर ।
फाल्गुणस्य तमौ पक्षे अष्टम्यां बुधवासरे ।
कृते मुन्नूलालस्य लिपि एषा विनिर्मिता ।

पीथी इह रूपलाल मुलतानी की मनरंगलाल कन्नोजवाले दीना पढता अरथ फरका का विच . .. सवालाल दीनी ।

3. धर्मपरीक्षा—मनोहरलाल खण्डेलवाल । लिपि संवत् 1871 । श्री शास्त्र जी लिखाई फरक्कावाद मध्ये रूपलाल मुलतान वाले वचनार्थं मिति सुदी 12 संवत् 1909

4 चौबीस महाराज मण्डल की पूजा—वृन्दावन पृष्ठ 76 लिखते नानगचन्द श्रावक जैसवाल बीसपंथी मूलसंघी हवेली पालम मध्ये जैष्ठ कृष्णा 2 संवत् 1911 पुस्तक लिखवाई रूपलाल श्रावक मुलतान वाले ने इन्द्रप्रस्थ मध्ये ।

जिन त्रिमूर्तियों की प्रतिष्ठा की गयी थी। मुलतान के भी कुछ श्रावक इस प्रतिष्ठा महोत्सव में सम्मिलित हुये थे। उन्होंने मुलतान के दिगम्बर जैन मन्दिर के लिए कुछ मूर्तियों की प्रतिष्ठा भी करवायी थी जो आज वहा के मन्दिर में विराजमान है।

संवत् 1901 से 2004 तक (अगस्त 1947 भारत विभाजन तक)

मुलतान का दिगम्बर जैन समाज अपनी धार्मिकता, साधर्मि जनो के प्रति सहज वात्सल्य एवं सामाजिक जाग्रति के कारण सारे देश में प्रसिद्ध हो गया। पजाब के नगरो मे ही नही किन्तु राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश, देहली आदि सभी प्रान्तो के श्रावक मुलतान जाते और मुलतानवासी वन्धु अन्य प्रान्तो की यात्रा करते रहते। देश मे अंग्रेजी शासन का विस्तार हो रहा था और उस समय पजाब मे अंग्रेजी शासन स्थापित हो चुका था। सामान्यत सर्वत्र शान्ति व्याप्त थी इसलिए मुलतान से अन्य नगरो मे जाने आने का कार्य बराबर चालू था। मुलतान का और देहली के उपनगर पालम एव जिहानावाद का विशेष सम्बन्ध हो गया था। इन दोनो ही उपनगरो मे उस समय ग्रन्थों के प्रतिलिपि करवाने की अच्छी व्यवस्था थी इसलिए मुलतान के श्रावक यहां आते ही रहते और हस्तलिखित पाण्डुलिपियो को खरीद कर अपने नगर के मन्दिर मे विराजमान कर दिया करते थे। जयपुर, आगरा, अजमेर एव इन्दौर की दिगम्बर जैन समाज से वहा की समाज का अच्छा सम्पर्क था।

‘सुदृष्टि तरंगिणी’ जयपुर के विद्वान टेकचन्द की रचना है। संवत् 1823 में प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना की गयी थी। इस समय टोडरमल जी का युग था और उनके युग के अनुसार ही इस ग्रन्थ की रचना सम्पन्न हुई थी। इसी ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर के निवासी महात्मा गदचन्द ने जिहानावाद मे की थी। उसको लिखाने वाले थे गोयल गोत्रीय सनेहीलाल जैनाग्रवाल। संवत् 1902 मे पहिले देहली के हरसुखराय के मन्दिर मे ग्रन्थ को विराजमान किया गया लेकिन बाद मे मुलतान समाज के आग्रह से उसे मुलतान के शास्त्र भण्डार में भेट स्वरूप दिया गया।¹

1. सुदृष्टितरंगिणी—लिखतं गदचंदमहात्मा वासी सवाई जयपुर का हाल सुखवास दिल्ली जिहानावाद जैसिघपुरा मध्ये। लिखायत लाला सनेहीलाल न्यात अग्रवाल श्रावक जैनी गोत्र गोयल वासी हिसाकहै के हाल सुखवास दिल्ली जिहानावाद मध्ये अनार की गली मध्ये सहली लाला हरसुखराय के मन्दिर मध्ये लिखी मिति श्रावण सुदी 4 गुरुवासरे संवत् 1902।

जयपुर के पं० जयचन्द जी छावड़ा भी मुलतान में काफी लोकप्रिय थे । उनकी कृतियों के स्वाध्याय का भी वहा अच्छा प्रचार था । इसलिए सवत् 1905^३ में और फिर संवत् 1962^३ में अष्टपाहुड भाषा की मुलतान समाज के लिए जयपुर में प्रतिलिपि करायी गयी । इसी तरह संवत् 1916 में देवागम स्तोत्र भाषा की प्रतिलिपि प्राप्त की गयी । यह था जयपुर और मुलतान का सम्बन्ध । वास्तव में मुलतान वासियों के लिए तो जयपुर सदैव घर जैसा रहा है और उनका यहा बराबर आवागमन भी होता रहा ।

देहली में भी मुलतानी बन्धु व्यापार कार्य से आते जाते रहते थे । उन्ही में से एक थे हीरालाल ओसवाल । संवत् 1907 में उन्ही हीरालाल ने बखतावर सिंह से जिनदत्त चरित्र लिखवाकर मुलतान को भिजवाया था ।^३ इसी समय वहाँ घनश्यामदास नामक श्रावक थे । वे भी शास्त्रों के लिखवाने एवं उन्हे विद्वानों को भेट करने में रुचि लेते थे । मुलतान में उस समय पं० हमीरमल थे जो स्वाध्यायी एवं तत्व चर्चा में रुचि रखने वाले थे । इसलिए श्रावक घनश्यामदास ने उनको विभिन्न पाठों के संग्रह वाला गुटका भेट स्वरूप दिया जिसमें “सम्यकत्व कौमुदी” आदि बहुत से पाठ हैं ।^४

साहित्यिक दृष्टि से सम्वत् 1909 मुलतान समाज के इतिहास में विशेष उल्लेखनीय है । इस वर्ष जिन श्रावकों ने साहित्यिक कार्यों में विशेष योगदान दिया उनके नाम हैं धर्म पत्नी सां० होवणमल पारख, खुशीराम सिघवी, सां० मोहनमल सिघवी एवं सां० वेगवाणी । ये सभी श्रावक मुलतान समाज के

1. अष्टपाहुड भाषा—पं० जयचन्द छावड़ा, पत्र सं० 199, रचनाकाल: 1867 भादवा सुदी 13 । लिपि स्थान जयपुर तेरहपंथ मन्दिर । लिपिकाल 1905 पौष सुदी सप्तमी ।
2. अष्टपाहुड भाषा—पं० जयचंद छावड़ा । पत्र संख्या 132, रचनाकाल 1867 भादवा सुदी 13 लिपि । स्थान—जयपुर तेरहपंथ मन्दिर । लिपिकाल संवत् 1962 पौष सुदी पंचमी ।
3. जिनदत्त चरित्र—बखतावरलाल—लिखितं दीली मध्ये बखतावरसिंह जैनी अग्रवाल ने मुलतान वाले हीरालाल ओसवाल रहने वाले हाल देहरे में तिनके माथे दीणी से बखतावरसिंह ने लिखकर है संवत् 1907 भागशीर्ष शुक्ल पक्षे 9 बुधवासरे ।
4. गुटका सम्यकत्वकौमुदी कथा आदि—संवत् 1908 मित्ती कार्तिक बुदी 12 भोमवासरे तथ जिनधर्मामृतपोषक शास्त्र घनश्याम जी इदं पुस्तक पं० हमीरमल दत्त ।

सम्माननाय व्याक्त थ तथा उन्हान वहा के शास्त्र भण्डार से श्रावकाचार भाषा, भगवती आराधना भाषा, हरिवंश पुराण भाषा एवं प्रवचनसार भाषा आदि शास्त्र लिखवाकर भेट किये थे। सबकी सुचि अलग अलग थी। कोई श्रावकाचार को उपयोगी मानता था तथा दूसरा हरिवंशपुराण को। एक की दृष्टि में भगवती आराधना का अधिक उपयोग था तो दूसरे की दृष्टि में प्रवचनसार भाषा का अधिक महत्व था। लेकिन सभी का ध्यान समाज में ज्ञानवर्धन की ओर था।

संवत् 1923 में दर्शनसार भाषा की प्रतिलिपि प्राप्त की गयी। यह पं० शिवजीलाल जी की कृति है जो जयपुर के थे। उन्होने अपना परिचय निम्न प्रकार दिया है—

पंडित शिवजीलाल प्रधान, मध्य सवाई जयपुर थान।

सकल शास्त्र निर्धार बर्णाड़, रच्यो दर्शनसार सुभाड़।।

इसी वर्ष सदासुख कासलीवाल की अर्थप्रकाशिका की पाण्डुलिपि पालम में अमीचन्द श्रावक से लिखवा कर प्राप्त की गयी।¹ इसी प्रतिलिपिकार द्वारा संवत् 1929 में लालजोत 'कृत अकृत्रिम जिन मन्दिर पूजा की प्रति' की गयी।

संवत् 1927 में वहां पंडित शिवराम थे जो कश्मीरी पंडित थे। समाज के आग्रह से उन्होने मुलतान में ही परिमल्ल कवि के श्रीपाल चरित्र की प्रतिलिपि की थी।

जैन विवाह पद्धति

जब देश में जैन पद्धति से विवाह कराने की आवाज उठी, तथा विद्वानों द्वारा पुरजोर मांग की गयी तो मुलतान समाज कैसे पीछे रहने वाला था। उसने भी संवत् 1938 में विवाह पद्धति की प्रति लिखवा कर समाज के उपयोग के लिये प्राप्त की। इससे समस्त समाज के साथ चलने की उनकी भावना का परिचय मिलता है।²

राजाराम दिगम्बर जैन औसवाल भी पंडित, टोडरमलजी, भाई रायमल्ल एवं जयचन्द जी के बड़े भक्त थे। उन्होने अपने पढ़ने के लिये श्रावकाचार भाषा वचनिका ज्ञानानन्दपूरित निरभरनिजरस : की प्रतिलिपि प क्षेम शर्मा से करवायी। पंडितजी मुलतान में ही रहते थे इसलिये वही पर यह कार्य सम्पन्न हो गया। लेकिन इस भाषा

1. अर्थप्रकाशिका—सदासुख—पृष्ठ संख्या 453 रचनाकाल संवत् 1914 बैशाख सुदी 10, लिपिकाल संवत् 1923 लिख्यतं अमीचंद श्रावक पालम मध्ये मिति पौष कृष्ण 2 वार अतवार संवत् 1923.)

2. विवाह पद्धति—मिति मंगसिर शुक्ला 15 वार रविवार संवत् 1938 लिखायतं कार्य मुलतान के जैनी लोग अपने पढ़ने के लिये।

वचनिका को आमानन्द कृत लिख दिया गया है।² जबकि यह भाई रायमल्ल द्वारा लिखा गया एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है तथा जिसकी प्रतिलिपि जयपुर के भण्डारो में संग्रहीत है। श्रावकाचारो की प्रतिलिपिया प्राप्त करने की इच्छुक समाज द्वारा इसके अगले वर्ष भागचन्द कृत अमितीगति श्रावकाचार भाषा की प्रति संग्रहीत की गयी। भागचन्दजी ने संवत् 1920 में उसे ग्वालियर छावनी के मन्दिर में समाप्त की थी। जब मुलतान समाज को श्रावकाचार के बारे में जानकारी मिली तो पालम नगर में प० सुगनचन्द से प्रतिलिपि करवाई गयी और उसे शास्त्र भण्डार में विराजमान किया गया।³

कल्याणीबाई

मुलतान में महिलाओं में भी स्वाध्याय एवं तत्वचर्चा की अच्छी प्रवृत्ति थी। पहिले हम माणकदेवी एवं अमोलका बाई का परिचय दे चुके हैं। अमोलका बाई के समान कल्याणी बाई यद्यपि कवयत्री नहीं थी लेकिन ग्रन्थों के पढ़ने में बड़ी रुचि लेती थी—[कल्याणीबाई कौन थी तथा उसके माता पिता एवं पति के नाम क्या थे इसका अभी पता नहीं चला सका है। लेकिन मुलतान दि० जैन मन्दिर आदर्शनगर में कुछ ग्रन्थ ऐसे हैं जिनके पीछे “यह ग्रन्थ कल्याणी बाई का है” इस प्रकार लिखा हुआ है। ऐसे ग्रन्थों में नेमिचन्द्रिका, क्रियासार एवं योगसार भाषा के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस प्रकार समाज में अनेक उदार, धर्मनिष्ठ एवं समाजसेवी व्यक्ति हुए। समाज में ऐसे बहुत से महानुभाव थे जिसके हृदय में सदैव समाजहित की चिन्ता रहती थी, तथा उनकी भगवान महावीर के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार में रुचि थी। कुछ अपनी साधना द्वारा धर्म की महिमा को प्रकट करना चाहते थे तथा बहुत से धनिक एवं सम्पन्न व्यक्ति गरीबों एवं बेरोजगारी को सहारा देने में बड़ी प्रसन्नता का अनुभव करते थे। इसलिये सबका विस्तृत परिचय देना तो संभव नहीं है किन्तु यहां कुछ विशिष्ट समाज सेवियों का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है—

1. श्रावकाचार भाषा वचनिका—ज्ञानानन्द पूरित निरभर निजरस नामः संवत् 16 राजत केवल ज्ञान जुत परम औदारिककाय ।
निरखि छवि भवि छकत है पौ रस सहज सुनाय ।
इति श्री श्रावकाचार भाषा वचनिकाः आसानन्दकृतः सम्पूर्णम् । अथ शुभ संवत् 1938 श्रावण कृष्ण प्रतिपदायां भौमे लिपिकृतं सेवालय विप्रेण स्वपठनार्थं भाई राजाराम ओसवाल मुलतान देश मध्ये ।
2. अमितीगति श्रावकाचार भाषा—भागचन्द । पत्र संख्या 218 । रचना काल संवत् 1920 आषाढ की अष्टान्हिका । लिपिकाल संवत् 1939 लिख्यतं सुगनचन्द श्रावक जैसवाल पालम ग्राम मध्ये । रचना स्थानः ग्वालियर के पास छावनी : पार्श्वनाथ जिनालय ।

श्री घनश्यामदासजी सिंगवी

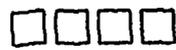
श्री घनश्यामदासजी सिंगवी श्री ऋक्की-
रामजी के पुत्र एवं श्री लुणीन्दामल सिंगवी
के पोत्र थे।

श्री लुणिन्दामलजी का परिचय 33, 34,
5, पृष्ठों में दिया गया है।

मुलतान दिगम्बर जैन समाज में श्री घनश्याम
दास सुपुत्र श्री रिक्की राम सिंगवी, एक आदर्श
महापुरुष गिने जाते हैं। समाज में उनके प्रति जो
गहरा सम्मान था, आदर एवं श्रद्धा थी वैसे सम्मान
अच्छे से अच्छे व्यक्ति को भी मिलना कठिन हो
जाता है। वे धन सम्पत्ति से सम्पन्न तो थे ही साथ
ही चरित्र में भी बहुत ऊँचे थे। धनाढ्य होते हुए
भी सिद्धान्त ग्रन्थों के अच्छे वेत्ता थे। पूरा
मुलतान समाज ही नहीं किन्तु डेरागाजीखान एवं
अन्य नगरों की समाज भी उनके निर्देशानुसार
चलती थी वे भी समाज की आवश्यकताओं
का अनुसरण करते थे।

दिगम्बर धर्म में उनकी दृढ़ आस्था थी
तथा उनकी हार्दिक इच्छा भी यही रहती थी कि
धर्म का अधिक से अधिक प्रचार हो। उनकी
श्रद्धापूर्वक भाइयों से अक्सर गूढ़ सैद्धान्तिक
चर्चाएँ होती रहती थी। उन्हें सत्य मार्ग को समझाने का पूरा प्रयत्न करते हैं; उन्हें
अपने मिशन में पूर्ण सफलता मिली और मुलतान के ही सर्व श्री चौथूराम सिंगवी एवं
श्री भोलाराम बगवानी एवं नेभराज बगवानी आदि परिवारों को दिगम्बर धर्म में दीक्षित
किया। इस प्रकार सारे मुलतान समाज को अपने आदर्श जीवन से अनुप्राणित करते हुए
आप सन् 1950 के पूर्व ही स्वर्गलोक के वासी हो गये लेकिन समाज में आपने जो चेतना
जागृत की थी वह सदैव स्मरणीय रहेगी।

जहाँ आप धार्मिक क्षेत्र में धर्मज्ञ एवं निष्ठावान एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे वहाँ
व्यवसाय में भी आप बहुत ऊँचे दर्जे के व्यापारी थे। आपकी मुलतान एवं डेरागाजीखान में
हाथी दात एवं कपड़े आदि के संस्थान थे। आपके रिखवदासजी, छोगामलजी एवं श्री सन्ती
राम तीन पुत्र थे जिनका परिचय आगे दिया जा रहा है।



श्री घनश्यामदास सिंगवी

श्री छोगमलजी सिगवी



श्री छोगमल सिगवी

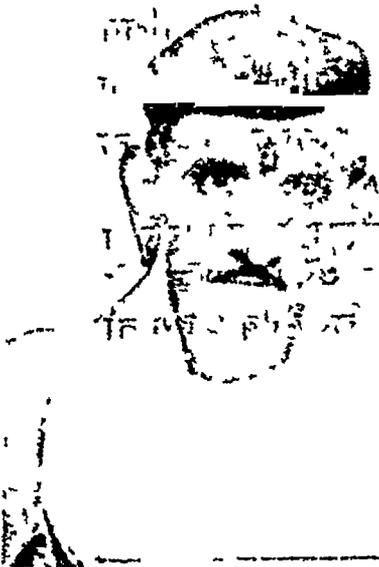
दु खियो को भी गुप्त सहायता देकर उनकी हर तरह से मदद करते। आप समाज में प्रतिभाशाली एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपका व्यवसाय हाथी दांत के बूड़ों का था जो शहर भर में प्रसिद्ध एवं उच्च कोटि का था।

आपके श्री गुमानीचदजी, श्री नेमीचदजी, श्री बुद्धसेन जी तीन पुत्र एवं एक पुत्री थी। आप विशेष धर्म साधन हेतु दशलक्षण पर्व पर डेरागाजीखान गये हुए थे, जहां आकस्मिक बीमारी के कारण असमर्थ में ही आपका देहांवसान हो गया। आप समाज का पूरा ध्यान रखते थे। आपको छत्रछाया में समाज अपने आपको गौरवान्वित समझती था।



श्री राजाराम बगवानी

श्री राजारामजी बगवानी ने असवाल दिगम्बर जैन परिवार में जन्म लिया था। नया बचपन से ही अच्छे संस्कारों में पले। प्रति दिन देव दर्शन स्वाध्याय आदि बाल्य अवस्था से ही करते थे। स्वाध्याय के बल पर ही उन्हें शास्त्रों का अच्छा अभ्यास हो गया। भाषा शैली एवं स्मरणशक्ति अच्छी थी। युवा अवस्था में ही उनकी विद्वानों में गिनती होने लगी और वे प्रति दिन शास्त्र प्रवचन करने लगे।



श्री राजाराम बगवानी

बगवानीजी को मंत्रों आदि की भी अच्छी ज्ञान था। उन्होंने कई लोगों को चमत्कार भी दिखाये। एक वार मुलतान शहर में प्लेग फैल गया था, पूरा शहर इस बीमारी से आक्रान्त हो गया। लोग शहर के बाहर जाकर रहने लगे। मगर राजारामजी ने अपने मंत्र द्वारा ऐसा चमत्कार दिखाया कि महामारी का अभाव हो गया और

लोग वापस अपने घरों में जाकर रहने लगे। आपने श्रावकाचार भाषा वचनिका, ज्ञानानन्दपूरित निरभर-निजरस आदि की प्रतिलिपिया पं० क्षेम शर्मा से मुलतान में ही करवाई जो आज भी शास्त्र भण्डार में मौजूद है। आपके किशनचंद एवं नेमीचंद जी दो पुत्र थे।



श्री चौथूरामजी सिगवी

श्री चौथूरामजी पुत्र श्री गोपालदासजी सिगवी पहले श्वेताम्बर जैन थे। श्री घनश्यामदास जी के साथ तत्त्व चर्चा से सही सिद्धान्त एवं आत्मकल्याण का सही मार्ग समझ में आ जाने के कारण दिगम्बर धर्म में दीक्षित हो गये और अपना सारा जीवन धार्मिक कार्यों के लिए समर्पित कर दिया।

आप प्रातः काल उठते ही सामायिक, स्वाध्याय आदि स्वयं करते तथा अन्य साधर्मि भाइयों को भी कराते। तत्पश्चात् नित्यकर्म से निवृत्त होकर मंदिर जाकर स्वयं पूजन आदि करते एवं युवकों को पूजा स्वाध्याय आदि की प्रेरणा देते थे। सभा में शास्त्र प्रवचन सुनने के पश्चात् घण्टों खूद स्वाध्याय करते और अन्य भाइयों के साथ चर्चा करते। इसमें श्री भोलारामजी बगवानी उनके विशेष साथी थे।



श्री चौथूरामजी सिगवी

आपको मोक्ष-मार्ग प्रकाशक में विशेष रुचि थी। बीसो बार उसका स्वाध्याय किया था जिससे उन्हें वह कठस्थ सा हो गया था। वे बच्चों, युवकों, सभी को स्वाध्याय करने की प्रेरणा देते। स्वाध्याय के बल पर ही उनको सिद्धांत की अच्छी जानकारी हो गयी थी।

वे अन्य मतावलंबियों के साथ जैन सिद्धांतों के बारे में विशेषकर ईश्वर कर्ता, अहिंसा आदि विषयों पर ही चर्चा करते थे। यहां तक कि मुसलमानों के साथ मसजिद आदि में भी जाकर अहिंसा आदि के महत्व पर वार्तालाप करते।

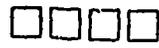
उनका जीवन साधारण था। स्वभाव से वे सरल किन्तु आचरण में दृढ़ थे। देखा जाय तो उनका जीवन व्रतियों जैसा था। सच्चाई, ईमानदारी के कारण उनका धन्धा भी अच्छा चलता था। वे नवयुवकों को स्वतंत्र कामधन्धा करने को प्रेरित करते रहते थे। यही नहीं उन्हें हर तरह से सहयोग देकर एवं उनके विवाह आदि करा कर अच्छा सद्गृहस्थ बनाने में पूर्ण सहयोग देते थे। समाज में उनकी बातों का पूर्ण विश्वास था। जैसा वो कहते वो ही होता। इसी तरह से श्री चौथूराम ने पचासो युवकों के जीवन का निर्माण किया। अपनी

पुत्रियों के विवाह आदि सम्पन्न करने के पश्चात् दस हजार रुपये अपने पास रखने का नियम लेकर अपना धन्धा छोड़ दिया और पूरा समय समाज एव धर्म की सेवा में समर्पित कर दिया ।

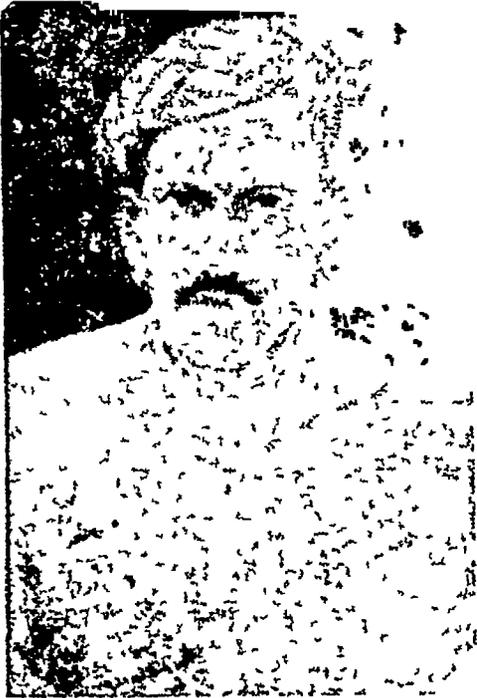
60 वर्ष की आयु के लगभग उनको कम दिखने लगा, फिर भी स्वाध्याय करना नहीं छोड़ा । स्वयं पढ़ने योग्य न होते हुए भी दूसरों से सुनते और युवकों को घर से बुला-बुला कर शास्त्राभ्यासी बनने हेतु मोक्ष मार्ग प्रकाशक आदि का स्वाध्याय करवाते । यदि वे किसी पक्ति को पढ़ने में चूक जाते तो उसे स्वयं ठीक बोल कर सुधरवा देते ।

उनके कोई पुत्र नहीं था । अपनी बड़ी लड़की के पुत्र जयकुमार (जो वर्तमान में मुलतान दिगम्बर जैन समाज के मंत्री हैं) को वचपन से अपने पास रखा और बाद में उन्हें गोद लेकर अपना लड़का बना लिया ।

सन् 2003 में आपकी मृत्यु के समय आपका दत्तक पुत्र एव अन्य सबंधी एक विवाह में डेरागाजीखान गये हुए थे । उसी दिन सायंकाल अचानक उन्हें अपने अन्तिम समय का ज्ञान हो गया । अपनी भानजी को बुलाकर सिद्धों की आरती बोलने को कहा और स्वयं भी बोलने लगे । जैसे ही आरती समाप्त हुई बोलते-बोलते आप इस नश्वर देह को छोड़कर 70 वर्ष की आयु में स्वर्गलोक सिंघार गये ।



श्री भोलारामजी बगवानी



श्री भोलाराम बगवानी

श्री थारचामल जी के पुत्र श्री भोलाराम बगवानी मुलतान दिगम्बर जैन समाज के सम्मानित व्यक्ति थे । पहिले वह श्वेताम्बर जैन थे लेकिन बाद में श्री घनश्यामदास जी से धर्म का सत्यमार्ग समझ कर दिगम्बर धर्म में दीक्षित हो गये । स्वाध्याय में गहरी रुचि होने के कारण वे कितने ही ग्रंथों के अच्छे ज्ञाता हो गये ।

महाकवि बनारसीदास के समयसार नाटक को उन्होंने कितनी ही बार स्वाध्याय किया था इसलिये उन्हें बहुत से दोहे एव सबंधी कठस्थ याद हो गये और जब कभी शास्त्र सभा में किसी श्रोता द्वारा प्रश्न उपस्थित होता तो वे उसका उत्तर दोहा सबंधी मुनाकर दे दिया करते थे । उन्हें धर्म के प्रति इतनी लगन हो गयी थी कि प्रतिदिन 3-4 घण्टे तक शास्त्रों का स्वाध्याय करते रहते थे ।

श्री भोलाराम का जीवन अत्यधिक सरल एवं धार्मिक क्रियाओं से सम्पन्न था। 45 वर्ष की आयु में व्यवसाय आदि छोड़ ब्रह्मचर्य व्रत लेकर उदासीन जीवन व्यतीत करने लगे तथा समाज को अपने जीवन से प्रेरित करते रहते। मुलतान समाज में उनके प्रति गहरी श्रद्धा थी।

बगवानी जी ज्यादा पढ़े लिखे नहीं थे तो भी स्वाध्याय के बल पर वे हिन्दी के अच्छे ज्ञाता हो गये थे। वे गोम्मटसार जैसे ग्रन्थों का स्वाध्याय करने लगे थे।

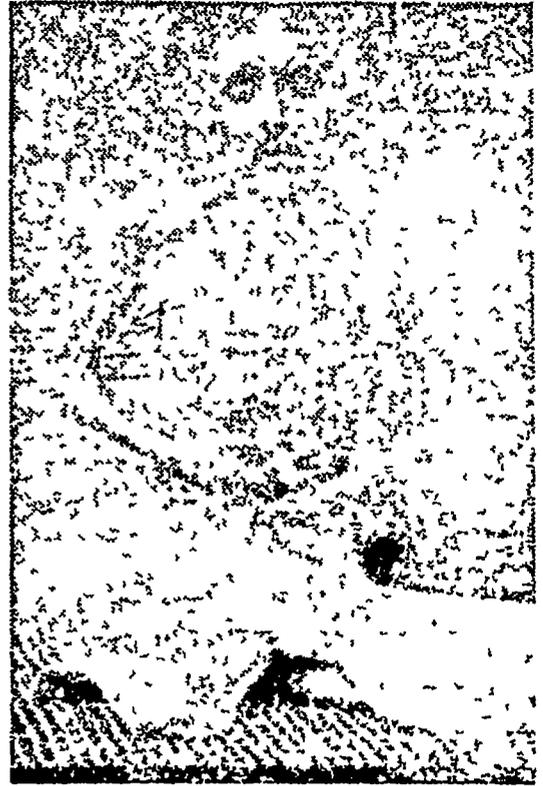
स्वाध्याय के बल पर उन्होंने मुलतान से मोरेना विद्यालय में जाकर गोम्मट-सार की परीक्षा दी और उसमें प्रथम स्थान प्राप्त किया। मोरेना से मुलतान आते समय रास्ते में फिरोजपुर पहुँचे जहाँ उनका स्वास्थ्य अधिक खराब होने से फिरोजपुर में ही स्वर्गवास हो गया।

भोलाराम जी के तीन लड़के थे, जिनके नाम श्री रिखवदास श्री आसानन्द एवं श्री रंगूलाल हैं। तीनों ही लड़के धार्मिक प्रवृत्ति के थे, तथा सामाजिक कार्यों में गहरी रुचि लेते थे।



श्री दासूरामजी (जिनदासमलजी) सिंगवी

श्री दासूरामजी (जिनदासमलजी) सिंगवी का जन्म श्री फतेहचन्दजी पुत्र श्री नोतनदासजी सिंगवी के घर मुलतान में हुआ। श्री दासूरामजी, जिनदासमलजी के नाम से अधिक प्रसिद्ध थे। लाला जिनदासमलजी जैन समाज के उन व्यक्तियों में से थे जिनका सम्पूर्ण जीवन समाज सेवा में समर्पित था। आप स्वभाव से शान्तिप्रिय, विवेकी, धर्मनिष्ठ और बुद्धिजीवी, कर्मठ कार्यकर्ता, कुशल संचालक एवं निष्ठावान समाजसेवी थे। अनाथ विधवाओं, विद्यार्थियों एवं दीनदुखियों तथा बेरोजगार भाइयों की सेवा करने में आपको बड़ी रुचि थी। ऐसे कार्यों को अपना स्वयं का जरूरी से जरूरी कार्य छोड़कर पहले करने को तत्पर रहते थे। समाज में प्रेम,

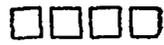


श्री दासूरामजी सिंगवी

वात्सल्य एवं एकता बनाये रखने में आपका पूर्ण सहयोग मिलता रहता था इसके लिये आप जितना भी त्याग बलिदान कर सकते करने को तैयार रहते थे ।

आप साधारण परिस्थितियों में होते हुए भी अपनी बुद्धिमत्ता से अपने व्यवसाय को इतना बढ़ाया कि आपकी गिनती उच्च व्यवसायियों में होने लगी । आप इतने बुद्धिमान एवं न्यायप्रिय थे कि समाज में किसी भी परिवार के सदस्यों में कोई आपसी विवाद हो जाता तो वे आपसे पक्षपात रहित न्याय की अपेक्षा करते हुए आपके पास आते और आप ऐसा न्याय सगत फैसला करते कि परिवार में शान्ति एवं सौहार्द का वातावरण उत्पन्न हो जाता ।

आप स्वाध्याय प्रेमी और कुशल वक्ता भी थे । शास्त्र सभा में आप प्रभावशाली प्रेरणादायक प्रवचन किया करते थे । आपके श्री चादारामजी (जिनकी दुर्घटना से असामयिक मृत्यु हो गयी), श्री माधोदासजी, और श्री बलभद्र कुमार जी तीन पुत्र हैं जो आपकी तरह धर्मज्ञ, सेवाभावी एवं शान्तिप्रिय हैं । आपका सन् 1947 से पूर्व ही समाधि पूर्वक स्वर्गवास हो गया ।

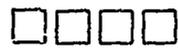


श्री पदमचन्दजी नौलखा

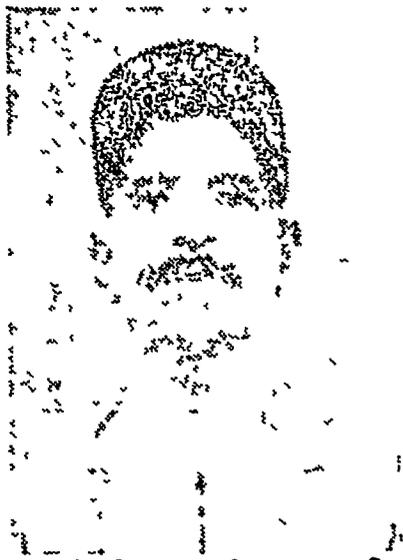
श्री पदमचंद जी नौलखा का जन्म मुलतान में ओसवाल दिगम्बर जैन समाज के प्राचीनतम परिवार में हुआ था । मुलतान दिगम्बर जैन समाज के इतिहास में आपके पूर्वजों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है । आपके पिता का नाम श्री मूलचन्दजी नौलखा था । आप समाज में उत्साही एवं कर्मठ कार्यकर्ता थे । समाज के किसी भी परिवार पर आई विपत्ति के समय आप हर प्रकार से काम आने वाले व्यक्ति थे । धर्मज्ञता तो आपके परिवार की परम्परागत विरासत थी । णमोकार मंत्र पर आपकी अगाध एवं दृढ श्रद्धा थी ।

नौलखा जी मुलतान में जनरल मर्चेन्ट के अच्छे व्यापारी थे । उनकी मियां चन्नू मण्डी में भी एक दुकान थी । आप मुलतान से वहाँ गये हुए थे कि उसी दिन रात्रि को 11वजे आपकी दुकान की लाइन में एक पसारी की दुकान को आग लग गयी और एक के बाद दूसरी दुकान जलने लगी । आपको वहाँ के तहसीलदार ने दुकान खाली कर देने को कहा किन्तु आप मना करके दुकान के सामने पटरी पर बैठकर णमोकार मन्त्र का जाप करने लगे । देखते देखते आग आपकी दुकान को छोड़कर अगली दुकानों में फैल गई । लाइन में चार दुकाने पूर्व की तथा तीन दुकाने पश्चिम की ओर की जल गयी बीच में आपकी दुकान ज्यों की त्यों बच गई जिससे मण्डी में नौलखा जी के प्रभाव की बात विजली की तरह फैल गई और सैकड़ों लोग आपके दर्शन करने आने लगे ।

इसी प्रकार सन् 1930 मे क्वेटा, बलूचिस्तान मे भूकम्प आया था तब आप उन्ही दिनो वहा पर व्यवसाय करते थे और सारा परिवार आपके साथ रहता था। भूकम्प के समय जहा सारा क्वेटा तहस-नहस हो गया और परिवार के परिवार मौत के मुह मे चले गये किन्तु आपके अतिरिक्त परिवार के एक वच्चे को भी चाट तक नही लगी। आपको अवश्य चोट लगी किन्तु फिर भी णमोकार मन्त्र का जाप सावधानी पूर्वक करते रहे। आपने अपने लडके से कहा नुरुसान जो हुआ सो हुआ मैं मुलतान से स्वाध्याय के लिये मोक्षमार्ग प्रकाशक हस्तलिखित ग्रन्थ लाया था उसे किसी तरह से अवश्य ढु ढवा लेना। ऐसा कहते ही चन्द मिनटो मे भूकम्प का दूसरा झटका लगते ही मकान का बचा हुआ भाग भी आ गिरा और वह ग्रन्थ चाकी सहित आपके सामने आ गया। क्वेटा मे ही सात दिन की बीमारी के बाद आपका देहान्त हो गया। आपके जीवन मे कितनी ही ऐसी घटनाये है जो णमोकार मन्त्र के प्रति श्रद्धा एव प्रेरणा पैदा करती है। आप अपने पीछे श्री मानकचन्द एवं श्री जयकुमार दो लडके छोड गये।



श्री नेमीचन्दजी बगवानी



श्री नेमीचन्द जी बगवानी

श्री नेमीचन्दजी बगवानी श्रीराजाराम के सुपुत्र थे तथा अपने पिता के समान वे भी समाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे। अपने व्यापार के अतिरिक्त जितना भी उन्हे समय मिलता वह सब समाज सेवा मे व्यतीत करते थे। जैन धर्म के प्रचार प्रसार की उनकी तीव्र उत्कण्ठा थी। वे अच्छे कार्यकर्ता थे।

आपने मुलतान मे दस वर्ष के वच्चो से लेकर बीस वर्ष के युवको तक की दो भजन मण्डलिया बनायी तथा मण्डली के सभी सदस्यो को गाने एव बजाने की शिक्षा दिलवाई। कुछ ही वर्षो मे इन सगीत मण्डलियो ने सारे पजाब मे ख्याति प्राप्त की। श्री नेमीचन्दजी इन मण्डलियो के प्रमुख थे। इसलिये जहा से उन्हे बुलावा आता वे सबको साथ लेकर सहर्ष जाते और सगीत के माध्यम से जैन धर्म का प्रचार प्रसार करते। इन भजन मण्डलियो ने अमृतसर, लाहौर, सहारनपुर, फिरोजपुर, शिमला, देहली, पानीपत आदि स्थानो मे कार्यक्रम देकर अपनी सगीत निपुणता की छाप छोडी थी।

मुलतान के मन्दिर की वे पूरी देखभाल करते थे तथा उसे नवीनतम रूप देने मे उनका पूरा सहयोग रहा था। आपके एकमात्र पुत्र श्री कन्हैयालाल जी है। आपका स्वर्गवास सन् 1947 से पूर्व हो गया।

पंडित अजितकुमारजी शास्त्री



प अजितकुमारजी शास्त्री उत्तर प्रदेश के चावली (आगरा) ग्राम के निवासी थे। छोटी अवस्था में ही आपको माता पिता का वियोग हो गया। पहिले चौरासी मथुरा में और फिर बनारस में आपने शिक्षा प्राप्त की तथा आपको प चैनसुख दासजी, प राजेन्द्र कुमारजी एव प. कैलाशचंदजी, शास्त्री जैसे मेधावी साथी मिले। सन् 1923 में आपका विवाह हुआ। आप बम्बई काम करने गये और 1924 में दिगम्बर जैन पाठशाला के अध्यापक के रूप में मुलतान आ गये। उन्होंने वहाँ पर समस्त युवको, प्रौढ़ पुरुषों एव महिलाओं को जैन सिद्धान्त पढाया तथा अच्छी धार्मिक जागृति पैदा की। प. अजितकुमारजी के मुलतान आने से मुलतान समाज का उत्तर भारत की जैन समाज से और भी अच्छा सम्बन्ध स्थापित हो गया। जब अम्बाला में

प० अजित कुमारजी शास्त्री शास्त्रार्थ सघ की स्थापना की गयी तो प० अजितकुमारजी उसके प्रमुख कार्यकर्ता थे। सघ ने जैन दर्शन नामक पत्र का मुलतान से प्रकाशन किया और पण्डितजी उसके तीन सम्पादकों में से एक सम्पादक थे। आप बहुत उच्च कोटि के लेखक भी थे। आपने 25 से अधिक पुस्तकें लिखीं जिनमें 'सत्यार्थ दर्पण', 'श्वेताम्बर मत समीक्षा', 'दुःढक मत समीक्षा' आदि पुस्तकें प्रमुख हैं। आपने कई पुस्तकों एव पत्रों का सम्पादन भी किया। जैन दर्शन में 'सघ भेद' के नाम से उनकी लम्बी लेखमाला चली थी। उनके सम्पादकीय लेखों की बड़ी हुई शैली थी।

पण्डितजी को शास्त्रार्थ करने में बड़ी रुचि थी। आपने व पण्डित राजेन्द्र कुमारजी ने आर्य समाज के साथ कई शास्त्रार्थ किये जिनमें मुलतान का शास्त्रार्थ उल्लेखनीय है। जिसके प्रभाव से आर्य समाज के प्रकाण्ड विद्वान्, स्वामी कर्मानन्दजी जैन धर्म में दीक्षित हुए थे। मुलतान में आपने अकलक प्रेस लगा लिया था।

मुलतान जैन समाज से आपका विशेष सम्बन्ध हो गया था। यही कारण है कि लगातार 23 वर्ष तक आप मुलतान में ही रहे और सन् 1947 के पश्चात् आप मुलतान छोड़कर दिल्ली आ बसे। आपका वहाँ भी मुलतान समाज से वैसा ही सम्पर्क रहा और समाज भी आपको अपना अभिन्न अंग मानती रही। मृत्यु के कुछ वर्ष पूर्व आप शान्तिवीर नगर श्री महावीर जी आ गये और वहाँ आपने शान्तिवीर मन्दिर में ग्रन्थ प्रकाशन आदि का कार्य सभाल लिया। 19 मई 1968 को रात्रि में अचानक छत से गिर जाने के कारण दुर्घटना में आपका स्वर्गवास हो गया।

पण्डितजी अपने समय के ज्योतिमान दीपको मे से थे तथा निर्भोक सम्पादक, कुशल साहित्यिक एव जैन सिद्धान्त के मर्मज्ञ थे। श्री शास्त्रीजी ऐसे दीपक थे जिन्होंने विवादो मे भयकर तूफानो के बीच भी अपनी ज्योति ज्यो की त्यो रखी। पण्डितजी पर मुलतान समाज को ही नहीं अपितु समस्त जैन समाज को सदा गर्व रहेगा। आप अपने पीछे अपनी पत्नी श्रीमती चमेलाबाई, एक पुत्र एव चार पुत्रिया छोड गये है।



संवत् 1901 से 2004 तक की अन्य प्रमुख सामाजिक गतिविधियाँ

विक्रम संवत् 1901 से संवत् 2000 तक सौ वर्ष का समय दीपक की लौ के समान रहा जो बुझने से पूर्व अधिक प्रकाश करता है। इसी तरह मुलतान दिगम्बर जैन समाज इन वर्षों के समय मे, धार्मिक, आध्यात्मिक एव सामाजिक दृष्टि से चरम उत्कर्ष पर था। वहा समय-समय पर आध्यात्मिक चर्चाओ के अतिरिक्त विशाल उत्सव भी मनाये जाते रहे, जिनमे संवत् 1965 का जलसा विशेष उल्लेखनीय रहा है। उस वर्ष एक बहुत बड़े उत्सव का आयोजन किया गया था जिसमे बाहर से कई भजन मडलिया, नाटककार, संगीतज्ञ आदि तथा विद्वद्वर्य श्री पं० पन्नालालजी न्यायदिवाकर खरजा एव श्री प० कल्याणमलजी अलीगढ वाले आदि दिग्गज विद्वान बलाए गये।

इसी अवसर पर इस महान उत्सव मे, एक विशाल पैमाने पर अपूर्व शोभा यात्रा अर्थात् जुलूस बडी सजधज के साथ निकाला गया था, जिसकी स्मृतिया आज भी सजीव है। रात्रि मे भजन मण्डलियो द्वारा हृदयग्राही उपदेशात्मक एव आध्यात्मिक भजन, एवं नाट्यकारो द्वारा नाटको के माध्यम से धार्मिक एव सांस्कृतिक प्रदर्शन तथा बाहर से पधारे हुए गणमान्य विद्वानो के उद्बोधात्मक प्रभावी प्रवचनो द्वारा महती धर्म प्रभावना हुई, जिसकी स्मृतिया आज भी लोगो के हृदय पटल पर अंकित है।

इसी प्रकार प्रत्येक वर्ष पर्वाधिराज दशलक्षण पर्व भी अत्यन्त उत्साह पूर्वक एव धूमधाम से मनाया जाता था। प्रात. 7 से 11 बजे तक सामूहिक पूजन, तत्पश्चात् बाहर से बुलाये गये विद्वानो द्वारा एक बजे तक शास्त्र प्रवचन, सायकाल भजन मण्डलियो द्वारा आरती एव भक्तिपूर्ण भजन, रात्रि मे विद्वानो द्वारा सार्वजनिक रूप से सैद्धान्तिक एव तलस्पर्शी आध्यात्मिक प्रवचनो से धर्म प्रभावना की जाती थी तथा दशलक्षण पर्व के अन्त मे नगर मे विशाल स्तर पर शोभायात्रा से महती धर्म प्रभावना सहित दशलक्षणी पर्व का क्षमावाणी एवं समापन समारोह मनाया जाता था।

मुलतान मे समय-समय पर बराबर विद्वानों का भी आगमन होता रहता था जिनमें सर्वश्री विद्वद्वर्य प० पन्नालालजी न्यायदिवाकर, प० श्री कल्याणमलजी अलीगढ, प० श्री पन्नालालजी धर्मालकार शिखरजी, प० श्री कस्तूरचन्दजी, प० श्री मक्खनलालजी मुरेना, प० श्री मक्खनलालजी दिल्ली, पं० श्री कैलाशचन्दजी वाराणसी, प० श्री राजेन्द्रकुमारजी मथुरासध, प० श्री लालबहादुर शास्त्री, संगीतज्ञ भैयालालजी भजनसागर व प० खुशालचन्दजी गोरावाला आदि विद्वानो के नाम विशेषत उल्लेखनीय है।

कभी कभी त्यागी ब्रतियो का भी मुलतान मे समागम होता रहता था ब्रह्मचारी प० शीतल प्रसादजी का तीन बार चतुर्मास मुलतान मे हुआ, फलस्वरूप समाज को तात्विक एव भेदविज्ञानपरक आध्यात्मिक प्रवचनो का अपूर्व धर्म लाभ मिलता था, इसी प्रकार एक बार ऐलक पन्नालालजी का भी मुलतान मे शुभागमन हुआ जिससे लगभग सात दिन तक धर्म की अमृत वर्षा होती रही ।

इसी प्रकार मुलतान नगर के बाहर श्रीगान दासूरामजी सुखानन्दजी गोलेछा ने अपने वाग मे चैत्यालय का निर्माण कराया था जिसकी विक्रम सवत् 1992 मे वेदी प्रतिष्ठा के रूप मे समाज ने एक सप्त दिवसीय अभूतपूर्व जलसे का आयोजन किया, जिसमे मुलतान के साथ डेरागाजीखान की पूरी समाज एव भजनमण्डली ने भी आकर भाग लिया तथा उस जलसे की शोभा यात्रा के लिये डेरागाजीखान से रथ एव कृत्रिम विशाल हाथी तथा शोभा का अन्य लवाजमा मगाया गया था, इसके अतिरिक्त विशेष आकर्षण का केन्द्र फिरोजपुर से मगाया गया दो घोडो का विशाल अपूर्व कलात्मक रथ था ।

उन दिनो मुलतान मे हिन्दू मुस्लिम के भारी दगो से वहाँ का वातावरण अशांत एव भयावह होने पर भी धर्म के प्रभाव से वह अपूर्व मनोरम शोभा यात्रा वगीचे से प्रमुख वाजारो मे होकर निविधन तथा धूमधाम के साथ शहर के मन्दिर तक सानन्द सम्पन्न हुई । इस प्रभावशाली शोभा यात्रा की स्मृति वर्षो तक जैन जैनेतर समाज मे बनी रही ।

इसी तरह समय-समय पर विशेष धार्मिक आयोजन जैसे सिद्ध चक्र विधान, त्रिलोक मण्डल विधान, अढाई द्वीप विधान आदि बडे उत्साहपूर्वक मनाये जाते थे जिनमे सम्पूर्ण समाज बडे उत्साह के साथ भाग लेती थी ।

पजाव प्रदेश मे अम्बाला एव मुलतान ही ऐसे नगर थे जहा की दिग्म्बर जैन समाज अत्रिक क्रियाशील थी और समाज की कृतनी ही गतिविधियो का वह केन्द्र थी । अम्बाला मे 'शास्त्रार्थ सघ' की स्थापना एव मुलतान से 'जैन दर्शन' मासिक पत्र का प्रकाशन उस समय की प्रमुख घटना रही । इन दिनो आर्य समाज के साथ खूब शास्त्रार्थ होते रहते थे और इसका प्रमुख केन्द्र भी पजाव के दो चार नगर ही थे । मुलतान समाज जैन विद्वानो एव शास्त्रार्थ सघ को पूरा सहयोग देती थी । मुलतान मे भी आर्य समाज के साथ शास्त्रार्थ हुआ था जिसमे जैन समाज की ही जीत हुई थी और उस जीत के फलस्वरूप स्वामी कर्मानन्दजी जो आर्य समाज के चोटी के दिग्गज विद्वान थे जैन धर्म मे दीक्षित हो गये । मुलतान समाज ही था जिसने सर्वप्रथम स्वामीजी को गले लगाया और समाज मे साधर्मि भाई की तरह उनको रखने लगा ।

सन् 1924 मे मुलतान मे पंडित अजितकुमारजी शास्त्री के आगमन से भी समाज मे एक नयो चेतना जागृत हुई । एक ओर पंडितजी ने पूरे समाज को धार्मिक विद्या से शिक्षित करने का बीडा उठाया और अपने आपको मुलतान समाज की सेवा मे पूर्णत

समर्पित कर दिया तो दूसरी ओर मुलतान समाज में शास्त्रीजी के धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में परामर्श को सबसे अधिक महत्व दिया जाने लगा तथा पंडितजी की प्रत्येक आवश्यकता का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाने लगा ।

यह युग सामाजिक जागृति का युग था । सामाजिक सस्थाओं के जन्म का युग था तथा सामाजिक बुराइयों के प्रति जिहाद बोलने का था । ऐसे समय में मुलतान समाज भी पीछे नहीं रहा । यहाँ भी समाज पूर्णतः समर्पित था और धर्म पर, समाज पर एवं दिगम्बर सस्कृति पर जो भी विपत्ति आती उसका डटकर मुकाबला किया जाता था । मुलतान में उस समय दिगम्बर जैन, ओसवालो के करीब 70 परिवार थे जिनमें सिधवी, गोलेछा, बगवानी, ननगाणी, नौलखा, दुग्गड आदि थे । नौलखा परिवार मुलतान दिगम्बर जैन समाज में प्राचीनतम परिवारों में से एक माना गया है क्योंकि इसमें अमोलका बाई आदि का प्रमुख स्थान रहा है । और कुछ अग्रवाल दिगम्बर जैन परिवार भी थे । जिनमें रामजी दास परमानन्द आदि के परिवार मुख्य थे जो राजकीय सेवा में मुलतान आये थे । वे लोग भी धर्मिष्ठ एवं अच्छे तत्व प्रेमी थे । सन् 1980 में रामजीदास ने जयपुर के महान दौलतरामजी कासलीवाल के “परमात्म प्रकाश” भाषा टीका की एक प्रति लिखवाकर मुलतान के मन्दिर को भेट स्वरूप प्रदान की थी और श्री रामजीदास तो कई वर्षों तक मुलतान दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष भी रहे ।

उसी प्रकार श्री परमानन्दजी भी शास्त्रों के अच्छे ज्ञाता, तत्व अभ्यासी एवं शास्त्र सभा के प्रमुख स्रोत थे । इस प्रकार मुलतान में रहने वाले सभी जातियों के परिवारों में भाईचारा, एक दूसरे के प्रति वात्सल्य एवं प्रत्येक क्षेत्र में आपस में सहयोग के साथ आगे बढ़ने की भावना थी । वास्तव में इन वर्षों का मुलतान समाज एक आदर्श समाज के रूप में विख्यात था ।

दिगम्बर जैन मन्दिर

मुलतान नगर पर पंजाब का प्रमुख नगर होने के कारण उस पर मुसलमानों के बराबर आक्रमण होते रहे इसलिये न जाने कितनी बार मन्दिरों का विध्वंस एवं पुनर्निर्माण भी हुआ होगा । कुछ दिगम्बर जैन परिवार दुर्ग (किले) में रहते थे और इन्होंने वही पर अपना मन्दिर भी बना रखा था लेकिन जब लडाई में मुलतान दुर्ग ध्वस्त हुआ तो उसके साथ मन्दिर, मूर्तियाँ, पाण्डुलिपियाँ एवं अन्य बहुमूल्य सामग्री भी नष्ट हो गई । जैन बन्धुओं को किला छोड़कर शहर में आकर रहना पड़ा । इसके

पश्चात् जब दुर्ग की खुदाई हुई तो उसमें भगवान पार्श्वनाथ की पाषाण की भव्य मूर्ति प्राप्त हुई, जिसके दर्शन मात्र से ही आत्मा को शान्ति प्राप्त होती है। इस मूर्ति का आकार $8\frac{1}{2} \times 5$ इंच है तथा उसका फण टूटा हुआ है। इस पर सवत् 1548 वरसे वैशाख सुदी 3 अंकित है। इस मूर्ति के सवत् के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 16वीं शताब्दी में मुलतान में दिगम्बर जैन समाज का अस्तित्व था।

मुलतान के दिगम्बर जैन मन्दिर में नीचे एक वेदी थी जिसमें अनुमानतया 60 मूर्तियां विराजमान थीं। भगवान पारसनाथ की प्रतिमा जिसमें मूलनायक थी।

ऊपर एक कमरे में सिंहासननुमा वेदी में भगवान चन्द्रप्रभु की एक सफेद पाषाण की मनोज्ञ मूर्ति विराजमान थी, जो अतिशय युक्त एवं चमत्कारिक मानी जाती है। इसके विषय में ऐसी किवदन्ती है कि रात को कई बार मूर्ति के सामने घण्टे बजते एवं जयजयकार के शब्द सुनाई देते थे। यह अतिशय देव कृत कहा जाता है तथा उसी कमरे की दीवार में एक छोटी सी वेदी बनी हुई थी जिसमें तीन स्फटिक मणि की एवं कई छोटी-छोटी सर्वधातु एवं पाषाण की प्रतिमाएं विराजमान थीं।

भगवान पार्श्वनाथ की सबसे अधिक मान्यता थी। इसलिये मूर्तियां भी मन्दिर में सबसे अधिक भ० पार्श्वनाथ की थीं। मन्दिर में सबसे प्राचीन मूर्ति भगवान पार्श्वनाथ की सवत् 1481 की थी जो धातु की पद्मासन है और 2×3 इंच साइज की है। उस पर निम्न प्रकार लेख है

“सवत् 1481 काष्ठा सा० चम्पा सा० लूनि।”

इसी मन्दिर में एक खड्गासन प्रतिमा है जो धातु की है तथा सवत् 1502 वैशाख सुदी 3 गनिवार के दिन की प्रतिष्ठित है। भट्टारक जिनचन्द्र इसके प्रतिष्ठाकारक थे तथा सा० डालू गोधा ने अपने पत्नी एवं परिवार के साथ इसकी प्रतिष्ठा करवायी थी।

मूर्ति का लेख निम्न प्रकार है—

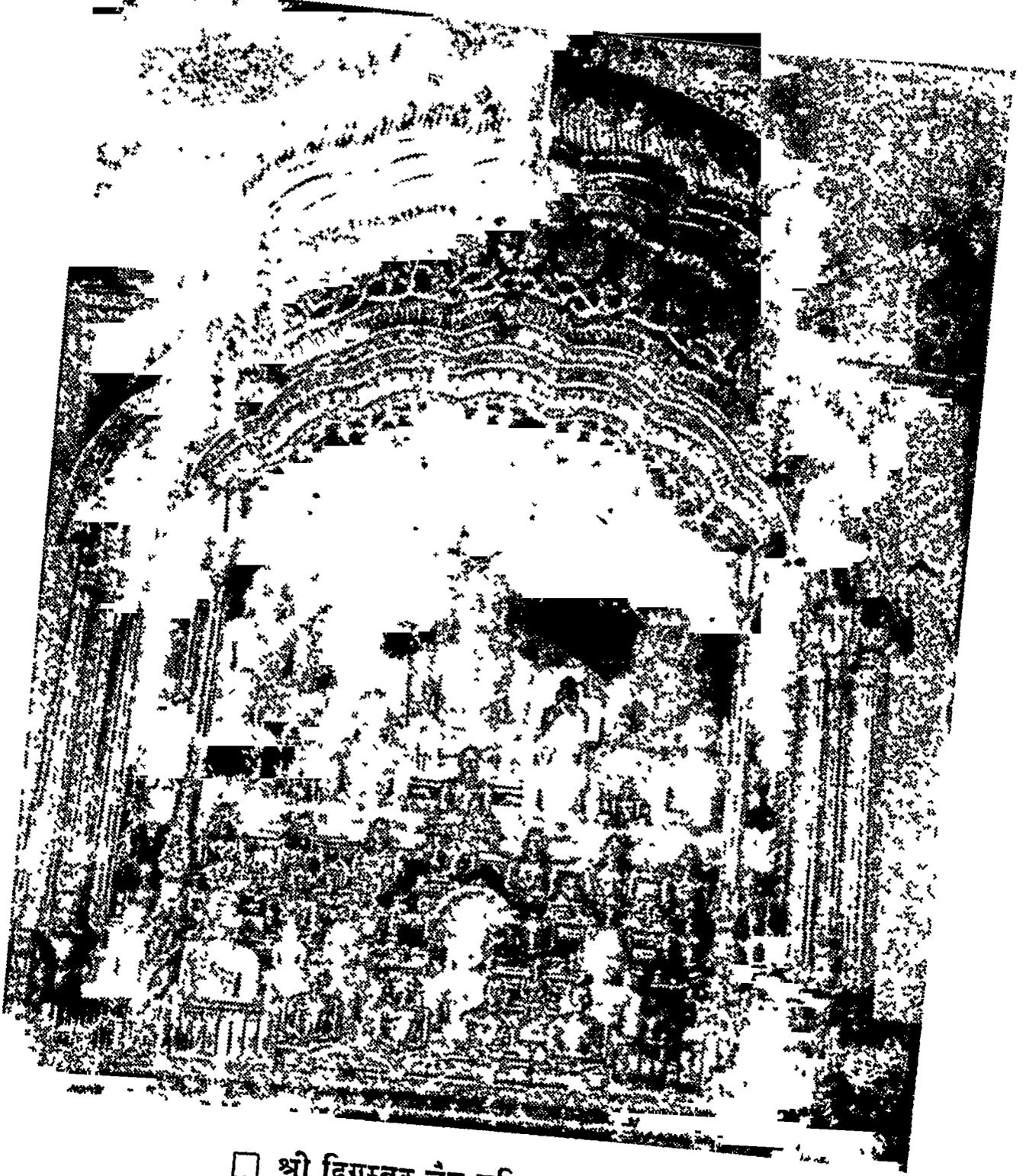
“सवत् 1502 वर्षे वैशाख सुदी 3 शनौ श्री मलसाधे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा खण्डेलवाल गोधा सा डालू भा. धनपति डोडा सा ल्हालो माला करायिता।”

चौबीस महाराज की एक प्रतिमा सवत् 1638 माघ शुक्ला पचमी सोमवार के दिन की प्रतिष्ठित है। प्रतिमा पद्मासन है तथा 5×3 इंच की है। किसी अग्रवाल जैन वन्धु ने इसकी प्रतिष्ठा करवा कर मन्दिर में विराजमान की थी।

इसी तरह मन्दिर में सवत् 1561 की भी पार्श्वनाथ की ही मूर्ति है

सवत् 1565 में प्रतिष्ठित पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर बड़ा लेख है जिसके अनुसार भट्टारक मलयकीर्ति के भ्राता भ० शान्तिदास के उपदेश से प्रस्तुत प्रतिमा प्रतिष्ठित की गयी थी।

□ मूल वेदी □



□ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मुलतान

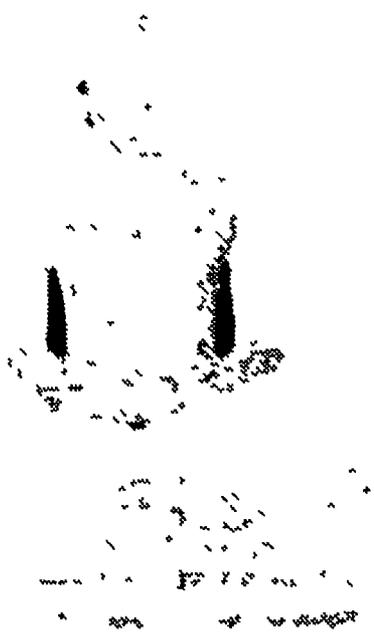
चित्र सन् 1917



□ श्री दिगम्बर जैन पाठशाला,
एव धर्मशाला

(मुनतान 16-10-1947)

भगवान चन्द्र प्रभु



1883, देहली मे प्रतिष्ठित
भव्य-मूर्ती



भगवान पार्श्वनाथ

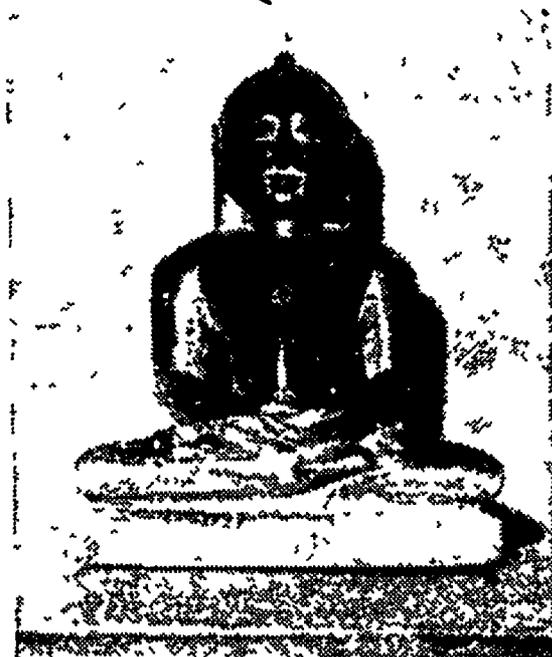


भगवान पार्श्वनाथ



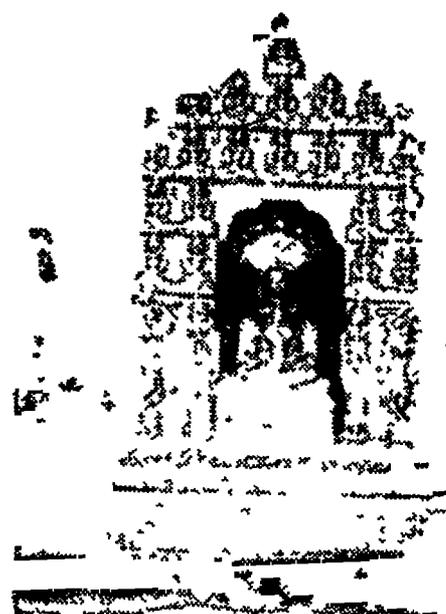
देवाधिदेव पार्श्वनाथ की भव्य
एवम् चित्ताकर्षक प्रतिमा
संवत् 1565

भगवान महावीर स्वामी



□ संवत् 1883, देहली मे प्रतिष्ठित
भव्य-मूर्ती

चौबीस महाराज की भव्य प्रतिमा



□ प्रतिष्ठित संवत् 1638
माघ शुक्ला पचमी



□ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मुलतान से लाई गई भगवान महावीर स्वामी की खड़गासन मूर्ती

भगवान पार्श्वनाथ

भगवान पार्श्वनाथ



□ दुर्ग से प्राप्त भव्य मूर्ती (स 1548, वैसाख सुदी तीज)

□ मुलतान के दिगम्बर जैन मन्दिर की मूल नायक प्रतिमा स (1481)

भगवान पार्श्वनाथ की ही एक धातु की प्रतिमा 5वीं शताब्दी के भी पहले की प्रतीत होती है। प्रतिमा की ध्यान मुद्रा अत्यधिक आकर्षक है।

संवत् 1718 में प्रतिष्ठित भगवान पार्श्वनाथ की धातु (पीतल) की प्रतिमा भी मनोज्ञ प्रतिमा है।

जयपुर में संवत् 1861 में विशाल प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ था जिसमें समस्त देश के श्रावक यहाँ एकत्रित हुए थे तथा हजारों की संख्या में जिन विम्बों की प्रतिष्ठा हुई थी। उस समय मुल्तान से भी कितने ही श्रावक जयपुर प्रतिष्ठा में आये थे और चन्द्रप्रभु स्वामी एवं अन्य प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करवायी थी। इसी तरह जब 1883 में देहली में प्रतिष्ठा हुई तो वहाँ भी चन्द्रप्रभु स्वामी की ही मूर्ति प्रतिष्ठापित कराकर मुल्तान मन्दिर में विराजमान की गई।

उक्त प्रतिमाओं के अतिरिक्त संवत् 1950, 1955, 1960, 1963 आदि सवतों में प्रतिष्ठापित प्रतिमाएँ भी मन्दिर में विराजमान हैं। संवत् 1955 में प्रतिष्ठित मूर्तियों में मुल्तान का नाम अंकित है।

मन्दिर में फिरोजपुर, सोनीपत, रेवासा, सम्मेदशिखर आदि स्थानों में प्रतिष्ठित मूर्तियाँ विराजमान हैं। सभी मूर्तियाँ भव्य एवं आकर्षक हैं। ये सभी भव्य, मनोज्ञ एवं अतिशययुक्त प्रतिमाएँ दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्शनगर जयपुर में विराजमान हैं।

शास्त्र भण्डार

दिगम्बर जैन मन्दिरों में शास्त्र भण्डार अथवा सरस्वती भवन का होना मन्दिर का आवश्यक अंग माना जाता है। श्रावक के छह आवश्यक कार्यों में भी स्वाध्याय को अत्यन्त महत्व दिया गया है इसलिये शास्त्र भण्डारों की स्थापना में वृद्धि होती रही है। मध्यकाल में जब भट्टारकों का उदय हुआ तो उन्होंने अपने-अपने केन्द्र स्थानों पर शास्त्रों का अच्छा संग्रह किया। राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, एवं देहली में जहाँ पहिले इन भट्टारकों की गादियाँ थी आज भी हजारों की संख्या में हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह मिलता है। मुल्तान समाज प्रारम्भ से ही स्वाध्याय प्रेमी रहा है। इसलिये श्रावकों के उत्साह एवं रुचि के कारण मन्दिर एवं शास्त्र भण्डार दोनों में ही वृद्धि होती रही।

मुल्तान के दिगम्बर जैन मन्दिर में भी शास्त्र भण्डार था जिसमें बहुत से हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह था। इन ग्रन्थों में अधिकांश ग्रन्थ हिन्दी

भाषा के हैं। इसके अतिरिक्त प्राकृत एवं संस्कृत के भी कुछ ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि भण्डार में 17वीं शताब्दि से पहिले की एक भी पाण्डुलिपि नहीं मिलती है जिससे यह तो स्पष्ट है कि वर्तमान भण्डार की स्थापना सम्राट अकबर के शासन काल में हुई थी।

शास्त्र भण्डार में नाटक समयसार की प्राचीनतम पाण्डुलिपि है जो सवत् 1745 में आपाठ सुदी 8 सोमवार की लिखी हुई है। इसके पश्चात् सवत् 1748 की दो पाण्डुलिपियां हैं जिनमें यह चतुर्विंशति जिनचरण गीत है तथा दूसरी समयसार नाटक एव बनारसी विलास की प्रति है। प्रथम का लिपि काल सवत् 1748 मगसिर की कृष्ण पक्ष की अमावस्या तथा दूसरे का लिपि काल मगसिर शुक्ल दोष का है। प्रथम प्रति साहू भैरवदास राखेचा के पुत्र के पढ़ने के लिये तथा दूसरी स्वयं भैरवदास के पढ़ने के लिये लिखी गयी थी। कैसा उत्तम युग था जब पिता पुत्र के लिये अलग-अलग पाण्डुलिपियां तैयार की जाती थी। भैरवदास बड़ी आयु के थे। इसलिये उन्होंने अपने लिये समयसार की स्वाध्याय करने की इच्छा प्रकट की जबकि अपने पुत्र के लिये चौबीस तीर्थंकरों के गीतों के स्वाध्याय की व्यवस्था की गई। पिता ने स्वयं के लिये अध्यात्म मार्ग चुना जबकि पुत्र के लिये उसने भक्ति मार्ग को उत्तम समझा।

इसके पश्चात् सवत् 1750 में धर्म चर्चा ग्रन्थ की प्रतिलिपि स्वयं मुलतान में ही की गयी। इसके प्रतिलिपिकार थे पं० राजसी प्रशस्ति में मुलतान को मौलित्राण¹ लिखा है। इसी वर्ष नाटक समयसार की दूसरी प्रतिलिपि की गयी। यह भी मुलतान में ही लिखी गयी। इसमें पं० धर्मतिलक का नाम लिपिकार के रूप में लिखा है। उक्त दोनों प्रतियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उस समय मुलतान में साहित्य लेखन का केन्द्र था। वहां एक ओर पाठक थे तो दूसरी ओर ग्रन्थों के लिपिकार भी थे।

सवत् 1778 में समयसार नाटक की फिर प्रति की गयी। शास्त्र भण्डार में 18वीं शताब्दि की और भी प्रतियां हैं जो सभी समयसार नाटक की हैं। नाटक समयसार की स्वाध्याय का युग अपने चरमोत्कर्ष पर था। वैसे विक्रम की 19वीं शताब्दि में भी नाटक समयसार की बराबर लिपियां होती रहीं। यहां के शास्त्र भण्डार में नाटक समयसार की 11 पाण्डुलिपियां संग्रहीत हैं जो मुलतान जैन समाज के महाकवि बनारसी दास के ग्रन्थों के स्वाध्याय के प्रति आकर्षण का द्योतक हैं।

विक्रम की 19वीं शताब्दि में शास्त्र भण्डार में एक के पश्चात् दूसरा ग्रन्थ था तो मुलतान में ही लिखा गया था फिर आगरा, जयपुर, देहली आदि नगरों में ग्रन्थों की प्रतियां करवाकर शास्त्र भण्डार में विराजमान की जाने लगी। इस दृष्टि से सवत् 1804 में समयसार नाटक, सवत् 1811 में क्रियाकोश एव सर्वार्थ सिद्धि, टीका, तत्त्वार्थमूत्र श्रुत सागर की भाषा टीका, सवत् 1809 में धर्मविलास (ज्ञानतराय), सवत् 1848 में वर्तमान

1 पं० राजसी लिखते श्री मौलि-त्राण मध्ये लिखतम्।

चौबीसी पूजा, संवत् 1830 मे आदिपुराण भाषा, संवत् 1889 मे हरिवंश पुराण भाषा जैसे ग्रन्थो की प्रनियो के नाम उल्लेखनीय है। लेकिन संवत् 1811 मे पं० टोडरमलजी द्वारा जो रहस्य पूर्ण चिट्ठी लिखी गयी थी उसकी मूल प्रति सुरक्षित नही रह सकी। पता नही वह कहां चली गयी। किन्तु उसकी एक प्रतिलिपि रखने मे अवश्य मुलतान समाज सफल हो गयी। यह प्रतिलिपि संवत् 1971 मे लिखी गई है। जिसकी सही प्रतिलिपि पूर्व पृष्ठो मे आ चुकी है।

संवत् 1900 से यद्यपि छपाई (मुद्रण) का युग आ गया था। शास्त्रो का प्रकाशन प्रारम्भ हो गया था तथा बम्बई, सूरत, सागर, जयपुर, वाराणसी, देहली एव कलकत्ता आदि नगरो से कितने ही ग्रन्थ प्रकाशित होने लगे थे। यद्यपि कुछ विद्वानों ने ग्रन्थो को छपाने का प्रारम्भ मे विरोध भी किया लेकिन उनकी एक भी नही चली और हमारे सभी विषयों के ग्रन्थ प्रकाशित होने लगे। फिर भी मुलतान जैन समाज द्वारा शताब्दि के अन्त तक मन्दिर के शास्त्र भण्डार में हस्तलिखित ग्रन्थो का संग्रह पूरे वेग से किया जाता रहा। संवत् 1923 में अर्थ प्रकाशिका की प्रतिलिपि करवायी गई जो प० सदासुख कासलीवाल जयपुर वालो की बहुत सुन्दर कृति है। इस शताब्दि में कुछ प्रमुख ग्रन्थो की प्रतिलिपियाँ जो भण्डार मे हैं, ऐतिहासिक दृष्टि से उत्तम हैं, वे निम्न प्रकार हैं —

		संवत्
1	आचारसार भाषा	पं० पन्नालालजी चौधरी 1934
2	उत्तरपुराण भाषा	1981
3	कार्तिकेयनुप्रेक्षा	पं० जयचन्द छाबडा 1958
4	गोम्मटसार भाषा	पं० टोडरमलजी 1931
5	चिट्ठी रहस्यपूर्ण	पं० टोडरमलजी 1971
6.	जिनदत्तचरित भाषा	— 1977
7	तत्त्वार्थसूत्र वचनिका	— 1910
8	दौलत विलास	दौलतरामजी 1981
9	धर्मविलास	द्यानतरायजी
10.	नागकुमार चरित भाषा	— 1954
11	नेमीनाथ पुराण भाषा	— 1955
12.	पद्मपुराण भाषा	दौलतरामजी 1925
13	पाडवपुराण भाषा	— 1933
14.	पारस विलास	पार्श्वदास निगोत्या 1948
15.	रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा	पं० सदासुखजी कासलीवाल 1925

इस प्रकार 100 से भी अधिक ग्रन्थ इसी गताब्दि मे लिपिवद्ध करवा कर ग्रन्थ भण्डार मे विराजमान किये गये ।

इन ग्रन्थो को हम निम्न विषयों मे विभाजित कर सकते हैं .—

द्रव्यानुयोग (अध्यात्म ग्रन्थ)

मुलतान दिगम्बर जैन समाज ने प्रारम्भ से ही अध्यात्म ग्रन्थो की स्वाध्याय मे विशेष रुचि ली है इसलिये शास्त्र भण्डार मे समयसार एव नाटक समयसार प्रवचनसार भाषा (हेमराज), अष्ट पाहुड भाषा (पं० जयचन्द छावडा), परमात्मप्रकाश (योगीन्दुदेव) नियमसार, ज्ञानार्णव, आत्मानुशासन भाषा, जैसे ग्रन्थो का संग्रह किया तथा उनके स्वाध्याय मे रुचि ली ।

करणानुयोग (सिद्धान्त ग्रन्थ)

सिद्धान्त ग्रन्थो का भी शास्त्रभण्डार में अच्छा संग्रह है । गोम्मटसार भाषा (प टोडरमल), पचास्तिकाय, तत्त्वार्थरत्न प्रभाकर, द्रव्य संग्रह, पुरुषार्थ सिद्धयुत्पाय, सर्वार्थसिद्धि भाषा, अर्थप्रकाशिका नयचक्र, राजवार्तिक, श्लोकवार्तिक, त्रिलोकसार जैसे लोकप्रिय एवं प्रचलित ग्रन्थो का अच्छा संग्रह मिलता है ।

चरणानुयोग ग्रन्थ

मुलतान समाज मे शास्त्रानुसार आचरण की विशेष प्रवृत्ति एवं रुचि थी । इसीका ही परिणाम था कि अभक्ष्य भक्षण (कन्द मूल), रात्रि भोजन, आदि की प्रवृत्ति विलकुल ही नही थी । पानी छान कर पीना आदि साधारण क्रिया की बात थी । यह सब चारित्र ग्रन्थों की स्वाध्याय का ही परिणाम था—इसलिये शास्त्र भण्डार मे सागर धर्माभूत, आचार सार, अमितगति श्रावकाचार, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, गुरु उपदेश श्रावकाचार, तिरेपन क्रियाकोष, मूलाचार, अनागारधर्माभूत आदि चरणानुयोग के ग्रन्थों की कई-कई प्रतिया उपलब्ध है ।

प्रथमानुयोग (पुराण ग्रन्थ)

पुराण विषयक ग्रन्थो की स्वाध्याय मे देश के अन्य भागो की तरह मुलतान समाज ने भी रुचि ली । हिन्दी भाषा मे पुराण ग्रन्थो का लेखन महाकवि दौलतराम कासलीवाल से प्रारम्भ हुआ और आदि पुराण, हरिवंश पुराण, पद्मपुराण, पार्श्वपुराण, वर्धमानपुराण, नेमिनाथ पुराण आदि जैसे ग्रन्थो की प्रतिया प्राप्त की गई और शास्त्र भण्डार मे रखी गयी । पुराण साहित्य का पठन पाठन विगत 200 वर्षों मे खूब रहा तथा प्रत्येक श्रावक एवं श्राविकाओ ने उसके स्वाध्याय मे रुचि ली । यही कारण है कि उत्तर से दक्षिण तक तथा पूर्व से पश्चिम तक सभी नगरो एव गावो मे पुराण ग्रन्थो का संग्रह मिलता है । वास्तव मे इन पुराण ग्रन्थो के स्वाध्याय ने जैन समाज की धार्मिक निष्ठा को दृढ़ करने मे अपना पूर्ण योगदान दिया ।

भक्ति एवं पूजा साहित्य

अर्हद भक्ति एवं पूजा साहित्य समाज में अत्यधिक लोकप्रिय रहा है। भक्ति और पूजा दोनों ही प्रत्येक गृहस्थ के लिये आवश्यक कार्य माना जाता रहा है। इसलिये पूजा, स्तोत्र एवं पदसाहित्य पर्याप्त संख्या में उपलब्ध होता है। मुलतान समाज जिस तन्मयता के साथ भगवान की पूजा करता है तथा पूजा एवं भक्ति में रस लेता है वह देखने योग्य है। इसलिये मुलतान के शास्त्र भण्डारों में इन विषयों के ग्रन्थों का तथा चौबीस तीर्थंकरों की पूजाओं का अच्छा संग्रह है।

उक्त विषयों के ग्रन्थों के अतिरिक्त भक्ति, आध्यात्मिक एवं उपदेशक काव्य रचनाओं के बनारसी विलास, पारस विलास, ब्रह्म विलास, भूधर विलास, दौलत विलास, दानत विलास आदि ग्रन्थों का भी अच्छा संग्रह है।

शास्त्र भण्डार के ग्रन्थों की सुरक्षा एवं उनके रखरखाव की व्यवस्था इतनी सुन्दर है कि मुलतानी भाइयों का जिनवाणी के प्रति बहुमान सहज ही प्रशंसनीय बन जाता है, नहीं तो हमारे मन्दिरों के व्यवस्थापकों ने ग्रन्थ भण्डारों की सुव्यवस्था पर बहुत कम ध्यान दिया है। यही कारण है कि सैकड़ों हजारों ग्रन्थ अनायास ही जीर्णशीर्ण होकर सदा-के लिये समाप्त हो गये।

शास्त्र भण्डार में पं. दौलतराम ओसवाल की पार्श्वनाथ चरित भाषा की एक पाण्डुलिपि है जो अब तक अज्ञात एवं अनुपलब्ध थी। ग्रन्थ का विस्तृत परिचय इससे पूर्व के पृष्ठों में दिया जा चुका है।

साहित्य प्रकाशन की दृष्टि से यद्यपि हमें अभी तक मुलतान से प्रकाशित कोई बड़ी रचना नहीं मिल सकी है लेकिन सन 1924-25 में ही पुस्तकों का प्रकाशन प्रारम्भ हो गया था और इसमें सबसे अधिक योग प. अजितकुमारजी शास्त्री का रहा जिन्होंने 25 से अधिक पुस्तकें लिखकर अथवा सम्पादन करके उन्हें प्रकाशित कराईं जिनमें “सत्यार्थ दर्पण”; “श्वेताम्बर मत समीक्षा”, “दुंढक मत समीक्षा”; “विनाश के सात कारण”; व “जैन महिला गायन”, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।



मुलतान छावनी

मुलतान से तीन मील दूर मुलतान छावनी में भी एक प्राचीन भव्य दिगम्बर जैन मन्दिर था जिसके प्रारम्भिक इतिहास का पता नहीं चलता कि वह कब बना और किसने बनवाया। सन् 1935 ई में उसका जीर्णोद्धार करवा कर उसे नया रूप दिया गया जिसमें मुलतान छावनी के समाज के साथ-साथ मुलतान दिगम्बर जैन समाज विशेषकर श्री रगूलालजी वगवाणी का विशेष हाथ था।

मुलतान छावनी में अधिकांश अग्रवाल दिगम्बर जैन परिवार रहते थे जिनमें कुछ महानुभावों के नाम निम्न प्रकार हैं —

(1) श्री किशोरीलालजी—आप उत्तर-पश्चिम रेलवे में मुलतान संभाग कार्यालय में उच्च पदाधिकारी थे, धर्मज्ञ एवं शान्ति प्रिय थे।

(2) श्री भोलानाथजी—पुत्र श्री रामजी विशेषकर विदेशियों को मुलतान में निर्मित कलात्मक वस्तुएँ जैसे—गलीचे, हाथीदात की वस्तुएँ, मिट्टी के बर्तनों पर निक्काशी की हुई हस्त शिल्प वस्तुएँ आदि विक्रय किया करते थे।

(3) श्री पन्नालालजी सरावगी—धर्मात्मा व्यक्ति थे तथा रुपये आदि के लेन-देन का व्यवसाय करते थे।

(4) श्री गिरधरलालजी—सज्जन एवं धर्मात्मा व्यक्ति थे। राज के किसी कार्यालय में कार्यरत थे।

(5) श्री मुरारीलालजी—समाज में उत्साही कार्यकर्ता थे और उनका कपड़े का व्यवसाय था।

इस प्रकार ये सब परिवार नित्य देव पूजन, स्वाध्याय आदि किया करते थे और शहर से भी समय-समय पर लोग वहाँ जाकर दर्शन पूजन आदि किया करते। वर्ष में दशलक्षण पर्व के बाद एक दिन शहर का पूरा समाज आकर सामूहिक रूप से पूजन पाठ प्रवचन आदि का विशेष आयोजन रख कर उत्सव मनाता था तथा सामूहिक प्रीतिभोज आदि का भी कार्यक्रम रखा जाता था।

मुलतान छावनी में भी समय-समय पर वृत्ती एवं त्यागियो का भी आगमन होता रहता था। जिनके विशेष रूप से सार्वजनिक अध्यात्मिक प्रवचनों से महती धर्म प्रभावना होती रहती थी। जिनमें पूज्य ऐलक पन्नालालजी एवं ब्र शीतलप्रसादजी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

1947 में देश विभाजन के समय मुलतान छावनी के भाइयो ने भी वहाँ से भारत आने का निर्णय लिया और मन्दिरजी की मूर्तियों को मुलतान मन्दिर में विराजमान करके भारत आ गये, जो मुलतान मन्दिर की मूर्तियों के साथ भारत लाई गई, वो अब दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्श नगर, जयपुर में विराजमान है।

स्वतंत्रता वर्ष सन् 1947

15 अगस्त 1947 को जहाँ सारे भारतवर्ष में स्वतंत्रता प्राप्ति के उपलक्ष्य में समारोह आयोजित हो रहे थे, प्रत्येक भारतवासी अपने भविष्य के मुनहले स्वप्न देख रहा था तथा सम्पूर्ण राष्ट्र में नयी चेतना जाग्रत हो रही थी वही पाकिस्तान में हिन्दू, जैन एवं सिक्ख आदि के लिये स्वतंत्रता एक विचित्र समस्या बन कर खड़ी हो गयी। तत्कालीन अंग्रेज सरकार द्वारा स्वतंत्रता की घोषणा के साथ ही पाकिस्तान में साम्प्रदायिक उपद्रव प्रारम्भ हो गये, मारकाट मचने लगी। रेल यात्रा, बस यात्रा सुरक्षित नहीं रह सकी। मुल्तान एवं डेरागाजीखान के दिगम्बर जैन समाज के सामने एक अजीब सफट उपस्थित हो गया। एक ओर जीवन मृत्यु का प्रश्न दूसरी ओर सैकड़ों वर्षों से पालन पोषण करने वाली जन्म भूमि का परित्याग। जिन प्रतिमाओं एवं शास्त्र भण्डारों की सुरक्षा का प्रश्न, धन दौलत का अपहरण एवं माँ बहिन बेटियों की इज्जत का प्रश्न। देश के विभिन्न भागों से भीषण साम्प्रदायिक दंगों की खबर जब सुनायी देती तो दिल दहल जाता। समाज के प्रमुख व्यक्तियों के सामने केवल एक प्रश्न था किस प्रकार समाज, धर्म एवं साहित्य की रक्षा की जाय?

आखिर समाज की मीटिंग हुई और सबने यही तय किया कि शीघ्रातिशीघ्र उन्हें अपनी जन्मभूमि को छोड़कर भारत में चले जाना चाहिये इसी में सबकी सुरक्षा है तथा धर्म की रक्षा है। तत्काल समाज के तीन चार महानुभाव देहली गये और किसी तरह वायुयान किराया पर ले चलने की पूरी कोशिश करने लगे। देहली में उस समय सरकार एवं किसी भी हवाई जहाज कम्पनी से व्यवस्था नहीं हो सकी। आखिर वे चारों महानुभाव हवाई जहाज से बम्बई गये और वहाँ पर वायुयान की एक प्राइवेट कम्पनी को 400/— रुपये प्रति व्यक्ति किराये के हिसाब से हवाई जहाज देने के लिये राजी कर लिया और बम्बई से मुल्तान हवाई अड्डे पर पहुँच गये।

उधर नगर में समस्त दिगम्बर जैन परिवारों ने अपना थोड़ा बहुत सामान जो ले सकते थे उसे साथ में ले लिया और हवाई अड्डे की ओर चल पड़े। चलते समय अपने सुन्दर भवनो, पृश्तेनी जायदाद, सामान से भरी हुई दुकानों एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों को छोड़ने से सभी की आँखों में आसू आ गये क्योंकि यह किसको पता था कि उन्हें अपनी प्राणों से भी प्यारी सम्पत्ति को इस प्रकार छोड़ना पड़ेगा। लेकिन छोड़ने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय शेष नहीं रहा था। उन्हें सतोष इसी बात का था कि वे अपने साथ अपना परा परिवार, भगवान की मूर्तियाँ एवं शास्त्र भण्डार ले जा रहे हैं।

हवाई जहाज में मूर्तियों एवं शास्त्रों की पेटियों को रखा गया तथा जब सवारियों के बैठने का नम्बर आया तो जहाज के चालक ने हवाई जहाज में बोझ अधिक होने के कारण उड़ान भरने से मना कर दिया। सभी के चहरे उतर गये और भविष्य की चिन्ता मताने लगी। लेकिन समाज के मुखियाओं ने पाइलेट को समझाया कि इन पेटियों में भगवान की

मूर्तियाँ हैं, इनके प्रभाव से कोई भी सकट नहीं आ सकता है, पूर्ण विश्वास रखे। साथ ही यह भी कहा कि अगर मूर्तियाँ नहीं जावेंगी तो वे भी नहीं जावेंगे। धर्म के प्रति विश्वास एव दृढता देखकर पायलट चौधरी ले चलने को तैयार हो गया। उस समय सभी स्त्री पुम्पो ने जहाज में बैठते ही प्रतिज्ञा की कि जब तक जहाज सकुशल जोधपुर नहीं पहुंचेगा तब तक उनका अन्न जल का त्याग है। कैसा होगा वह समय और कैसी होगी उनकी मन की स्थिति यह विचारणीय है।

जब हवाई जहाज ने उड़ान भरी तब सभी ने णमोकार मंत्र का स्मरण किया। कुछ क्षणों में वायुयान जोधपुर पहुंच गया। जैसे ही हवाई अड्डे पर हवाई जहाज उतरा हवाई जहाज से बाहर आते ही पायलट चौधरी ने भावविभोर होकर जिन प्रतिमाओं को नमस्कार किया और कहा कि इन्हीं का चमत्कार है कि हवाई जहाज में इतना अधिक भार होते हुए भी यह जहाज फूल के समान चलता रहा तथा सकुशल यहाँ पहुंच गया, अन्यथा जहाज में इतना वजन लाना बिलकुल सम्भव नहीं था।

यहाँ एक घटना और उल्लेखनीय है कि कुछ कारणवश तीन चार भाई मुलतान में रह गये थे और भगवान पार्श्वनाथ की एक प्रतिमा जो मुलतान किले से प्राप्त



श्री भवरचदजी सिंघवी

हुई थी, इसके मन्दिर की वेदी खाली न रहे इस अभिप्राय मूर्तियाँ लाते समय वहाँ विराजमान कर आये थे। वे लोग नित्य दर्शन पूजन आदि करते थे। कुछ दिन पश्चात् रात्रि को उनमें से एक भाई श्री भवरचन्दजी सिंघवी को स्वप्न आया कि वे लोग वहाँ से जल्दी चले जावे और मन्दिर में जो मूर्ति विराजमान है उसके स्थान पर श्री श्रीदासूरामजी गोलेछा के घर के नीचे वाले कमरे के आले में एक अप्रतिष्ठित मूर्ति रखी है उसे मन्दिर की वेदी में रखकर भ० पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठित मूर्ति को साथ ले जावे।

प्रात होते ही उन्होंने दासूरामजी एव अन्य भाइयों को स्वप्न की बात कही, इस पर दासूरामजी ने कहा कि उन्हें तो मूर्ति के विषय में कोई जानकारी नहीं है, चलो देख लें हैं। जाकर कमरे को खोल कर देखा तो वास्तव में उसी आले में मूर्ति रखी हुई मिली, जिसे देखकर दासूरामजी आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंने कहा कि उनकी साठ वर्ष की अवस्था में उन्होंने न तो कभी इस मूर्ति को रखा और न कभी देखा ही, पता नहीं यह कब कैसे और कहाँ से यहाँ आई। उस मूर्ति को लाकर मन्दिरजी की वेदी में रखा गया तथा भगवान

थ की प्रतिमा को जैसे ही मन्दिर से लेकर उस मुहल्ले से वाहर आ रहे थे लमानो के भुँड ने इस मुहल्ले मे प्रवेश किया तथा देखते ही देखते सभी मकानो पर कब्जा कर लिया । वे चारो ही व्यक्ति तत्काल मुलतान से चले आये और भगवान की भी साथ ले आये ।

इस तरह मुलतान दिगम्बर जैन समाज की अपनी धार्मिक निष्ठा, सच्चरित्रता एवं तिमाओ तथा जिनवाणी को लाने के प्रयास के शुभ भाव से चल अचल सम्पत्ति के न के अतिरिक्त किसी भी परिवार के एक भी व्यक्ति को शारीरिक कष्ट एवं जीवन की नही हुई ।

जोधपुर स्टेशन के पास, दिगम्बर जैन मन्दिर मे मूर्तियो एवं शास्त्र भण्डार की को सुरक्षित रखवा दिया गया ।

श्री गुमानीचन्दजी, श्री बुद्धसेनजी सुपुत्र श्री छोगमलजी सिधवी मुलतानी जो स्तान बनने के कुछ समय पूर्व जोधपुर आकर रहने लगे थे उनके यहाँ समाज एक दिन के पश्चात् जयपुर के लिये रवाना हो गया ।

गाडी के जयपुर पहुँचते ही जैन समाज के कुछ लोग जो पहिले से ही स्टेशन पर हुए थे, मुलतानी जैन भाइयों का आदर सत्कार करते हुए शहर मे ले गये, तथा जहाँ ठहराने आदि की व्यवस्था की थी वहाँ उन्हे पहुँचा दिया ।

जयपुर में आवास मिलने मे विशेष कठिनाई नही हुई, किन्तु कहाँ मुलतान के सुविधायुक्त अपने मकान और कहाँ किराये के मिले जैसे तैसे मकान, लेकिन जीवन मे र चढाव सुख दुःख अच्छी बुरी परिस्थितियाँ आती है, उनमे अपने आपको समर्पित करदे विशेष आकुल न हो वही सच्चा मानव है । विपत्तियों से घबराकर अधीर होने वाले बहुत होते है लेकिन उनका दृढता पूर्वक सामना करने वाले विरले ही होते है । मुलतान जैन आज ने तो ऐसी विकट एवं कठिन परिस्थिति मे भी धैर्य एवं साहस को नही छोडा तथा भविष्य के निर्माण मे दृढतापूर्वक लग गये ।

कुछ दिनों पश्चात् जोधपुर से रेलगाडी के एक विशेष डिब्बे मे मूर्तियो एवं शास्त्रार की पेटियो को जयपुर ले आए तथा श्री शान्तीनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर तैरह थयान, धी वालो का रास्ता, जौहरी बाजार मे बडे उत्साह एवं उल्लास के साथ मूर्तियों को वेदी मे विराजमान कर दिया गया तथा शास्त्र भण्डार को सुव्यवस्थित रूप से लमारियो मे रख दिया और मुलतान की तरह यहा भी सभी भाई बहिन दर्शन भक्ति एवं मूहिक पूजन बडे ठाठ बाट से करने लगे, इससे शीघ्र ही मुलतान समाज जयपुर जैन आज के लिये आकर्षण का केन्द्र बन गया ।

पाकिस्तान से आने के पश्चात् मुलतान से आए जैन बन्धु दो भागो मे विभक्त गये । उसमे लगभग साठ प्रतिशत तो जयपुर बस गये तथा चालीस प्रतिशत दिल्ली कर रहने लगे, इसका मुख्य कारण व्यवसाय की व्यवस्था है ।

डेरागाजीखान

डेरागाजीखान का अपना इतिहास है। नगर को किसी गाजी उपाधि वाले मुस्लिम शासक द्वारा वसाये जाने के कारण इस नगर का नाम डेरागाजीखान पडा। पंजाब (पाकिस्तान) में डेरागाजीखान दूसरा शहर था जहाँ प्राचीन काल से ओसवाल दिगम्बर जैन समाज रहता था। डेरागाजीखान मुलतान से 60 मील दूर सिन्धु नदी के तटपर वसा हुआ था पंजाब में केवल इन दो स्थानों पर ही ओसवाल दिगम्बर जैन समाज होने के कारण इनका आपस में भाईचारा एवं चोलीदामन का साथ था।

डेरागाजीखान में दिगम्बर जैन मन्दिर

डेरागाजीखान में एक विशाल एवं भव्य दिगम्बर जैन मन्दिर था जिसमें एक कलात्मक वेदी थी। उस वेदी में कितनी ही आकर्षक एवं सुंदर प्रतिमाएँ थीं किन्तु एक नीलम की अतिशय युक्त चमत्कारिक प्रतिमा थी जो आठवें तीर्थंकर 1008 भगवान श्री चन्द्रप्रभु की थी, एक दिन किसी अज्ञान व्यक्ति ने वह प्रतिमा मन्दिर से चुरा ली और उसे अपने घर में छुपाकर रख दी। जब प्रातःकाल समाज को इस घटना की जानकारी मिली तो संपूर्ण समाज शोकसागर में डूब गया, तथा पूरे समाज ने अन्न-जल का त्याग कर दिया, यहाँ तक कि कई महानुभावों ने तो मूर्ति न मिलने तक अनशन ले लिया और मूर्ति ढूँढ निकालने का संकल्प लिया।

दूसरे ही दिन रात्रि को एक भाई को स्वप्न आया कि मूर्ति मन्दिर के समीप ही एक अमुक जैनेतर भाई के मकान में अमुक कमरे की छत की कडी में रखी है। प्रातः होते ही उस व्यक्ति ने स्वप्न की बात समाज के प्रमुख महानुभावों को सुनाई तो कुछ व्यक्ति तत्काल ही उस मकान में गये और बताए हुए स्थान पर देखा तो वह मूर्ति यथावत रखी हुई मिल गई। प्रतिमा पाकर संपूर्ण समाज में हर्ष की लहर दौड़ गई। तत्काल ही पूजापाठ का आयोजन किया गया तथा विधि विधान आदि धार्मिक अनुष्ठान के साथ उत्साह पूर्वक मूर्ति को वेदी में पुनः विराजमान किया गया। इसके पश्चात् ही समाज के प्रमुख महानुभावों ने अन्न-जल ग्रहण किया।

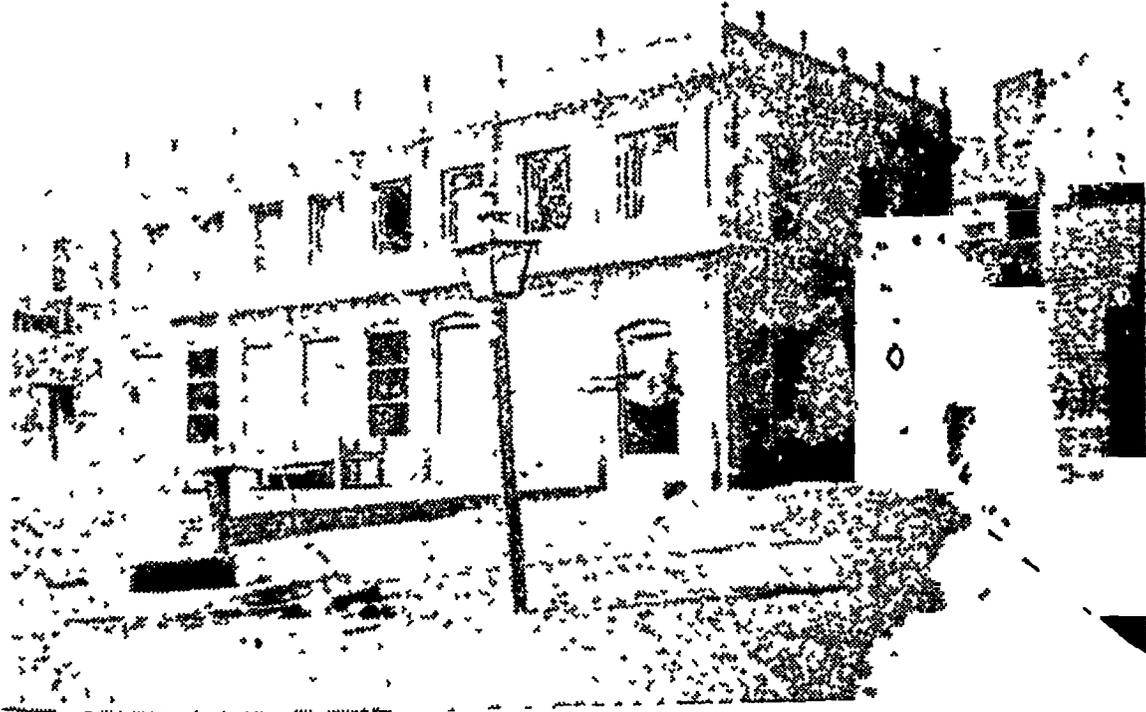
वर्तमान में जो डेरागाजीखान है वह तो नया वसाया गया शहर है। इसके पूर्व डेरागाजीखान सिन्धु नदी के तट पर वसा हुआ था। सन् 1904 में सिन्धु नदी के कटाव के कारण सारा शहर जलमग्न हो गया, किन्तु सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह थी कि दिगम्बर जैन मन्दिर चारों ओर से अथाह जल में घिरा होने पर भी यथावत खड़ा हुआ था।



□ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, डैरागाजीखान



शास्त्र-भवन



स्वाध्याय भवन

□ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, डैरागाजीखान

ऐसी विकट सकटपूर्ण स्थिति में समाज के व्यक्तियों को मूर्तियों एवं हस्तलिखित शास्त्र भण्डार को मन्दिर से निकाल कर सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने की चिन्ता लगी हुई थी ।

समाज के कुछ साहसी व्यक्ति मूर्तियाँ एवं शास्त्र भण्डार को लाने के लिये नौका द्वारा उस मन्दिर तक पहुँचे तथा मूर्तियों एवं शास्त्र भण्डार को मन्दिर में से निकालकर ज्यों ही नौका में विराजमान कर उसमें सवार हुए तो उनके देखते ही देखते तत्काल सम्पूर्ण मन्दिर ढहकर जल मग्न हो गया ।

तत्पश्चात् डेरागाजीखान के सभी जैन परिवार मुलतान जाकर रहने लगे तथा मूर्तियों एवं शास्त्र भण्डार को मुलतान शहर के मन्दिर में विराजमान कर दिया ।

कुछ समय पश्चात् सिन्धु नदी से दस मील की दूरी पर नया डेरागाजीखान शहर बसाया गया । जैन परिवार भी नये डेरागाजीखान में जाकर बस गये और वहाँ दिगम्बर जैन मन्दिर बनाया गया । जिन प्रतिमाओं एवं शास्त्र भण्डार को पुनः मन्दिर में वेदी प्रतिष्ठा एवं विगाल महोत्सव के साथ विराजमान किया गया ।

डेरागाजीखान के व्यक्तियों में स्वाध्याय के प्रति रुचि

मुलतान के समान डेरागाजीखान का भी समाज श्रावक के षट् कर्मों में जैसे जिनेन्द्र पूजन, भक्ति, स्वाध्याय, दान आदि में सदैव तत्पर एवं कर्तव्यनिष्ठ था । प्रारम्भ से ही यहाँ का सम्पूर्ण समाज अध्यात्म प्रेमी था । समयसार एवं शुद्धात्म तत्त्व की, सूक्ष्म तलस्पर्शी भेद-विज्ञान परक स्वात्मानुभव की चर्चाएँ परस्पर चलती थी । बनारसीदासजी के नाटक समय-सार के प्रति लोगो में विशेष आकर्षण था, इसके अध्यात्मिक एवं सरस पद कुछ लोगो को कठस्थ याद थे । शास्त्र सभा एवं गोष्ठियों में इस अध्यात्म रस की अपूर्व लहर थी, लोगो के मुख से प्रायः यह सुनने को मिलता था कि

अनुभव चिन्तामणि रतन, अनुभव ही रसकूप ।

अनुभव मारग मोक्ष का, अनुभव मोक्ष स्वरूप ॥

वर्तमान में आदर्शनगर दिगम्बर जैन मन्दिर, जयपुर में डेरागाजीखान से लाई गई समयसार आदि की कई हस्तलिखित प्राचीन प्रतियाँ मौजूद हैं, यह उनकी आध्यात्मिक रुचि का ज्वलत उदाहरण है । सन् 1766 की हस्तलिखित सर्व प्राचीन नाटक समय-सार की प्रति जो यहाँ मौजूद है इससे सिद्ध होता है कि डेरागाजीखान समाज प्रारम्भ से

ही अध्यात्म रुचि वाली रही है। उक्त नाटक समयसार की प्रतिलिपि खरतरगच्छ के श्वेताम्बर खेमजी के गुरु भाई रूपचन्दजी से कराई गई। यह प्रतिलिपि डेरागाजीखान में ही की गई थी। इसकी प्रतिलिपि कराने वाले नयनानन्द श्रावक थे।¹

श्रीमती अमोलका बाई मुलतान की कब्रियत्री, भक्त एवं विदुषी महिला थी। उन्होंने वैराग्य आध्यात्मिक एवं अर्हद भक्ति के अनेक पद लिखे हैं, उनका डेरागाजीखान से भी अच्छा सम्बन्ध था, इसलिये उन्होंने अपने पदों में “सखी डेरे दिगम्बर सैली में मगल” लिखा है।

इससे ज्ञात होता है कि डेरागाजीखान में भी सैली थी जो आध्यात्मिक चर्चा भक्ति गीत एवं नृत्य आदि के कार्यक्रमों से धर्म प्रभावना करती रहती थी। अमोलका बाई का समय करीब 200 वर्ष पूर्व का है जिनका विस्तृत परिचय पहिले दिया जा चुका है।

इसी प्रकार सवत् 1897 की लिखी गई पदस्तोत्र सग्रह की एक पाण्डुलिपि शास्त्र भण्डार में भी उपलब्ध है। इसकी प्रतिलिपि डेरागाजीखान में हुई थी। पहिले इसकी प्रति श्रावक मोतीलाल के सुपुत्र रूपचन्द एवं उसके छोटे भाई प्रेमा के पठनार्थ लिखी गई थी। इसके पश्चात् श्रीमती रूपा बेगवाणी ने अपने वाचन के लिये डेरागाजीखान में उसकी प्रतिलिपि कराई थी।²

1. संवत् रस खंड मुनि रासि माग कसन सुखकार ।
तिथि वारसि रविवार सुभ मूल नख्यत्र उदार ।
ता दिन सम्पूरण लिख्यो नाटक शास्त्र नवीन ।
वाचत ही सुख संपजै समुझै जिके प्रवीन ॥
खरतरगच्छ खिति में प्रसिद्ध, भट्टारक भल सामि ।
श्वेताम्बर श्री खेमजी, निरमल वाणी भांख ।
तसु गुरु भाई रूपचन्द विनै घर अभिधान ।
प्रीतिधरी पोथी लिखी दिन दिन बधतै वान ।
नगर नित्य बधतौ सदा गढ गढ मोलि पवित्र ।
चहल पहल नित चौपटे देख्यां हरषे चित ।
डेरागाजीखान है सुवस सजल सुख धान ।
चातुर्मास करी चाह सौ दिन प्रति बधतै वान ।
2. संवत् 1897 मितो माह सुद 12 दिने सागर चन्द सूरभारवांघ वाचनाचार्य
श्री श्री भवन विशालगणि पं. प्रवरगणि श्री सुखहेमजी गाठी पं. प्र. 108 श्री
हरचन्दजी गाठी तत् शिष्य पं. श्री कुशलदत्तजी तत् शिष्य लघु पं. गिरधारी
लिखतु । श्रावक मोतीलाल तत्पुत्र रूपचन्द लघु मेमा पठनार्थ शुभ भवतु । रूपा
बेगवानी वाचनार्थ लिखवाई पोथी श्री देहरागाजीखां मध्ये ।

डेरागाजीखान मे संवत् 1909 मे श्री बालचन्द सिंगवी थे जिन्हें ~~स्वाध्याय~~ के प्रति विशेष अनुराग था इसलिये उन्होने वहा के मन्दिर मे त्रिलोकसार की प्रति श्रावको के स्वाध्याय हेतु भेट की थी।¹ इसी तरह सवत 1909 मे ही शाह सोभराज पारख नामक श्रावक हुए जिन्होने भद्रवाहु चरित्र की एक प्रति मन्दिर मे विराजमान की। प्रस्तुत प्रति दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्शनगर जयपुर मे मौजूद है।²

सवत 1909 मे ही श्रावकाचार भाषा की एक प्रति श्री होवणमल पारख की धर्मपत्नि ज्ञाननन्दी ने स्वाध्याय वास्ते डेरागाजीखान मन्दिर मे भेट की थी।³

विक्रम की 19वीं शताब्दी मे जयपुर और डेरागाजीखान मे गहरा सम्बन्ध हो गया था। ग्रन्थो की प्रतिलिपि कराने का काम भी जयपुर मे ही सम्पन्न होता था। आचार्य कल्प पंडित श्री टोडरमलजी, पंडित श्री दानतरायजी तथा पंडित श्री सदासुखदासजी कासलीवाल आदि की ख्याति डेरागाजीखान मे भी पहुंच गई थी तथा उनके ग्रन्थो का स्वाध्याय, शास्त्रसभा, गोष्ठियो एवं व्यक्तिगत तौर पर होता रहता था। इस तरह डेरागाजीखान की समाज मे धर्म के प्रति बहुत अधिक उत्साह था। यहा नित्य प्रति प्रातः काल साजबाज के साथ मधुर स्वर लहरी मे जिनेन्द्र पूजन होती थी, तत्पश्चात् परम्परागत शास्त्र सभा चलती थी, जिसमे वृद्ध, प्रौढ युवक एवं महिलाएं आदि सभी अनिवार्य रूप से भाग लेते थे इसीलिये वहा के प्राय सभी वर्गो को चारो अनुयोगो के शास्त्रो की अच्छी जानकारी थी। सायकाल भक्ति गीत आरती के पश्चात् सामूहिक तात्विक गोष्ठी चलती थी, तदुपरात आध्यात्मिक एव वैराग पोषक भजनों से सभा विसर्जित होती। इस प्रकार वहां के लोगो की दैनिक जीवनचर्या का काफी समय धार्मिक कार्यों मे व्यतीत होता था।

वर्ष मे आने वाले प्रत्येक पर्व विशेष तौर पर दशलक्षण पर्व, बडे उत्साह एवं उल्लास के साथ मनाया जाता था। अधिकांश पुरुष एव महिलावर्ग व्रत सयम आदि का पालन विशेष तौर पर करते थे और अधिकांश समय धार्मिक कार्यों मे व्यतीत होता

1. त्रिलोकसार जीकी पूजा जी का पाठ समति बालचन्द सिंगवी विराजमान कीता श्री मन्दिर जो डेरागाजीखान विच अहारि सुदी 2 संवत् 1909
2. श्री भद्रवाहु चरित्र जी री भाषा सा० सोबरा पारख विराजमान कीता श्री डेरागाजीखान के मन्दिर अहारि सुदी 9 संवत् 1909
3. वैशाख कृष्णा 12 सं० 1909 श्रावकाचार भाषा ज्ञानानन्दी सा० होवणमल पारख की वधू विराजमान कीता आषाढ सुदी 6 सं० 1909

था—जैसे, प्रातःकाल 7 से 11 बजे तक सामूहिक पूजन, एक बजे तक शास्त्र प्रवचन, सांयकाल आरती भक्ति आदि तथा बाहर से पधारें हुए विद्वानों द्वारा सार्वजनिक सभा में व्याख्यान एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम। इस प्रकार प्रातः 7 से रात्रि 11 बजे तक क्रमशः कार्यक्रम चलते थे।

युवकों को भी धार्मिक कार्यों में विशेष लगन एवं उत्साह था। उनकी सगीत मण्डली बहुत अधिक विख्यात थी। रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रमों से एवं धार्मिक जैन कथाओं के आधार पर नाटक आदि खेलकर अच्छी धार्मिक प्रभावना करते थे। तथा दशलक्षण पर्व के अन्त में—नगर कीर्तन (शोभायात्रा) बड़े उत्साह एवं धूमधाम के साथ निकाली जाती थी, जिसमें विशालकाय कृत्रिम हाथी एवं तीन मजिला विशाल एवं मनोरम रथ अन्य लवाजमा आदि जो जुलूस के विशेष आकर्षण के केन्द्र होते थे जिससे जुलूस की विशेष शोभा बढ़ती थी तथा भजन मण्डलियों द्वारा सगीत के माध्यम से जैन धर्म का अच्छा प्रचार होता था। प्रत्येक वर्ष दशलक्षण पर्व पर बाहर से किसी न किसी प्रतिष्ठित विद्वान को अवश्य बुलाया जाता था, जिनके प्रवचनों एवं उपदेशों द्वारा महती धर्म प्रभावना होती थी।

डैरागाजीखान की भजन मण्डली ने अपने सुन्दर कार्यक्रमों से अन्य शहरों में भी अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली थी, फलस्वरूप आमन्त्रण मिलने पर फिरोजपुर, लाहौर, शिमला, देहली, सहारनपुर आदि नगरों में समय-समय पर जाकर अपने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अच्छी धर्म प्रभावना करती थी।

डैरागाजीखान की दिगम्बर जैन समाज

पंजाब, सिन्ध, बलूचिस्तान एवं सीमाप्रांत जैसे प्रदेशों में मुल्तान, डैरागाजीखान, लाहौर एवं रावलपिंडी को छोड़कर अन्यत्र कहीं भी दिगम्बर जैन समाज एवं दिगम्बर जैन मन्दिर नहीं थे। सभी प्रदेशों में मुसलमानों का बहुमत था तथा हिन्दू भाई भी अल्पमत में थे, फिर भी डैरागाजीखान के दिगम्बर जैन भाइयों के खानपान एवं रहन सहन पर उन लोगों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा तथा उनका जीवन विशुद्ध जैन धर्म के अनुरूप था। समाज में रात्रि भोजन का विलकुल भी प्रचलन नहीं था तथा बड़े तो क्या बच्चे तक भी रात्रि भोजन नहीं करते थे। कन्दमूल आदि अभक्ष्य भक्षण से वे कोसों दूर रहते थे, तथा धूम्रपान आदि नशीली चीजों के सेवन की कोई भी प्रवृत्ति नहीं थी।

डैरागाजीखान में लगभग 40 ओसवाल दिगम्बर जैन परिवार थे, वे प्रायः सभी व्यापारी वर्ग के थे, तथा वहाँ उनका अच्छा व्यवसाय था। उन परिवारों में श्री मोतीरामजी सिगवी, श्री भोजारामजी पारख, श्री शानूरामजी सिगवी, श्री जसूरामजी सिगवी, श्री रमलदासजी गोलेछा, श्री उदयकरणजी, श्री कर्मचन्दजी सिगवी, श्री गेला-रामजी गोलेछा, श्री रामचन्द्रजी सिगवी, श्री सन्तोरामजी सिगवी आदि परिवार प्रमुख थे।

डैरागाजीखान में पाठशाला

डैरागाजीखान में एक धार्मिक पाठशाला चलती थी जिसमें सन् 1947 के 20 वर्ष पूर्व एक युवक पंडित श्री सूर्यपालजी शास्त्री धार्मिक शिक्षा दिया करते थे। शास्त्री जी अलीगढ़ के रहने वाले थे। आपने डैरागाजीखान में आकर समाज में धार्मिक शिक्षा के अतिरिक्त युवकों में संगठन एवं चरित्र निर्माण का भी महत्वपूर्ण कार्य किया। धार्मिक शिक्षा में वे परिषद् परीक्षा बोर्ड एवं दिगम्बर जैन महासभा की परीक्षाएँ दिलाते थे। पंडितजी ने युवकों का संगठन बनाया और सबसे सेवा, कर्तव्यपरायणता तथा धार्मिक जीवन पालन के भाव भरे। वे पाकिस्तान बनने तक डैरागाजीखान में रहे तथा 20 वर्ष से भी अधिक समय तक समाज के मार्ग दर्शक बने रहे। पाकिस्तान बनने के पश्चात् आप हिसार में रहने लगे और वहाँ आपका असामयिक निधन हो गया।

इस प्रकार डैरागाजीखान पंजाब प्रदेश का एक महत्वपूर्ण नगर रहा जहाँ दिगम्बर जैन संस्कृति पल्लवित एवं पुष्पित हुई तथा सैकड़ों वर्षों तक सारे देश में अपनी विशेषता बनाये रखी।

15 अगस्त सन् 1947

15 अगस्त 1947 को जैसे ही भारत स्वतंत्र हुआ, स्वतंत्रता के साथ साथ भारत का विभाजन भी हुआ, पंजाब का पश्चिमी भाग सिंध, बलूचिस्तान एवं सीमा-प्रायतः को मिलाकर पश्चिमी पाकिस्तान का निर्माण हुआ। पाकिस्तान बनते ही वहाँ से हिन्दू, जैन, सिक्ख आदि गैर मुसलिमों को निकालने की योजना स्वरूप हिन्दू मुसलिम दंगे शुरू हो गये, मारकाट मचने लगी और वहाँ से गैर मुसलिम लोग जान बचाकर पाकिस्तान से भारत जाने का प्रयत्न करने लगे, तो डैरागाजीखान के लोगों को भी जान बचाकर भारत आने के लिये विवश होना पड़ा, किन्तु रास्ते में सिन्धु नदी पडने के कारण अथवा रेल मार्ग न होने के कारण सारा रास्ता असुरक्षित होने से विशेष चिन्ता का विषय बना हुआ था।

ऐसे विकट सकटग्रस्त समय में श्रीमान आसानन्दजी (सुपुत्र श्री कवरभानजी सिगवी) एवं श्री दीवानचन्दजी (सुपुत्र श्री गेलारामजी सिगवी) ने बड़े साहस, धैर्य एवं सूझबूझ के साथ वहाँ से जिन प्रतिमाओं एवं हस्त लिखित शास्त्र भण्डार आदि तथा पूरी समाज को सड़क मार्ग से ट्रक द्वारा भारत की सीमा में ले आये और वहाँ से भारत के ट्रक द्वारा सकुशल दिल्ली पहुँचे जहाँ सास में साँस आई तथा सब लोग अपने को सुरक्षित अनुभव करने लगे।

मूर्तियों एवं शास्त्र भण्डार को श्री दिगम्बर जैन लाल मन्दिर दिल्ली में विराजमान करवा दिया। सब अपने पुनर्स्थापना एवं व्यवसाय की ओर अग्रसर होते हुए कुछ लोग तो दिल्ली बस गये, अन्य लोग जयपुर आकर रहने लगे व अपना घरबार एवं व्यवसाय जमाने में जुट गये।

दिल्ली तथा जयपुर में मुलतान एवं डेरागाजीखान से आये हुए दिगम्बर जैन वन्धु सगठित होकर रहने लगे और मुलतान दिगम्बर जैन समाज के नाम से पूरे देश में विख्यात हो गये ।

पाकिस्तान से आये हुए विस्थापितों को बसाने हेतु जयपुर में आदर्शनगर बसाया गया जिसमें जैन वन्धुओं को भी प्लॉट आवंटित किए गये तथा दिगम्बर जैन मन्दिर को भी जमीन प्राप्त हुई, जहाँ सम्पूर्ण मुलतान दिगम्बर जैन समाज ने अथक परिश्रम से अपने साधनों द्वारा विशाल एवं भव्य कलात्मक दिगम्बर जैन मन्दिर का निर्माण कराया ।

सन् 1962 ई में इस मन्दिर की वेदी प्रतिष्ठा बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ हुई इसके कुछ समय पश्चात् डेरागाजीखान से लाई गई प्रतिमाओं में से चौबीस सर्वाधातु की प्रतिमाओं को दिल्ली मुलतान दिगम्बर जैन समाज ने दिगम्बर जैन लाल मन्दिर दिल्ली में विराजमान रहने दिया, शेष को दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्शनगर जयपुर में विराजमान करने हेतु जयपुर भिजवा दिया जिन्हे विधि विधान एवं उल्लास-पर्वक विराजमान कर दिया गया ।

इस प्रकार दिगम्बर जैन समाज डेरागाजीखान ने भी देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा भक्ति एवं धर्म के प्रति कर्तव्यपरायणता को निभाते हुए ऐसी विषम परिस्थितियों में अपने पुनर्स्थापन के साथ-साथ आदर्शनगर जयपुर का मन्दिर निर्माण कराने में पूर्ण सहयोग देकर वहाँ से लाई गई मूर्तियों एवं शास्त्र भण्डार आदि को भक्ति एवं बहुमान के साथ विराजमान कराकर अपनी धर्मनिष्ठा का परिचय दिया ।



जयपुर में मुलतान दिगम्बर जैन समाज

जयपुर में आ जाने के पश्चात् समाज के सभी बन्धु अपनी-अपनी स्थिति अनुसार जिन्हे जैसे-जैसे भी मकान किराये पर मिल सके रहने लगे और अपने जीवन निर्वाह के लिए व्यवसाय आदि पुनर्स्थापन करने में लग गये। सभी भाई व्यापारी तो थे ही पुरुषार्थ इन लोगों की जीवनचर्या में ही है इसलिए प्रायः सभी बन्धुओं ने दुकाने आदि लेली उनमें से बहुत से तो बड़ी चौपड़ के पास कटला पुरोहितजी, जौहरी बाजार, बापू बाजार, नेहरू बाजार, चाँदपोल बाजार आदि में दुकाने लेकर अपना-अपना व्यवसाय करने लगे और अपने पुरुषार्थ से व्यवसाय को इतना बढ़ाया कि अब जयपुर में जनरल मर्चेन्ट्स, कलर एण्ड केमिकल्स आदि व्यापार में इन लोगों का एकाधिकार है।

जयपुर में विस्थापितों के लिए आवासीय योजनाएं

कुछ समय बाद भारत सरकार ने विस्थापितों के पुनर्वास हेतु कई योजनाएं बसाईं, जिसके अन्तर्गत राजस्थान सरकार ने भी सन् 1949 में जयपुर में आदर्शनगर बसाने की योजना तैयार की, जिसमें विभिन्न गृह निर्माण सहकारी समितियों द्वारा मकान बनाकर देने की योजना बनी।

पंजाब रिहीबिलीटेशन कोआपरेटिव सोसाइटी जिसके उपाध्यक्ष श्रीमान कवर-भानजी थे, उन्होंने मुलतान डेरागाजीखान से आये जैन बन्धुओं को भी आग्रह पूर्वक प्लाट लेने को कहा और कई साधर्मि भाइयों को प्लाट दिलवाये भी।

सन् 1951 में आदर्शनगर में श्रीमान कवरभान जी, श्री खंडाराम जी, श्री राजारामजी आदि कई जैन बन्धुओं के मकान तैयार हो गये किन्तु समस्या थी वहाँ जाकर रहने से नित्य धर्म साधन की, अस्तु श्री कवरभानजी ने अपने प्लाट के एक कमरे में चैत्यालय की स्थापना की, जिसमें मुलतान से लायी गई जिन प्रतिमाओं में से श्री 1008 भगवान चन्द्रप्रभु एवं श्री नेमीनाथ की दो मूर्तिया बड़े मन्दिर से लाकर विराजमान की गईं जिससे आदर्शनगर में आकर बसने वाले साधर्मि भाइयों के देव दर्शन आदि समस्या का तत्कालीन समाधान हो गया और कई महानुभाव आदर्शनगर में आकर रहने लगे।

मन्दिर निर्माण हेतु भूमि की मांग

सरकार के सामने मांग रखी गई कि बड़े दुस्तर प्रयास पूर्वक पाकिस्तान से लाये गये अपने आराध्य देव (प्रतिमाएँ) एवं बहुमूल्य प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को सुव्यवस्थित एवं सुरक्षित विराजमान करने तथा नित्य धर्म साधन हेतु मन्दिर बनाने के लिये भूमि दी जावे।

सरकार ने उक्त माग स्वीकार करते हुए सन् 1953 मे अनुमानतया 2000 वर्गगज भूमि मन्दिर निर्माण हेतु आवंटित कर दी ।

मन्दिर निर्माण की ओर

मन्दिर के लिए जमीन आवंटित होते ही श्रीमान कवरभानजी, दासूरामजी, खडारामजी घनश्यामदासजी, निहालचन्दजी, राजारामजी, न्यामतरामजी व माधोदासजी आदि समाज के प्रमुख महानुभावो ने मन्दिर निर्माण की योजना बनाई, फलस्वरूप सर्वप्रथम सोलह हजार रुपयो की स्वीकृतिया प्राप्त हुई और ज्येष्ठ सुदी पचमी (श्रुत पचमी) सन् 1954 के शुभ दिन जयपुर के प्रसिद्ध जौहरी श्रीमान सेठ गोपीचन्दजी ठोलिया के कर कमलो द्वारा पंडित श्री चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ के सान्निध्य मे वडे उत्साह उल्लास के साथ पंडित गुलावचन्दजी शास्त्री के द्वारा विधि विधान पूर्वक मन्दिर का शिलान्यास किया गया ।

श्रीमान कवरभानजी की देखरेख मे निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ, नीव भरी गई, चुनाई प्लिथ लेवल तक आ पाई थी कि लगभग 11000/— रुपया खर्च हो गये अत आर्थिक कठिनाई सामने आने लगी, इसके अतिरिक्त और भी कई बाधाए दिखाई देने लगी । इन सब कठिनाईयो को ध्यान मे रखते हुए, समाज के कार्यकर्ताओ ने पूरी मुलतान दिगम्बर जैन समाज जयपुर एव दिल्ली का ध्यान इस ओर आकर्षित करने, आर्थिक सहयोग प्राप्त करने तथा निर्माण कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिये श्रीमान आसानन्दजी वगवानी दिल्ली को निर्माण कार्य का सचालक मनोनीत किया जिसे उन्होने समाज के पूर्ण सहयोग के आश्वासन पर सहर्ष स्वीकार करते हुए निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने की योजना बनाने हेतु श्री घनश्याम दासजी, श्री न्यामतरामजी व मंत्री श्री जयकुमारजी को पूर्ण सहयोगी के रूप मे साथ लिया ।

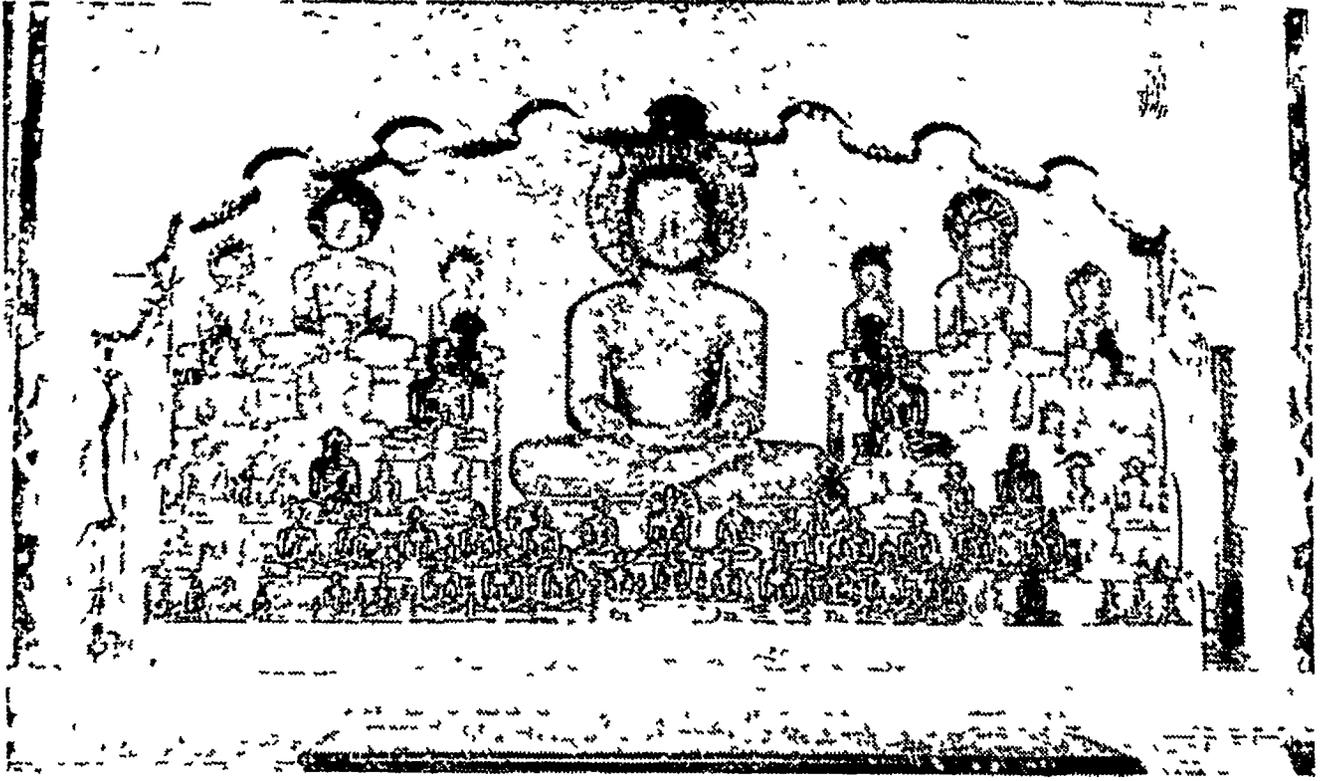
निर्माण कार्य पुन प्रारम्भ हुआ, साथ ही धनराशि एकत्रित करने के लिये कई योजनाए बनाई गई, फलस्वरूप आवश्यकतानुसार क्रमश रुपया भी आने लगा और निर्माण कार्य छत-लेवल तक पहु च गया ।

हाल की चौडाई अधिक होने, बीच मे कोई पिलर नही होने, एव छत को नीचे की ओर प्लेन रखने की इच्छा के कारण यहा के वास्तुकारो ने छत डालने मे अममर्थता व्यक्त की, तब श्री आसानन्दजी दिल्ली से श्रीमान पलटूमिहजी जैन आर्चीटेक्ट को जयपुर लाए और उन्होने छत का डिजाइन तैयार किया । थोडे दिन बाद अपनी देखरेख मे छत डलवाई, इस तरह मन्दिर निर्माण कार्य का एक चरण पूरा हुआ ।

छत पड जाने के पश्चात् यह मुझाव आया कि सबसे पहिले मन्दिर मे वेदी बनवा कर जिन-प्रतिमाओ को विराजमान किया जाय, जिससे कि साधर्मी भाई मन्दिर मे आकर दर्शन पूजन आदि कार्य करेगे तथा मन्दिर के अधूरे निर्माण कार्य को दृष्टिगत रखते हुए इसे शीघ्र ही पूरा करने मे सक्रिय योगदान देगे । यह बात समाज को उचित प्रतीत हुई तथा सभी ओर से वेदी बनवाने की चर्चाए होने लगी जिस पर श्री श्रीनिवामजी शकरलालजी के



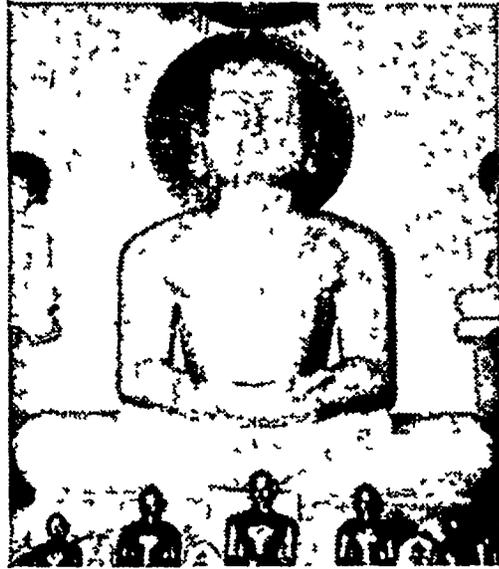
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, आदर्श नगर, जयपुर
का
कलात्मक बाह्य भाग



□ मूल वेदी □

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, आदर्शनगर, जयपुर

भगवान महावीर स्वामी



जयपुर मे प्रतिष्ठित मूलनायक प्रतिमा

परिवार वालो ने अपनी ओर से वेदी बनवा देने की इच्छा व्यक्त की, जिसे समाज ने स्वीकार कर वेदी बनवाने की स्वीकृति दे दी। थोड़े समय में वेदी तैयार कराली गई।

इसी बीच ब्र पंडित श्री पन्नालालजी प्रतिष्ठाचार्य जयपुर आये हुए थे, समाज ने उनसे वेदी प्रतिष्ठा करा देने का आग्रह किया, तब उन्होंने जेठ कृष्णा सप्तमी वि० सवत् 2019 दिनांक 26 मई सन् 1962 के दिन का शुभ मुहुर्त निकालकर उस दिन वेदी प्रतिष्ठा का कार्यक्रम विधि पूर्वक करा देना सहर्ष स्वीकार किया जिससे समाज में उत्साह एवं उत्साह की नई लहर दौड़ गई।

वेदी की विशालता को देखते हुए कुछ महानुभावों के मन में विचार आया कि मुलतान से लाई गई प्रतिमाओं में कोई बड़ी मूर्ति नहीं है यदि इस वेदी के मध्य एक बड़ी प्रतिमा विराजमान हो जाये तो वेदी की अपूर्व शोभा बढ़ जायेगी। यह चर्चा जब समाज में हुई तो ब्रिहारीलालजी के सुपुत्र श्री घनश्यामदासजी सिंगवी, दिल्ली ने बड़ी प्रतिमा विराजमान करने की अपनी इच्छा व्यक्त की, जिसे समाज ने सहर्ष स्वीकार कर अनुमति दे दी।

भाग्योदय से उन्ही दिनों भीलवाड़ा (राजस्थान) में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव होने जा रहा था। घनश्यामदासजी ने तत्काल साठे चार फुट पद्मासन गुलाबी पाषाण की विशाल प्रतिमा भूपालगज-भीलवाड़ा से बैसाख सुदी 11 वीर निर्वाण सवत् 2488, विक्रम सवत् 2019 सोमवार दिनांक 15 मई सन् 1962 को प्रतिष्ठित कराकर आदर्शनगर मन्दिर में ले आए।

सम्पूर्ण मुलतान दिगम्बर जैन समाज दिल्ली जयपुर आदि ने मिलकर जेठ कृष्णा 7 वीर निर्वाण सवत् 2488 विक्रम सवत् 2019 दिनांक 26 मई सन् 1962 को बड़े धूमधाम, हर्षोल्लास एवं विधि विधान पूर्वक, धर्मलिकार ब्र पंडित पन्नालालजी प्रतिष्ठाचार्य से वेदी प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई।

प्रतिष्ठा सवधी विधि विधान सांस्कृतिक कार्यक्रम बाहर से पधारे एवं स्थानीय विद्वानों के प्रवचनों आदि के साथ साथ मुलतान से लाई गई प्रतिमाएं जो शान्तिनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर तेरापथियान में विराजमान थी, को विशाल-शोभा यात्रा सहित धूमधाम से लाकर बड़ी प्रतिमा सहित दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्शनगर की वेदी में विधि पूर्वक-विराजमान किया। यह वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव श्री दासूरामजी तथा उनके पुत्र श्री रोशनलालजी गोलेछा एवं उनके लघुभ्राता स्वर्गीय श्री सुखानन्दजी गोलेछा के सुपुत्र श्री श्रीनिवास शंकरलालजी तथा श्री प्रेमकुमारजी आदि के आर्थिक सहयोग से सम्पन्न हुआ।

श्रीमान कवरभानजी के भी मकान में जो चैत्यालय था वेदी प्रतिष्ठा के समय उन मूर्तियों को भी उत्साह पूर्वक शोभायात्रा सहित मन्दिर में लाकर विराजमान कर दिया गया।

इस तरह से आदर्शनगर मन्दिर में सभी साधर्मि जन मिल जुलकर उत्साह पूर्वक नित्य दर्शन पूजन शास्त्र स्वाध्याय आदि करने लगे।

मन्दिर मे चहल-पहल शुरू हुई तथा राजापार्क, तिलकनगर, जनता कालोनी आदि आसपास रहने वाले धर्म बन्धु भी आकर दर्शन पूजन एवं स्वाध्याय आदि करने लगे ।

प्रतिष्ठा के समय अच्छा अर्थ-संग्रह होने से एव उसी समय व्यक्तिगत रूप से विभिन्न निर्माण कायो की स्वीकृतियाँ मिल जाने से निर्माण कार्य भी तेजी से आगे बढ़ा ।

सबसे पहिले मन्दिर मे 60×44 फुट के विशाल सभाभवन को पूरा किया गया, जिसका फर्ग श्रीमान शिवनाथमलजी कोठारी दिल्ली वाले ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती गणेशीबाई की स्मृति मे बनवाया । सभाभवन मे प्रवेश करते ही सामने 6×4 फुट काच मे उत्कीर्ण किया हुआ विशाल एव मनोज्ञ भगवान ऋषभदेव के चित्र के दर्शन होते है । इस वेदी को चारो ओर से रगविरगे काच के छोटे-छोटे टुकडो से कलात्मक ढग से सुसज्जित किया गया है, जिसकी शोभा बिजली की आन्तरिक रोशनी से देखते ही बनती है, ऐसा अद्भुत चित्र शायद ही अन्यत्र कही देखने को मिले । यह अनुपम दृश्य श्रीमान ताराचन्दजी मुपुत्र श्री भोलारामजी सिंगवी के आर्थिक सहयोग से बना है ।

इसी सभा भवन मे पूर्व दिशा की ओर शास्त्र भण्डार रखने के लिये विशेष व्यवस्था की गई है, जहां हस्तलिखित ग्रन्थो को सुव्यवस्थित ढग से वेष्टन आदि लगाकर तथा नामांकित करके रखवाये गये है ।

पश्चिम की ओर मुद्रित ग्रन्थो को विशेष रूप से रखने की व्यवस्था की गई है, जिनको जिल्द आदि सवार कर क्रमानुसार सुनियोजित ढग से रखा गया है जिससे कि स्वाध्याय प्रेमियो को वाञ्छित ग्रन्थ शीघ्रता एव सुविधा पूर्वक दिया जा सके ।

सभा भवन की उत्तीरी दीवार पर देव-पूजन के महात्म्य का द्योतक दृश्य जिसके साथ भगवान महावीर के समवसरण का चित्र दिखाया गया है, यह भावभीनी रचना काच के रगविरगे टुकडो से निर्मित है, जिसमे कला, सौदर्य एव भक्ति के महात्म्य का दिग्दर्शन होता है । यह चित्र श्री किशोरीलालजी मुपुत्र श्री ताराचन्दजी ननगाणी द्वारा निर्मित कराया गया है ।

सभा भवन मे गैलरी के चारो ओर पुस्तकाकार बने पन्नो पर कलात्मक ढग से रगविरगी स्याही में अति शिक्षा-प्रद ससार, देह एव भोगो से वैराग्य दिलाने वाले, छदो में हृदय स्पर्शी वाक्य लिखे है ।

सभा भवन के ऊपर दक्षिण की ओर उत्तर देखता हुआ वेदी मण्डप है, जिसमे अति सुन्दर एव विशाल वेदी बनी हुई है । इस वेदी मे मुल्तान एव डेरागाजीखान से लाई गई लगभग 101 मूर्तिया विराजमान है, तथा समय-समय पर राजस्थान मे हुई पचकल्याणक प्रतिष्ठाओ मे प्रतिष्ठित कराई गई कई प्रतिमाएं भी लाकर विराजमान की गई हैं ।

स्वाध्याय मन्दिर

ऊपर उत्तर की ओर 20×40 फुट का अति सुन्दर वारादरी के समान स्वाध्याय



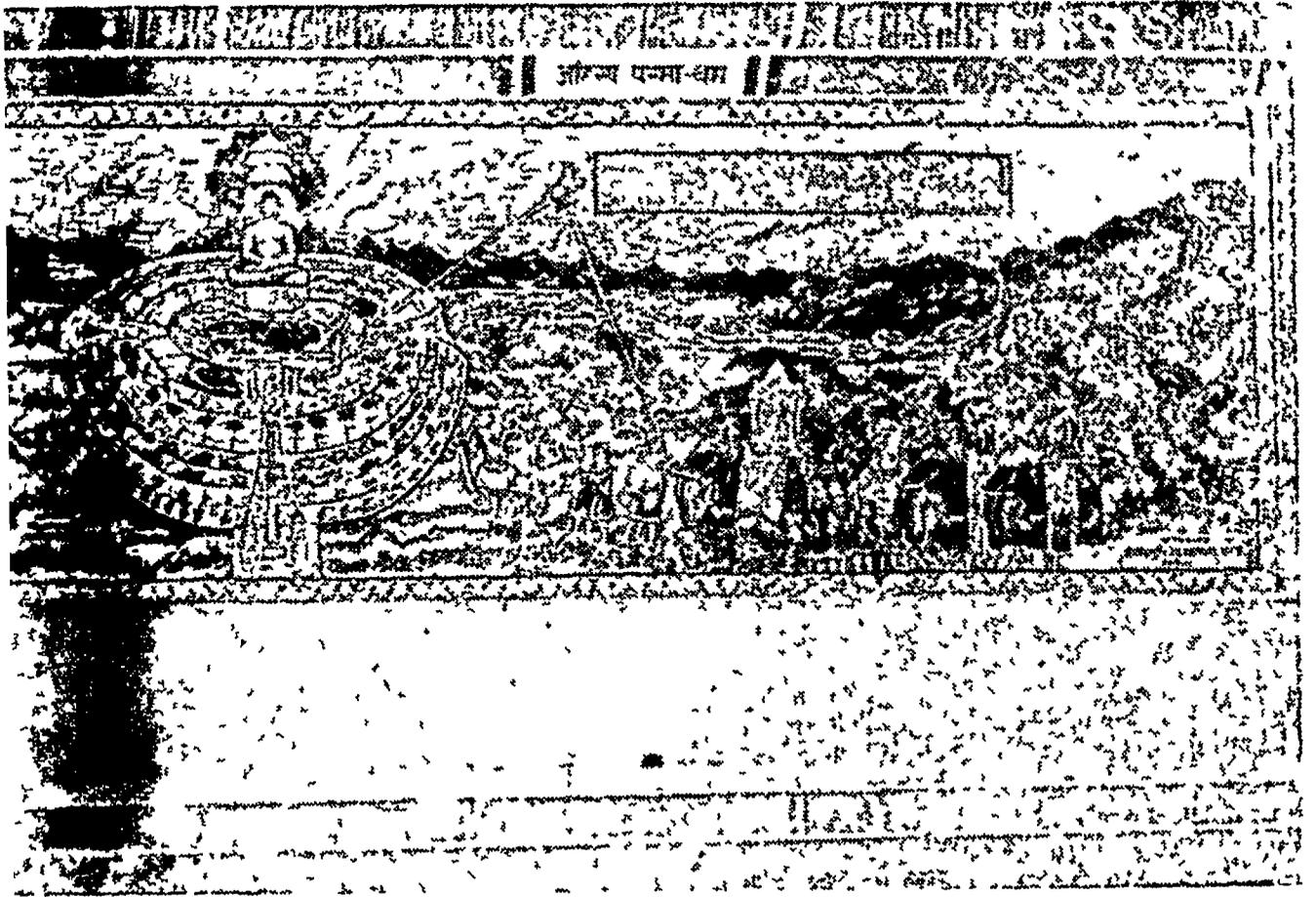
□ भगवान् आदिनाथ

श्री मुलतान दिगम्बर जैन मन्दिर, आदर्श नगर, जयपुर के सभा-भवन में शीशे पर उत्कीर्ण कलात्मक एवं मनमोहक चित्र की एक झलक ।

मुलतान एवम् डेरागाजीखान से लाई गई प्राचीन हस्त लिखित पांडुलिपियां



श्री दि जैन मन्दिर आदर्शनगर जयपुर के सभाभवन मे व्यवस्थित रूप से रखे गए शास्त्र भण्डार की एक झलक



पूजा के भाव मात्र से जाते मेढक का राजा श्रेणक के हाथी के पग तले दब कर मर जाने पर देव गति को प्राप्त कर भगवान श्री 1008 महावीर के समवशरण मे पूजा करते हुए रग-विरगे काच के टुकडो से बना कलापूर्ण चित्र ।

भवन बना है, जिसमें तीन ओर हरे कांच की खिड़किया ही खिड़कियां हैं, जिससे शीतल एवं सुहावनी पवन हर समय आती रहती है इसलिये पखे आदि कृत्रिम हवा की आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती। यहां नित्य नियमित रूप से प्रातः शास्त्र सभा होती है, जिसमें स्थानीय एवं बाहर से पधारे हुए विद्वानों के प्रवचन होते हैं। फलस्वरूप महिलाएं एवं पुरुष वर्ग सदैव तत्व ज्ञान अर्जित करते हैं। यह स्वाध्याय मन्दिर श्रीमान स्वर्गीय श्री आसानन्दजी सिगवी की इच्छानुसार उनके भाई श्री खुशीरामजी आदि (फर्म मोतीराम कंवरभान) ने बनवाया है तथा मन्दिर की दीवार के बाहर की ओर सगमरमर श्री पवनकुमारजी सुपुत्र श्री रिखब-दासजी वगवाणी दिल्ली के आर्थिक सहयोग से लगाया गया है, और मन्दिर की बाउ ड्री का विशाल सगमरमर का दरवाजा (गेट) श्री माधोदासजी एवं उनके लघु भ्राता श्री बलभद्र कुमारजी सिगवी ने बनवाया है। इस प्रकार इस विशाल मन्दिर का निर्माण कार्य सम्पूर्ण मुलतान दिगम्बर जैन समाज के सयुक्त आर्थिक सहयोग से अथवा मन्दिर में विभिन्न स्थानों के लिये विभिन्न व्यक्तियों द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से हो सका है।

वेदी मण्डप के दोनों ओर निजी रूप में स्वाध्याय करने के दो कमरे हैं जिनमें पश्चिम की ओर के कमरे में महिलाएं एवं पूर्व की ओर के कमरे में पुरुष वर्ग बैठ कर स्वाध्याय, सामायिक व जाप आदि करते हैं।

इन्हीं कमरों के ऊपर दो कमरे और बने हैं जिनमें कि समय समय पर आये हुए त्यागियों एवं वैरागियों के ठहराने की समुचित व्यवस्था है।

नीचे सभा भवन के बाहर उत्तर में 20×40 फुट का एक सुंदर बरामदा है, जिसके ऊपर स्वाध्याय मन्दिर बना है।

इस मन्दिर का बाहरी सामने का भाग अति कलात्मक एवं आकर्षक है, जिसके ऊपर स्वाध्याय मन्दिर बना है। उसमें बने तीन शिखर मानों रत्नत्रय (सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र) प्राप्ति का स्थान जिन मन्दिर को दर्शाने के द्योतक हैं।

यह मन्दिर बाह्य एवं अन्दर (दोनों ओर) एवं समस्त फर्श सीढिया आदि सम्पूर्ण सगमरमर के पत्थर से निर्मित, अति सुंदर एवं आकर्षक है। वैसे तो जयपुर में अति प्राचीन एवं सुन्दर बड़े बड़े जिन मन्दिर हैं किन्तु यह मन्दिर नवीनतम आधुनिक वस्तु कला से निर्मित अपने ढंग का एक ही विशाल भव्य एवं अद्वितीय दर्शनीय जिन मन्दिर है।

अपनी सुंदरता के कारण यह मन्दिर अल्पकाल में ही इतना प्रख्यात हो गया है कि जयपुर आने वाले तीर्थयात्री इसके दर्शन करने अवश्य ही आते हैं, तथा दर्शन करके अपनी जयपुर यात्रा को सफल मानते हैं।

मन्दिर के पीछे की जमीन में मन्दिर को आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बनाने हेतु दो मंजिला भवन बनवाकर स्टेट बैंक आफ वीकानेर एण्ड जयपुर को किराये पर दिया गया है जिससे मन्दिर का दैनिक खर्च सहज रूप से चलता है ।

भगवान महावीर 2500वाँ निर्माण महोत्सव वर्ष

नवम्बर सन् 1974 ई में सारे भारतवर्ष में भगवान महावीर 2500वा परिनिर्वाण महोत्सव बड़े पैमाने पर मनाया गया, जिसके अन्तर्गत पूरे भारतवर्ष एवं विदेशों में भगवान महावीर के सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार हुआ और कई जनोपयोगी एवं कल्याणकारी योजनाएँ बनाई गईं अथवा कार्यान्वित की गईं । इसी के अन्तर्गत राजस्थान प्रान्त में भी भगवान महावीर 2500 वा निर्वाण महोत्सव समिति राजस्थान द्वारा प्रान्तीय स्तर पर कई योजनाएँ कार्यान्वित की गईं । जयपुर में भी महावीर विकलांग केन्द्र जैसी कई मानव कल्याणकारी महत्वपूर्ण योजनाएँ प्रारम्भ हुईं, इस अवसर पर मुलतान दिगम्बर जैन समाज भी पीछे नहीं रहा अपितु मुलतान समाज ने भी निम्न दो विशाल महत्वपूर्ण योजनाओं को मूर्त रूप दिया:—

- 1 महावीर कीर्ति स्तम्भ
2. महावीर कल्याण केन्द्र

महावीर कीर्ति स्तम्भ

भगवान महावीर 2500वा निर्वाण महोत्सव जयपुर सभाग समिति ने योजना बनाई कि राजस्थान की राजधानी जयपुर में श्री महावीर कीर्ति स्तम्भ का निर्माण कराया जावे । कई बैठकों में विचार विमर्श हुआ किन्तु समस्या थी अर्थ एवं स्थान की ।

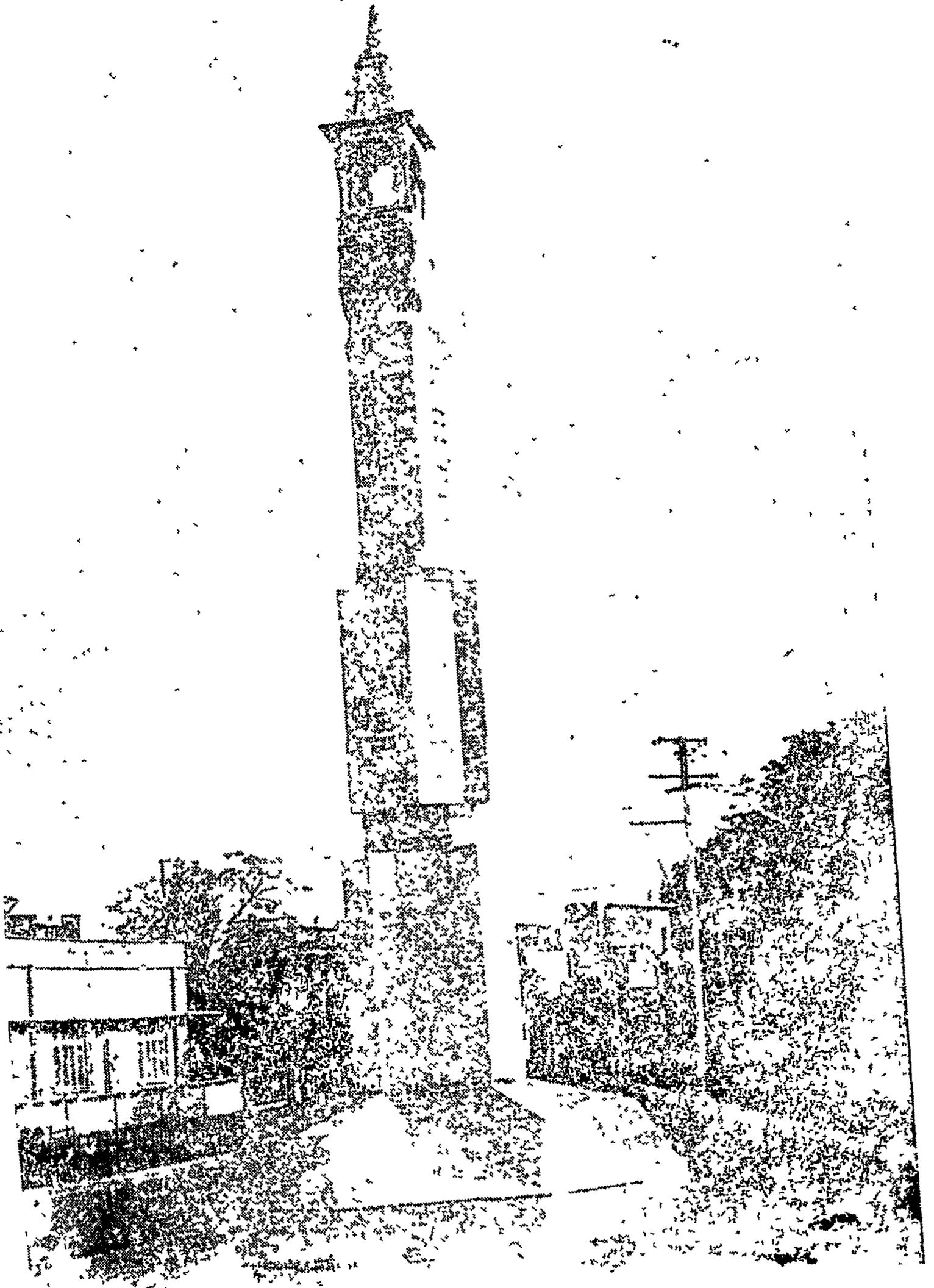
मुलतान दिगम्बर समाज ने प्रस्ताव रखा कि वे दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्शनगर के प्रागण में अपने व्यय से महावीर कीर्ति स्तम्भ निर्माण कराने को तैयार हैं ।

यह प्रस्ताव मुनकर निर्वाण महोत्सव समिति के सदस्यों में हर्ष की लहर दौड़ गई । जयपुर सभाग समिति ने प्रान्तीय समिति को इस प्रस्ताव से अवगत कराया जिससे उन्हें भी अत्यंत प्रसन्नता हुई और उन्होंने शीघ्र निर्माण कराने का आग्रह किया ।

अब महावीर कीर्ति स्तम्भ के निर्वाण का दायित्व मुलतान दिगम्बर जैन समाज पर आने से, समाज में इसकी चर्चा होने लगी फलस्वरूप श्री रगूलाल सुपुत्र श्री भोलारामजी वगवाणी एवं बिहारीलालजी के सुपुत्र स्व० श्री घनश्यामदासजी सिंगवी की धर्मपत्नी श्रीमती विशनीदेवी ने निर्माण कराने हेतु आर्थिक सहयोग दिया ।

अखिल भारतीय भगवान महावीर 2500 वा निर्वाण महोत्सव समिति दिल्ली के स्वीकृत डिजाइन के अनुसार (राकेट के आकार का) आधुनिक डिजाइन महावीर कीर्ति स्तम्भ अर्थात् मानस्तम्भ का श्रीमान रगूलालजी एवं स्वर्गीय श्री घनश्यामदासजी के सुपुत्र श्री इन्द्रकुमार एवं वीरकुमारजी के करकमलो द्वारा सन् 1976 ई० में शिलान्यास कराया गया ।

महावीर कीर्तिस्तम्भ





श्री महावीर कल्याण केन्द्र

महावीर कीर्ति स्तंभ 51 फुट ऊंचा सफेद संगमरमर के पत्थर से बना है। मूल में 5 खण्ड का आधार 6 फुट ऊंचा मूल भाग है, उस पर पचकोण तीन भाग में स्तंभ बना है।

सबसे ऊपर के खण्ड के प्रथम भाग में अनादि निधन महामन्त्र (णमोकार मंत्र), दूसरे भाग में चार मंगल अर्थात् (चत्तारि मंगल), तीसरे भाग में संसार में चार उत्तम (चत्तारि लोचुत्तमा), चौथे भाग में संसार में चार ही शरण पव्वज्जामि, तथा पांचवें भाग में वदना (मोक्ष मार्गस्य नेतार भेतार' कर्म भूभृताम्, जातार विश्व तत्वानां वदे तद्गुण लब्धये) ये सब पूरे वाक्यों में लिखे गये हैं।

दूसरे खण्ड के प्रथम भाग में "परमानन्द सिन्धु देव" (परमेष्ठी परम ज्योति) अर्थात् देव का स्वरूप, दूसरे भाग में, "जानदीप" अर्थात् शास्त्र का स्वरूप, तीसरे भाग में समता के साधक गुरु का स्वरूप, चौथे भाग में वस्तु स्वभाव धर्म अर्थात् आत्मा के शुद्ध स्वभाव का तथा पांचवें भाग में गुणप्रधान स्तुति उत्कीर्ण कराई गई है। नीचे के खण्ड एवं आधार खण्ड पर इतिहास एवं अध्यात्म के विषय के लेख लिखा जाना शेष है।

इस स्तंभ में तीन खण्डों के ऊपर चारों ओर चार गुलाबी पापाण के धर्म चक्र बनवाकर लगाये गये हैं। उसके ऊपर वेदी है जिसमें पूर्व दिशा में, विदेह क्षेत्र में विराजमान श्री अरहत परमात्मा 1008 श्री सीमधर भगवान तथा पश्चिम में भरतक्षेत्र के धर्मतीर्थ प्रवर्तक प्रथम तीर्थकर भगवान श्री ऋषभदेव, उत्तर व दक्षिण दिशामें अन्तिम तीर्थकर भगवान श्री महावीर की स्मृतियाँ विराजमान हैं। इस प्रकार मानस्तंभ की वेदी के चारों ओर चार प्रतिमाएँ सुशोभित हैं।

यह विशाल एवं सुन्दर महावीर कीर्ति स्तंभ श्रीमान सेठ रगूलालजी वगवानी एवं श्रीमान स्वर्गीय सेठ श्री घनश्यामदासजी सिंगवी की धर्मपत्नी श्रीमती विसनीदेवी के आर्थिक सहयोग से निर्माण हुआ तथा मुलतान दिगम्बर समाज के मन्त्री श्री जयकुमारज जैन के ही अथक परिश्रम एवं कुशल देखरेख में निर्मित हुआ।

इस प्रकार यह आधुनिक डिजाइन का अति मनोज्ञ एवं आकर्षक महावीर कीर्ति स्तंभ भगवान महावीर के पञ्चोत्सवों के निर्वाण वर्ष में जहाँ जयपुर में जैन समाज की महान उपलब्धि है वहाँ दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्शनगर के प्रांगण में बनने से इस मन्दिर की अपूर्व शोभा बढ़ गई है तथा यह महान पवित्र स्थान तीर्थ स्थल बन गया है, अस्तु मुलतान दिगम्बर जैन समाज के लिये गौरव का विषय है।

महावीर कल्याण केन्द्र भवन का निर्माण

महावीर कल्याण केन्द्र के लिये श्री दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्शनगर के प्रांगण में दो मजिले भवन के निर्माण कराने का निर्णय लिया गया। जिसमें आयुर्वेदिक औषधालय

चलाने हेतु नीचे के भवन का निर्माण श्रीमान कंवरभानजी के सुपुत्र स्व० श्री खशीरामजी की स्मृति में उनकी धर्मपत्नि श्रीमती पदमो देवी एवं सुपुत्र श्री शीतल कुमारजी ने कराया ।

ऊपर की मजिल में विद्यालय भवन का निर्माण रमेश कुमारजी मुलतानी एवं श्री वन्सीलालजी के आर्थिक सहयोग से कराया गया । अतिथि गृह का निर्माण दूसरी मजिल में, श्रीमान स्व० श्री आसानन्दजी सुपुत्र श्री कवरभानजी की स्मृति में उनकी धर्मपत्नि श्रीमती रामादेवी के आर्थिक सहयोग से हुआ ।

मन्दिर आदि निर्माण कार्य के साथ-साथ समाज की अन्य गतिविधियाँ—

स्वतन्त्रता के बाद मुलतान से आये हुये दिगम्बर जैन वन्धु जहा अपने आपको पुनर्स्थापन में कटिबद्ध थे वहाँ धार्मिक कार्यों में भी उनकी रुचि पूर्ववत् बनी हुई थी । श्री शान्तीनाथ दिगम्बर जैन बडा मन्दिर तेरापथियान में जहाँ मुलतान से लाई गई प्रतिमाएं विराजमान थी नित्य सामूहिक पूजन, शास्त्रसभा में प्रवचन आदि का कार्यक्रम तो चलता ही था विशेष तौर पर दश लक्षण आदि पर्वों में मुलतान की तरह यहाँ प्रातः साजवाज के साथ सामूहिक पूजन, तत्पश्चात् शास्त्र प्रवचन, सायकाल भक्ति आरती, रात्रि में सगीत मण्डली द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किये जाते थे । इससे थोड़े ही समय में मुलतान दिगम्बर जैन समाज की सगीत मण्डली जयपुर में विशेष प्रख्यात हो गई ।

सन् 1950 में शान्तीनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर तेरापथियान में सिद्ध चक्र विधान का आयोजन विशाल रूपसे बड़े उत्साह के साथ किया गया ।

सन् 1962 में दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्श नगर में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव बड़े धूमधाम के साथ कराया गया जिसमें दिल्ली आदि से सम्पूर्ण मुलतान दिगम्बर जैन समाज के लोग तो आये ही साथ ही बाहर के अन्य स्थानों से भी बहुत बड़ी संख्या में धर्मप्रेमी वधु, विद्वत्गण एवं सगीतज्ञ आदि भी एकत्रित हुए । इसी अवसर पर शान्तीनाथ दिगम्बर जैन बडा मन्दिर तेरापथियान की ओर का रास्ता जौहरी बाजार से विशाल रूप में रथ यात्रा निकाली गई, जिसमें मुलतान से लाई गई प्रतिमाओं में से केवल चार-पांच प्रतिमाएं शहर में रहने वाले मुलतानी जैन वधुओं के आग्रह पर वही छोड़कर बाकी सब जिन प्रतिमाएं लाकर आदर्शनगर दिगम्बर जैन मन्दिर में विराजमान की गई ।

सन् 1964 में 108 मुनि श्री विद्यानन्दजी महाराज, आचार्य श्री देशभूषणजी महाराज के सघ के साथ जयपुर पधारे, उस समय श्री दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्शनगर मे मुनि श्री विद्यानन्दजी महाराज का श्रीमान् पंडित गिरोमणी श्री चैनसुखदासजी के साथ समागम हुआ, तथा आपस में धार्मिक चर्चा वार्ता हुई। फलस्वरूप दशलक्षण पर्व के अवसर पर मुनि श्री विद्यानन्दजी के दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्शनगर के प्रांगण मे प्रवचनों के आयोजन सर्वप्रथम सार्वजनिक रूप से किए गये, जिसमें हजारों की संख्या में जैन अजैन, सभी बधुओं ने धर्म लाभ उठाया।

सन् 1964 मे श्री टोडरमल स्मारक भवन के शिलान्यास हेतु श्री पूरनचन्दजी गोदीका आदि सघ के रूप मे पूज्य श्री कानजी स्वामी को जयपुर पधारने के लिये



श्री 108 मुनि विद्यानन्दजी महाराज

(आदर्शनगर मन्दिर मे श्रीमान् प० चैनसुखदासजी एव मुलतान दि० जैन समाज के सदस्य श्री आसानन्दजी आदि से विचार-विमर्श करते हुए)

निवेदन करने सोनगढ गये, उस समय मुलतान दिगम्बर जैन समाज के महानुभाव भी एक पूरी बस लेकर उनके साथ गये तथा आध्यात्मिक सत पूज्य श्री कानजी स्वामी जब जयपुर पधारे तो उस समय आदर्शनगर दिगम्बर जैन मन्दिर के प्रांगण मे विशाल पांडाल बनाकर उनके प्रवचनों का आयोजन किया गया, इससे बहुत बड़ी संख्या मे लोगो ने उनकी अध्यात्म रस से परिपूर्ण अमृत वाणी (धारा) का रसास्वादन किया।

इस प्रकार सन् 1971 मे जब श्री टोडरमल स्मारक भवन वापू नगर जयपुर मे

वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया था उस समय भी आध्यात्मिक सत पूज्य श्री कानजी स्वामी का जयपुर में स्मारक भवन के अतिरिक्त केवल श्री दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्शनगर में दूसरी बार प्रवचन का आयोजन विशाल पैमाने पर किया गया, जिसमें भारी जन समूह ने उनकी तात्विक एवं अध्यात्मपूर्ण अमृत वाणी का रसपान किया।

तथा इसी प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन में बड़ी संख्या में बाहर से पधारे हुए महानुभावों की भोजन आदि की व्यवस्था में मुलतान दिगम्बर जैन समाज के युवकों ने 21 दिन तक पूर्ण सहयोग दिया।

आदर्शनगर दिगम्बर जैन मन्दिर में प्रत्येक वर्ष दशलक्षणी पर्व बड़े धूमधाम एवं विविध आयोजनों के साथ बड़े उत्साह पूर्वक मनाया जाता है और प्रत्येक वर्ष बाहर से उच्चकोटि के विद्वानों को आमन्त्रित किया जाता है। प्रातः 7 बजे से 9-30 बजे तक सामूहिक पूजन, तत्पश्चात् 9-30 बजे से 10-30 बजे तक बाहर से बुलाये गये विद्वानों के प्रवचन, दोपहर को तत्वगोष्ठी, सायंकाल भक्ति एवं आरती, रात्रि में 11 बजे तक दशो दिन विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक एवं धार्मिक आयोजनों द्वारा महती धर्म प्रभावना होती रहती है। तथा दश लक्षण पर्व के मध्य होने वाले रविवार को विशेष रूप से सार्वजनिक उत्सव मनाया जाता है जिसमें बाहर से पधारे हुए एवं स्थानीय प्रमुख विद्वानों के प्रवचन, आध्यात्मिक एवं उपदेशक, गीत, पूजन, एवं कलषाभिषेक, शोभायात्रा आदि का आयोजन किया जाता है जिसमें शहर तथा आसपास के उपनगरों के लोग बड़ी संख्या में भाग लेकर धर्म लाभ लेते हैं।

इस तरह वर्ष में आने वाले दीपावली भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव अष्टानिकाए, अक्षय तृतिया, श्रुत पंचमी, रक्षा बन्धन आदि पर्व भी बड़े उत्साह के साथ अनेक कार्यक्रमों के साथ मनाये जाते हैं।

समय समय पर सिद्ध चक्र विधान, भक्तामर स्तोत्र विधान एवं ऋषि मण्डल आदि विधान व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से बहुत उत्साह के साथ कराये जाते रहे हैं, जैसा कि विशेष कर सन् 1976 का सिद्ध चक्र विधान का बृहत् आयोजन उल्लेखनीय है।

साधू-सत त्यागी-व्रती आदि को भी ठहराने की आदर्शनगर दिगम्बर जैन मन्दिर में समुचित व्यवस्था है।

सन् 1979 में दिल्ली से श्रवणवेलगोला की ओर विहार करते हुए एलाचार्य 108 श्री विद्यानन्दजी महाराज जब जयपुर पधारे तो इस अवसर पर 13-1-79 से 21-1-79 तक महाराज दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्शनगर में विराजे तथा उनके प्रातः 8 बजे से 9 बजे तक सार्वजनिक रूप से विशाल जन समूह की उपस्थिति में सारगर्भित प्रवचन हुए, जिससे जैन अजैन सभी बन्धुओं ने धर्म लाभ लिया।

एलाचार्य 108 श्री विद्यानन्दजी महाराज अपने सघ के साथ श्री मुलतान दिगम्बर जैन मन्दिर, आदर्शनगर, जयपुर में। महाराज के पीछे खड़े हैं मुलतान दिगम्बर जैन समाज की कार्यकारिणी के पदाधिकारी एवं सदस्य-गण।

(चित्र सन् 1979)



पीछे खड़े हैं :-बाएं से दाएं :-श्री नाथूलाल जी सोगानी, (उपमत्री) श्री महेन्द्र कुमार जी, श्री शान्तीलाल जी, श्री ज्ञानचन्द जी, श्री जयकुमार जी (मत्री), श्री मुलतानी चन्द जी, श्री न्यामतराम जी (अध्यक्ष), श्री अर्जुन लाल जी (उपाध्यक्ष), श्री बलभद्र कुमार जी (कोषाध्यक्ष), श्रीपोखर दास जी, श्री भद्रकुमार जी, श्री ईश्वरलाल जी, श्री गिरधारी लाल जी।

इसी वर्ष 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज जब सघ सहित जयपुर पधारे तो उनका भी आदर्शनगर दिगम्बर जैन मन्दिर मे पदार्पण हुआ। छे दिन तक यहा विशाल जन समूह मे उनके परम आध्यात्मिक प्रवचन हुए, जिससे सभी साधर्मी बन्धुओ ने अपूर्ण धर्म लाभ लिया।

इसी प्रकार पूज्य 105 श्री महजानन्दजी महाराज (श्री मनोहरलालजी वर्णी) जब जयपुर पधारे तो आदर्शनगर दिगम्बर जैन मन्दिर मे उनके प्रवचनो का आयोजन किया गया, जिससे समाज को उनके आध्यात्मिक प्रवचन सुनने का अपूर्ण अवसर मिला।

इसी प्रकार सन् 1980 ई० मे बालब्रह्मचारिणी कौशल बहिनजी (पानीधत बाली) ने भी यहां पधार कर एक महीने तक आदर्शनगर दिगम्बर जैन मन्दिर मे धर्माभूत की वर्षा की। उपरोक्त प्रकार से हम देखते है कि साधु-सत त्यागीगण, विद्वत वर्ग आदि महानुभाव समय समय पर आदर्शनगर मन्दिर मे पधारते रहते है, जिससे यहाँ तथा आस पास के साधर्मी जन उनकी ज्ञान गंगा से धर्माभूत का रसपान किया करते है।

समय समय पर जयपुर के विभिन्न मन्दिरों मे होने वाले उत्सवो रथ यात्राओ तथा अन्य कार्यक्रमो मे मुलतान दिगम्बर जैन समाज अपनी सगीत मण्डली सहित बडे हर्षोल्लास के साथ भाग लेती रहती है। फलस्वरूप जयपुर मे कोई भी उत्सव होता है तो उक्त मण्डली को कार्यक्रम प्रस्तुत करने हेतु अवश्य ही आमन्त्रित किया जाता है तथा सामूहिक उत्सवो जैसे महावीरजयती आदि की शोभा यात्रा मे मुलतान दिगम्बर जैन समाज की मण्डली को विशेष रूप से बुलाया जाता है। जिसमे मुलतान जैन समाज प्रत्येक वर्ष नवीन प्रकार की आधुनिक कलात्मक झाकियो के साथ अपनी सगीत मण्डली द्वारा सर्वोत्कृष्ट कार्यक्रम प्रस्तुत करती है, इसी कारण वह सम्पूर्ण जुलूस मे पूरे जन समूह के विशेष आकर्षण का केन्द्र होती है।

उसी प्रकार भगवान महावीर के 2500वाँ निर्वाण महोत्सव वर्ष मे शोभा यात्राए, गोष्ठियो, सांस्कृतिक कार्यक्रमो मे मुलतान दिगम्बर जैन समाज की सगीत मण्डली ने सामूहिक रूप से अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करके अथवा समाज के कुछ महानुभावो ने व्यक्तिगत रूप से सक्रिय सहयोग देकर निर्वाण महोत्सव को सफल बनाने मे पूर्ण योगदान दिया। फलस्वरूप उसके समापन समारोह मे मन्त्री श्री जयकुमारजी एव श्री बलभद्र कुमारजी को सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया गया।

इस प्रकार जहाँ मुलतान दिगम्बर जैन समाज धार्मिक गतिविधियो को बडे उल्लास एव उत्साह के साथ कार्यान्वित करता रहा है वहाँ लोकोपकारिक कार्यों मे भी पीछे नहीं रहा। समय-समय पर देश एवं राज्य मे आने वाली विपत्तियो जैसे कि अतिवृष्टि, बाढ, सूखाग्रस्त, पीडित व्यक्तियो को यथाशक्ति सहायता देकर जयपुर समाज के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलता रहा है।

उसी प्रकार दिगम्बर जैन मन्दिर के प्रांगण में ही भगवान महावीर 2500वाँ परिनिर्वाण महोत्सव वर्ष में निर्माण किए गये महावीर कल्याण केन्द्र भवन में महावीर कल्याण केन्द्र आयुर्वेदिक औषधालय की स्थापना करके लोकोपकारीय, महान कार्य किया।

महावीर कल्याण केन्द्र आयुर्वेदिक—औषधालय

इस औषधालय का भव्य उद्घाटन दिनांक 7 जुलाई सन् 1977 ई० को श्रीमान माननीय सुप्रसिद्ध वैद्यरत्न श्री सुशील कुमारजी जैन के कर-कमलो द्वारा किया गया। तथा श्रीमान वैद्य श्री सुशील कुमारजी ने ही इसका कार्यभार मुख्य चिकित्सक के रूप में सभाल कर इसका संचालन किया जिसका ही परिणाम है कि इसे प्रारम्भ होते ही इसकी घबल कीर्ति अल्प अवधि में ही सम्पूर्ण जयपुर एव दूर दूर तक के महानगरो तक फैल गई, तथा काफी सख्या में साधारण एव असाध्य रोगी उपचार हेतु आने लगे, तथा वैद्वराजजी की नि स्वार्थ सेवा से लाभान्वित होकर स्वास्थ्य लाभ करने लगे। तथा उनके प्रमुख शिष्य आयुर्वेदाचार्य आयुर्वेद वाचस्पति श्री अशोककुमार जी गोधा भी यहा कार्यरत हैं, तथा इनके योग्य उपचार से सैकड़ो रोगी प्रति दिन लाभान्वित होते हैं।

सुयोग्य निदान पद्धति के कारण इनकी ख्याति थोड़े ही समय में चारो ओर फैल गई।

इनके अतिरिक्त कई सेवाभावी महानुभाव एव महिलाएं प्रतिदिन अपना अमूल्य समय देकर नि स्वार्थ सेवा प्रदान करती हैं।



वैद्य श्री सुशील कुमार जैन



वैद्य श्री अशोक कुमार गोधा

इस औषधालय से प्रति वर्ष निम्न लिखित संख्या में रोगियों ने लाभ उठाया :—

वर्ष	रोगी संख्या
1977-78	18,673
1978-79	24,723
1979-80	27,048

इस प्रकार प्रति वर्ष अधिक से अधिक लोग इस औषधालय से लाभान्वित होकर स्वास्थ्य प्राप्त कर रहे हैं।

इस औषधालय भवन में चार कक्ष हैं, सर्व प्रथम कक्ष में रोगियों का प्रतीक्षालय आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है जिसमें रोगियों को बैठने के लिये कुर्सियां लगी हुई हैं तथा कमरे के मध्य में एक बड़ी टेबिल लगी हुई है जिस पर दैनिक पत्र पत्रिकाएं, धार्मिक साहित्य एवं आरोग्य सम्बन्धी पत्रिकाएं तथा पुस्तिकाएं रखी हुई हैं, जिससे रोगी वहां बैठकर प्रतीक्षा की अवधि में उपलब्ध साहित्य का अवलोकन करके अपने समय का सदुपयोग करते हैं।

दूसरे कक्ष में श्री वैद्यराजजी बैठते हैं जहां रोगियों का निदान करके औषधि पत्र बनाया जाता है। इसी कमरे में औषधि वितरण कक्ष भी है, जहां से रोगी औषधि प्राप्त करते हैं।

तीसरे कक्ष में शैथिल्य लगी हुई है जहां रोगियों को बिठाकर पेट आदि की आंतों का शिथिलकरण द्वारा असाध्य रोगों का उपचार किया जाता है, तथा इसी कमरे में एक अलग रक्त मल मूत्र कक्ष आदि का मशीनों द्वारा परीक्षण किया जाता है, तथा लेबोरेटरी के रूप में यह कक्ष एलोपैथिक पद्धति पर आधुनिक मशीनों आदि से सुसज्जित किया हुआ है।

महावीर कल्याण केन्द्र की विशेष बात यह है कि यहां केवल रोगियों का उपचार ही नहीं होता बल्कि यहां आरोग्य एवं आध्यात्म विषय पर व्याख्यानमालाओं के आयोजन भी किए जाते हैं। यह कार्यक्रम मास में एक बार तो अवश्य ही रखा जाता है तथा आने वाले वर्षों पर विशेष आयोजन किए जाते हैं, जिसमें प्रमुख विद्वानों एवं विशेषज्ञों को समय-2 पर आमन्त्रित कर उनके व्याख्यान कराये जाते हैं, तथा ध्यान आदि का भी अभ्यास कराया जाता है। इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक उपदेश गीत एवं प्रार्थनाएं आदि से शान्ति प्रप्ति हेतु साधना की जाती है।

इन सभी गतिविधियों के मुख्य सूत्रधार वैद्यरत्न श्री सुशील कुमारजी हैं, जो समय-समय पर नये नये विद्वतगण विशेषज्ञों से एवं विशिष्ट महानुभावों को लाकर इन सारे कार्यक्रमों को सफल बनाते हैं।

इस आयुर्वेदिक औषधालय के शुभारम्भ कराने का श्रेय श्रीमान बलभद्र कुमारजी को है, जिनकी प्रेरणा से समाज ने इसे मूर्तरूप दिया ।

इसका संचालन मुलतान दिगम्बर जैन समाज महावीर कल्याण केन्द्र उप समिति द्वारा किया जाता है तथा इसको दो विभागों में विभक्त किया गया है । प्रथम सामान्य प्रबन्ध विभाग, एवं द्वितीय औषधि क्रय एवं निर्माण विभाग । प्रथम विभाग के संचालक श्रीमान बलभद्र कुमारजी हैं जो प्रारम्भ से ही अपना अमूल्य समय देकर, इसकी व्यवस्था करने में अपना पूरा योगदान दे रहे हैं । द्वितीय औषधि विभाग के संचालक श्री शम्भु कुमारजी हैं, जो औषधिक्रय करने तथा उसकी वितरण प्रणाली की देखरेख करने में अपना काफी बहुमूल्य समय देकर इसे सुचारु रूप से क्रियान्वित कर रहे हैं ।

इस तरह मुलतान दिगम्बर जैन समाज द्वारा संचालित श्री महावीर कल्याणकेन्द्र की स्थापना एक महान उपलब्धि है, जिससे समाज, जनकल्याणोपयोगी कार्य करके अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करता है ।

इस प्रकार स्वतंत्रता के बाद पाकिस्तान से आये मुलतान दिगम्बर जैन समाज के महानुभावों ने पिछले 32 वर्षों में जहाँ अपने आपको भली भाँति पुनर्स्थापित करके अच्छी आर्थिक प्रगति की वहाँ अपनी अटूट धार्मिक श्रद्धा एवं निष्ठा होने के कारण आदर्श-नगर में विशाल एवं भव्य जैन मन्दिर का निर्माण कराया तथा जयपुर नगर में समय समय पर होने वाले सभी धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में अग्रणी होकर उत्साहपूर्वक अविरल रूप से दिगम्बर जैन समाज जयपुर के साथ कंधे से कंधा मिलाकर भाग लेता रहा, इसीलिये अल्प काल में ही जयपुर तथा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समाज में मुलतान दिगम्बर जैन समाज ने अपना विशेष स्थान बना लिया है ।

श्री महावीर जीव कल्याण समिति

समाज में लोकोपकारक कार्य होते हुए भी एक कमी का अनुभव किया जा रहा था कि समाज में कोई ऐसी सुविधा नहीं है जिसके माध्यम से अपेक्षित व्यक्तियों की गुप्त सहायता आदि करके व्यथा का निवारण किया जा सके ।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु श्री महावीर जीव कल्याण समिति की स्थापना की योजना विचारार्थ आई कि एक ऐसा ध्रुव कोष बनाया जाय जिसके मूलधन को सदा सुरक्षित रखते हुए उसकी ब्याज की आय से उद्देश्यपूर्ति हो । इसको साकार रूप दिया श्री रगूलाल जी जैन देहली, श्री नियामतराम जी, श्री पोखरदास जी, श्री जयकुमार जी, श्री रमेश मुलतानी, श्री शीतल कुमार जी जयपुर ने ।

इसकी रूपरेखा बनाई गई, प्रारूप तैयार हुआ कि इस कोष में प्रारम्भ में 5 लाख रुपये एकत्रित करने का लक्ष्य रखा जाय ।

प्रसन्नता की बात है कि इस कोष में अनुमानतः 1,75,000 (पौने दो लाख रुपये) के वचन तो उसी समय मिल गये । करीब 55,000) रुपये मिलते ही कार्य प्रारम्भ कर दिया गया ।

यह कोष पूरी मुलतान दि० जैन समाज का चिरकाल तक एकता का सूत्र एव प्रतीक बना रहेगा । जिसका प्रमाण है कि इसके प्रारम्भिक सदस्य श्री रगूलाल जी, श्री गुमानीचन्द जी, श्री प्रेमचन्द जी, श्री तोलाराम जी आदि देहली एव श्री नियामतराम जी, श्री पोखरदास जी, श्री माधोदास जी, श्री जयकुमार जी, श्री अर्जुनलाल जी, श्री जवाहरलाल जी, श्री रमेश मुलतानी, श्री शीतलकुमार जी आदि जयपुर ।

विश्वास है कि पूरा समाज इसमें तन-मन-धन से सहयोग देते हुए इसके उद्देश्यों की पूर्ति में भागीदार बनता रहेगा ।



दिल्ली में मुलतान दिगम्बर जैन समाज

मुलतान एव डेरागाजीखान से आये हुए ओसवाल दिगम्बर जैन बन्धु व्यवसाय की दृष्टि से दिल्ली में रहने लगे, और वहाँ अपने को पुनर्स्थापन हेतु विभिन्न प्रकार के व्यवसायो में दिन रात एक करके कठिन परिश्रम से उसको आगे बढ़ाने में जुट गये। तथा उसमें सभी ने अच्छी प्रगति की और अपने जीवन स्तर को काफी ऊँचा ले गये।

व्यवसाय में इतनी उन्नति की कि वह अपने-अपने व्यवसायों में अग्रणी के रूप में माने जाने लगे। जैसे-जैसे समय आगे बढ़ा निवास के लिए भी लोगो ने अपने मकान आदि बनाने में सफलता प्राप्त की और अब प्रायः समाज के सभी परिवारों ने अपने-अपने स्तर के अनुसार बहुत अच्छे-अच्छे सभी आधुनिक सुविधा से परिपूर्ण निवास स्थान बना लिए हैं और सुख शान्ति से सभी बन्धु जीवन यापन कर रहे हैं, उनमें से कई परिवार तो बहुत आगे बढ़ गये हैं।

जहाँ भौतिकता में वे बहुत आगे बढ़े वहाँ अपने पूर्वजों से मिले सकारों से धार्मिक प्रवृत्तियों में भी सदैव उल्लास एव उत्साह के साथ तत्पर रहे।

इसी का परिणाम है कि दिल्ली में रहते हुए भी जैसा कि पूर्व पृष्ठों में बताया गया है मुलतान दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्शनगर जयपुर के निर्माण में जयपुर मुलतान दिगम्बर जैन समाज के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर मुलतान दिगम्बर जैन समाज दिल्ली ने पूरा तन-मन-धन से सहयोग देकर मन्दिर को विनाल, भव्य एव मुन्दर रूप देने में सहयोग दिया और इसकी वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव तथा समय-समय पर होने वाले सिद्ध चक्र विधान महोत्सव एव अन्य उत्सवों आदि के समयों पर सामूहिक रूप से जयपुर आकर उन सभी कार्यक्रमों को मफल बनाने में अपना हर सम्भव योग दिया।

श्री दिगम्बर जैन लाल मन्दिर चाँदनी चौक लाल किले के सामने डेरागाजीखान से लार्ड हुई चौबीस तीर्थकरों की 24 सर्व धातु की एव अन्य कुछ मूर्तियों विराजमान हैं। प्रतिवर्ष आनेवाले पर्वधराराज दशलक्षण पर्व को बड़े उत्साह एव उल्लास के साथ मनाया जाता है जहाँ अलग वेदी बनाकर प्रातः 8 वजे से 10½ वजे तक बड़ी भक्ति-भाव व सुर ताल के साथ सामूहिक पूजन होती है जो सभी के लिए आकर्षण का केन्द्र बन जाती है, और हर वर्ष बाहर से कोई न कोई विद्वान बुलाया जाता है जो 12 वजे तक शास्त्र प्रवचन करते हैं। जिसमें पूरी समाज के छोटे-बड़े स्त्री-पुरुष वच्चे आदि सभी तन्मयता से भाग लेकर तत्त्व ज्ञान से धर्मोपार्जन कर आत्मिक शान्ति प्राप्त करते हैं।

इसी प्रकार भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव दीपावली के दिन भी इसी मन्दिर मे सामूहिक रूप से एकत्रित होकर भगवान महावीर की पूजन, भक्ति आदि के साथ लड्डू चढाने का कार्यक्रम बडे हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न किया जाता है ।

प्रति वर्ष महावीर जयन्ती के दिन शोभायात्रा मे मुलतान दिगम्बर जैन समाज की ओर से भजन मडली वडे उत्साह के साथ भाग लेती है और अपने आध्यात्मिक उपदेश एव भक्ति आदि गीतो से शोभायात्रा मे आकर्षण का केन्द्र बनी रहती है ।

इस तरह से दिल्ली मे समय-समय पर होने वाले उत्सवो मे जैसा कि भगवान महावीर का 2500वा निर्वाण वर्ष महोत्सव के उपलक्ष मे निकाली गई महान शोभायात्रा मे मुलतान दि० जैन समाज ने विशेष उत्साह एव उल्लास के साथ भाग लिया और उसमे आकर्षक झांकी एव भजन मडली के माध्यम से महती धर्म प्रभावना की तथा एलाचार्य मुनि विद्यानन्द जी के दिल्ली प्रवास के समय उनके सानिध्य मे होने वाले कार्यक्रमो मे मुलतान समाज के युवको एव महिलाओ ने सगीत-कविताए आदि देकर अच्छी धर्म प्रभावना मे योग दिया तथा अच्छी ख्याति प्राप्त की ।

व्यक्तिगत रूप से भी कई बार कई महानुभाव रात्रि जागरण, संगीत, उत्सव आदि कराकर अपनी धार्मिक प्रवृत्ति का परिचय देकर बच्चो मे धार्मिक संस्कार बनाये रखने को प्रेरित करते रहते है । धार्मिक गतिविधियो के साथ-साथ लोकोपकारक कार्यों मे भी समाज पीछे नही । कई प्रकार से गुप्तदान मुलतान सेवा समिति के माध्यम से दीन दुखियो की सेवा, नेत्र चिकित्सा शिविरो मे आर्थिक योग व विद्यार्थियो को पारितोषिक सहायता आदि देकर भिन्न-भिन्न लोकोपकारक कार्यों मे भी मुलतान दिगम्बर जैन समाज दिल्ली हमेशा तत्पर रहता है ।

यहां के युवको मे भी उत्साह कम नही है उनमे भी सगठित रूप से कार्य करने की कामना है । इसी से प्रेरित होकर उन्होने "मुलतान जैन परिषद" के नाम से एक संगठन बनाया जिसके माध्यम से वे आने वाले प्रत्येक धार्मिक एव सामाजिक कार्यों को रुचि एवं उल्लासपूर्वक भाग लेकर कार्यान्वित करने मे तत्पर रहते है ।

इनके प्रेरक है श्री बुद्धसेन सिगवी, अध्यक्ष श्री वीर कुमार जैन, उपाध्यक्ष प्रेम कुमार एव निहालचन्द जैन, महामन्त्री बाबूलाल जैन, मन्त्री मनमोहन कुमार, सहमन्त्री अशोककुमार जैन, कोषाध्यक्ष इन्द्रकुमार जैन एव आयोजन मन्त्री अशोककुमार गोलेछा ।

इस तरह मुलतान एव डेरागाजीखान से आये दिगम्बर जैन बन्धु दिल्ली आदि मे अपनी धार्मिक, सामाजिक एव लोकोपकारिक प्रवृत्तियो से सभी समाज एव देश को प्रेरणाप्रद रहे है ।



श्री मुलतान दि० जैन समाज

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वानों की दृष्टि में

मुलतान का आदर्श जैन समाज

प० कैलाशचन्द्र शास्त्री
सिद्धान्ताचार्य
वाराणसी

सन् 1942 में मुझे दस लक्षण पर्व के लिये मुलतान की दिगम्बर जैन समाज का निमन्त्रण मिला और मैंने उसे स्वीकार तो कर लिया, किन्तु हृदय में यह शका बनी रही कि सूदूर पंजाब प्रदेश में न जाने जैन समाज का रहन-सहन, खान-पान कैसा होगा और व्रत्तादि कैसे पाले जा सकेंगे। किन्तु वहाँ पहुँच कर मेरी सभी शकायें दूर हो गईं और जैन आखिर जैन ही हैं वे कहीं भी रहे किन्तु जैनत्व की सुवास नहीं जा सकती।

यह बतला देना भी उचित होगा कि मुलतान में दिगम्बर जैन प्रारम्भ से ही अधिकांश ओसवाल दि० जैन थे। कुछ बाद में भी श्वेताम्बर से दिगम्बर बने थे। मैं उस समय के बुजुर्गों के नाम भूल गया हूँ कि किस तरह उन्होंने परीक्षा करके सत्यमार्ग को पहचान कर आत्महित की दृष्टि से दिगम्बर बने थे। इसके लिए दोनों सम्प्रदायों में शास्त्रार्थ भी हुआ था। दिगम्बरों की ओर से न्याय दिवाकर पण्डित पटनालालजी बुलाये गये थे। जब मैं मुलतान गया उस समय मुलतान डेरागाजीखान में अधिकांश ओसवाल दि० जैन ही थे। कुछ अग्रवाल एवं अन्य जाति के परिवार भी रहते थे। मेरी याददास्त के अनुसार डेरागाजीखान में 40 घर और मुलतान में 60 घर ओसवाल दिगम्बर जैनो के थे। मन्दिर में पूजन, भजन, शास्त्रसभा बड़े ठाट से होती थी। रात्रि को बालक अकलक निपकलक आदि के कई ड्रामे करते थे।

मुलतान की जैन समाज ने प० अजितकुमार जी को अपने यहाँ बुलाकर बसा लिया था और प्रेस खुलवा दिया था। आर्य समाज में शास्त्रार्थ करने में सबको बड़ा रस था। रात्रि के व्याख्यानो में भी ईश्वर कर्तृव्य खण्डन आदि विषय रखे जाते थे। मन्दिर बड़ा विशाल था।

एक दिन मुझसे बातचीत में वहाँ के बुजुर्ग बोले—पण्डितजी हमारी आम्नाय विगडती जाती है, लडके वच्चे बाजार में खाने लगे हैं। पहले हमारे यहाँ दूज, पचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी को हरी शाक सब्जी नहीं खाई जाती थी। अब तो केवल अष्टमी चतुर्दशी को नहीं खाते। मुझे यह सब सुनकर बड़ा अचरज हुआ। मैंने कहा आपके यहाँ अभी भी धर्म है। हमारे यहाँ तो अष्टमी, चतुर्दशी का विचार ही समाप्त है। वे मेरा मुँह देखने लगे।

मैंने उनसे उनकी पुरानी प्रथाओं के सम्बन्ध में जिज्ञासा प्रकट की। तब बोले— पहले हमारे या समाज की आज्ञा के बिना बच्चे न मंदिर में चक्कर डोर सकते थे और न स्वयं गन्धोदक ले सकते थे। इसके लिए समाज से आज्ञा लेनी पड़ती थी कि हमारा बालक अब इस योग्य हो गया है, समाज आज्ञा प्रदान करे। कितना बड़ा सामाजिक अनुशासन था और विनय अविनय का कितना ध्यान था।

बाहर से आने वाले जैनो के लिए यह स्थायी व्यवस्था थी कि नम्बर वार सबके घर बन्धे हुए थे। मन्दिर के मालिक को यह हिदायत थी कि मन्दिर में जो नवीन व्यक्ति आवे उसे जिस घर का नम्बर हो उसे भोजन के लिए स्वयं पहुँचा आवे। मैं पर्व में जितने दिन रहा उतने दिन मेरा भोजन उन्हीं घरों में हो सका जिनके नम्बर थे। इसमें बड़े छोटे का प्रश्न नहीं था। आशानन्द रगूराम की दुकान बड़ी विशाल थी, बड़ा कारोबार था। सुखानन्दजी, चोथूरामजी, जिनदासमलजी, विहारीलालजी आदि वुजुर्ग थे। बड़ा ही सुन्दर सगठन बना हुआ था।

वही से मैं डेरागाजीखान गया। लाला कंवरभान मुखिया थे। पर्व के बाद एक दिन नगर कीर्तन था। पूरा स्टेज बन्धा हुआ साथ-साथ चलता था। भजन और ड्रामा होता जाता था। शराब व जुए आदि की बुराईया आदि विषय होते थे। जनता की भीड़ बढ़ती जाती थी और अन्त में अपने स्थान पर पहुँच कर वही भीड़ जलसे के रूप में बदल जाती थी। वक्ताओं के भाषण होते थे। प्रचार का ऐसा सफल आयोजन मैंने कहीं नहीं देखा। पंजाबी प्रदेश, जैनो के सिर्फ 38 घर और यह रंग देखकर मैं दग रह गया था। मैं आज भी उन सब दृश्यों को नहीं भूला हूँ। दशलक्षणजी में जहाँ जाता हूँ तो मुल्तान और डेरागाजीखान की चर्चा अवश्य करता हूँ।

पुराने सब उठ गये, मुल्तान और डेरागाजीखान छूट गये। किन्तु दूसरी पीढ़ी में भी धर्म-प्रेम वही है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है जयपुर के आदर्शनगर में बना मुल्तानवासियों का जैन मन्दिर जिसकी रजत जयन्ती मनाई जा रही है। यह पुरुषार्थी समाज की सफलता का जीता जागता उदाहरण है जिन्हे देश विभाजन के समय अपना सर्वस्व छोड़कर भागना पड़ा। उन्होंने अपने पुरुषार्थ से इस आदर्शनगर को एक आदर्श के रूप में विश्व के सामने रखा है और आदर्शनगर का यह जैन मन्दिर भी एक आदर्श रूप ही है। आशा है मुल्तान की दिगम्बर जैन समाज अपने पुरातन आदर्श को जिसकी मैंने ऊपर चर्चा की है, नहीं भूलेगी और उसे ही अपना आदर्श सदा बनाये रखेगी। आचार्यों ने ठीक ही कहा है “जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है।”

आचार्यकल्प पं. टोडरमलजी एवं मुलतान दि. जैन समाज

डॉ० हुकमचन्द भारिल्ल
सम्पादक,
'आत्म धर्म' जयपुर ।



मुलतान दिगम्बर जैन समाज शताब्दियों से तत्वाभ्यासी एवं अध्यात्म प्रेमी समाज रहा है। आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी की 225 वर्ष पूर्व लिखित महत्वपूर्ण कृति "रहस्यपूर्ण चिट्ठी" का प्रेरणास्रोत मुलतान निवासी भाई खानचन्दजी, गंगाधरजी, श्रीपालजी और सिद्धारथदासजी का वह पत्र है, जिसमें उन्होंने कुछ सैद्धान्तिक और अनुभवजन्य प्रश्नों के उत्तर जानना चाहे थे और जिसके उत्तर में यह "रहस्यपूर्ण चिट्ठी" लिखी गई थी।

यद्यपि आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी की यह प्रथम कृति है तथापि उसमें जो प्रौढता दिखाई देती है, वह उनके गम्भीर अध्ययन एवं आत्मानुभव को स्पष्ट कर देती है। आज ऐसा कौन दिगम्बर जैन होगा जो पं. टोडरमलजी के नाम से परिचित न हो। उनका "मोक्षमार्ग प्रकाशक" आज घर-घर पहुँच चुका है और जन-जन की वस्तु बना हुआ है।

"रहस्यपूर्ण चिट्ठी" में चर्चित विषय से जहाँ एक ओर पण्डित टोडरमलजी की विद्वता की छाप हमारे हृदयपटल पर अंकित होती है, वहीं दूसरी ओर उसमें समागत प्रश्नों को देखकर तत्कालीन मुलतान दिगम्बर जैन समाज की रुचि, जिज्ञासा और अध्ययन के स्तर का भी सहज ज्ञान हो जाता है।

यातायात की सुविधाओं के अभाव में भी इतनी दूर तक प्रश्नों को भेजना और उनसे समाधान प्राप्त करने का प्रयत्न करना उनकी तीव्रतम रुचि और जिज्ञासा को तो प्रगट करता ही है, साथ ही प्रश्नों का उच्च स्तर देखकर उनके अध्ययन का स्तर भी ध्यान में आये बिना नहीं रहता।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जयपुर और मुलतान दिगम्बर जैन समाज का आध्यात्मिक सम्बन्ध उतना ही पुराना है जितना पुराना जयपुर नगर है।

जब सन् 1947 में इस पावन देश के भारत और पाकिस्तान के रूप में दो टुकड़े हुए और मुलतान नगर पाकिस्तान में चला गया तो मुलतान दिगम्बर जैन समाज को भी अपनी प्रिय मातृभूमि मुलतान नगर को छोड़ना पड़ा।

वे भारत के किसी भी नगर में बस सकते हैं, पर उन्होंने जयपुर को ही क्यों चुना ? इसमें कोई सदेह नहीं कि जयपुर और मुलतान का वह पुराना आध्यात्मिक सम्बन्ध इसमें प्रेरक रहा है ।

जयपुर के उपनगर आदर्शनगर में बसे मुलतान दिगम्बर जैन समाज के बन्धुओं से मेरा गत तेरह वर्षों से निकट सम्पर्क रहा है । उनकी धार्मिक प्रवृत्ति, आध्यात्मिक रुचि ने मुझे अन्तर से प्रभावित किया है । उन्होंने बहुत ही सुन्दर, अत्यन्त विशाल जैन मन्दिर बनवाया है जिसमें मुलतान से आये सैकड़ों जिन बिम्ब व हस्तलिखित शास्त्र विराजमान हैं । उक्त मन्दिर में उन लोगों द्वारा प्रतिदिन अत्यन्त भक्ति-भाव पूर्वक की जाने वाली सामूहिक पूजन देखने योग्य होती है । किसी भी प्रकार की आचरण शिथिलता उनके जीवन में अभी तक नहीं आ पाई है । इस भौतिकवादी युग में यह उनकी धार्मिक निष्ठा का प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

उक्त जिन मन्दिर की रजत जयन्ती महोत्सव एवं उसी मन्दिर के प्रागण में नवनिर्मित महावीर कीर्तिस्तम्भ की वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव आगामी 26-27 अप्रैल को होने जा रहा है ।

उनके उज्ज्वल आध्यात्मिक भविष्य की मंगलकामनाओं के साथ ।

मुलतान दिगम्बर जैन समाज

पं. खुशालचन्द गोरावाला,
वाराणसी

प्राकृत का “मूलठाण” संस्कृत युग में “मूलस्थान” हुआ और सिन्ध पर इस्लामिकी आक्रमण हो जाने के बाद मुलतान होकर आज तक इसी रूप में है । अनायास ही यह शब्द अपने अतीत की ओर आकृष्ट करता है क्योंकि “मोहनजोदड़ो” और “हरप्पा” भी मूलठाण के ही चक्र में थे । प्राक्वैदिक अर्थात् द्रविड या श्रमण संस्कृति का मूलस्थान आधुनिक मुलतान आज भी गर्द, गर्मा-गदा “गोरिस्तान तोफा से मुलतान” के रूप में प्रचलित किवदन्ती द्वारा श्रमणों, ब्राह्मणों और मुस्लिमों का गोरिस्तान है । भले ही आज यह पाकिस्तान में पड़ कर तथोक्त इस्लामिक राज्य की मुख्यनगरी रूप से जाना जाता है । किन्तु इसमें खाली पड़े या मकतव बने जैन मन्दिर, वैष्णव देवालय, आर्य समाज मन्दिर

और गुरुद्वारे इसे अर्वाचीन मोहनजोदडो की श्रणी में बैठाये हैं। अतीत में यदि श्रमणों की नागरिक संस्कृति को प्रकृति के प्रकोप ने भूतल में छिपा लिया था, तो आज धार्मिक उन्माद में साम्प्रदायिक राज्य के थपेडो में पड़ कर मूलस्थान, अपनी विषाण मुद्रा में ही अपनी वीथी सारी करुण कथा कह रहा है।

भारत-विभाजन के समय

मुलतान से आये श्रमण (जैन) ब्राह्मण (वैदिक) संस्कृति के पालक भारतीय आज हमें उस हजारो वर्ष पुराने जन-ब्रजन (माइग्रेशन) का जीताजागता उदाहरण दिखाते हैं जो 5-7 हजार वर्ष पहिले श्रमणो (द्रविडो) ने सिन्ध के प्रबल धार में पड़कर किया होगा अथवा डेढ हजार वर्ष पूर्व विध्वंसक एवं बर्बर मुस्लिम आक्रमण के बाद ही इसे किया होगा। इतना ही नहीं गंगा-क्षेत्र के हरिद्वार, कान्यकुब्ज, प्रयाग और वाराणसी के समान सिन्धु क्षेत्र का मुलतान भी भारत की उन नगरियों में रहा है जिन्होंने भारतीय इतिहास के प्रत्येक युग में सबल-कर्म भूमिका निभायी है। श्रमण या जैन संस्कृति की दृष्टि से मुलतान की मौलिकता अद्वितीय है।

जातियों की दृष्टि से ओसवाल जाति के अधिकतम लोग सारे भारत में जिन-सम्प्रदायी (श्वेताम्बर) ही हैं। मुलतान और आसपास का जैन समाज राजाश्रय प्राप्त श्वेताम्बरत्व की बाढ से भी अछूता रहा था। जिन सम्प्रदाय रूपी मरुस्थल में भी मुलतान और उसका अचल दिगम्बरत्व की शस्यस्थली (ओइसिस) या जिनधर्मो (दिगम्बर) ही था और हजारो वर्ष बीत जाने पर भी विशुद्ध दिगम्बर रहा। अल्पसंख्यक होने से जहाँ जहाँ अनेक हीनतायें या हानियाँ होती हैं वहीं एक बड़ा लाभ भी होता है। बहुसंख्यको का अनागत भय अल्पसंख्यकों को सुसंगठित और पुरुषार्थी बनाये रखता है तथा बहुसंख्यक भी अपवाद-भीरता के कारण अल्पसंख्यकों का अधिक ख्याल रखते हैं। पजाब तथा सीमान्त प्रदेश में गैरमुस्लिमों को भी न्यूनाधिक वे सुविधायें सुलभ थीं जो आज के भारत में मुसलमानों को अतिसुलभ हैं। यही कारण था कि मुलतान-डेरागाजीखान, आदि के दिगम्बर ओसवाल को अपनी विरादरी में विशेष मान था तथा इनके जिनकल्पी (दिगम्बर) रूप को श्वेताम्बर जैन भी सम्मान से देखते और उत्कृष्ट मानते थे।

साधर्मो वात्सल्य

मुलतान डेरागाजीखान आदि के जैनियों में ऐसा साधर्मो प्रेम था जिसकी दूसरी मिसाल खोजना कठिन है। यहाँ पर रक और राजा, धनी-निर्धन, सबल-दुर्बल और शिक्षित-अशिक्षित साधर्मो परस्पर में ऐसा व्यवहार रखते थे कि हीन को कभी अपनी हीनता का आभास भी नहीं होता था। लक्षाधीश क्या कोट्याधीश भी अपनी बेटी अपने ही मुनीम के बच्चे को ब्याह देता था। अर्थात् "रोटी" की समता के सिवा "बेटी" के व्यवहार में भी उत्कृष्ट समता थी। साधर्मो का सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक स्थितिकरण समता आदि तो मुलतान अचल के दिगम्बरो के लिये रोजमर्रा के कार्य थे।

सहिष्णुता

यद्यपि मुलतान अचल के जैन समाज में बहुभाग एव प्रमुख ओसवाल लोग ही थे किन्तु उन्हें जातिमद छू भी नहीं गया था। विविध जातियाँ एक परिवार की तरह गुथी तथा बाहर से आये किसी भी जाति के व्यक्ति या परिवार को ऐसा अपनाते थे कि वह भी दिगम्बर या मुलतानी जैसा ही हो जाता था। इतना ही नहीं उनका साधर्मि (प्रेम) श्वेताम्बरों को भी प्राप्त था। रोटी के समान बेटो व्यवहार भी उनके साथ चलता था। इसका परिणाम यह था कि श्वेताम्बर बन्धु अपनी साम्प्रदायिक मान्यताओं में बंधे रह कर भी मूलधर्म (जिनकल्प) को ही उपादेय मानते थे और स्वीकार करते थे कि हमारी मूर्तियाँ राज-अवस्था की ही हैं। केवली या वीतरागी रूप तो दिगम्बर मूर्तियों का ही हैं। वही उपादेय एवं श्रेष्ठ हैं।

अग्नि परीक्षा

अन्तरग और बहिरग जिनधर्म के पालन तथा मानने में लीन मुलतान-अंचल के साधर्मियों को यह कल्पना भी नहीं थी कि देश के टुकड़े होंगे और उन्हें अपनी पितृभूमि छोड़कर जाना पड़ेगा। इस अग्नि परीक्षा की भयानक घड़ी में भी मुलतान डेरागाजीखान के इन जिनधर्मियों को अपनी विपुल सम्पत्ति की इतनी चिन्ता नहीं थी, जितनी कि अपने शास्त्र की थी। देवालय तो जगम नहीं बनाये जा सकते थे किन्तु देव-शास्त्र की मात्रा तो लौकिक सम्पत्ति के लवाश भी नहीं थी। हा देव-शास्त्र का महत्व निश्चित ही अनन्त गुण था। घर-द्वार-धन-धान्यादिक को छोड़कर जाने को तैयार थे। ये हमारे धर्मवीर आर्य देव-शास्त्र को प्राण देकर भी छोड़ने को तैयार नहीं थे। मुलतान अचल के जैनियों ने अन्न-जल का त्याग करके घोषणा कर दी कि वे तब तक हवाई जहाज पर नहीं चढ़ेंगे जब तक उन्हें पूरे देव-शास्त्रों के साथ जाने की अनुमति और व्यवस्था नहीं की जायेगी। अन्न में हमारे ये साधर्मि अपनी अग्नि परीक्षा में सफल हुए तथा अपने देव-शास्त्रों के साथ ही भारत आये।

करणीय

जयपुर, दिल्ली, बम्बई आदि में वसे हमारे ये साधर्मि यद्यपि अपने पुरुषार्थ के बल पर फिर सम्पन्न भारतीय बन गये हैं और इन्होंने जितना सम्भव था उतना अपने नये पडौंसियों के रगरूप में ढलने का भी प्रयत्न किया है। किन्तु उनकी सादगी, समता, साधर्मि वात्सल्य आदि तदवस्थ हैं तथा इन्होंने अपनी मुलतानी पहिचान भी कायम रखी है। इसका ही ये सुफल है कि जयपुर ही नहीं जहा-जहां ये जाकर वसे हैं वहाँ इनके अस्तित्व को मान्यता मिली है। क्योंकि देवपूजा, गुरुपास्ति, स्वाध्याय, विनय, तप और दान इन छोटे गृहस्थों के नित्य कृत्यों का वे सावधानी से पालन करते हैं तथा प्रवासी और स्थानीय साधर्मियों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार करते हैं।

एक आदर्श जैन समाज

पं० प्रकाश हितैषी शास्त्री

सम्पादक

सन्मति सन्देश, दिल्ली 37

मुलतान दिगम्बर जैन समाज की धर्मरुचि का परिचय इससे मिलता है कि आज से करीब 220 वर्ष पूर्व मुलतान जैन समाज ने उस समय के महान दार्शनिक विद्वान पं० प्रवर टोडरमलजी से आत्मानुभव सम्बन्धी सूक्ष्म प्रश्न किये थे। पाकिस्तान बनने के बाद वही मुलतान दिगम्बर जैन समाज पं० टोडरमलजी की धर्मभूमि जयपुर में और कुछ बन्धु दिल्ली में आकर बस गये हैं।

इस समाज से मेरा सम्बन्ध सन् 1960 से है। जब मैंने उनके विशेष आग्रह पर दशलक्षण पर्व में लाल मन्दिर में इसी समाज के समक्ष लगातार 3 वर्ष तक धर्म-प्रवचन किये थे। कुछ वर्षों तक प्रति रविवार को डिप्टीगज के दिगम्बर जैन मन्दिर में मुलतान समाज में शास्त्र प्रवचन भी करता रहा हूँ। जयपुर में बसी मुलतान जैन समाज में दशलक्षण पर्व में शास्त्र-प्रवचन करने का भी सुअवसर मिला है। जिससे उनकी रुचि और आचार विचार को बहुत निकट से जानने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

ये सभी जहाँ अपने स्वतन्त्र व्यवसायो में निष्ठात हैं, वही पर इनकी धर्मरुचि, एकता, व उदारता भी प्रशंसनीय है। आदर्शनगर जयपुर का बनाया गया इनका दिगम्बर जैन मन्दिर इतना विशाल और आकर्षक है कि निकट भविष्य में इसकी गणना सांस्कृतिक धरोहर के अतिरिक्त दर्शनीय स्थल के रूप में हो जायगी। कई लाख की लागत से निर्माणित यह जैन मन्दिर एव कीर्तिस्तम्भ इनकी उदारता एव तीव्र धर्मरुचि का ही परिचायक है।

इनमें परस्पर में इतनी एकता और प्रेम है कि थोड़े से इशारे से ही ये सब एक स्थान पर एकत्रित हो जाते हैं तथा जब ये पूजा भक्ति में तन्मय होते हैं तब भक्तिरस की ऐसी पावन गंगा बह उठती है जिसमें प्रत्येक भक्त उस गंगा में स्नान कर कृत्कृत्य हो उठता है। एक लय एक स्वर में साज बाज के साथ जब ये पूजन भक्ति करते हैं तो कोई भी व्यक्ति इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। इनकी तत्व की रुचि भी प्रेरणादायक है। प्रतिदिन की पूजन के बाद इनकी नियमित शास्त्र सभा होती है, उसमें गहरी तत्वचर्चा चलती है। त्यागी, व्रती और विद्वानों का ये समुचित सम्मान करते हैं। इनकी विशेषता यह भी है कि आज के किसी गुट विशेष में बटे हुए नहीं हैं। सबकी सुनते हैं और जो उचित समझते हैं, उसे ग्रहण करते हैं।

समाज सेवा मे भी ये सदा अग्रणी रहते है । औषधालय आदि एवं स्वयंसेवक दल के रूप मे सेवा कार्यों मे दत्तचित्त रहते है ।

पं० अजितकुमार जी शास्त्री इनके विद्यागुरु थे, अतः उनके वियोग मे इस समाज ने प०जी के परिवार को अच्छा आर्थिक सहयोग प्रदान किया था । अतः सर्वे साधारण से इनका जीवन कुछ विशेष आदर्शपूर्ण देखा जाता है । यदि सम्पूर्ण जैन समाज इनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को इस प्रकार ढालने का प्रयत्न करे तो यह जैन समाज अपने को आदर्श के रूप मे स्थापित कर सकता है । यह समाज भविष्य मे समाज सेवा एवं धर्म-क्षेत्र मे इससे भी अधिक प्रगति के पथ पर निरन्तर आरोहण करती रहे यही मंगल कामना है ।

धार्मिक समाज

पं० मिलापचन्द शास्त्री
जयपुर ।

मुलतान दिगम्बर जैन समाज परम धार्मिक समाज है । इसका जीता जागता उदाहरण आदर्शनगर का विशालकाय सुन्दर जिनालय है जिसकी भव्यता देखते ही घनती है । मन्दिरजी मे प्रातःकाल जब ठाठ-बाट से संगीत के साथ सामूहिक पूजा होती है तो हृदय गद्गद् हो उठता है । पूजा के बाद नियमित शास्त्र सभा का चलना सोने मे सुगध की कहावत को चरितार्थ करता है । रात्रि मे समाज के बच्चो को धार्मिक ज्ञान कराने के लिए नियमित कक्षाये लगती है जो कि अपने आप मे अभूतपूर्व कार्य है । मन्दिरजी के पृष्ठ भाग मे पूज्य मुनिराजों, त्यागी व्रतियों के आवास की भी समुचित व्यवस्था है और वही पर औषधालय भवन बना हुआ है जहा से प्रतिदिन सैकडो रोगी लाभान्वित होते हैं । इस तरह धर्मायतन से चारो दानो की प्रवृत्ति की परम्परा अक्षुण्ण रूप से चल रही है ।

धार्मिकता एवं समाजसेवा का दूसरा ज्वलन्त उदाहरण जयपुर मे जैन दर्शन विद्यालय की स्थापना है । इस संस्था का जन्म मुलतान दिगम्बर जैन बन्धुओ के साहसपूर्ण सहयोग से ही सम्भव हुआ है । मुझे अच्छी तरह याद है कि सन् 1951 मे सेठ वैजनाथजी सरावगी एवं मुलतान जैन बन्धुओ की प्रेरणा से आदरणीय ब्रह्मचारी

श्री चुन्नीभाईजी देसाई का जयपुर में चानुमास हुआ था। ब्रह्मचारी जी का कहना था कि यदि जैन संस्कृति को कायम रखना है तो इन बड़े-बड़े मन्दिरों में बच्चों को धार्मिक ज्ञान कराने की नियमित व्यवस्था अवश्य की जानी चाहिए। प्रयोग स्वरूप उन्होंने छोटे-छोटे विद्यार्थियों को बड़े सुन्दर तरीके से जैन तत्त्वज्ञान कराया और समाज के समक्ष प्रश्नोत्तरो द्वारा उसका परिचय कराया तो सब लोग दग रह गये। फलस्वरूप समाज की एक आमसभा आमन्त्रित की गई। ब्रह्मचारीजी ने अपने प्रवचन में धार्मिक शिक्षा के लिये समाज से बड़ी धार्मिक अपील की। सभी उगस्थित सज्जनों पर इसका काफी प्रभाव पड़ा। विशेषतः मुल्तान जैन समाज के उत्साही बन्धुओं ने यह दृढ़ निश्चय प्रकट किया कि ब्रह्मचारीजी ने जो ज्ञानगंगा समाज के बच्चों में प्रवाहित की है वह निरन्तर चालू रहेगी। इससे समाज में चेतना जागृत हुई और उसी समय मुल्तान जैन बन्धु एव स्थानीय लोगों ने इकमुश्त एव मासिक चन्दा लिखकर व्यवस्था के लिए प्रबन्ध समिति का निर्माण किया और जैन दर्शन विद्यालय की स्थापना कर दी गई, इस तरह तबसे आज तक तन, मन, धन से इनका सहयोग विद्यालय को मिलता जा रहा है। फलस्वरूप विद्यालय चालू है। आज तक इस विद्यालय के द्वारा सैकड़ों स्त्री, पुरुष, बच्चे “धर्म विशारद”, “धर्मरत्न” एव “धर्मालकार” उपाधि परीक्षाएँ पास कर चुके हैं और समाज की धार्मिक प्रवृत्तियों में निरन्तर सहयोग कर रहे हैं।

मुल्तान जैन समाज पुरुषार्थी व्यापारी समाज है। जब देश का विभाजन हुआ और मुल्तान नगर पाकिस्तान में चला गया तो इन बन्धुओं पर विपत्ति का पहाड़ टूटा पर ये भयभीत नहीं हुए। यहाँ वे शरणार्थी बनकर जरूर आये पर आकर किसी पर भार स्वरूप नहीं बने और न नौकरी पेशा ही अगीकार किया। जिसके पास जो कुछ साधन था उसके अनुसार व्यापार चालू किया और अधिक परिश्रम करके चन्द वर्षों में ही इतने सुव्यवस्थित एव सफल व्यवसाई हो गये। आश्चर्य होता है आज मुल्तान से आये हुए बन्धुओं में से कुछ बन्धु तो ऐसे मिल सकते हैं जिनकी आर्थिक परिस्थिति साधारण हो वरना प्रायः करके तो सब लक्षाधिपति हैं। यह सब इनकी पुरुषार्थ प्रियता का ही प्रतिफल है।

काल दोष कहिये या स्वेच्छाचारिता, जिसके कारण युवा पीढ़ी प्राँढ़ वर्ग का अनुसरण नहीं कर रही है। वे दिन प्रति दिन जैनो के दैनिक मुख्य कर्तव्यों से भी विचलित होते जा रहे हैं। मैं युवावर्ग से पुरजोर अपील करूँगा कि वह अपने भूतकाल को स्मरण करते हुए बुजुर्गों की धार्मिक एव नैतिक परम्पराओं का समादर करेंगे एव चारित्रिक समुन्नति को जीवन में स्थान देंगे।

धार्मिक आस्थावान-मुलतान का दिगम्बर जैन समाज

पं. भवरलाल न्यायतीर्थ
सम्पादक 'वीरवाणी'
जयपुर ।

मुलतान के दिगम्बर जैन बन्धु सदा से धार्मिक प्रवृत्ति के रहे हैं । वहां तन्तुवमनीषी, तत्त्वज्ञानसु और धार्मिक आस्थावालो का बाहुल्य रहा है । दो सौ वर्ष पूर्व भी वहा सिद्धान्तमर्मज्ञ थे और तत्त्व चर्चा के लिये दूर दूर से सम्पर्क रखते थे । पं० टोडरमलजी के समय मे आयोजित विशाल इन्द्रध्वज विधान का निमंत्रण पत्र दूरस्थ कुछ विशिष्ट स्थानों को ही भेजा गया था जिनमें मुलतान भी था ।

मुलतान दिगम्बर जैन समाज की गतिविधियों से उनकी धार्मिक लगन, जैन धर्म मे प्रगाढ भक्ति, व्रत-नियम-पूजा आदि के सबध मे जयपुर मे उनके आ जाने के बाद तो प्रत्यक्ष स्वयं से पूर्व रूप से जानकारी है ही किन्तु थोड़ी बहुत जानकारी आज से करीब 50 वर्ष पूर्व से भी है ।

अकलक प्रेस के मालिक एव पुरानी पीढी के विद्वान पं० अजितकुमार जी शास्त्री मुलतान मे रहते थे और उनसे मेरा काफी परिचय था । उन दिनों दि० जैन शास्त्रार्थ सघ का कार्यक्षेत्र अधिकतर उधर ही था । अम्बाला मुख्य कार्यालय था जहा प० राजेन्द्र कुमार जी रहते थे । शास्त्रार्थ सघ के विद्वानों का बहा जमघट रहता था । मुलतान के बन्धु उनके सम्पर्क मे आते रहते थे । शास्त्रार्थ सघ की ओर से एक पत्र भी चालू हुआ था—जिसका नाम 'जैन दर्शन' था । उसके सम्पादक थे श्रद्धेय गुरुवर्य प० चैनसुखदासजी, प० अजित कुमार जी, प० कैलाश चन्द जी । उसका प्रकाशन मुलतान से होता था और सम्पादन का कार्य जयपुर मे पंडित चैनसुखदासजी साहब करते थे । उनके सम्पर्क मे मेटर जुटाना, भेजना और तत्सबधी लिखापढी करने का सौभाग्य मुझे आया था । मैने यही से कुछ लिखना सीखा । इससे प० अजितकुमारजी के सम्पर्क मे मे आया व मुलतान दि० जैन समाज की गतिविधियों से परिचित हुआ । पंडितजी के पत्रो मे और यदा कदा जब मिलते मुलतान के जैन बन्धुओं की चर्चा वे करते रहते थे । भूकम्प के समय एक पत्र मे उन्होने लिखा था कि पंडित जी के नेतृत्व मे मुलतान जैन युवको के स्वयंसेवको के रूप मे भूकम्प पीडितों की मुलतान स्टेशन पर बड़ी सेवा सुश्रुपा की । एक रुदन भरा पत्र था उनका । एक अकलक स्वयंसेवक दल भी उधर बना था जिसके माध्यम से सेवा के कार्य होते थे ।

उन दिनों आर्य समाज के साथ शास्त्रार्थ उधर बहुत होते थे । आर्य समाज के प्रबल समर्थक स्वामी कर्मानन्दजी को जैन धर्म मे दीक्षित करने आदि कार्यों मे मुलतान

समाज का बहुत बड़ा योगदान था। शास्त्रार्थ में वक्ता स्वयं में और श्रोता रूप में भाग लेने वालों में जोश, उत्साह और लगन काफी होती थी। मुलतान में हिन्दू मुस्लिम दोगे भी चाहे जब हो जाते थे। फलतः सतर्क रहना पड़ता था। मुलतान के इन बन्धुओं में जोश, कार्यकुशलता, निर्भिकता और अपने कर्तव्य पर आस्था शायद इस ही कारण आई हो। जब पाकिस्तान बना, देश का विभाजन हुआ तो कितनी मुसीबतें वहाँ के बन्धुओं पर आईं—यह हम सभी जानते हैं। पर वहाँ के मुलतान के जैन बन्धुओं जिनने अपनी आराध्य जिन प्रतिमाओं को, शास्त्रों को और अपने परिवार को कठिन परिश्रम, अदम्य साहस—उत्साह से सुरक्षित जयपुर में लाकर स्थापित किया। यह एक अपने आत्म में प्रेरणादायक कहानी है जो इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षरों से अंकित रहेगी। जयपुरवासियों ने पलक पावड़े विछा दिये आपके स्वागत में। श्रद्धेय गुरुवर्य प० चैनसुखदासजी का सम्बल मिला और आज जयपुर जैन समाज में अच्छा स्थान प्राप्त कर लिया। इन बन्धुओं में धार्मिकता, देवशास्त्र, गुरुभक्ति, साधुओं एवं विद्वानों का सम्मान और आतिथ्य जन सेवा आदि कार्यों में इनकी प्रवृत्ति जन्मजात है—अनुकरणीय है। धार्मिक आस्था, दानशीलता और पुरुषार्थ का ही यह प्रतिफल है कि इतना सुन्दर विशाल मन्दिर जयपुर में बना लिया और महावीर कीर्तिस्तम्भ जो जयपुर में अन्यत्र कहीं नहीं बन पाया आज इनने अपने मन्दिर के प्रागण में बनवा लिया। यह एक गौरव की बात है। इतना ही नहीं सार्वजनिक रूप से जनसेवा के कार्यों में ये पीछे नहीं हैं। जयपुर के प्रसिद्ध सेवा भावी चिकित्सक भाई सुशील कुमार जी वैद्य के सम्पर्क में आकर परमार्थ औषधालय मन्दिर के पीछे भवन में चला रहे हैं और प्रतिदिन वैद्यजी के साथ साथ स्वयं भी अपना समय दे रहे हैं—वैद्यजी तो निस्वार्थ सेवा रूप से कार्य करते ही हैं। जयपुर के लिये वैद्यजी भी गौरव स्वरूप हैं। इन मुलतानी बन्धुओं के हृदय में सचमुच कार्य समाया हुआ है जो आदर्शनगर के नाम को सचमुच चरितार्थ करते हैं।

जयपुर के उपनगर आदर्शनगर स्थित दिगम्बर जैन मन्दिर की रजत जयती महोत्सव के अवसर पर मैं सभी मुलतान वाले दिगम्बर जैन बन्धुओं का अभिनन्दन करता हूँ और कामना करता हूँ कि इनमें और आने वाली पीढ़ी में इसी प्रकार धार्मिक आस्था, सेवाभाव और कर्तव्यपरायणता बनी रहे।

भंवरलाल न्यायतीर्थ

संस्मरणा एवं कामना

गुलाब चन्द जैन

प्राचार्य

श्री दि० जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय,
जयपुर ।

सन् 1947 के बाद मुलतान समाज के जयपुर आ जाने पर उनका प्रतिनिधि मंडल स्व० पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ से मिला । उस समय मैं उनके पास बैठा अध्ययन कर रहा था । पण्डित साहब मुझे पढ़ाना छोड़कर उनकी मुलतान से आने की कहानी सुनने लगे । कहानी के साथ वातावरण इतना दर्द भरा बन गया कि स्वयं पण्डित साहब गद्गद् हो गये । उन्होंने मुलतान प्रतिनिधि मण्डल को अपना पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया और उनके सुखद भविष्य की कामना की ।

1952 में पूज्य चुन्नीभाई ब्रह्मचारी के करकमलो से जैन दर्शन विद्यालय की स्थापना हुई । इस विद्यालय में मुलतान जैन समाज ने तन, मन, धन से योगदान दिया और उनके छोटे बड़े बच्चों ने ही नहीं किन्तु बड़ी बड़ी महिलाओं ने भी जैन धर्म पढ़ने में पर्याप्त रुचि दिखाई और 'धर्म विशारद', 'धर्म रत्न' और धर्मालंकार की ऊंची कक्षाओं में अच्छे अकों से उत्तीर्ण हुई ।

आदर्शनगर में जाकर बसने पर समाज के भाई बहिनों को जब जिनदर्शन में कठिनाई होने लगी तो सन् 1952 में श्री मोतीराम कंवरभान के प्लॉट में चैत्यालय की स्थापना की गयी । उस समय भी सभी धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न कराने का कार्य मैंने ही किया और मुझे समाज को पास से देखने का अवसर प्राप्त हुआ । इसी तरह सन् 1954 में जब आदर्शनगर में मन्दिर की नींव लगी तब भी मैंने ही शिलान्यास का कार्य कराया था । इस तरह कितनी ही बार मुझे मुलतान समाज को देखने का अवसर मिला और उनकी धर्मनिष्ठा, सेवापरायणता, विनीत स्वभाव एवं कार्य करने की लगन को देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य होता है ।

आदर्शनगर में जैन पाठशाला की स्थापना हुई । मुझे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि समाज के छोटे बड़े, बालक, युवक-युवतिया सभी विद्यालय में पढ़ने चले आ रहे हैं और पढ़ते भी हैं बड़े ध्यान से । मन्दिर निर्माण के पश्चात् इसकी वेदी प्रतिष्ठा के अवसर पर बच्चों ने मनासुन्दरी नाटक दिखाया था । बच्चों ने बड़े कलापूर्ण ढंग से नाटक को इतनी सुन्दरता से प्रदर्शित किया कि उपस्थित समाज खुशी से गद्गद् हो गया ।

इस प्रकार गत 30 वर्षों से मैं मुलतान समाज के सपर्क में हूँ और मुझे यह जानकर प्रसन्नता होती है कि इस समाज में कितना धार्मिक वात्सल्य एवं कर्तव्य के प्रति निष्ठा है जो हम सबके लिये अनुकरणीय है ।

गुलाबचंद जैन

प्राचार्य

आदर्शों का ध्वज फहरायेंगे

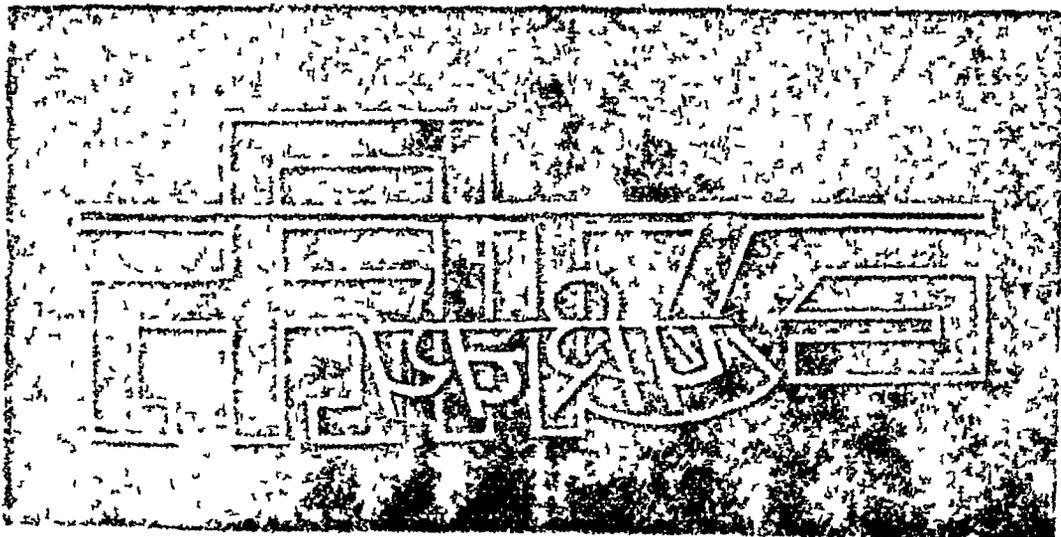
अनूपचंद न्यायतीर्थ
जयपुर

मैं आदर्श नगर के
दिगम्बर जैन मन्दिर की
रजत जयंती समारोह एवं
महावीर कीर्तिस्तम्भ के प्रतिष्ठा महोत्सव पर
मुलतान के जैन बन्धुओं का
हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ
जिनने अपने अथक परिश्रम
और सच्ची लगन से
धर्म और सस्कृति के प्रतीक
भव्य और विशाल जिनालय की
स्थापना की। 1942।
उन्हे शत-शत वदन करता हूँ।
भारत पाक विभाजन में
इन पर महान विपत्ति आयी,
धन-दौलत घर-बार लुटे,
विछुड़े माता पिता बहिन और भाई,
ऐसे समय में, धैर्य धारण कर
जिनबिम्बों और जिनवाणी को
भारत में सुरक्षित लाये
अपने धर्म ईमान में दृढ़
शरणार्थी बनकर आये किन्तु पुरुषार्थी कहो।
इनकी इच्छा और दैव ने
इन्हे दिल्ली और जयपुर में बसाया
यहाँ की समाज ने
इन्हे गले लगाया और अपनाया
वे भी पडित टोडरमलजी की भूमि पर
आकर धन्य हो गये।
उनकी रहस्यपूर्ण चिट्ठी की
याद आते ही स्यय में खो गये
पडित चैनसुखदास की
प्रेरणा ने बल दिया
पैरो पर खड़े होगये।

इनका जीवन बदल गया
इस व्यवसाय प्रेमी समाज ने
सब कुछ खोया हुआ पुन पा लिया,
आपसी सहयोग एवं सद्भाव से
कुछ ही समय में
आदर्शनगर में, एक आदर्श जिनालय बना लिया
विद्वज्जन प्रिय, जिनवाणी के भक्तों ने
सरस्वती भंडार भी बढ़ाया है।
तत्त्व चर्चा के प्रेमी जिज्ञासु बन्धुओं ने
स्वाध्याय की परम्परा को निभाया है।
इनकी सामूहिक पूजा
एवं भक्ति को देखकर
हृदय गद्गद् हो जाता है
मनुष्य सब कुछ भूल कर
स्वयं को पा सकता है।
इतना ही क्यों
निर्वाण वर्ष में जनोपयोगी औषधालय
सत्य और अहिंसा का प्रतीक
महावीर कीर्तिस्तम्भ भी लगाया है
और उसी की प्रतिष्ठा हेतु
यह मंगलमय महोत्सव मनाया है
इनकी दैव शास्त्र गुरु में
आस्था अनुकरणीय है
इनका सामाजिक सगठन और सद्भाव
पारस्परिक प्रेम और लगाव अविस्मरणीय है
इन से आशा है, आगे भी
समाज और राष्ट्र का गौरव बढ़ायेगे
अपनी कर्तव्यनिष्ठा से
विश्वशांति में योग देकर
भगवान महावीर के सिद्धांत एवं
आदर्शों का ध्वज फहरायेंगे।

अनूपचन्द न्यायतीर्थ





विशिष्ट परिचय

पाकिस्तान से आने के पश्चात् जहाँ सारे देश में विस्थापित अपने अपने को पुनर्स्थापन करने में लगे थे वहाँ मुलतान दिगम्बर जैन समाज ने अपने व्यवसाय एवं आवास आदि का पुनर्व्यवस्थित करने के साथ साथ पूर्ण परम्परा से आये धार्मिक सस्कारों के कारण मन्दिर के निर्माण का कार्य भी तुरन्त हाथ में ले लिया। इसी का परिणाम है कि यह विशाल निर्माण कार्य जिसको पूर्ण होने में लगभग पच्चीस वर्ष लगे हैं, केवल मुलतान दिगम्बर जैन समाज जयपुर एवं दिल्ली के आर्थिक सहयोग से ही यह योजना पूर्ण की गई।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि मात्र आर्थिक सहयोग ही पर्याप्त नहीं होता उसके साथ साथ मानसिक एवं शारीरिक परिश्रम की भी अनिवार्य रूप से अत्यन्त आवश्यकता होती है।

जयपुर में यह कार्य होने के नाते जयपुर समाज का तो विशेष कर्तव्य था ही, किन्तु दिल्ली समाज ने जो तन, मन, धन से सहयोग दिया वह विशेष सराहनीय है।

श्री घनश्यामदासजी जब तक जयपुर में रहे मन्दिर निर्माण कार्य में उनका हर प्रकार से पूर्ण सहयोग रहा। जयपुर से दिल्ली निवास कर लेने पर भी इस मन्दिर के निर्माण में उनकी रुचि कम नहीं हुई। समय समय पर निर्माण कार्य, अर्थ संग्रह आदि की योजनाओं में परामर्श देकर उसे कार्यान्वित कराने में पूर्ण सहयोग देते रहे।

उसी प्रकार श्रीमान आशानन्दजी वगवार्णी ने भी सन् 1956 से निर्माण कार्य का नेतृत्व सभालकर कार्य को विशेष गति प्रदान की तथा मन्दिर की विशाल छत आदि डलवाते समय श्री पलटूसिंहजी जैन आर्चीटेक्ट को समय समय पर जयपुर लाकर निर्माण कार्य सम्बन्धी परामर्श लेकर उसे कराया, जिसे कभी भी नहीं भुलाया जा सकता।

श्रीमान पलटूसिंहजी जैन आर्चीटेक्ट (दिल्ली वाले) धर्मपुरा दरीवाकला, दिल्ली में रहते हैं उनसे श्री आशानन्दजी ने इस मन्दिर की छत डलाने में आने वाली कठिनाइयों के विषय में बात की तो उन्होंने अति उत्साह के साथ जयपुर चलकर इस समस्या को हल करने में रुचि दिखाई और वे इसके लिए कई वार निशुल्क बिना किसी स्वार्थ के जयपुर आये और छत का डिजाइन आदि तैयार करके उन्होंने अपने सामने इस छत को डलवाया, जो विशेष प्रशंसनीय है। श्रीमान सेठ गुमानीचन्दजी सिगवी एवं तोलारामजी गोलेछा जो मुलतान दिगम्बर जैन समाज दिल्ली के प्राण हैं, उन्होंने भी मन्दिर निर्माण कार्य में दिल्ली समाज से आर्थिक सहयोग दिलाने में कोई कसर बाकी नहीं उठा रखी। पच्चीस वर्ष में जब जब भी जयपुर से समाज के प्रतिनिधि दिल्ली गये, इन्होंने अपना सब काम छोड़कर पूर्ण सहयोग देते हुए आर्थिक एवं निर्माण सम्बन्धी हर समस्याओं का समाधान कराया।

इस प्रकार नमस्त मुलतान दिगम्बर जैन समाज जयपर एण दिल्ली के पुरुष एण महिला समाज ने सामूहिक एण व्यक्तिगत रूप से आर्थिक सहयोग देकर इस मन्दिर के निर्माण मे पूर्ण सहयोग दिया है तथा विशेष रूप से सहयोग देकर जो मन्दिर निर्माण मे योग दिया वह तो सराहनीय है ही किन्तु जिन महानुभावो ने इस मन्दिर के निर्माण मे अपने जीवन के बहुमूल्य भाग का अधिक समय देकर इस मन्दिर निर्माण के विषय सम्बन्धी सभी कार्यों को पूरा करते हुए तथा सभी कठिनाइयो को पार करते हुए इसको सुन्दर रूप देकर तैयार कराकर समाज को समर्पित किया उनका विशेष जीवन परिचय देना मे यहाँ उचित समझता हूँ ।

अत इन विशेष महानुभावो मे थे सर्व प्रथम श्री कवरभानजी एवं उनके सुपुत्र श्री आशानन्दजी सिंगवी जिन्होने इस मन्दिर हेतु अथक प्रयत्न करके सरकार से जमीन आवंटित कराई, तथा आज से 26 वर्ष पहले इस मन्दिर का शिलान्यास कराके निर्माण कार्य का शुभारम्भ कराया ।

दूसरे महानुभाव है श्री न्यामतरामजी जिन्होने प्रारम्भ से आज तक इतने लम्बे समय तक अपने व्यवसाय, घर वार आदि की ओर अधिक ध्यान न देते हुए मन्दिर निर्माण सम्बन्धी योजनाओ को कार्यान्वित कराने तथा आने वाली सब कठिनाइयो को अपने कुशल नेतृत्व से पार कराने मे पूर्ण सहयोग देकर इस योजना को सफलीभूत किया ।

तीसरे व्यक्ति है श्री जयकुमारजी जिन्होने अपनी युवावस्था से ही अपने काम धन्धे की परवाह न करके अपने परिवार की इच्छाओ को एक तरफ रखते हुए 26 वर्ष तक इस मन्दिर निर्माण के सदर्थ कार्यों मे सबसे अधिक समय देकर, धन एकत्रित करने, निर्माण कार्य करवाने मे इस विशाल एण कठिन कार्य को पूर्ण कराया । यह उनकी कुशल दक्षता का ही परिणाम है ।

चौथे महानुभाव हैं श्री बलभद्र कुमारजी जो अपनी युवावस्था से ही धार्मिक एण सामाजिक कार्यों मे रुचि लेते हुए मन्दिर निर्माण कार्य मे अपने साथियो के साथ पूर्ण सहयोग देकर अपनी कुशाग्र बुद्धि एण विशेष कार्य मे तन, मन, धन से सहयोग देकर इसे मूर्त रूप देने मे सहयोग दिया ।

अत इन चारों महानुभावो के त्याग एण तपस्या को देखते हुए इनका जीवन परिचय यहाँ दिया जा रहा है ।





श्री कवरभानजी

स्वर्गीय श्री कंवरभानजी का जन्म सिगवी परिवार में श्री जेठानदजी के सुपुत्र श्री मोतीरामजी के घर डेरागाजीखान में हुआ था। बचपन से ही इनकी धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि थी, जैसा कि भजन मण्डली आदि बनाकर न केवल-डेरागाजी-खान में ही बल्कि पंजाब आदि के नगरो में जाकर सगीत के माध्यम से धर्म प्रचार किया करते थे। आप स्वभाव से विनीत, मधुर एवं कोमल थे। स्वयं ही शास्त्राभ्यास से इतना ज्ञानार्जन किया कि शास्त्र सभा में प्रवचन करने लगे। समाज के अन्य कार्यों में भी बढ चढकर भाग लेने के कारण युवावस्था में समाज के अध्यक्ष मनोनीत हुए और पाकिस्तान बनने तक उसी पद पर आसीन रहते हुए समाज का संचालन करते रहे।

कुशाग्र बुद्धि होने के कारण आपने अपने व्यवसाय में भी विशेष प्रगति की तथा शहर में बड़े व्यवसायियों में आपका नाम गिना जाने लगा।

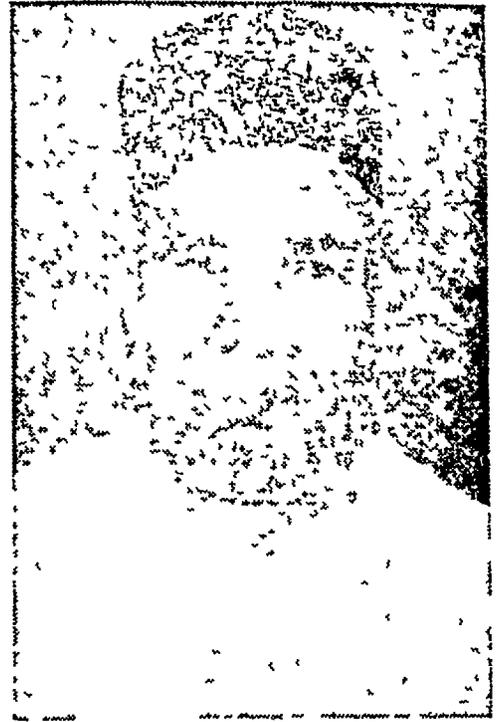
सन् 1947 में पाकिस्तान से जयपुर आकर रहने के पश्चात्, सरकार ने जब आदर्शनगर बसाने की योजना बनाई और सहकारी समितियों के माध्यम से मकान बनाने हेतु जमीन आवंटित की तो आप भी पंजाब रिहीविलीटेशन कोआपरेटिव सोसायटी के उपाध्यक्ष निर्वाचन हुए, और समाज के बहुत से व्यक्तियों को आग्रह पूर्वक मकान दिलवाये और खुद भी मकान बनाकर आदर्शनगर में बसने के समय आसपास कोई दि. जैन मंदिर नहीं होने के कारण अपने घर में एक अस्थायी चैत्यालय की स्थापना करके आदर्शनगर में रहने वाले सभी साधर्मि भाइयों को धर्म राधन की सुविधा उपलब्ध कराई, धर्म के प्रति निष्ठा का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है।

कुछ समय बाद अथक प्रयास करके मंदिर निर्माण हेतु राज्य सरकार से जमीन आवंटित कराई तथा समाज के प्रमुख महानुभावों को एकत्रित करके मंदिर निर्माण की योजना बनाई, तथा उस समय उसमें सर्वप्रथम सबसे अधिक आर्थिक सहयोग देकर ऐसा बीजांशोपण किया जिसके परिणामस्वरूप आज यह विशाल भव्य जैन मंदिर प्रस्फुटित हुआ है, जिससे आपका नाम सदैव चिरस्मरणीय रहेगा। आप जीवन पर्यंत मुलतान दि० जैन समाज जयपुर के अध्यक्ष पद पर आसीन रहते हुए समाज का कुशल नेतृत्व करते रहे।

जयपुर में भी आपने अपने व्यवसाय में विशेष सफलता प्राप्त की। जनरल मर्चेन्ट के व्यवसाय में आपकी फर्म मोतीराम कवर भान जौहरी वाजार जयपुर का नाम सर्वप्रथम है।

श्री आसानन्दजी, श्री खुशीरामजी, श्री अर्जुनलालजी एवं श्री शंभुकुमारजी आपके चार पुत्र हैं एवं श्रीमती रतन देवी एक पुत्री हैं। इन सबको छोड़कर दिनांक 31 जनवरी, 1962 को आपका समाधि पूर्वक स्वर्गवास हो गया।

श्री मुलतान दिगम्बर जैन समाज के वर्तमान अध्यक्ष श्री न्यामतरामजी का जन्म मुलतान मे सन् 1904 को श्री मूलचन्द्रजी सुपुत्र श्री विहारी लाल नौलखा के घर हुआ । आप सामान्य शिक्षा प्राप्त कर अपने व्यवसाय मे लग गये । प्रारम्भ से ही सामाजिक कार्यों मे आपकी सर्वाधिक रुचि थी, समाज के किसी भी व्यक्ति पर कोई भी सकट आने पर आप उसे निवारण करने मे सबसे आगे रहते थे ।



श्री न्यामतरामजी

आप धर्म के प्रति विशेष श्रद्धावान आचरण के प्रति निष्ठावान, स्वाध्यायमे तत्पर, सेवा भावी व कर्मठ कार्यकर्ता रहे हैं । इसीका परिणाम था कि आपकी मित्रता एव घनिष्ठता अन्य मतावलम्बियों के साथ होने पर भी, सद्गृहस्थानुसार खानपान एव आचरण मे हमेशा दृढ रहे ।

समाज मे एकता स्थापित कर सगठित रूप से धार्मिक एव सामाजिक कार्यों को करने मे आपकी विशेष रुचि रही है ।

सन् 1947 ई० मे भारत विभाजन के समय जब पूरे पाकिस्तान मे मारकाट मची हुई थी उस समय अपने परिवार की चिन्ता न करते हुए पूरे समाज को वहा से भारत लाने के लिये मुलतान से दिल्ली आये, तथा कुछ अन्य साथियों के साथ कठिन परिश्रम से वायुयानो का प्रबन्ध करके पूरे समाज को मुलतान से सुरक्षित एव सकुशल भारत लाने मे आपका बहुत बडा योगदान रहा है ।

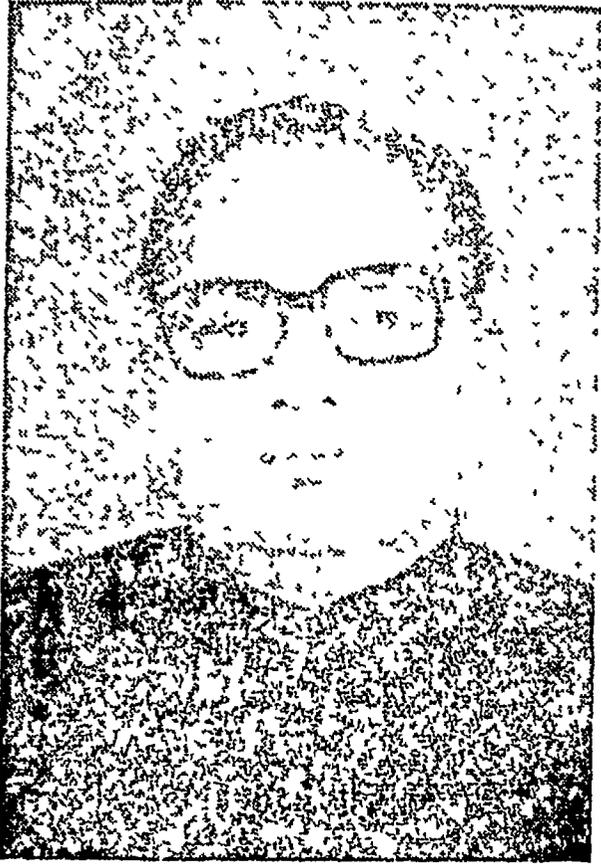
आदर्श नगर मे दिगम्बर जैन मन्दिर के निर्माण मे प्रारम्भ से ही आपका विशेष योगदान रहा । मन्दिर निर्माण हेतु धन एकत्रित करने, निर्माण कार्य को कार्यान्वित कराने आदि मे आपका पूर्ण सहयोग रहा है, जिसका ही परिणाम है कि आज हमारे समक्ष इतना विशाल भव्य एव दर्शनीय जिन मन्दिर तैयार हो सका है ।

समाज के सचालन हेतु आपमे नेतृत्व की विशेष क्षमता है, फलस्वरूप आप पिछले 20 वर्षों से प्रायः अध्यक्ष पद पर आसीन रहकर समाज का कुशल सचालन करते आ रहे हैं, और हमेशा प्रतिवर्ष निर्विरोध अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होते रहे हैं ।

आप लौकिक क्षेत्र मे नीतिवान, व्यावसायिक क्षेत्र मे कुशल, बुद्धिमान एव लोकप्रिय हैं, तदर्थ जनरल मर्चेट एसोसियेशन के वर्षों तक अध्यक्ष पद पर आसीन रहे हैं ।

आपके श्री प्रकाशचन्द्रजी, श्री वसुलालजी, व श्री शीलकुमारजी तीन पुत्र एव चार पुत्रिया हैं । प्रकाश जनरल स्टोर कटला पुरोहित आपका व्यावसायिक सस्थान है ।

दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्शनगर के सामने वाली लाइन मे प्लॉट न० 612 आपका निवास स्थान है ।



श्री जयकुमार जैन

उत्तरोत्तर होता रहा और युवावस्था में ही जैन सिद्धांत का भी अच्छा ज्ञानार्जन कर लिया तथा जैन युवक सगठन में भी आप अधिक सक्रिय रहे।

पाकिस्तान बनने के पश्चात् भारत आने पर सर्वप्रथम आप दिल्ली रहे, किन्तु व्यवसाय में विशेष सफलता न मिलने पर सन् 1951 में सपरिवार जयपुर आकर व्यवसाय करने लगे।

त्रि।म परिस्थितियों में भी आपकी अभिरुचि धार्मिक कार्यों में विशेष रही।

आदर्शनगर में दिगम्बर जैन मंदिर के शिलान्यास के पश्चात् इसके निर्माण में विशेष रुचि लेने एवं सहयोग देने तथा सामाजिक समस्याओं को सुचारु रूप से दिशा निर्देश देने की क्षमता के कारण समाज ने सन् 1955 में आपको मंत्री पद पर निर्वाचित किया, तभी से एक दो वर्ष छोड़कर प्रायः निरंतर मंत्री पद पर मनोनीत होते हुए समाज के कार्यों में अधिक से अधिक समय देकर समस्त कार्यों को सुचारु रूप से कार्यान्वित करते आ रहे हैं।

बिना किसी विशेषज्ञ से पूर्व प्रारूप तैयार कराये विशाल भव्य एवं कलापूर्ण जिन मंदिर आदि भवनों का निर्माण कार्य अपने साथियों के सहयोग से पूर्ण कराना आपकी कुशल दक्षता का ही प्रतीक है।

मुलतान दिगम्बर जैन समाज के मंत्री श्री जयकुमार जैन समाज के नहीं अपितु सम्पूर्ण जयपुर जैन समाज में जाने माने सामाजिक कार्यकर्ता हैं। आपका जन्म श्री प्रेमचंदजी सिगवी सुपुत्र श्री कर्मचंदजी एवं पौत्र श्री मोतीरामजी सिगवी के यहां विक्रम संवत् 1981 सन् 1924 ई० में डेरागाजीखान (पश्चिमी पाकिस्तान) में हुआ।

किंतु इनके नाना श्री चौथूरामजी के कोई पुत्र नहीं होने के कारण इन्हें बचपन से ही अपने पास रखा और बाद में दत्तक पुत्र बना लिया। जिससे जयकुमार के जीवन पर उनके धार्मिक विचारों का विशेष प्रभाव पड़ा।

सन् 1939 में स्कूल की शिक्षा समाप्त कर आप व्यवसाय में लग गये तो भी आप में धार्मिक कार्यों की अभिरुचि का विकास

इस प्रकार यह विशाल एवं नवीनतम डिजाइन का मानस्तंभ (महावीर कीर्ति स्तंभ) केवल आपने ही बहुमूल्य समय देकर निर्माण कराया ।

पाकिस्तान में सब कुछ खो जाने पर सब लोग यहा अपने पुनर्निमाण मे लगे हुए थे । ऐसी विपम संकट की घडी मे जयकुमार अपने व्यवसाय एवम् परिवार के पुनर्स्थापन की परवाह न करते हुए अपने जीवन का बहुमूल्य भाग मंदिर निर्माण हेतु, अर्थ संग्रह करने, निर्माण कार्य कराने मे जुटे रहे ।

समय-समय पर होने वाले धार्मिक आयोजनो एवम् सामाजिक गतिविधियों को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने मे पूर्ण योगदान देकर मंत्री पद के दायित्व को पूरा करते हुए समाज मे एक आदर्श स्थापित किया है ।

इसी प्रकार भगवान महावीर 2500 वां निर्वाण महोत्सव वर्ष के आयोजनो मे सक्रिय योगदान देने के फलस्वरूप आपको भगवान महावीर 2500 वां निर्वाण महोत्सव द्वारा जयपुर संभाग मे सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया गया ।

धार्मिक कार्यक्षेत्र मे सक्रिय योगदान के साथ साथ व्यावसायिक क्षेत्र मे भी आपने अपनी कुशाग्र बुद्धि से सर्वांगीण सफलता प्राप्त की, जिसका परिणाम है कि चौथूराम जयकुमार जैन जोहरी बाजार, कर्मचंद्र प्रेमचंद्र जैन कटला पुरोहित जी, महावीर जनरल जनरल स्टोर त्रिपोलिया बाजार जयपुर आपके तीन तीन संस्थान चल रहे है । व स्टोव, पैट्रोमेक्स, गैस लालटैन आदि का राजस्थान मे आपका एकाधिकृत व्यवसाय है ।

व्यावसायिक क्षेत्र में आप राजस्थान व्यापार उद्योग मण्डल में कार्यकारिणी के सदस्य, देवस्थान किरायेदार सघ राजस्थान के अध्यक्ष आदि अनेक संस्थाओं के आप सक्रिय कार्यकर्ता हैं ।

आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती कृष्णा देवी है । सुरेश कुमार एवं रमेश कुमार आपके दो पुत्र हैं, जो आपके भाइयो के साथ उपरोक्त संस्थानो को सुचारु रूप से चला रहे हैं

आपका निवास स्थान— जे-238 प्रेम निवास, आचार्य कृपलानी मार्ग, आदर्शनगर, जयपुर-4 मे है ।

श्री बलभद्रकुमार जी का जन्म मुलतान नगर मे फतहचद जी के पुत्र श्री दासू-रामजी जिनदासमलजी, सिगवी के घर मे हुआ । वचपन से ही आप मेधावी एव कुशाग्र बुद्धि छात्र थे, विनम्रता, सहनशीलता, धर्मनिष्ठता एव समाज सेवा मे आपके पिताजी का प्रभाव आप पर विशेष तौर पर पडा है । भारत विभाजन के पश्चात् जयपुर आकर आपने वी ए, हिन्दी मे "रत्न"-आदि कई परीक्षाएँ उत्तीर्ण की उमके साथ साथ ही आप अपने व्यवसाय को भी उन्नति के शिखर पर ले गये, फलस्वरूप रग के बहुत बडे व्यवसायी के रूप मे उभर कर सामने आये ।



श्री बलभद्र कुमारजी

उसी प्रकार सामाजिक कार्यों मे भी आपने पूरी निष्ठा एव लगन के साथ कार्य किया व मंदिर निर्माण कार्य मे आपने अपने साथियों के साथ बीस वर्ष तक तन, मन, धन से पूर्ण सहयोग देते हुए निर्माण कार्य को सम्पन्न कराया, साथ ही धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों मे भी आप सर्वांगीण अग्रणी रहे ।

आप मुलतान दि० जैन समाज के मंत्री पद पर रह चुके है तथा कोषाध्यक्ष के पद पर तो लगभग बीस वर्ष तक रहे है तथा वर्तमान मे समाज के सगठन मंत्री है ।

महावीर कल्याण केन्द्र के औषधालय विभाग मे सचालक पद पर कार्य करते हुए जो उसकी उन्नति हुई है तथा औषधालय ने अच्छी ख्याति प्राप्त की है यह सब आपके अथक परिश्रम का ही परिणाम है ।

जयपुर दि० जैन समाज मे राज० जैन सभा, दि० जैन संस्कृत कालेज, महावीर दि० जैन उ० मा० विद्यालय जैसी प्रख्यात कितनी ही संस्थाओं के आप सक्रिय सदस्य है । आपको जो भी पद दिया जाता है उसे आप बडे सुदर ढंग से सफलता पूर्वक निभाते है ।

भगवान महावीर 2500 वा निर्वाण महोत्सव वर्ष के कार्यक्रमो मे सक्रिय योगदान देने के कारण भगवान महावीर 2500 वा निर्वाण वर्ष महोत्सव समिति जयपुर सभाग द्वारा आपको सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया गया है ।

इस प्रकार मुलतान दिगम्बर जैन समाज आदर्शनगर जयपुर एव समस्त दिगम्बर जैन समाज जयपुर के आप सफल उदीयमान ज्योतिर्मय नक्षत्र है । आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती निर्मला देवी है । आपके एक पुत्र एव दो पुत्रिया है ।

आपका व्यावसायिक सास्थान श्री फतहचद दासूराम कलर मर्चेट, नवाब साहब की हवेली, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर मे है ।

आपका निवास मकान न० 593, गली नम्बर—3 आदर्शनगर, जयपुर-4 मे है ।

श्री० दि० जैन मन्दिर आदर्शनगर, जयपुर का रजत जयन्ती समारोह
एवं

श्री महावीर कीर्तिस्तम्भ वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक 26-27 अप्रैल, 1980 ई०

मन्दिर निर्माण आदि कार्यों एवं तत् सम्बन्धी सामाजिक गतिविधियों का समापन हुआ, महावीर कीर्तिस्तम्भ वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव एवं दि० जैन मन्दिर आदर्शनगर के रजत जयन्ती समारोह से ।

यह समारोह 26-27 अप्रैल को मनाया गया । प्रातः सामूहिक वेदी प्रतिष्ठा विधान पूजन, जलयात्रा, महावीर कीर्तिस्तम्भ की वेदी शुद्धि, विद्वत् सम्मेलन एवं रात्रि सांस्कृतिक कार्यक्रम । दूसरे दिन शोभा यात्रा वेदी में श्रीजी विराजमान एवं रजत जयन्ती समारोह आदि से सम्पन्न हुआ ।

जिसमें वाहर से पधारे श्रीमान् पण्डित कैलाशचन्द जी सिद्धान्त शास्त्री, वाराणसी, पण्डित खुशहालचन्द जी गौरावाला, वाराणसी आदि तथा भाग लिया जयपुर से डा० हुक्मचन्द भारिल्ल सपादक आत्मधर्म, जयपुर, पण्डित भवरलाल जी न्यायतीर्थ सपादक वीरवाणी, जयपुर, पण्डित रतनचन्द जी भारिल्ल, पण्डित मिलापचन्द जी शास्त्री, पण्डित वशीधर जी शास्त्री, जयपुर, गुलाबचन्द जी दर्शनाचार्य, डा० कस्तूरचन्द जी, कासलीवाल ने आर अपने ओजस्वी एवं धार्मिक प्रवचनों से लाभान्वित किया, जयपुर समाज को ।

शोभा बढ़ाई प्रसिद्ध उद्योगपति साहू श्रेयासप्रसाद जी, वम्बई, लाला प्रेमचन्द जी जैना वाच कम्पनी, दिल्ली, युवा उद्योगपति श्री रमेशचन्द जी दिल्ली तथा ताराचन्द जी प्रेमी आदि ने पधार कर ।

विमोचन कराया डा० कस्तूर चन्द जी कासलीवाल ने "मुलतान दि० जैन समाज इतिहास के आलाक मे" ग्रन्थ की प्रेस कापी का श्री अक्षय कुमार जैन भूतपूर्व सपादक नवभारत टाइम्स दिल्ली से ।

सभी गणमान्य महानुभावों के पधारने से अपार शोभा बढ़ी, खामी धर्म वृद्धि हुई एवं सफल रहा यह महोत्सव ।

मुलतान दि० जैन समाज ने इस अवसर पर वाहर के एवं स्थानीय विद्वानों तथा गणमान्य महानुभावों का हार्दिक आभार प्रगट करते हुए श्रीमान साहू श्रेयासप्रसाद जी की सेवा में अभिनन्दन पत्र सादर समर्पित किया ।

यह समारोह समस्त मुलतान दि० जैन समाज जयपुर, दिल्ली एवं वम्बई आदि ने बड़े हर्षोल्लास एवं उत्साह से मनाया, जिसमें उपरोक्त सभी स्थानों से समाज के प्रायः सभी परिवार सम्मिलित हुए ।



श्री मुलतान दिगम्बर जैन समाज
जयपुर

सिंगवी परिवार

जयपुर एव दिल्ली में जितने भी वर्तमान सिंगवी परिवार हैं वह प्रायः लुण्ठिदामल के ही वंशज हैं। उनका परिचय, वशावली पृष्ठ 33 से 35 पर दी गई है।

जेठानन्द लीलाराम के पुत्र एव लुण्ठिदामल के पौत्र थे। जेठानन्द के मोतीराम हीरानन्द दो पुत्र थे। मोतीराम के करमचन्द, रामचन्द, कंवरभान तीन पुत्र हुए। करमचन्द एवं रामचन्द्र के परिवारों का विवरण जयपुर एव दिल्ली परिशिष्ट में आगे देंगे।

श्री कंवरभान जी के परिवार का परिचय निम्न प्रकार है :—

श्री कंवरभान जी सिंगवी के परिवार का परिचय

श्रीमान कंवरभान जी का परिचय पूर्व पृष्ठों में दिया जा चुका है अब उनके परिवार का परिचय दिया जा रहा है। आपके श्री आसानन्द जी, श्री खुशीराम जी, श्री अर्जुनलाल जी, श्री शम्भूकुमार जी चार पुत्र हैं। उनका एव उनके परिवार का परिचय निम्न प्रकार है :—

श्री आसानन्द जी

श्रीमान कंवरभान जी सिंगवी के घर डेरागाजीखान में सन् 1904 को आपका जन्म हुआ। आप प्रारम्भ से ही अपने पूर्वजों की तरह धर्मत्मा एवं निष्ठावान व्यक्ति थे। युवावस्था से ही समाज की सभी गतिविधियों में उत्साह पूर्वक भाग लेते थे।

शास्त्राभ्यास में आपको विशेष रुचि थी। फलस्वरूप अल्पवय में ही आपने आध्यात्मिक शास्त्रों का अच्छा अभ्यास कर लिया था। बुद्धि-जीवी होने के नाते आपने अपने व्यवसाय में विशेष प्रगति की। पेट्रोल, मिट्टी का तेल तथा जनरल मचन्दिंग आदि की कई प्रमुख गजन्तियाँ लेकर आपने अपने व्यवसाय को डेरागाजी-खान में बड़े पैमाने पर बढ़ाया जिनमें आपके संस्थान मोतीराम कंवरभान जैन की गणना गहर के प्रमुख व्यवसायियों में होने लगी।



पाकिस्तान बनने पर जब मारकाट होने लगी व देहातो से भाग भाग कर लोग डेरागाजीखान में आने लगे तो आपने अपने मुहल्ले में कैम्प लगा कर काफी लोगों को आश्रय दिया तथा जैन समाज की ओर से सैकड़ों व्यक्तियों को भोजनादि की कई दिनों तक व्यवस्था की तथा दि० जैन समाज के कई परिवार जो अपनी दुकानें आदि बंद करके भारत चले गये थे, अथवा जो परिवार वहाँ मौजूद भी थे उस विपत्ति की घड़ी में अपनी जान की परवाह न करते हुए उनकी दुकानें खुलवाकर अथवा उनका माल आदि बिकवाकर जो भी धनराशि एकत्रित हो सकी उसे इकट्ठा करके संबंधित व्यक्तियों को दिलवा दी अथवा भिजवा दी ।

उस कठिन समय में जब सब लोग अपने अपने परिवारों को सुरक्षित भारत पहुँचाने की चिंता में ग्रस्त थे उस समय आपने तथा दीवानचन्द जी सिंगवी ने अथक प्रयत्न करके पूरी समाज, जिन प्रतिमाओं एवं हस्तलिखित शास्त्र भण्डार को सुरक्षित भारत ले आने का साहसिक कार्य किया ।

डेरागाजीखान से आने के पश्चात् आप जयपुर में बस गये और वहाँ भी अपने परिवार के साथ उसी सस्थान के नाम से अपना व्यवसाय करने लगे ।

जयपुर आकर आपने रुचि लेकर दि० जैन मन्दिर आदर्शनगर का निर्माण कार्य प्रारम्भ कराया तथा आप सन् 1965 में मुलतान दि० जैन समाज के अध्यक्ष पद पर आसीन होकर समाज के कई प्रमुख कार्यों को सम्पन्न कराया ।

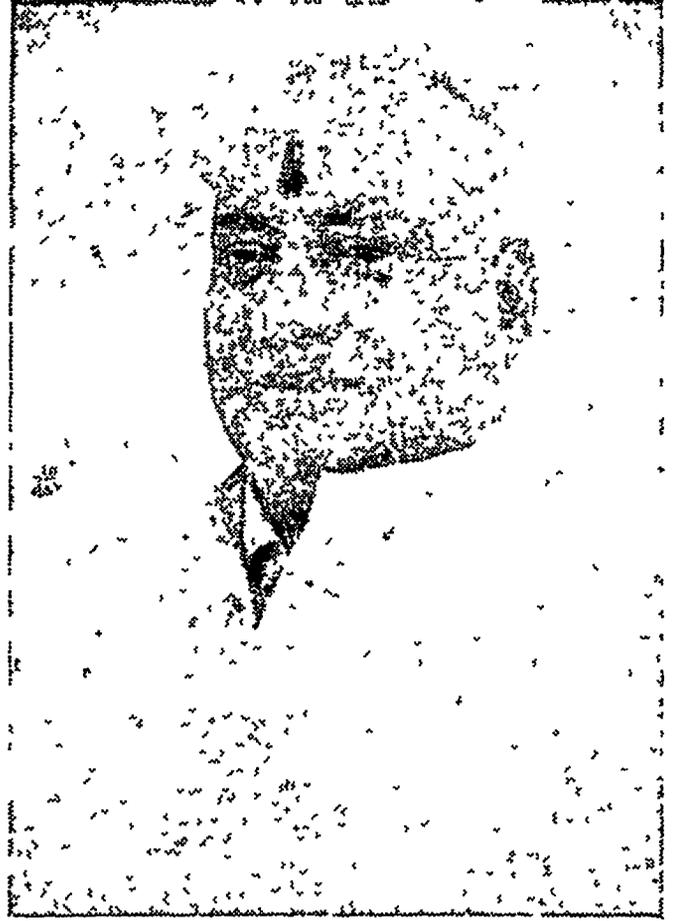
दिनांक 19 जनवरी 1969 को थोड़े समय की बीमारी में आपका असामयिक निधन हो गया ।

आपकी स्मृति में आपकी धर्मपत्नी श्रीमती रामोदेवी एवम् तीनों सुपुत्रों ने महावीर कल्याण केन्द्र भवन में एक अतिथि गृह बनवाकर समाज को अपूर्व सहयोग दिया है । श्री कैलाशचन्द जी, श्री नेमोचन्द जी, श्री ओम प्रकाश जी, आपके तीन सुपुत्र हैं जो अपने पैतृक मोतीराम कवर भान जैन सस्थान में कार्यरत हैं । आपका निवास स्थान मकान नम्बर 586, गली नम्बर 3, आदर्शनगर जयपुर, में है ।

श्री खुशीराम जी

श्री खुशीराम जी का जन्म श्रीमान कंवरभान जी के घर 70 वर्ष पूर्व डेरागाजीखान में हुआ था। आप प्रारम्भ से ही ओजस्वी, शांतिप्रिय एवं व्यवसाय में निपुण व्यक्ति थे। पाकिस्तान बनने के पश्चात् जयपुर में आकर आपने अपने व्यवसाय को बढ़ाने में अपने परिवार को सक्रिय सहयोग दिया।

आप धार्मिक नित्य क्रियाओं के पालन में भी सदैव तत्पर रहते थे। आपने अपने पिता स्वर्गीय कंवरभान जी एवं बड़े भाई स्वर्गीय श्री आशा-नन्द जी की भावना के अनुरूप दि० जैन मन्दिर आदर्शनगर में स्वाध्याय भवन का निर्माण अपने सस्थान श्री मोतीराम कंवरभान जैन द्वारा करवा दिया।



श्री शीतलकुमार आपके एक मात्र पुत्र हैं। 64 वर्ष की आयु में हृदय गति रुक जाने के कारण दिनांक 1-6-73 को आपका आकस्मिक निधन हो गया। आपका निवास मकान नम्बर 587, गली नम्बर 3, आदर्शनगर जयपुर, में है।

आपकी स्मृति में आपकी धर्मपत्नी श्रीमती पद्मावती एवं सुपुत्र श्री शीतल कुमार ने महावीर कल्याण केन्द्र आदर्शनगर जयपुर में जनोपयोगी औषधालय भवन का निर्माण कराके सदा के लिये आपकी स्मृति चिरस्थायी बना दी।

आप अपने सस्थान श्री मोतीराम कंवरभान जैन, जौहरी बाजार के प्रमुख सचालक थे।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती पद्मावती सहनशील, धर्मज, दयालु, परोपकारी एवं विदुषी महिला हैं।

आपके पुत्र श्री शीतल कुमार भी आपके पद चिन्हों पर चलते हुए उसी सस्थान में भागीदार के रूप में कुशल व्यवसायी हैं तथा आप स्वभाव से कोमल, धर्मानुरागी, सहृदय एवं उदीयमान नवयुवक कार्यकर्ता हैं।

श्री अर्जुन लाल जी

श्री अर्जुनलाल जी का जन्म श्री कंवरभान जी के घर दिनांक 21-4-1925 ई. को डेरागाजीखान में हुआ था। आप अपने पिता के तीसरे पुत्र हैं। आपने डेरागाजीखान में मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की। फिर उच्च शिक्षा प्राप्त हेतु वाराणसी गये।



वहाँ से आने के पश्चात् डेरागाजीखान में ही आप अपने पैतृक व्यवसाय में लग गये। पाकिस्तान बनने के पश्चात् जयपुर में आकर अपने पिता एवं बड़े भाइयों के साथ अपने सस्थान मोतीराम कवरभान जैन जौहरी बाजार में कार्यरत हुए और अपने परिवार सहित अपने सस्थान के कार्य में काफी प्रगति की।

पिता एवं अपने दो बड़े भाइयों के देहावसान के बाद, परिवार के मुख्य कार्यकर्ता के रूप में अपने सस्थान का संचालन सुचारु रूप से कर रहे हैं।

आप स्वभाव से धर्मज्ञ एवं अध्यात्म प्रेमी हैं।

आप 10 वर्ष से समाज के उपाध्यक्ष पद पर मनोनीत होकर सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों में पूर्ण सहयोग दे रहे हैं।

आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती शीला देवी है। श्री तेजकुमार जी आपके मात्र एक सुयोग्य पुत्र हैं तथा आपकी तीन पुत्रियाँ हैं।

आपका निवास स्थान मकान नम्बर 588, गली नम्बर 3, आदर्शनगर जयपुर में है। फोन नम्बर 63727 है।



श्री शंभुकुमार जी



श्री शंभुकुमार जी श्री कवरभान जी सिंगवी के चौथे सुपुत्र हैं। आपका जन्म डेरागाजीखान में सन् 1929 को हुआ था। आपने डेरागाजीखान एव देहली हिन्दू कालेज में उच्च शिक्षा प्राप्त की। पाकिस्तान से आने के पश्चात् जयपुर में आपने अपने परिवार के साथ अपनी फर्म मोतीराम कवरभान जैन में कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया। बुद्धिजीवी एवं कर्तव्यनिष्ठ होने के कारण आपने अपने व्यावसायिक कार्य में आशातीत सफलता प्राप्त की एवम् अपने सस्थान की उन्नति में आपका सक्रिय योग है। आप धार्मिक एवम् सामाजिक गतिविधियों में रुचिपूर्वक भाग लेते हैं।

सेवाभावी होने के नाते श्री महावीर कल्याण केन्द्र में औषधि क्रय एव उसके निर्माण विभाग का संचालन अपना बहुमूल्य समय देते हुए विशेष कुशलता पूर्वक विधिवत कर रहे हैं।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती राजकुमारी हैं। आपके सजय एव रोहित दो पुत्र एव एक पुत्री हैं।

आपका निवास मकान नम्बर 589, गली नम्बर 3, आदर्शनगर जयपुर-4 है।

फोन नम्बर दुकान—72769 निवास—63727



श्री आसानन्द जी के तीन पुत्र

श्री नेमोचंदजी



आप श्री आसानन्दजी के सबसे बड़े पुत्र हैं। स्कूली शिक्षा के बाद आप अपनी पैतृक फर्म मोतीराम कवरभान जैन में कार्यरत हैं। आपकी पत्नी का नाम नगीना जैन है। आपके दो पुत्र व एक पुत्री हैं।

निवास मकान नं० 586, गली नं० 3, आदर्शनगर, जयपुर-4 में है।

श्री कैलाशचन्द जी

श्री कैलाशचन्द जी का जन्म भी डेरागाजीखान में आशानन्द जी के घर हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद आप भी अपनी फर्म मोतीराम कँवरभान जैन में कार्य कर रहे हैं। आपकी पत्नी का नाम चन्द्रा जैन है। आपके मात्र एक पुत्र अजय एवं एक पुत्री है। निवास मकान नम्बर 586, गली नम्बर 3, आदर्शनगर, जयपुर-4 है। फोन नम्बर 78464 है।



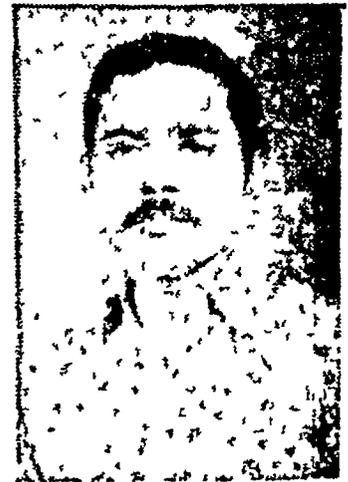
श्री ओमप्रकाश जी

आपका जन्म भी श्री आशानन्दजी के घर हुआ था। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आप भी अपनी फर्म मोतीराम कँवरभान जैन में कार्यरत हुए। आपकी पत्नी का नाम इन्द्रा जैन है। आपकी सतान राजीव पुत्र एवं दो पुत्रिया हैं। आपका निवास प्लॉट नम्बर 586 आदर्श नगर जयपुर-4 में अपने भाइयों के साथ है।



श्री खुशीराम जी के पुत्र श्री शीतलकुमार जी

श्री शीतलकुमार जी खुशीराम जी के एक मात्र पुत्र हैं। इनका जन्म सन् 1946 डेरागाजीखान में हुआ था। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आप अपनी फर्म मोतीराम कँवरभान जैन में अपने विभाग का बड़ी कुशलता से संचालन कर रहे हैं। आप धर्मज्ञ, बुद्धिजीवी, सहनशील, होनहार युवक हैं। धार्मिक एवं समय-समय पर होने वाले सामाजिक कार्यों में आप रुचिपूर्वक भाग लेते हैं। इसी का परिणाम है कि कई वर्षों से आप आदर्श जैन मिशन के अध्यक्ष चले आ रहे हैं। गुप्त दान आदि में भी आपकी उल्लासपूर्वक रुचि रहती है। इसी भावना से आपने महावीर जीव कल्याण समिति के कोष में अच्छी अर्थ सहायता देकर



समाज को एक अच्छी संस्था की स्थापना में योग दिया है। आपकी पत्नी का नाम सुदेश कुमारी है। आपके शरद नाम का पुत्र एवं एक पुत्री है। निवास मकान नम्बर 587, गली नम्बर 3, आदर्श नगर, जयपुर में है।

श्री तेजकुमार जी श्री अर्जुनलाल जी के पुत्र

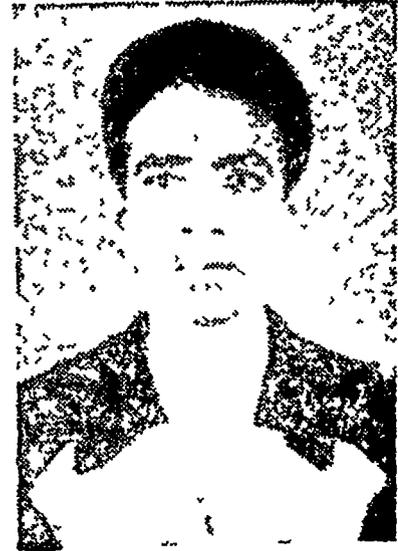


आप श्री अर्जुनलाल जी के एक मात्र पुत्र हैं। आपका जन्म दिनांक 15 नवम्बर 1946 को डेरागाजी-खान में हुआ था। जयपुर में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् विशेष अध्ययन के लिए आप अमेरिका गये और वहाँ से पी. एच. डी. की डिग्री प्राप्त कर भारत वापिस आये। अब आप राजस्थान विश्व-विद्यालय में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं।

आपकी पत्नी का नाम मनता जैन है तथा आपकी मात्र तीन पुत्रियाँ हैं। आप अपने पिता के साथ मकान नम्बर 586, आदर्शनगर, जयपुर में निवास करते हैं।

श्री संजयकुमार जी श्री शंभुकुमार जी के पुत्र

आपका जन्म श्री शंभुकुमार जी के घर सन् 1961 को जयपुर में हुआ। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट की शिक्षा देहली में प्राप्त कर रहे हैं। आपके छोटे भाई रोहित जैन मात्र अभी 7 वर्ष के हैं।



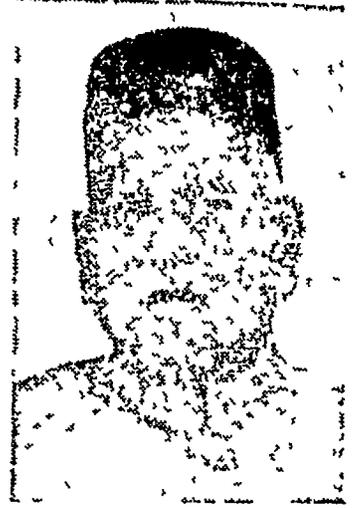
श्री करमचन्द जी सिंगवी

श्री करमचन्द जी श्री मोतीराम जी के पुत्र थे। आपके श्री प्रेमचन्द जी एवं श्री गिरधारीलाल जी दो पुत्र थे, जिनके परिवारो का परिचय निम्न प्रकार है —

श्री प्रेमचन्द जी सिंगवी एवं उनका परिवार

श्री प्रेमचन्द जी सिंगवी का जन्म श्रीमान करमचन्द जी के घर डेरागाजीखान मे वि० सवत् 1949 मे हुआ था। आप स्वभाव से सरल परिणामी एवं धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। आपके श्री जयकुमार, सन्त-कुमार, जम्बूकुमार, दिवेशकुमार, अशोककुमार पाँच पुत्र एवं दो पुत्रिया है। आपकी धर्मपत्नी का नाम टिकाई वाई है। निवास-प्रेम निवास जे-238 आचार्य कृपलानी मार्ग, आदर्शनगर, जयपुर-4 मे है।

आपका आकस्मिक स्वर्गवास विक्रम सवत् 2023 मे हृदयगति रुक जाने से 74 वर्ष की आयु मे जयपुर में हो गया।



श्री जयकुमार जी

आप श्री प्रेमचन्द जी के सबसे बड़े पुत्र हैं, आपके नाना के कोई पुत्र नहीं होने से आप उनके गोद चले गये। आपका विस्मृत विवरण समाज के मंत्री के रूप मे दिया जा चुका है। आपके सुरेशकुमार एवं रमेश कुमार दो पुत्र है।

श्री संतकुमार जी

श्री संतकुमार प्रेमचन्द जी के दूसरे पुत्र है। स्कूली शिक्षा के बाद आप व्यवसाय मे लग गये। आप उद्साही कर्मठ कार्यकर्ता है। अपने परिवार को बनाने मे आपका अच्छा योगदान है। आपकी पत्नी का नाम पुष्पादेवी है। आपके श्री रविकर एवं सजयकुमार दो पुत्र एवं तीन पुत्रिया है। अपने सस्थान कर्मचन्द प्रेमचन्द जैन कटला पुरोहित जी जयपुर मे कार्यरत हैं। आप अपने भाइयो के साथ प्रेम निवास मे रहते है।



श्री जम्बूकुमार जी



आप श्री प्रेमचन्द जी के तीसरे पुत्र हैं। आपका जन्म सन् 1933 में मुल्तान में हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद आप व्यवसाय करने लगे। कुशाग्र बुद्धि, मिलनसार एवं उत्साही कार्यकर्ता होने के नाते आपने अपने व्यवसाय में अच्छी प्रगति की है। आपकी पत्नी उर्मिला देवी है। आपके एक पुत्र दीपक एवं तीन पुत्रियाँ हैं। फर्म चौथूराम जयकुमार जौहरी बाजार जयपुर में आप पार्टनर हैं। प्रेमनिवास में आप रहते हैं।

श्री दिवेशकुमार जी

आपका जन्म प्रेमचन्द जी के घर सन् 1939 में मुल्तान में हुआ। स्नातक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आप व्यवसाय कर रहे हैं। आप अपने व्यवसाय में कठिन परिश्रमी व कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आपकी पत्नी का नाम चेलना देवी है।

आपके केवल तीन पुत्रियाँ हैं। आप भी प्रेमनिवास में अपने भाइयों के साथ रहते हैं।



श्री अशोककुमार जी

अशोक कुमार का जन्म भी मुल्तान में संवत् 2001 में प्रेमचन्द जी के घर हुआ था। आप उनके सबसे छोटे पुत्र हैं। स्नातक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् अपने व्यवसाय में कार्यरत हुए। बुद्धिजीवी होने के नाते आपने अपने व्यवसाय में अच्छी तरक्की की है। धर्मात्मा एवं सद्गृहस्थ के संयमरूप रात्रि भोजन भक्ष अभक्ष त्याग रूप अपना जीवनयापन कर रहे हैं। आप चौथूराम जयकुमार जौहरी बाजार जयपुर में पार्टनर हैं। फोन नम्बर 76104 है। आपके अजय व अरुण दो पुत्र एवं एक पुत्री हैं। आपकी पत्नी का नाम श्रीमती सविता जैन है। आप प्रेम निवास में ही रहते हैं।



श्री जयकुमारजी के पुत्र

श्री नुरेशकुमारजी



आपका जन्म जयकुमारजी के घर पर विजयम सवत् 2001 मे मुलतान नगर मे हुआ था । स्नातक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् अपने व्यवसाय मे कार्य करने लगे । आप अपने पिता की तरह ही धार्मिक एव सामाजिक गतिविधियो मे रुचि पूर्वक भाग लेते है । नित्य देव पूजन आदि बडे उत्साह एव लगन से करते है । इस समय आप अपनी फर्म कर्मचन्द प्रेमचन्द जैन कटला पुरोहितजी, जयपुर मे कार्यरत है । आपकी पत्नी का नाम शमा जैन है और आपके विशाल, विकाश एव अनुज तीन पुत्र है । आप अपने पिता के साथ प्रेमनिवास मे रहते है ।

श्री रमेशकुमारजी

आपका जन्म दिल्ली मे विक्रम सवत 2005 मे जयकुमारजी के घर पर हुआ था । बचपन से ही आपको वालीवाल आदि खेलो मे भाग लेने का अच्छा गौक है । आज तक आप उन्ही मे भाग लेते रहे है । आपने एम ए एल एल बी करने की उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपना व्यवसाय करने लगे । आपकी धर्मपत्नी का नाम मधु जैन है । आपकी मात्र दो पुत्रिया है ।

निवास — 675 आदर्शनगर, जयपुर ।

व्यवसाय — महावीर जनरल स्टोर, त्रिपोलिया बाजार ।

जयपुर—302004, फोन 75694 ।



श्री गिरधारीलालजी सिंगवी एवं उनका परिवार

श्री गिरधारीलालजी का जन्म श्री करमचन्दजी सुपुत्र श्री मोतीरामजी सिंगवी के घर पर डेरागाजीखान मे हुआ था । आप जनरल मर्चेन्ट का व्यवसाय करते थे । पाकिस्तान बनने के पश्चात् आप जयपुर आये, क्षयरोग के कारण अपना स्वर्गवास अल्प आयु मे ही हो गया । आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कस्तूरी देवी है । आपके श्री महेन्द्र कुमार, श्री वीरकुमार व श्री सुरेन्द्र कुमार तीन पुत्र है ।



श्री महेंद्र कुमारजी

आपका जन्म डेरागाजीखान में सन् 1939 में हुआ। जयपुर में स्कूली शिक्षा के पश्चात् आप स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर में कैशियर के पद पर कार्यरत हैं। आपकी पत्नी का नाम विमला देवी है। आप उत्साही कार्यकर्ता हैं और मुलतान दिगम्बर जैन समाज के कई वर्षों से कार्य-कारिणी के सदस्य हैं। आपके ससुर के कोई पुत्र नहीं होने के कारण उनका व्यवसाय भी आपको मिला।

उनका संस्थान ताराचन्द आशानन्द जैन नेहरू बाजार, जयपुर में है। संस्थान का फोन नम्बर 72943 है। आपने अभी आदर्शनगर जयपुर में अपना भवन श्यामाप्रसाद मुकर्जी मार्ग, प्लॉट नम्बर बी-10 ए में बनाया है। आपके सजय व पीयूष दो पुत्र हैं।

श्री वीर कुमारजी

श्री वीर कुमार का जन्म भी डेरागाजीखान में हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद मोटर मैकेनिक का कार्य सीख कर स्कूटर व रिपेयरिंग एव पार्ट्स का व्यवसाय करने लगे। आपकी संस्थान जैन ऑटोरिपेयरिंग का पुलिस मैमोरियल जयपुर में है। जिसका फोन नम्बर 68123 है। आपकी धर्मपत्नी का नाम रजना है। आपके अचिन एक पुत्र है।

सुरेन्द्र कुमार

श्री सुरेन्द्र कुमार गिरधारी लालजी के तीसरे पुत्र हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम अनीता है। आप ताराचन्द आशानन्द जैन, नेहरू बाजार, जयपुर संस्थान में कार्यरत हैं। आपके चिन्नु एक पुत्र है।



श्री हीरानन्दजी पुत्र श्री जेठानन्दजी के परिवार का परिचय

श्री हीरानन्दजी के दो पुत्र हैं श्री दयालचन्दजी, व श्री पोखरदासजी है।



श्री दयालचन्दजी

श्री दयालचन्दजी सुपुत्र श्री हीरानन्दजी का जन्म डेरागाजीखान में हुआ था। आप डेरागाजीखान एव मुलतान में व्यवसाय करते थे। पाकिस्तान बनने के पश्चात् आप जयपुर आकर रहने लगे। स्वभाव से आप तीक्ष्ण बुद्धि, कर्मठ व्यवसायी थे। शास्त्र सभा में तत्वचर्चा प्रेमी श्रोता थे। आपके निम्न तीन पुत्र हैं।

श्री दयालचंदजी के पुत्र श्री भगवानदासजी

श्री भगवानदासजी दयालचन्दजी के प्रथम पुत्र है। पाकिस्तान से आकर जयपुर में बस गये। आपके दिलीप, अशोक, व राजेन्द्र तीन पुत्र हैं। आप चाकसू का चौक घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर में रहते थे। दिनांक 12-6-81 का थोड़े समय की बीमारी के कारण आपका स्वर्गवास हो गया। आपकी धर्मपत्नी का नाम लक्ष्मी देवी है।



श्री चिमनलालजी

श्री चिमनलालजी दयालचन्दजी के द्वितीय पुत्र हैं। मुल्तान में आप व्यवसाय करते थे। कुशाग्र बुद्धि होने से व्यवसाय में अच्छी उन्नति की थी। पाकिस्तान बनने पर समाज को भारत में लाने के लिये वायुयानों का प्रबन्ध करने में आपका भी बहुत बड़ा योग था। आपकी धर्मपत्नी का नाम शकुन्तला देवी है। आपकी दो पुत्रियाँ हैं। सन् 1948 में थोड़े समय की बीमारी से 45 वर्ष की अल्प आयु में ही आपका स्वर्गवास हो गया।

श्री शांतिलालजी

श्री शांतिलालजी दयालचन्दजी के तीसरे पुत्र हैं। आपका जन्म मुल्तान में हुआ था। हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त कर आप जयपुर में व्यवसाय करने लगे। तीक्ष्ण बुद्धि होने से आपने व्यवसाय में अच्छी प्रगति की। आप समाज की कार्य-कारिणी के कई वर्षों से सदस्य हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम प्रकाश देवी है। आपके चन्द्रशेखर, रविकुमार, व संजयकुमार तीन पुत्र हैं। जेठानन्द चिमनलाल के नाम से कटला पुरोहितजी में आपका व्यवसाय है। मकान नम्बर 577 गली नं०2 आदर्शनगर जयपुर में निवास है।



श्री चन्द्रेश कुमार

श्री चन्द्रेशकुमार की धर्मपत्नी पिकी जैन हैं। इनका एक पुत्र व्यवसायी एवं निवास पिता के साथ





श्री पोखरदासजी सिंगवी

आपका जन्म हीरानन्दजी के सुपुत्र श्री जेठानन्दजी सिंगवी के घर पर डेरागाजीखान में हुआ। थोड़े समय पश्चात् आप मुलतान आकर व्यनसाय करने लगे।

प्रारम्भ में साधारण परिस्थिति में होते हुए भी अथक परिश्रम से आपने मुलतान में अच्छी आर्थिक उन्नति कर ली थी और अहंदा भक्ति आदि दैनिक धार्मिक कृत्यों का पालन करते हुए जीवन यापन करने लगे।

पाकिस्तान बनने के बाद आप जयपुर आकर बस गये। भाग्य ने आपका साथ दिया, व्यवसाय में आप निरन्तर प्रगति करने लगे, आपकी गणना समाज के अच्छे व्यवसायियों में होने लगी।

स्वाध्याय में आपकी अच्छी रुचि है, आध्यात्मिक तत्व चर्चा से आपको विशेष लगाव है इसलिये कई बार आप सोनगढ़ भी जाते रहे हैं।

स्वभाव से आप विनम्र, दयालु, परोपकारी एवं धर्मनिष्ठ हैं। असहायों की सहायता गुप्त रूप से करते एवं कराते रहते हैं।

आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती किशानी देवी है। श्री भागचन्दजी [कुंतीलाल] व श्री वीर कुमार आपके दो पुत्र हैं जो स्नात्कोत्तर शिक्षा प्राप्त करने पर भी आपके साथ व्यवसाय में कार्यरत हैं, उसमें उन्होंने उन्नति की है।

आपके निम्न सस्थान हैं —

1. हीरानन्द पोखरदास जैन, हौजरी मर्चेन्ट, कटला पुरोहितजी, जयपुर ।
फोन नम्बर 76822
2. वीरेन्द्रा होजरी फैक्ट्री 440 आदर्शनगर जयपुर-302004
निवास : प्लॉट नम्बर 440, गली नम्बर 2, आदर्शनगर जयपुर-4 में है।

श्री पोखरदासजी के पुत्र
श्री भागचंदजी [कुंतीलाल]



श्री भागचन्द का जन्म मुलतान नगर मे दिनाक 15-8-35 को हुआ था । आप बी ए तक शिक्षा प्राप्त कर अपने व्यवसाय मे लग गये । बुद्धि जीवी होने के नाते अपने व्यवसाय मे काफी उन्नति की है । आप समाज की कार्यकारिणी के सदस्य है । कटला पुरोहितजी जनरल मर्चेट एसोसियेशन के मन्त्री एव कई व्यवसायिक सस्थाओ के पदाधिकारी तथा सक्रिय कार्यकर्ता है । आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती चन्द्र प्रभा जैन है । आपके राजीव व मनीष दो पुत्र तथा एक पुत्री है । आप अपने पिता के साथ उपरोक्त फर्मों मे कार्यरत है और पिता के साथ रहते है ।

श्री वीरकुमारजी



श्री वीरकुमारजी श्री पोखरदासजी के दूसरे पुत्र है । आपका जन्म भी मुलतान मे दिनाक 12-9-39 को हुआ था । बी कॉम तक शिक्षा प्राप्त कर आप अपने पैतृक व्यवसाय मे सयुक्त परिवार के साथ कार्यरत है । कठिन परिश्रमी होने से आपने अपने व्यवसाय मे अच्छी प्रगति की है और आप मे धर्मबुद्धि भी है । आपकी पत्नी का नाम श्रीमती कौशल देवी है । आपकी मात्र तीन पुत्रिया है । अपने परिवार के साथ उपरोक्त मकान मे निवास करते है ।

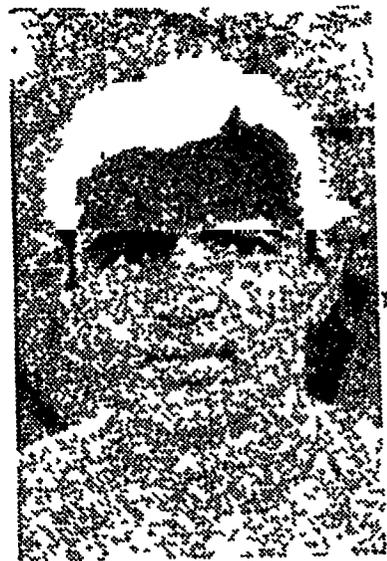


श्री दासूरामजी सिगवी का परिवार

श्री दासूराम जी जो समाज मे जिनदासमल जी के नाम से अधिक प्रख्यात थे लुण्ठिदामल के वंशज है । जिनकी वशावली पृष्ठ 35 पर है तथा दामूराम जी का परिचय भी विशिष्ट व्यक्ति परिचय परिच्छेद पृष्ठ 77 मे दिया जा चुका है । आपके तीन पुत्र है -श्री चादारामजी, श्रीमाधोदासजी व श्री बलभद्रकुमारजी । जिनमे श्री चादारामजी व श्री माधोदासजी के परिवारो का परिचय आगे दिया जा रहा है, श्री बलभद्रकुमार का परिचय पहिले पृष्ठ 107 मे आ चुका है ।

श्री चांदारामजी

श्री चांदारामजी का जन्म श्री दासूरामजी [जिनदासमलजी] सिगवी के यहा मुलतान मे हुआ था आप उत्साही कार्यकर्ता के साथ अच्छे व्यवसायी भी थे। आपके मन में जीव मात्र की सेवा का अति उत्साह था। मुलतान मे 'मुलतान सेवा समिति' के नाम की उच्च कोटि सेवा भारी सस्था के प्रमुख कार्यकर्ता थे। आप की पत्नी श्रीमती खन्डी वाई का अल्प समय मे ही स्वर्गवास हो गया फिर आप की दूसरी शादी हुई। दूसरी पत्नी का नाम श्रीमती रोशनी वाई है। थोडे समय बाद दुर्घटना से युवावस्था में आपका भी स्वर्गवास हो गया। आपके एक मात्र पुत्र श्री ठाकुरदास थे जिनका भी विमारी के कारण जवानी मे ही स्वर्गवास हो गया। उनकी धर्मपत्नी का नाम पुष्पा देवी है। ठाकुरदास के एक लड़का सजय है तथा दो पुत्रियां है।



श्री माधोदासजी

श्री माधोदासजी भी श्री दासूरामजी [जिनदासमल] सिगवी के सुपुत्र है। आपका जन्म मुलतान मे हुआ था। आप बहुत अच्छे व्यवसायी एवं धर्मज्ञ, जिनेन्द्र भक्त व्यक्ति है व देव पूजन मे आपकी बहुत अभिरुचि है। समाज मे कीई भी पूजन विधान आदि हो आपका उसमे प्रमुख योगदान रहता है और नित्य पूजन करना दिनचर्या मे प्रथम कार्य है। पाकिस्तान बनने के पश्चात् आप जयपुर मे आकर रहने लगे और फतहचन्द दासूराम जैन कलर एण्ड केमिकल मर्चेन्टस्, नवाब सहाब की हवेली, त्रिपोलिया बाजार मे व्यवसाय कर रहे है। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती सोहन देवी है। आपके श्री निहालचन्द एक पुत्र एवं एक पुत्री है।

सस्थान—फतहचन्द दासूराम, नवाब सहाब की हवेली, त्रिपोलिया बाजार

जयपुर

निवास—593 गली नम्बर 3, आदर्शनगर, जयपुर-4

श्री निहालचन्दजी

श्री निहालचन्दजी जैन श्री माधोदास के एक मात्र पुत्र है। आप होनहार एवं ओजस्वी व्यक्ति है। अल्पावस्था मे ही आप आर. ए. एस की परीक्षा पास कर राज्य सेवा में कई उच्च पदों पर कार्यरत रहे और कई बार दिल्ली आदि मे उच्च पदो पर राजस्थान से

बुलाये गये और राज्य की ओर से उच्च प्रशिक्षण हेतु विदेश भी गये। कुशाग्र बुद्धि एवं कुशल प्रशासक होने के नाते थोड़े समय में ही आप आई ए एस [भारतीय प्रशासनिक सेवा] में पदोन्नत होकर राजस्थान में कई स्थानों पर क्लेवटर के पदों को गौरवान्वित करते रहे। वर्तमान में आप दिल्ली नगरपालिका के उप प्रशासक के पद पर कार्य कर रहे हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती निर्मला देवी है, आपके नीरज नाम का पुत्र एवं एक पुत्री है। आपका स्थाई निवास पिताजी के साथ है।



श्री जस्सूरामजी सुपुत्र श्री नोतनदासजी श्रीलीलाराम प्रपौत्र श्रीलुण्णिदामल सिंगवी के बोंसाराम, भोलाराम, गेलाराम, गेगनदास चार पुत्र थे। जिसमें बोंसाराम के एक मात्र पुत्र उत्तम चन्द थे। जिनका अल्प आयु में ही स्वर्गवास हो गया था। बाकी तीनों का परिचय आगे दिया जा रहा है।

श्रीमान् भोलाराम जी सिंगवी



श्री भोलारामजी सिंगवी पुत्र श्री जस्सूरामजी पौत्र श्री नोतनदासजी के घर डेरागाजीखान में जन्म हुआ। कुछ समय बाद आपने मुलतान में आकर अपना व्यवसाय भोलाराम ताराचन्द जैन के नाम से प्रारम्भ किया और आप थोड़े समय में ही एक अच्छे व्यवसायी के रूप में प्रख्यात हो गये। आप स्वभाव से ही कोमल एवं धर्म-निष्ठ तथा सादगी से जीवन व्यतीत करने वाले थे। आपका समाज में प्रमुख व्यक्तियों में स्थान था।

आप समाज के कार्यों में बहुत रुचि लेते थे। धार्मिक उत्सवों में आप उत्साह पूर्वक भाग लेकर धर्म प्रभावना में अच्छा योगदान देते थे। पाकिस्तान बनने के बाद

आप दिल्ली जाकर रहने लगे। आपने प्रारम्भ में मन्दिर निर्माण कार्य में हर्षपूर्वक अच्छा आर्थिक योगदान दिया। थोड़े समय बाद आपका स्वर्गवास हो गया। आपके श्री ताराचन्दजी, ईश्वरदासजी, द्वारकादासजी, नरेन्द्रकुमारजी एवं श्री नियामतरामजी पांच लड़के हैं। जो अपने-अपने व्यवसाय में निपुणता के साथ लगे हुए हैं।

श्री ताराचन्दजी

श्री ताराचन्दजी अपने पिता के साथ मुलतान में व्यवसाय करते थे। पाकिस्तान बनने के पश्चात् कुछ दिन दिल्ली अहमदगढ एवं जयपुर में अपने संयुक्त परिवार के साथ व्यापार किया। उसके बाद आप अहमदगढ (लुधियाना पंजाब) में अलग व्यवसाय करने लगे। आप स्वभाव से कोमल एवं श्रद्धालु व्यक्ति हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम मनोरमा-देवी है, जो काफी धर्मज्ञ एवं धार्मिक गीत बोलने में रुचि रखती हैं एवं स्वाध्याय प्रेमी हैं। आपके श्री ठाकरदास एक मात्र पुत्र एवं दो पुत्रियां हैं।

श्री ताराचन्दजी के पुत्र श्री ठाकरदासजी

श्री ठाकरदास का जन्म मुलतान में ताराचन्दजी के घर हुआ था। पाकिस्तान बनने के बाद आप दिल्ली आगये व उच्च शिक्षा प्राप्त कर आप अलग-व्यवसाय करने लगे। बुद्धिजीवी एवं अथक परिश्रमी होने से अकेले होते हुए भी आपने अपने व्यवसाय में अच्छी प्रगति की। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती संतोष जैन है जो बी. ए., बी. टी. उच्च शिक्षा प्राप्त है। आपके संजीव, राजीव एवं कपिल तीन पुत्र हैं आप एजुकेशनल प्रोडक्ट्स (इंडिया) 504 कूचापातीराम देहली प्लास्टिक कारखाना संस्थान के मालिक हैं। 455 खारीबावली दिल्ली में रहते हैं।



श्री ईश्वरचन्दजी

श्री ईश्वरचन्दजी का जन्म श्री भोलारामजी सिंगवी के घर पर मुलतान में हुआ था। स्कूली शिक्षा प्राप्त कर उच्च शिक्षा हेतु आप बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी गये जहां लौकिक शिक्षा के साथ-साथ स्यादवाद महाविद्यालय में आपने धार्मिक शिक्षा भी प्राप्त की। वहां से आने के पश्चात् अपने पिताश्री के साथ व्यवसाय में संलग्न हुए।

पाकिस्तान बनने के पश्चात् जयपुर में आकर व्यवसाय करने लगे। सामाजिक-क्षेत्र में भी आप अच्छे कार्यकर्ता हैं। तत्व चर्चा में भी आपकी अच्छी रुचि है। इस समय आप समाज के कोषाध्यक्ष हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती राजकुमारी जैन है और आपके एक पुत्र श्री दिनेश कुमार हैं। आपकी फर्म भोलाराम ईश्वरचन्द जैन टूनी हाउस नेहरू बाजार जयपुर में है। निवास 613 जैन मंदिर के पास आदर्शनगर में है।



श्री ईश्वरचन्द जी के पुत्र दिनेशकुमार जी

श्री दिनेशकुमार श्री ईश्वरचन्दजी सिंगवी के सुपुत्र है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप जयपुर नावल्डी 21 नेहरू बाजार में व्यवसाय कर रहे हैं। आप अपने पिता श्री ईश्वरचन्दजी के साथ आदर्शनगर में रहते हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती मीनाकुमारी जैन है आपके दो पुत्रिया हैं।

श्री द्वारकादास जी

श्री द्वारकादास जी जैन का जन्म दिनांक 9-4-35 में श्री भोलाराम जी के घर हुआ। शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप व्यवसाय करने लगे। आप अपने व्यवसाय में कर्मठ कार्यकर्ता एवं स्पष्टवादी हैं। अपने व्यवसाय में आपने अच्छी प्रगति की है और समाज के धनी व्यक्तियों में माने जाते हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम सुमित्रा देवी है। आपके एक पुत्र उमेश कुमार एवं एक पुत्री हैं। आपका निवास स्थान 438 आदर्शनगर में है और फर्म का नाम मैसर्स भोलाराम द्वारकादास जैन, स्टेशनरोड जयपुर है व फोन नम्बर 76689 है।



श्री द्वारकादास जी के सुपुत्र उमेशकुमार जी

श्री उमेशकुमार सुपुत्र श्री द्वारकादास जैन का जन्म दिनांक 9-9-1955 को हुआ। आपने बी. ए. तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपना व्यवसाय बेबी टायज सेन्टर नेहरू बाजार में शुरू किया। आप अपने पिता के साथ आदर्शनगर में रहते हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती अन्जु जैन है।

श्री राजेन्द्रकुमार जी (गुल्लू)

श्री राजेन्द्र कुमार जी भी भोलाराम जी के सुपुत्र हैं। स्कूली शिक्षा के पश्चात् आप व्यवसाय में अपने भाइयों के साथ फर्म भोलाराम ईश्वरचन्द के साथ कार्यरत रहे। कुछ समय पश्चात् अलग हो जाने पर आपने बहुत उतार-चढ़ाव देखा। अब आपने अपना अलग व्यवसाय मोबिल आँयल का प्रारम्भ किया जो अब बहुत अच्छी तरह से चल रहा है। आपकी धर्मपत्नी का नाम मन्जु जैन है तथा आपके पुत्र मनीष, विनीश तथा एक पुत्री है। आपका निवास बिडला भवन, ठोलिया धर्मशाला के पास, घी वालो का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर में है।

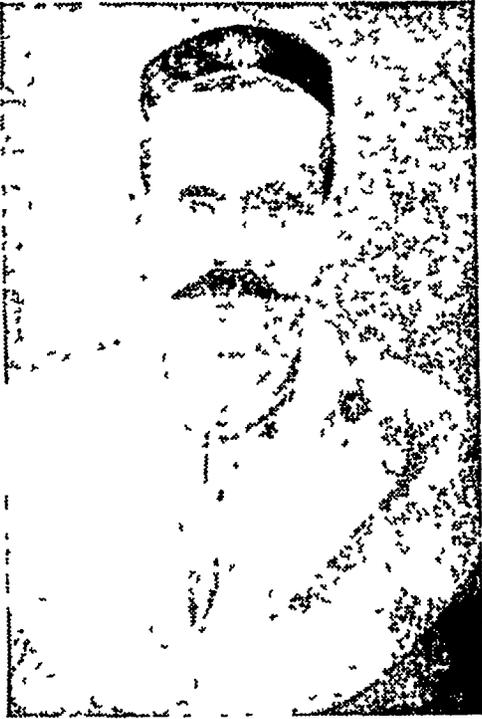


श्री न्यामतराम

श्री न्यामतराम (डोगरा) भोलाराम जी के पाँचवें पुत्र हैं। आप अपने भाई द्वारिका-दास के साथ कार्यरत हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम सविता जैन है। आपके एक पुत्र नीरज जैन एवं एक पुत्री है। आप अपने भाई श्री राजेन्द्र कुमार के साथ घी वालों के रास्ते में रहते हैं।



श्री गेलाराम जी सिंगवी



श्री नौतनदासजी के पौत्र, श्री जस्सूराम जी के पुत्र श्री गेलारामजी सिंगवी का जन्म डेरागाजीखान में हुआ था। आप सरल स्वभावी, परोपकारी धर्मज्ञ एवं कर्मठ कार्यकर्ता थे। आप धार्मिक कार्यों जैसे कि उत्सव जुलूस आदि के प्रबंध में विशेष रुचि लेते थे। जुलूस आदि निकलवाने तथा उसके लिये सरकार से स्वीकृति आदि लेने में आपका सर्वाधिक योगदान रहता था। आप श्रावक की दैनिक धार्मिक क्रियाओं में सदैव तत्पर रहते थे।

अपने व्यवसाय में आप काफी प्रवीण थे इसलिये डेरागाजीखान में अपने व्यवसाय में काफी उन्नति की। फलस्वरूप शहर के बड़े बड़े व्यापारियों में आपकी गणना होती थी।

आपका देहावसान मुलतान नगर पाकिस्तान में हुआ था। श्री दीवानचदजी, श्री निहालचन्द जी, श्री शुभचन्दजी, श्री रतन लाल जी, श्री बिसनदास जी तथा श्री देवीदास जी आपके छः पुत्र हैं जिनमें श्री दीवान चद जी, एवं श्री शुभचदजी इस समय वर्तमान में दिल्ली रहते हैं, तथा श्री रतनलालजी कोटा (राजस्थान) में व्यवसायरत हैं एवं श्री निहालचन्दजी बिसनदासजी व देवीदासजी जयपुर में ही निवास करते हैं।

श्री निहालचन्द जी सिंगवी

श्री निहालचन्द जी का जन्म गेलाराम जी सिंगवी के घर डेरागाजीखान में हुआ था। स्कूली शिक्षा प्राप्त करके आप अपने व्यवसाय में लग गये और वहाँ पर आपने कपड़े का काम भी अच्छे स्तर पर किया। पाकिस्तान बनने के बाद जयपुर आ गये और यहाँ अपने भाइयों के साथ व्यवसाय करने लगे। आप सेक्टर नम्बर 7, मकान नम्बर 255 जवाहर नगर जयपुर में रहते हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती सुमित्रादेवी है। आपके दो पुत्रियाँ हैं।



श्री रतनलाल जी

श्रीमान रतनलाल जी का जन्म भी गेलाराम जी सिंगवी सुपुत्र श्री जस्सूराम जी सिंगवी के घर डेरागाजीखान में हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद कुछ समय तक आपने वाराणसी में भी शिक्षा प्राप्त की। भारत विभाजन के बाद आप जयपुर आ गये। थोड़े दिन तक आपने अपने भाइयों के साथ व्यवसाय भी किया, बाद में आप कोटा (राजस्थान) में जाकर अपना अलग व्यवसाय करने लगे और वहाँ बस गये हैं। आप उत्साही कार्यकर्ता हैं व धर्म में भी आपकी अच्छी रुचि है। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती तुलसी देवी है। आपके खुशहालचन्द, भोजराज एवं किशोर कुमार तीन पुत्र एवं एक पुत्री हैं। व्यवसाय-रतन जनरल स्टोर बापू बाजार कोटा में है। निवास फ-5 दादावाड़ी कालोनी कोटा (राज.) में है। व्यावाय फोन नम्बर 5360 तथा निवास फोन नम्बर 5896 है।



श्री रतनलाल जी के पुत्र श्री खुशहालचन्द

श्री खुशहालचन्द का जन्म 12-8-1948 को श्री रतनलाल जी के घर में हुआ था। आप स्नातक की शिक्षा प्राप्त कर अपने पिताजी के साथ व्यवसाय में लग गये। आपकी धर्मपत्नी का नाम सुनीता जैन है तथा आपके सोनू एवं मोहन दो पुत्र हैं। आप संयुक्त परिवार के साथ निवास करते हैं।

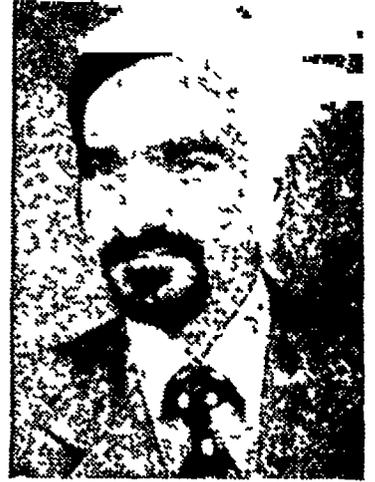


श्री भोजराज

श्री भोजराज का जन्म 1952 में जयपुर में श्री रतनलाल जी के घर हुआ। उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर व्यवसाय में लग गये। आपकी धर्मपत्नी का नाम गुलशन जैन है और आपके विकी जैन एक मात्र पुत्र हैं। आप रतन एजेन्सी सब्जी मण्डी में स्टेशनरी का व्यवसाय अपने संयुक्त परिवार के साथ करते हैं और अपने पिता के साथ दादावाड़ी कालोनी में रहते हैं।

श्री किशोर कुमार

श्री किशोर कुमार का जन्म सन् 1955 मे श्री रतनलाल जी के घर जयपुर मे हुआ था । आप स्नात्कोत्तर शिक्षा प्राप्त कर अपने सयुक्त परिवार के साथ व्यवसाय करने लगे । आपकी धर्मपत्नी का नाम रेणु जैन है । आप रतन जनरल स्टोर पर व्यवसाय करते है और अपने सयुक्त परिवार के साथ रहते है ।



श्री बिशनलाल जी

श्री बिशनलाल जी का जन्म भी श्री भोलाराम जी सिंगवी के घर डेरागाजीखान मे हुआ था । भारत विभाजन के बाद आप जयपुर आकर रहने लगे । कुछ समय तक भाइयो के साथ सयुक्त व्यवसाय के बाद अब आपने कटला पुरोहित जी मे अपना स्वयं का व्यवसाय कर रहे है । आपके राजेन्द्र प्रसाद व अनिल दो पुत्र है जो आपके साथ व्यवसाय करते है । आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती चन्द्रकान्ता है । व्यवसाय राजेन्द्र जनरल स्टोर कटला पुरोहितजी जयपुर मे है । निवास स्थान घी वालो का रास्ता, सूरजमल टोगिया के मकान मे है ।



श्री देवीदास जी

श्री देवीदास जी सिंगवी का जन्म आज से 51 वर्ष पूर्व श्री गेलाराम जी सिंगवी के घर डेरागाजीखान मे हुआ था । पाकिस्तान बनने के बाद आप जयपुर मे आकर बस गये और गेलाराम देवीदास जैन के नाम से चाकसू का चौक, हल्दियो का रास्ता, जयपुर मे व्यापार करने लगे । आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती कला देवी जैन है और विनोदकुमार जैन मात्र एक पुत्र है । निवास 818 ए-आदर्श नगर, जयपुर मे है ।



श्री-गोगनदास

श्री गोगनदास जी श्री जस्सूराम जी के सुपुत्र हैं। उनके दो पुत्र थे खुशीराम एवं प्रेमचन्द हैं।

श्री खुशीराम

श्री खुशीराम एक कलाकार व्यक्ति है। आपको चित्रकला एवं संगीत विद्या का अच्छा अभ्यास है। आप हारमोनियम के बहुत अच्छे मास्टर हैं और धार्मिक गीत बनाने में भी निपुण हैं। आपका जन्म मुलतान में हुआ था। मुलतान में ही आप रेलवे विभाग में कार्यरत हो गये। पाकिस्तान बनने के बाद आप भारत की पश्चिम रेलवे में कार्य करने लगे। अब आप सेवा निवृत्त हो गये हैं। स्वाध्याय में आपकी अच्छी रुचि है, जिससे गोमटसार शास्त्र का आपको अच्छा अभ्यास है। आपने विवाह नहीं किया, इस समय आपकी अनुमानतः 80 वर्ष की आयु है।

श्री प्रेमचन्द जी

आप गोगनदास जी के द्वितीय पुत्र थे। विवाह के 6 माह के पश्चात् अल्पावस्था में प्लेग (महामारी) में आपकी मृत्यु हो गई थी। आपकी धर्मपत्नी का नाम सीतादेवी (सुपुत्री श्री चौथूराम जी) जैन है। वे ज्ञानाभ्यास के लिए गुहाना चली गईं। अच्छा ज्ञानार्जन कर अब देहली रहती हैं। कोई सन्तान न होने के कारण आपने श्रीपाल को गोद लेकर अपना पुत्र बना लिया है जो अच्छे व्यवसायी एवं योग्य सम्पन्न होते हुए भी आपकी सेवा में हर समय तत्पर रहते हैं।



श्रीमान् देवीदास जी सिंगवी का परिवार

श्रीमान् देवीदास जी का जन्म श्रीमान् सेवाराम जी के घर मुलतान में हुआ था। आपके श्रीमान् तोलाराम, श्री मुलतानीचन्द जी, श्रीमान् रोगनलाल, श्रीमान् जयकुमार एवं श्रीमान् आदीश्वर लाल पाँच पुत्र थे। धर्मपत्नी का नाम श्रीमती फूलोदेवी है। श्री तोलाराम जी की युवावस्था में जयपुर में मृत्यु हो गई थी। उनके श्री चन्द्रकुमार व श्री निर्मल कुमार दो पुत्र हैं। जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है। श्री रोगनलाल की भी युवावस्था में ही जयपुर में मृत्यु हो गई। उनके कोई सन्तान नहीं थी। जय कुमार एवं आदीश्वर लाल के परिवार का विवरण आगे दिया जा रहा है।

श्री जयकुमार जी सिंगवी (रंगवाले)

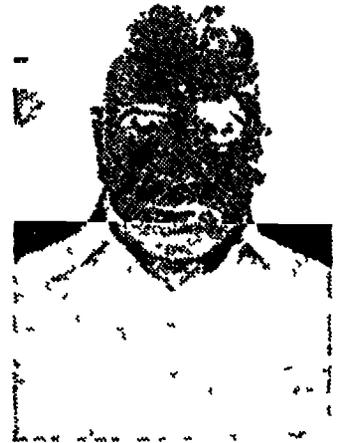


श्रीमान देवीदास जी सिंगवी के सुपुत्र श्री जयकुमार जी सिंगवी का जन्म मुलतान में हुआ था। बचपन में ही माता पिता का निधन हो जाने पर आप अपने बड़े भाई तोलाराम जी के साथ सयुक्त परिवार में रहते थे। आपके श्री तोलाराम, श्री मुलतानीचन्द, श्री आदीश्वर लाल तीन भाई हैं। मुलतान में आपका देवीदास तोलाराम जैन के नाम से जनरल मर्चेन्ट की दुकान थी अब जयपुर में तोलाराम जयकुमार जैन कलर मर्चेन्ट, कटला पुरोहित जी व देवीदास एण्ड सस जनरल मर्चेन्टस, त्रिपोलिया बाजार में दुकाने हैं।

आपके दोनों लड़के अरुण जैन व प्रदीप जैन एवं एक पुत्री हैं। दो लड़के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की कानपुर में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

श्री आदीश्वरलाल जी

श्री आदीश्वर लाल जी देवीदास जी सिंगवी के सुपुत्र का जन्म मुलतान में ही हुआ था। छोटी अवस्था में आपके माता पिता का स्वर्गवास हो जाने से आप अपने तोलाराम आदि भाइयों के साथ सयुक्त परिवार में रहते थे। स्कूली शिक्षा प्राप्त कर आप व्यवसाय में लग गये। पाकिस्तान बनने के बाद जयपुर में आप तोलाराम जयकुमार जैन कलर मर्चेन्ट्स कटला पुरोहितजी में व्यवसाय करते हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती भगवती देवी एवं आपके दो पुत्र अनिल जैन, व आशु जैन तथा दो पुत्रिया हैं।



श्री तोलाराम जी के पुत्र

श्री चन्द्र कुमार जी

श्री चन्द्रकुमार जी स्व श्री तोलाराम जी सिंगवी के सुपुत्र हैं। छोटी अवस्था में पिताजी का निधन हो जाने पर भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर व्यवसाय में लग गये। आपको सामाजिक कार्यों में भी रुचि है। आप अपनी फर्म तोलाराम जयकुमार जैन में कार्यरत हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती कुसुम जैन है। आप आदर्शनगर में मकान नम्बर 822 में अपने सयुक्त परिवार के साथ रहते हैं।



श्री निर्मलकुमार जी

श्री निर्मलकुमार जी श्री तोलाराम जी सिंगवी के सुपुत्र हैं। कर्म की विचित्रता देखो जयपुर में जिस दिन आपका जन्म हुआ उसी दिन ही आपके पिताश्री का निधन हुआ। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आपने अपने पारिवारिक व्यवसाय में प्रवेश किया। फर्म तोलाराम जयकुमार देवीदास एण्ड सस में आप भी कार्य करते हैं और संयुक्त परिवार के साथ आदर्शनगर में रहते हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती मजु जैन है तथा आपके दो पुत्रियां हैं। निवास 822 आदर्शनगर, जयपुर-4 में है।



श्री मुलतानी चन्द जी

श्री मुलतानीचन्द जी का जन्म श्री देवीदास जी सिंगवी के घर आज से 71 वर्ष पूर्व मुलतान में हुआ था। आप बचपन से ही क्रान्तिकारी विचारधारा के युवक थे। स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी कुछ समय भाग लिया और उसके बाद व्यवसाय करने लगे। पाकिस्तान बनने के बाद आप जयपुर में आकर रहने लगे और यहाँ आप आभूषणों का व्यवसाय करने लगे। आपकी अब स्वाध्याय में अच्छी रुचि हो गई है और घर गृहस्थी एवं व्यापार से उदास होकर तत्व समझने में आप अपना समय का निरन्तर उपयोग कर रहे हैं। आपके दो पुत्र श्री ओमप्रकाश व श्री चन्द्रप्रकाश हैं जो आपके ही साथ व्यवसाय कर रहे हैं तथा संयुक्त परिवार के रूप में रह रहे हैं।

श्री ओमप्रकाश जी

मुलतानीचन्द जी के बड़े पुत्र हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम सरला देवी है। आपके चंचल व विकास दो पुत्र एवं एक पुत्री हैं।

श्री चन्द्रप्रकाश जी

आप श्री मुलतानी चन्द जी के द्वितीय पुत्र हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम सुनीता है, आपके दो पुत्रियां हैं।

व्यवसाय—ज्वैलर्स-चंचल एण्ड कम्पनी, घी वालों का रास्ता, जयपुर।

निवास—279-ए भगतसिंह पार्क के पीछे, राजापार्क, जयपुर।



श्री ताराचन्द जी सुपुत्र श्री सेवाराम जी के दो पुत्र थे । श्री उत्तमचन्द जी, श्री आशानन्द जी जिनका परिचय निम्न प्रकार है—



श्री उत्तमचन्द जी सिंगवी

श्री उत्तमचन्द जी सिंगवी सुपुत्र श्री ताराचन्द जी का जन्म मुलतान मे हुआ था । आप सरल स्वभावी और जिनेन्द्र भक्ति के विशेष रसिक थे, आप गायन विद्या मे निपुण थे । प्रत्येक उत्सव, जुलूस, सभा आदि मे आपके भक्ति एव उपदेशक भजनो आदि से विशेष शोभा बढती तथा अच्छी धर्म-प्रभावना होती थी । आपकी धर्म-पत्नी का नाम श्रीमती ठाकरी बाई है । आपके श्री शम्भुलाल जी एव भद्रकुमार जी दो पुत्र है । आपका निवास गोदीका भवन, घी वालो का रास्ता, जयपुर मे है । व्यवसाय उत्तमचन्द शम्भुलाल जैन, कलर मर्चेन्ट, कटला पुरोहित जी, जयपुर । आपका निधन दिनांक 7-10-78 को जयपुर मे हुआ ।

श्री शम्भुकुमार जी

आप श्री उत्तमचन्द जी के बडे पुत्र है । आप राजनैतिक कार्यकर्ता है, नगर परिषद जयपुर के सदस्य भी रह चुके है । आपकी धर्मपत्नी का नाम शीला देवी है । आपके राजेश व अशोक दो पुत्र है । आप अपने परिवार के साथ उपरोक्त सस्थान मे काम करते एव उसी मकान मे रहते है ।

श्री भद्रकुमार जी

आप श्री उत्तमचन्द जी के द्वितीय पुत्र है । आप भी पिताजी की तरह गायन विद्या मे प्रवीण एव धर्मज्ञ व्यक्ति है । सामाजिक कार्य मे अच्छी रुचि है । हर धार्मिक उत्सवो मे आपका प्रमुख भाग रहता है । समाज की कार्यकारिणी के सदस्य भी है । आपकी धर्मपत्नी का नाम प्रेमलता है, तीन पुत्रिया है । आप भी अपने परिवार के साथ रहते एव व्यवसाय करते है । निवास—भवरलाल गोदीका भवन, घी वालो का रास्ता, जयपुर ।



श्री आशानन्द जी सिंगवी

श्री आशानन्द जी श्री ताराचन्द जी के दूसरे पुत्र थे । इनका जन्म भी मुलतान मे हुआ था, पाकिस्तान बनने के बाद जयपुर आकर बस गये और अपना व्यवसाय करने लगे । आपकी धर्मपत्नी चाँदोवाई थी जिनका छोटी अवस्था मे ही मुलतान मे निधन हो गया था । आपकी एक मात्र पुत्री विमला देवी है । आपका सस्थान ताराचन्द आशानन्द जैन नेहरू वाजार, जयपुर मे है जिसको अब विमला देवी धर्मपत्नी श्री महेन्द्रकुमार जी

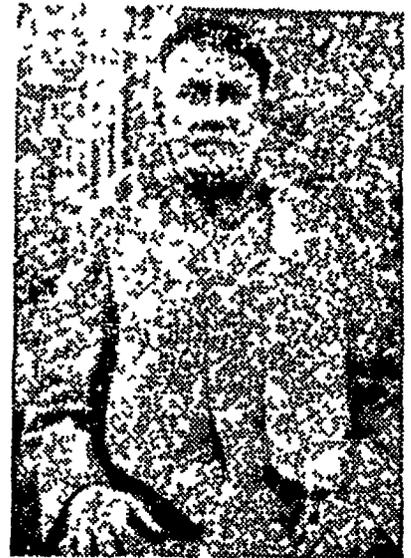


चला रही हैं। आपकी स्मृति में आपकी पुत्री श्रीमती विमला देवी धर्मपत्नी श्री महेंद्र कुमार जी ने मन्दिर के आगे के प्राण का फर्श बनवाया। हृदय गति रुक जाने के कारण आपका निधन हो गया। फोन नम्बर 72943 है।



श्री त्रिलोकचन्द जी सिंगवी

स्व० श्री त्रिलोकचन्द जी का जन्म श्री सेवाराम जी सिंगवी के घर मुलतान में हुआ था। आप सरल स्वभावी और जिनेन्द्र भक्त थे। आप सेवाराम त्रिलोकचन्द जैन जनरल मर्चेन्ट, चूडी सराय मुलतान में व्यवसाय करते थे। आपके श्री दुनीचन्द, श्री गिरधारी लाल व श्री प्रेमचन्द तीन पुत्र थे जो उपरोक्त फर्म में व्यवसाय करते हैं।



श्री दुनीचन्द जी

श्री दुनीचन्द जी आपके प्रथम पुत्र थे जो मुलतान में सेवाराम त्रिलोकचन्द के नाम से संयुक्त परिवार के साथ व्यवसाय करते थे, उसके बाद जयपुर में त्रिलोकचन्द गिरधारी लाल के नाम से कटला पुरोहित जी में अपने भाइयों के साथ व्यवसाय करते रहे, कुछ वर्ष पूर्व आपकी जयपुर में बीमारी से मृत्यु हो गई।

श्री गिरधारीलाल जी

श्री गिरधारीलाल जी भी मुलतान से आने के पश्चात् जयपुर में रहने लगे और कटला पुरोहित जी में त्रिलोकचन्द गिरधारी लाल के नाम से जनरल मर्चेन्ट्स का व्यवसाय कर रहे हैं। आपके कोई पुत्र नहीं है, मात्र तीन लड़कियां हैं।

श्री प्रेमचन्द जी

श्री प्रेमचन्द जी सिंगवी का श्री त्रिलोकचन्दजी के घर मुलतान में जन्म हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद आप व्यवसाय करने लगे, पाकिस्तान बनने के बाद आप जयपुर में आकर अपने भाइयों के साथ व्यवसाय में सलग्न हुए। आपकी धर्म में अच्छी रुचि थी, तत्व को समझने के लिए आप स्वाध्याय में अधिक समय देते थे तथा परस्पर तत्व चर्चा में आपको बहुत आनन्द आता था। हृदयगति रुक जाने से भाद्रपद 1980 में 65 वर्ष की आयु में आपका असामयिक निधन हो गया। आपकी धर्मपत्नी का नाम विद्यावती है।



आपके श्री जगदीशलाल जी, रमेश कुमार, बालकिशन, भारतभूषण, अनिलकुमार व विनोदकुमार छ पुत्र एव दो पुत्रियां है। जो बहुत ही होनहार और भाग्यशाली है।

आपका व्यवसाय सेवाराम त्रिलोकचन्द जनरल मर्चेन्ट्स, कटला पुरोहित जी जयपुर मे था।

श्री प्रेमचंद जी के पुत्र

श्री जगदीशलाल जी

आप श्री प्रेमचन्द जी के बड़े पुत्र है, सरल-स्वभावी एव धर्मज्ञ है। दिल्ली मे रहते है और अपने परिवार के साथ दिल्ली कार्यालय मे कार्यरत है। आपकी धर्मपत्नी का नाम त्रिशला देवी है। राजेश एक मात्र पुत्र है।

श्री रमेशकुमार जी

आप श्री प्रेमचन्द जी के द्वितीय पुत्र है, विशेष होनहार, बुद्धिजीवी एव कर्मठ कार्यकर्ता है जिन्होने साधारण परिस्थिति मे असीम पुरुषार्थ करके स्वयं रत्नो का व्यवसाय प्रारम्भ किया और अपने ही बल पर विदेश यात्राएं की और वहाँ पर आपने स्थाई व्यवसाय प्रारम्भ किया तथा आज एक उच्चकोटि के जौहरी है एव समाज मे धार्मिक आस्था मे बहुत रुचि है। विदेश मे रहते हुए भी रात्रि भोजन एव सप्त व्यसनादिक त्यागी अष्ट मूलगुण का भलीभांति पालन करते है। आपकी परोपकार, दान आदि मे भी अच्छी रुचि है। आपने महावीर कल्याण केन्द्र के ऊपर की मजिल मे पाठशाला के लिए भवन बनाने मे अच्छा आर्थिक योगदान दिया है, धार्मिक एव सामाजिक गतिविधियो मे भाग लेते हुए समाज मे आदर्श जैन मिशन की स्थापना मे प्रमुख भाग लिया है तथा राजनीति मे भी आपकी काफी रुचि है और उसमे भी कार्यकर्ता के रूप मे कार्य करते रहते है। आप अपने सब भाइयो को साथ लेकर अपने पद चिन्हो पर चलने की प्रेरणा देते रहते है, तथा उन्हे भी अपने काम का अच्छा व्यवसायी साथी बना लिया है। आपकी धर्मपत्नी का नाम किरण जैन है व रितेश पुत्र एव एक पुत्री है। निवास 579 आदर्शनगर जयपुर मे है।

श्रीबालकिशन जी

आप प्रेमचन्द जी के तीसरे पुत्र है आप अपने परिवार के साथ व्यवसाय करते हुए पश्चिमी जर्मनी कार्यालय मे कार्यरत है। आपकी धर्मपत्नी का नाम चित्रा जैन है व अपने परिवार के साथ सयुक्त रूप से रहते है।

श्री प्रेमचन्द जी के बाकी तीन पुत्र भारतभूषण, अनिल कुमार एवं विनोद कुमार अभी अविवाहित है जो विद्या अध्ययन कर रहे हैं तथा अपने परिवार के साथ व्यवसाय करते हैं।



श्री सन्तीरामजी सिगवी

श्री सन्तीरामजी का जन्म श्रीमान घनश्यामदासजी सिगवी के घर पर डेरागाजीखान में हुआ था। आप स्वभाव से ही भद्र परिणामी एवं सज्जन पुरुष थे। आप डेरागाजीखान में व्यवसाय करते थे। आपके श्री भवरचन्द श्री बल्लभदास, श्री गणेशदासजी, तीन पुत्र एवं गणेशी वाई एक पुत्री थी। आपका मुलतान में 75 वर्ष की आयु में निधन हुआ।



श्री भंवरचन्दजी सिगवी

स्व श्री भंवरचन्दजी का जन्म स्व. श्री सन्तीराम सिगवी के घर पर डेरागाजीखान में हुआ था। प्रारम्भ से ही उत्साही कार्यकर्ता एवं सामाजिक प्राणी थे। आपको धर्म में प्रति प्रगाढश्रद्धा एवं भक्ति थी। छोटी अवस्था में ही आप डेरागाजीखान से मुलतान व्यवसाय के लिये आ गये और मुलतान में भंवरचन्द ज्ञानचन्द जैन चूडी सराफ में चूडियों का व्यवसाय करने लगे और मुलतान में भी आप सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में अग्रणी थे।



पाकिस्तान बनने के समय जब सब लोग मुलतान छोड़कर भारत आ गये तब आप कुछ अन्य साधर्मियों के साथ वहाँ रह रहे थे तो एक दिन आपको पिछली रात में स्वप्न आया कि मंदिर की वेदी में मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जी की एक मात्र मूर्ति विराजमान है उसे लेकर आप तुरन्त यहाँ से चले जाये। आप प्रातः होते ही अपने साथियों को स्वप्न बताकर मन्दिर से वह मूर्ति लेकर वहाँ से आ गये। यह भंवरचन्दजी का ही पुरुषार्थ था कि महान अतिशय युक्त मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्राचीन मूर्ति आज श्री दि० जैन मंदिर आदर्शनगर में विराजमान है।

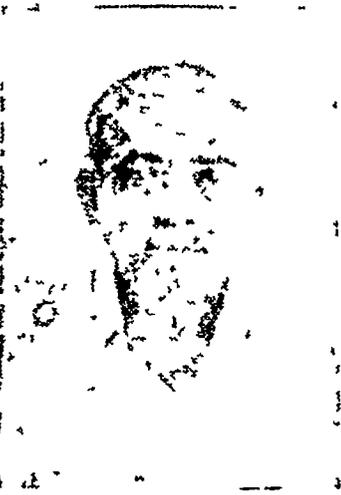
जयपुर में भी आपने भवरचन्द ज्ञानचन्द जैन जनरल मर्चेन्ट के नाम से कटला पुरोहितजी जयपुर में अपना व्यवसाय किया। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती नन्दीबाई है और ज्ञानचन्द, बोधराज, लाजपतराय और बालकिशन चार लड़के जो अपने-अपने बहुत अच्छे व्यवसायों में कार्यरत हैं और पुत्री सुश्री कुमारी पुष्पा जो अच्छी राजनीतिज्ञ हैं

वी. ए. एल- एल वी की शिक्षा प्राप्त कर राजनीति मे कार्य कर रही है व वर्तमान मे राजस्थान विधान सभा की सदस्या भी है। मकान नम्बर 846 ए, सिंगवी सदन आदर्शनगर मे संयुक्त परिवार के रूप मे रहते है।

श्री भंवरलालजी के पुत्र

श्री ज्ञानचन्दजी

श्री ज्ञानचन्दजी स्व श्री भवरचन्दजी के सुपुत्र का जन्म मुल्तान मे हुआ था।



स्कूली शिक्षा के पश्चात् आप अपने पिता के साथ व्यवसाय मे सलग्न हुए। पाकिस्तान बनने के पश्चात् आप जयपुर मे आकर रहने लगे। आप सरल स्वभावी धर्मात्मा एव तत्व रुचिक हैं। सामाजिक कार्यों मे भी आपकी अच्छी रुचि है जिसका परिणाम है कि आप मुल्तान दि० जैन समाज की कार्यकारिणी के सदस्य है। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती राजकुमारी जैन है और आपके बड़े पुत्र श्री वीरेन्द्रकुमार, वीरेन्द्र जनरल स्टोर, कटला पुरोहितजी मे आपकी दुकान पर बैठते है और आपके दूसरे लडके श्री अनिल

कुमार जैन वस्तु कला विशेष की उपाधि प्राप्त कर पी डब्लु डी मे इजीनियर के पद पर कार्य कर रहे हैं। आप अपनी दुकान ज्ञान जनरल स्टोर, चादपोल मे कार्य करते है तथा आदर्शनगर मे मकान नम्बर 846 ए, मे अपने सयुक्त परिवार के साथ रहते है।

श्री बोधराजजी

आप श्री भवरचन्दजी के द्वितीय पुत्र है। शान्तिप्रिय और एकान्तवास आपको अच्छा लगता है। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती शल्लो देवी है, आपके विजय कुमार मात्र एक पुत्र है। आप अपने भाइयो के साथ सिंगवी सदन आदर्शनगर मे रहते है। वी राज एण्ड कम्पनी दड़ा घी वालो का रास्ता मे आपकी दुकान हैं।

श्री लाजपतरायजी

श्री भंवरचन्दजी के तृतीय पुत्र है। सामाजिक कार्यों मे आपकी अच्छी रुचि है। समाज के हर उत्सवो, प्रीतिभोज आदि मे अग्रणी होकर कार्य करते रहते है। आप की धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या देवी हैं आपके राजेश एक पुत्र एव दो पुत्रिया हैं। राजेश एण्ड कम्पनी, वुलियन विल्डिग, हल्दियो के रास्ते मे आपकी दुकान है।

श्री बालकिशनजी

श्री भवरचन्दजी के चतुर्थ पुत्र है। आपकी धार्मिक गीतो आदि के बोलने में काफी रुचि है। नित्य पूजन में बड़े उल्लास से भाग लेते हैं। समाज में होने वाले सभी उत्सवों आदि को अपने धार्मिक गीतों से सफल करने में आपका प्रमुख योग रहता है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा देवी है। आपके सजय मात्र एक पुत्र एवं एक पुत्री है। आप अपने भाईयों के साथ सिंगवी सदन में रहते हैं। भंवरचन्द, ज्ञानचन्द कटला पुरोहितजी में व्यवसाय करते हैं।



श्री बल्लभदासजी

श्री बल्लभदासजी श्री सन्तीरामजी के दूसरे सुपुत्र थे। आपका जन्म आज से 63 वर्ष पूर्व डेरागाजीखान में हुआ था। आपको प्रारम्भ से ही भगवत भक्ति में बहुत लगन थी। पहले आपने डेरागाजीखान में व्यवसाय किया इसके पश्चात् पंजाब की कई मण्डियों में व्यवसाय हेतु रहे। बाद में आपने मुल्तान में आकर अपने बड़े भाई श्री भवरचन्दजी के साथ व्यवसाय किया। पाकिस्तान बनने के पश्चात् आप जयपुर में आकर अपना अलग जगदीश जनरल स्टोर, कटला पुरोहितजी में जनरल मर्चेन्टस का व्यवसाय करने लगे। आपको जिनेन्द्र पूजन में अति उत्साह था। आप जीवन पर्यन्त नित्य देव पूजन करते रहे। आपने जीवन में संयम का भी भली प्रकार पालन किया। अग्नेजी दवाई आदि का



आपने कभी प्रयोग नहीं किया और अन्त समय तक घोर वेदना होने पर भी शान्ति से पानी आदि के त्याग का भली भांति पालन करते हुए सन् 1980 मार्च में आपने शरीर छोड़ा। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती पूरण देवी है और श्री प्रभाचन्द, श्री मनोहरलाल, श्री भीमसेन, श्री जगदीशकुमारजी, व श्री अर्जुनलालजी पांच पुत्र हैं जो अपने-अपने व्यवसाय में भली प्रकार कार्यरत हैं। ये आपके निवास स्थान 143 गुस्नानक पुरा परनामी मन्दिर आदर्शनगर में संयुक्त रूप से रह रहे हैं।

श्री बल्लभदासजी के पुत्र

श्री प्रभाचन्दजी

बल्लभदासजी के प्रथम पुत्र है स्कूली शिक्षा के बाद आप व्यवसाय में लग गये। उत्साही कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आपकी जिनेन्द्र भक्ति आदि में विशेष रुचि है। आपकी धर्मपत्नी का नाम कुसुमलता जैन है। आपके राजकुमार और आसीम दो पुत्र एवं एक पुत्री है। परिवार के साथ परनामी ब्लॉक आदर्शनगर में रहते हैं।

व्यवसाय—प्रभा जनरल स्टोर, घी वालों का रास्ता में जनरल मर्चेन्टस का व्यापार है।

श्री मनोहरलालजी

श्री बल्लभदासजी के द्वितीय पुत्र है। संगीत विद्या में आपकी बहुत रुचि है, आपने अपनी भजन मंडली भी बना रखी है। समय-समय पर होने वाले उरसवों व शोभा यात्राओं आदि में भजन मंडली द्वारा कार्यक्रम देकर उनकी शोभा बढ़ाते एवं उसे सफल बनाते हैं। आप संगीत रचना भी करते हैं। आपकी धर्मपत्नी सुलोचना देवी एक विदुषी महिला हैं। यह सेन्ट्रल स्कूल में अध्यापिका हैं एवं आप महारानी गायत्री देवी स्कूल में कार्यरत हैं। आपके राकेश, दिनेश मात्र दो पुत्र हैं। आप अपने सयुक्त परिवार के साथ 143 परनामी ब्लाक में रहते हैं।

श्री भीमसेनजी

श्री बल्लभदासजी के तीसरे पुत्र है। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती निर्मला देवी है। आपके शरद जैन एक पुत्र एवं एक पुत्री है। अपने परिवार के साथ रहते हैं, जगदीश जनरल स्टोर कटला पुरोहितजी में अपने भाइयों के साथ कार्य करते हैं।

श्री जगदीशकुमाजी

श्री बल्लभदासजी के चौथे पुत्र है। अच्छे उत्साही और कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आपने अपने परिवार को ऊँचा उठाने में पूर्ण योग दिया है आपकी धर्मपत्नी का नाम भुवनेश है। आपके अमित व टिकू दो पुत्र हैं। आप अपने भाइयों के साथ रहते हैं और जगदीश जनरल स्टोर कटला पुरोहितजी में जनरल मर्चेन्ट्स का कार्य करते हैं।

श्री अर्जुनलालजी

श्री बल्लभदासजी के पाचवें पुत्र है। कर्मठ एवं उत्साही नवयुवक है। स्कूली शिक्षा के बाद बम्बई की किसी उच्च संस्थान में एजेंट का कार्य करते हैं। अपने परिवार के साथ 143 परनामी ब्लाक में रहते हैं। आप अभी अविवाहित हैं।



श्री गणेशदासजी

श्री गणेशदासजी श्री सन्तीरामजी के तृतीय पुत्र हैं। पाकिस्तान बनने से पहले आप डेरगाजीखान में श्री घनश्यामदास गणेशदास के नाम से चूड़ी आदि का व्यवसाय करते थे। आज आप जयपुर में रहते हैं एवं भावों से शांति प्रिय एवं भद्र परिणामी हैं अर्हंत भक्ति में आपकी विशेष रुचि है। 75 वर्ष की आयु में भी आप नित्य पूजन आदि करते हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम प्यारीवाई है। आपके इन्द्रभान, पदमकुमार, प्रकाशचन्द्र, जवाहरलाल एवं सुभाषकुमार पांच पुत्र एवं दो पुत्रियाँ हैं।

व्यवसाय — घनश्यामदास, गणेशदास कटला पुरोहितजी जयपुर तथा निवास 141 फ्रान्टियर कालोनी, आदर्शनगर, जयपुर-4 में है—

श्री गणेशदासजी के पुत्र

श्री इन्द्रभानजी

श्री गणेशदासजी के प्रथम पुत्र धर्मज्ञ एवं सहनशील व्यवित है। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती टालोदेवी है। आपके शेखर मात्र एक पुत्र एवं दो पुत्री है व घी वालो का रास्ता जौहरी बाजार में आपका निवास है।

व्यवसाय — एम्पीरियल जनरल स्टोर त्रिपोलिया बाजार।

श्री पदमकुमारजी

आप गणेशदासजी के द्वितीय पुत्र शान्ति प्रिय व्यक्ति है। आपकी धर्मपत्नी कान्तादेवी जैन है। आपके अनिलकुमार मात्र एक पुत्र है। हल्दियो के रास्ते मे आप रहते है।

व्यवसाय—अनिल पलास्टिक - इन्डस्ट्रीज ठाकुर पचेवर का रास्ता जयपुर।

श्री प्रकाशचन्द्रजी

गणेशदासजी के तृतीय पुत्र है। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती शशीदेवी है। आपके सदीप एक पुत्र एवं एक पत्नी है। आप 141 फ्रान्टियर कालोनी आदर्शनगर में रहते है।

श्री जवाहरलालजी



जवाहर लालजी श्री गणेशदासजी के चतुर्थ पुत्र है। आप प्रतिभाशाली, बुद्धिजीवी, राजनीतिज्ञ एवं सामाजिक कार्यकर्ता है। आपको शिक्षा काल मे ही रजनीति मे प्रवेश का शौक लगा और आप जयपुर शहर युवक कांग्रेस के सदस्य तथा पदाधिकारी रहे। आप उन्ही दिनों साइकिल पर भारत भ्रमण भी किया जहा काफी स्थानों पर आपका स्वागत हुआ। शिक्षा के बाद आप अपने व्यवसाय मे कार्यरत हुए। साथ ही सामाजिक गतिविधियों एवं संगीत कला आदि मे भाग लेने लगे। फलस्वरूप आप जैन मिशन के उत्साही कार्यकर्ता रहे एवं वर्तमान में मन्त्री है। महावीर कल्याण केन्द्र की औषधालय समिति के आप सदस्य है और मुलतान दिगम्बर जैन समाज की प्रायः सभी गतिविधियो जलसे दशलक्षणी के कार्यक्रमो, शोभा यात्राओं, भजन मंडलियो आदि मे बड़े उत्साह के साथ प्रमुखता से भाग लेकर सफल बनाने मे हमेशा योग देते रहते है। इस तरह से आप समाज के ज्योतिर्मय होनहार नवयुवक है। आपकी धर्मपत्नी का नाम बीना देवी है आपके पीयूष मात्र एक पुत्र एवं तीन पुत्रियां है। आप 141 फ्रान्टियर कालोनी आदर्शनगर मे रहते है।

व्यवसाय—घनश्यामदास, गणेशदास कटला पुरोहितजी, जयपुर मे आप अपने परिवार के साथ व्यवसाय करते है।

श्री सुभाषकुमारजी

श्री गणेशदासजी के पाचवे पुत्र है। बहुत प्रतिभाशाली एव कर्मठ कार्यकर्ता है। अपने व्यवसाय को बढ़ाने में आपका बहुत योग रहा है जिससे आप प्लास्टिक के व्यवसाय में जयपुर के अग्रणी व्यापारी माने जाने लगे है। आपकी धर्मपत्नी स्नेह जैन है। आपके अतुल, शैलेग दो पुत्र है। आप अजमेरा भवन मोतीसिंह भोमियो के रास्ते में रहते हैं।

व्यवसाय—घनश्यामदास गणेशदास कटला पुरोहितजी में आप अपने परिवार के साथ व्यवसाय करते हैं।



श्री हीरानन्द सिंगवी



श्री हीरानन्द जी शानूराम जी सिंगवी के सुपुत्र है। आपका जन्म मुलतान में हुआ था। आप ज्यादा पढ़े लिखे न होने पर भी स्वाध्याय में रुचि होने से आपको अच्छा तत्व ज्ञान हो गया और आप अच्छे गास्त्राभ्यासी हो गये। मुलतान में आपकी जनरल मर्चेन्ट्स की दुकान थी। अल्पावस्था में ही आपकी धर्मपत्नी का निधन हो गया। आपके एकमात्र पुत्र श्री सुभाषचन्द जी और एक पुत्री है। आपकी सुभाष जनरल स्टोर कटला पुरोहित जी जयपुर में हौजरी की दुकान है।

श्री हीरानन्द के पुत्र श्री सुभाषकुमार जी

आपका जन्म श्री हीरानन्द जी के घर मुलतान में हुआ था। पाकिस्तान बनने के बाद आपके पिताजी जयपुर आकर बस गये और आप स्कूली शिक्षा प्राप्त कर व्यवसाय में लग गये। कर्मठ एव पुरुषार्थी होने से अपने व्यवसाय में अच्छी प्रगति की। आपकी पत्नी का नाम शमा देवी है। आपके सजय एक पुत्र एव तीन पुत्रिया हैं। आप अपने पिता के साथ रहते हैं एव व्यवसाय करते हैं। निवास : 2 ज 11 जवाहर नगर, जयपुर।



श्री ठाकरदासजी सिंगवी

श्री आशानन्द जी सिंगवी के जमनीदास व ठाकरदास दो पुत्र थे। जमनीदास के परिवार का परिचय दिल्ली खण्ड में दिया गया है। ठाकरदास जी के परिवार का परिचय निम्न प्रकार है।

आप डेरागाजीखान में रहते थे और धर्मज्ञ व्यक्ति थे, आपके श्री हुकुमचन्द एव श्री महावीर दो पुत्र हैं।

श्री ठाकरदास के पुत्र

श्री हुकमचन्द

श्री हुकमचन्द का जन्म डेरागाजीखान मे हुआ । आपके पिता आपको छोटी अवस्था मे ही छोडकर स्वर्ग सिधार गये । पाकिस्तान बनने के बाद आप जयपुर आकर बसे और यहा आपने अपने ही पुरुषार्थ से कपडे का काम प्रारम्भ किया और उसमे बहुत उन्नति की । आपकी धर्मपत्नी का नाम प्रकाश देवी है । आपके पवनकुमार व अमित जैन दो पुत्र एवं दो पुत्रिया है । सस्थान—फैन्सी क्लॉथ स्टोर, घी वालो का रास्ता, जयपुर एवं निवास घी वालो का रास्ता जयपुर में है ।

श्री महावीर

आप घी वालो के रास्ते, चाकसू का चौक मे रहते है तथा व्यवसाय करते है । आपकी धर्मपत्नी का नाम माया देवी है । आपके संजय व मनोज दो पुत्र तथा एक पुत्री है ।



गोलेछा परिवार

श्री देवीदास जी का परिवार ओसवाल दि० जैन के प्राचीन परिवारों में से है। इनके पूर्वजों का पता नहीं चल सका। इनके दासूरामजी, शम्भुराम और सुखानन्द तीन पुत्र थे जिनमें श्री सुखानन्दजी का परिचय दिल्ली खण्ड में दिया गया है।

श्री शम्भुराम जी

शम्भुरामजी की लगन धार्मिक कार्यों में विशेष थी तथा वे सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में कर्मठ कार्य-कर्त्ता के रूप में प्रख्यात थे। आपकी युवावस्था में ही मृत्यु हो गई। इनकी मात्र एक पुत्री वरतूरी बाई है जिनका विवाह श्री गिरधारीलाल सुपुत्र श्री करमचन्द सिंगवी के साथ डेरागाजीखान में हुआ।



श्री दासूराम जी

श्री दासूरामजी गोलेछा का जन्म मुलतान नगर में दिगम्बर जैन ओसवाल श्री देवीदासजी गोलेछा के यहाँ हुआ। आप पैतृक सम्पन्न परिवार में उत्पन्न होने के कारण सम्पन्नता आपको विरासत में मिली। आप स्वभाव से ही सरल एवं मृदु थे। आपको जिनेन्द्र भक्ति के प्रति अति अनुराग था। सभाओं में भक्ति गायन बड़ी लगन एवं उत्साह से बोलने का चाव था। कोमल हृदय होने के कारण दुखी असहायों की सदा सेवा करने को तत्पर रहते थे। धार्मिक अनुष्ठानों में भी आप सदैव दिल खोल कर सहज भाव से दान देते थे।

मुलतान में आपके सयुक्त परिवार का वगीचे के नाम से एक फार्म था जिसमें आपने भवन एवं चैत्यालय बनवा रखा था जहाँ समय-समय पर ब्रह्मचारी-त्यागी गण आदि आकर रहते और लोग धर्म साधन के लिए जाते एवं मनोरजन के लिए प्रीतिभोज आदि करते रहते थे।

श्री दासूराम जी के समान उनकी धर्मपत्नी भी सरल स्वभावी धर्मज्ञ एवं लोक व्यवहार में निपुण महिला थी। वे सदैव दया, दान आदि कार्यों में अग्रणी रहती थी।

मुलतान नगर में आपका जनरल मर्चेन्ट का पैतृक एवं प्रख्यात व्यवसाय था। आपके श्री रोशनलाल जी मात्र एक पुत्र तथा चार लड़कियां जो कि समाज के सम्पन्न घरों में ब्याही हुई हैं, वे भी अपनी माता की तरह सरल स्वभावी, धर्मज्ञ हैं व दान आदि धार्मिक कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेती हैं।

मुलतान में देवीदास, दासूराम जैन के नाम से दुकान थी। अब जयपुर में रोशनलाल विजयकुमार के नाम से कटला पुरोहित जी में रंग के व्यापारी हैं।

श्री रोशनलाल जी

दासूराम जी के एक मात्र पुत्र श्री रोशनलाल जी का जन्म मुलतान में हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद आप व्यवसाय करने लगे। पाकिस्तान बनने के बाद आप जयपुर में आकर रहने लगे और यहाँ कटला पुरोहित जी में रंग का व्यवसाय प्रारम्भ किया। आप कुशाग्र बुद्धि, उत्साही एवं परिश्रमी व्यक्ति हैं। अपने पुरुषार्थ से आपने काफी अचल सम्पत्ति अर्जित की। आपकी पत्नी श्रीमती शान्तादेवी का छोटी अवस्था में निधन हो गया जिसके श्री कमलकुमार एवं विजयकुमार दो पुत्र एवं एक पुत्री हैं। आपने दूसरी शादी की। उनसे एक पुत्र अनिलकुमार एवं तीन पुत्रियाँ हैं। आपकी दूसरी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती आशा जैन है।



श्री रोशनलाल जी के पुत्र

श्री कमलकुमार जी

श्री कमलकुमार का जन्म मुलतान में सन् 1947 को हुआ। स्नातक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आप अपने पैतृक व्यवसाय में लग गये। आपकी धर्मपत्नी का नाम अरुणा जैन है तथा आपकी एक पुत्री है। निवास दूसरी गली, बीस दुकान, 570 आदर्शनगर में है।



श्री विजयकुमार जी



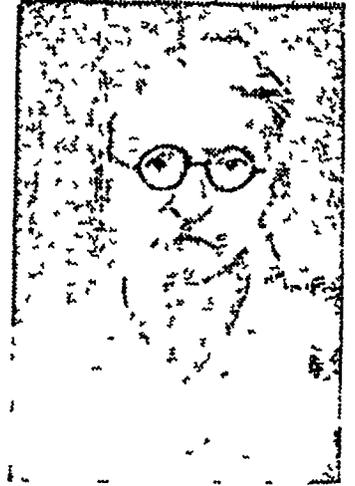
श्री विजयकुमार का जन्म 1954 को जयपुर में हुआ। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपने पिता के साथ व्यवसाय में लग गये और अपने धर्म में विशेष प्रगति की तथा आप राजनैतिक कार्यकर्ता भी हैं। राजनीति में आप सक्रिय भाग ले रहे हैं। युवा कांग्रेस सगठन के पदाधिकारी भी हैं। धार्मिक कार्यों में भी आपकी अच्छी रुचि है। समय-समय पर होने वाले धार्मिक उत्सवों आदि में सक्रिय भाग लेकर उसे सफल बनाने में आपका अच्छा योग्य रहता है। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती अनिता जैन है।

आप सब का रोशनलाल विजयकुमार कलर मर्चेन्ट, कटला पुरोहित जी में सस्थान हैं तथा आपकी मालविया इण्डस्ट्रीयल एरिया जयपुर में फैक्ट्री है। निवास मकान नम्बर 570, गली नम्बर 2, बीस दुकान, आदर्शनगर जयपुर में है।



श्री होतूराम जी

श्री होतूराम जी गोलेछा का जन्म मुलतान में रेमलदास जी के घर में हुआ था। आप परिश्रमी व्यक्ति थे और व्यवसाय हेतु आपने देश के कई भागों में भ्रमण किया। आपको वैद्यक का भी बहुत शौक था और औषधि देकर निशुल्क लोगों की सेवा किया करते थे। आपके एक मात्र पुत्र श्री भगवानदास जी हैं जो जयपुर में व्यवसाय करते हैं।



श्री भगवानदास जी

श्री भगवानदास जी की धर्मपत्नी का नाम फूलोदेवी है और आपके कोई सन्तान नहीं है। आप पहले मुलतान में व्यवसाय करते थे, बाद में जयपुर में आकर टोपिया बनाने का कार्य करते थे। अब कटला पुरोहित जी में अपने सालों के साथ प्लास्टिक का कार्य करते हैं।



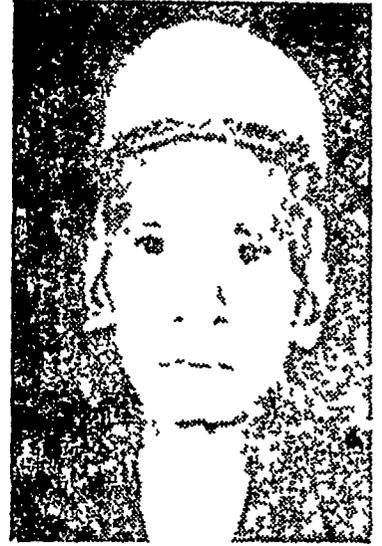
पारख परिवार

पारख परिवार मे मंसाराम, भोजाराम व तीरथदास तीन भाई थे। इनके पिता के नाम का पता नहीं चल सका। मंसाराम के कोई पुत्र न होने से उन्होंने उदयकरण को गोद लिया। तीरथदास के परिवार का विवरण दिल्ली खण्ड मे दिया गया है।

श्री भोजाराम जी डेरागाजीखान मे रहते थे। उनके श्री खण्डाराम जी, श्री निहालचन्द्र जी व श्री राजाराम जी तीन पुत्र थे जिनके परिवारो का विवरण निम्न प्रकार है —

श्री खण्डाराम जी

श्री खण्डाराम जी का जन्म श्री भोजाराम जी पारख के घर डेरागाजीखान मे हुआ था। आप सरल स्वभावो धर्मज्ञ व्यक्ति थे। आपका डेरागाजीखान मे खण्डाराम गिरधारी लाल के नाम से जनरल मर्चेन्ट्स का अपने भाइयों के साथ सयुक्त व्यापार था। आपके श्री गिरधारी लाल एवं श्री हरीशचन्द्र दो पुत्र है। जयपुर मे भी आपके दोनो लडको ने उपरोक्त नाम से कटला पुरोहित जी मे जनरल मर्चेन्ट्स का ही व्यवसाय कर रखा है।



श्री गिरधारीलाल जी

श्री गिरधारीलाल जी श्री खण्डाराम जी के सुपुत्र है। आपका जन्म डेरागाजीखान मे हुआ था। युवावस्था तक आपको गाने बजाने का अच्छा शौक था, हारमोनियम बजाने के आप अच्छे मास्टर है जिससे डेरागाजीखान मे आपने अपने समाज मे एक बहुत अच्छी धार्मिक भजन मण्डली बना रखी थी जो दूर-दूर तक विख्यात थी। पाकिस्तान बनने के पश्चात् जयपुर मे खण्डाराम गिरधारीलाल जैन जनरल मर्चेन्ट्स कटला पुरोहित जी मे अपने भाई श्री हरीशचन्द्र के साथ व्यवसाय करते है। आपकी धर्मपत्नी का नाम ईश्वरी देवी है। आपका पुत्र दिनेशकुमार है।





श्री गिरधारीलाल जी के पुत्र

श्री दिनेशकुमार जी

श्री दिनेशकुमार जी श्री गिरधारीलाल जी पारख के सुपुत्र हैं। आपका जन्म जयपुर में हुआ। शिक्षा प्राप्ति के बाद आप अपने पिता के साथ व्यवसाय में कार्य करने लगे। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती मधु जैन है। आप अपने पिता के साथ रहते हैं। निवास 592, आदर्शनगर, जयपुर में है।



श्री हरीशचन्द्रजी

श्री हरीशचन्द्रजी स्व श्री खण्डारामजी पारख के द्वितीय पुत्र हैं। आपका जन्म आज से 53 वर्ष पहले डेरागाजीखान में हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद आप अपने भाई श्री गिरधारीलाल के साथ व्यवसाय करने लगे। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती पद्मा देवी है और आपके तीन पुत्र राकेश जैन, अशोक जैन एवं सजीव जैन हैं। आप अपने भाई के साथ मकान नम्बर 592 बीस दुकान आदर्शनगर में रहते हैं और खण्डाराम गिरधारीलाल सस्थान में ही अपने भाई के साथ कार्यरत हैं।

श्री निहालचन्दजी

श्री निहालचन्दजी श्री भोजाराम जी पारख के द्वितीय पुत्र हैं। आपका जन्म भी डेरागाजीखान में हुआ था। अपने सयुक्त परिवार के साथ खण्डाराम निहालचन्द जैन के नाम से व्यवसाय करते थे। पाकिस्तान बनने के पश्चात् आप जयपुर आकर बस गये और यहाँ भोजराज निहालचन्द जैन के काम से कटला पुरोहित जी में जनरल मर्चेंट का व्यवसाय करने लगे। आप स्वभाव से सरल, दयालु एवं धर्मज्ञ व्यक्ति थे। आपकी पत्नी का नाम श्रीमती पोखरोत्राई था। आपके श्री खेमचन्द, शातीलाल, मनीषकुमार, भगवानदास, चन्द्रकुमार, धर्मपाल, निरजनलाल एवं सुरेशकुमार पुत्र एवं एक पुत्री हैं। आप दर्शनार्थ श्री महावीरजी गये हुए थे जहाँ हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक आपका निधन हो गया।

श्री निहालचन्दजी के पुत्र श्री खेमचन्दजी

श्री निहालचन्दजी के प्रथम पुत्र है। डेरागाजी खान मे आज से 58 वर्ष पूर्व आपका जन्म हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद अपने पिता के साथ व्यवसाय मे लग गये। पाकिस्तान बनने के बाद आप सपरिवार जयपुर आ गये। आप धर्मज्ञ एवं शान्ति प्रिय व्यक्ति है। धार्मिक कार्यों एव सामाजिक व्यवस्था करने मे आपकी काफी रुचि है। पहले आप अपने सयुक्त परिवार के साथ भोजाराम निहालचन्द जनरल मर्चेन्ट्स कटला पुरोहित जी में कार्यरत थे। अब आप अपना अलग व्यवसाय करते है। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती पदमा देवी है। आप के हसकुमार, कैलाशकुमार दो पुत्र एव एक पुत्री है। घी वालो का रास्ता जौहरी बाजार जयपुर मे आप रहते है।

श्री खेमचन्दजी के पुत्र श्री हंसकुमार

श्री हंस कुमार जी उच्च शिक्षा प्राप्त कर इलाहाबाद बैंक मे कार्यरत है। आप सरल स्वभावी एवं धर्मज्ञ तथा उत्साही ब्यक्ति है। आदर्श जैन मिशन के आप कोषाध्यक्ष है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती निर्मला जैन है, आपके अनुज एक पुत्र एव एक पुत्री है। आप राजा पार्क गली न. 6 मे रहते है।

श्री कैलाश कुमार

आप श्री खेमचन्दजी के द्वितीय पुत्र है। आपके अर्पण, दर्पण दो पुत्र है। देवनगर दिल्ली मे रहते है। आपकी धर्मपत्नी कमला जैन है।



श्री शान्तिलालजी

आपका जन्म डेरागाजीखान मे हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद व्यवसाय करने लगे। जयपुर आ जाने के पश्चात् पहले आप अपने भाइयो के साथ भोजाराम निहालचन्द कटला पुरोहितजी मे कार्य करते थे। अब आप अपना निजी व्यवसाय करते है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती विमला देवी है। आपके राजू मात्र एक पुत्र एव 3 पुत्रियाँ है।

निवास—हल्दियों का रास्ता, जयपुर

श्री मनीषकुमारजी

श्री निहाल चन्दजी के तीसरे पुत्र है। कर्मठ कार्यकर्ता एव समाज सेवी व्यक्ति है। व्यवसाय मे अपने पुरुषार्थ से बहुत उन्नति की है। सामाजिक कार्यों मे आपकी अच्छी रुचि है।

आपकी धर्मपत्नी का नाम—लाजकुमारी है। आपके राजकुमार एक पुत्र एवं चार पुत्रियाँ है। निवास—435 आदर्शनगर जयपुर—4

श्री भगवानदासजी

श्री निहालचन्दजी के चतुर्थ पुत्र है। उत्साही कार्यकर्ता, समाजसेवी एवं धार्मिक क्रिया कलापो मे रुचि रखने वाले कर्मठ व्यक्ति है। आप की धर्मपत्नी का नाम श्रीमती सुमित्रा देवी है। राकेश एव विनोद मात्र दो पुत्र है।

व्यवसाय—विनोद जनरल स्टोर, वुलियन बुल्डिंग, घी वालों का रास्ता।

निवास—मकान नं० 638 आदर्शनगर में रहते है।

श्री चन्द्रकुमारजी

श्री निहालचन्दजी के पाचवे पुत्र है। आप अपना अलग व्यवसाय करते हैं एवं अलग रहते हैं।

श्री धर्मपालजी

श्री निहालचन्दजी के छठे पुत्र है। स्कूली शिक्षा के बाद आप अपनी फर्म भोजाराम निहालचन्द कटला पुरोहितजी मे कार्यरत है। आपको धर्मपत्नी का नाम निर्मला देवी है। आपके तीन पुत्रियाँ हैं।

निवास--अपने भाइयो के साथ 435 आदर्शनगर जयपुर-4 मे रहते है।

श्री निरंजनलालजी

श्री निहालचन्दजी के सातवे पुत्र हैं। शिक्षा प्राप्ति के बाद भाइयो के साथ भोजाराम निहालचन्द सस्थान मे कार्यरत हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती सन्तोष है। आपके आशु एक पुत्र है।

निवास-भाइयो के साथ।

श्री सुरेशकुमारजी

श्री निहालचन्दजी के आठवे पुत्र है। आपकी धर्मपत्नी का नाम शशी देवी है तथा दो पुत्रियाँ है। व्यवसायी एवं कर्मठ कार्यकर्ता है।

निवास एवं व्यवसाय--उपरोक्त भाइयो के साथ। श्री भोजाराम निहालचन्द कटला पुरोहितजी, जयपुर।



श्री राजारामजी



श्री राजारामजी का जन्म भोजाराम पारख के घर डेरागाजीखान मे हुआ था। बचपन से ही आप स्वाध्याय प्रिय थे। स्वाध्याय के बल पर ही आपको जैन सिद्धान्त का बहुत अच्छा ज्ञान था और जीवन पर्यन्त आपने शास्त्र सभा मे शास्त्र प्रवचन किया जिससे समाज मे शास्त्र सभा भी निरन्तर चलती रही तथा आप समाज मे सभी सहधर्मी भाइयो को स्वाध्याय के लिये निरन्तर प्रेरणा देते रहते थे तथा आप गृहस्थ जीवन मे रहते हुये सयम का भी भली भाँति पालन करते थे। मरण पर्यन्त

आपने अंग्रेजी दवाई, रात्रि भोजन, वर्क आदि के त्याग का पालन किया। जून 1970 मे त्याग पूर्वक समता से आपकी हृदय गति रुक जाने से असामयिक निधन हो गया। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती उत्तम देवी है। आपके श्री फूलचन्द, श्री पन्नालाल, श्री मोहन लाल, श्री अशोक कुमार चार पुत्र हैं।

निवास--मकान नम्बर 591 आदर्शनगर, जयपुर।

श्री राजारामजी के पुत्र

श्री फूलचन्दजी

श्री राजारामजी के प्रथम पुत्र है । आपका जन्म डेरागाजीखान मे हुआ था शिक्षा के बाद आप अपने व्यवसाय मे लग गये । कठोर परिश्रमी होने से आपने अपने व्यवसाय मे अच्छी प्रगति की । आप सरल स्वभावी एव धर्मज्ञ है । सामाजिक कार्यों में भी आप उत्साह पूर्वक भाग लेते है । बच्चो को धार्मिक शिक्षा दिलाने मे आपकी विशेष रुचि है । हर समय धार्मिक पाठशाला चलवाने एव बच्चो को पाठशाला जाने के लिए घर-घर जाकर प्रेरित करते रहते है । सामाजिक बरतन भंडार आदि की व्यवस्था आपने भली भाति कर रखी है । आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती कौशल्या देवी है । आपके अनिल, अरुण अजय पुत्र एव एक पुत्री है ।

श्री पन्नालालजी

श्री राजारामजी के द्वितीय पुत्र है । आप गम्भीर एव धार्मिक रुचि के व्यक्ति है । आप हारमोनियम के मास्टर एवं अच्छे सगीतज्ञ है, धार्मिक गीतो की रचना भी करते है और बच्चो को भी सिखाते है । आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती पदमा देवी है । आपके नरेश, मनीष, पुनीत, उपेन्द्र चार पुत्र है ।

श्री अशोक कुमारजी

श्री राजारामजी के तीसरे पुत्र है, जो अपना अलग व्यवसाय करते एवं रहते है ।

श्री मोहनलालजी

श्री राजारामजी के चतुर्थ पुत्र है । शिक्षा के बाद आप भी अपने पैतृक व्यवसाय मे लग गये । इन्हे भी सगीत विद्या मे रुचि है, गला अच्छा है । आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती जय श्री है । आपके आसीस एक पुत्र एव एक पुत्री है ।

आ। सब सयुक्त परिवार के रूप मे श्री भोजाराम पन्नालाल जनरल मर्चेन्ट्स कटला पुरोहितजी मे कार्यरत है तथा 591 आदर्शनगर मे रहते है ।



नौलखा परिवार

श्री बिहारीलालजी के श्री मूलचन्द एव श्री देवीदास दो पुत्र थे। जिनमे श्री मूलचन्दजी के पदमचन्द, न्यामतराम एव सुखानन्द तीन पुत्र थे। सुखानन्दजी का परिचय दिल्ली खण्ड मे दिया है। देवीदास के उत्तम चन्द, जोधाराम दो पुत्र थे जिनके परिवारो का परिचय नीचे दिया जा रहा है।

पदमचन्द

पदमचन्द का परिचय पहले विशिष्ट व्यक्ति परिच्छेद मे दिया जा चुका है। उनके दो पुत्र है —

1. मानकचन्द—जिनका परिचय निम्न प्रकार है।
- 2 जयकुमार—जिनका परिचय खण्ड दो (दिल्ली) मे दिया जावेगा।



श्री माणकचन्दजी

श्री माणकचन्दजी श्री पदमचन्द नौलखा के पुत्र है। आपका जन्म मुलतान मे हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद आप व्यवसाय करने लगे। व्यवसाय के प्रारम्भ के कुछ ही दिनो बाद आप अपने पिता श्री के साथ कोयटा बिलोचिस्तान, वर्तमान पाकिस्तान मे व्यवसाय हेतु चले गये। सन् 1932 मे बहुत बडे भूकम्प से जब कोयटा विध्वंस हुआ तो वहा आपके पिता श्री की मृत्यु हो गई, बाकी सारे परिवार को लेकर वापस मुलतान आ गये और वहा आकर व्यवसाय करने लगे। पाकिस्तान बनने के बाद आप जयपुर मे आकर रहने लगे। आपकी धर्मपत्नी का नाम कस्तूरी देवी तथा आपके वीरकुमार, जसपाल, किशनचन्द तीन पुत्र एव चार लड़किया है।

आपकी फर्म का नाम--नौलखा प्लास्टिक इन्डस्ट्री है।

निवास--हल्द्वी का रास्ता, जयपुर।

श्री माणकचन्दजी के पुत्र

श्री वीरकुमारजी

माणकचन्दजी के प्रथम पुत्र है। आजकल दिल्ली मे व्यवसाय करते एव रहते है। आपकी धर्मपत्नी का नाम उर्मिला देवी है। आपके तीन पुत्र एव दो पुत्रिया हैं।

श्री यशपालजी

माणकचन्दजी के द्वितीय पुत्र है। आपकी धर्मपत्नी का नाम पुष्पा जैन है। आपके पप्पी एक मात्र पुत्र है। पिता के साथ रहते एवं व्यवसाय करते है।

श्री किशनकुमारजी

माणकचन्दजी के तृतीय पुत्र है। उत्साही एवं क्रियाशील नवयुवक है। आपकी धर्मपत्नी का नाम उषा देवी है। आपके मात्र एक पुत्री है। आप अपने पिता के साथ व्यवसाय करते है।



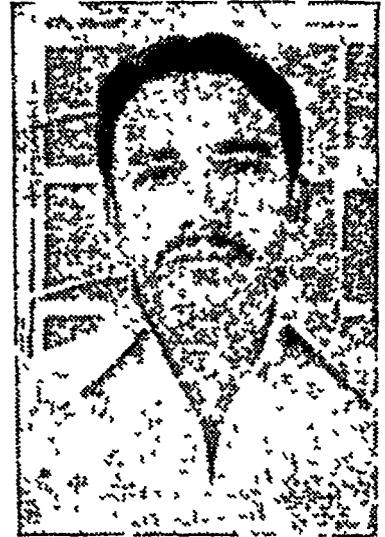
श्री न्यामतरामजी नौलखा का परिवार

श्री न्यामतराम पुत्र श्री मूलचन्द नौलखा (अध्यक्ष मुलतान दिगम्बर जैन समाज) का विवरण पहले दिया जा चुका है। आपके तीन पुत्र है।

श्री न्यामतरामजी के पुत्र

श्री प्रकाशचंदजी

श्री प्रकाशचन्द जी का जन्म दिनांक--16-11-1948 ई० को दिल्ली में हुआ। स्कूली शिक्षा प्राप्त कर आप अपने पिताजी के साथ व्यवसाय करने लग गये। आपकी धर्मपत्नी का नाम रिशमारानी है। आपके मात्र तीन पुत्रिया है।



श्री वंशीलाल जी

श्री वंशीलाल जी का जन्म जयपुर सन् 1951 में हुआ था। आपने भी माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर अपने पिताजी के साथ व्यवसाय में लग गये। आपकी पत्नी का नाम श्रीमती ईना देवी है। आपके प्रवीण पुत्र एवं रीनू एक पुत्री है।





श्री शीतलकुमारजी

श्री शीतलकुमार जी का जन्म सन् 1954 को जयपुर में हुआ। शिक्षा प्राप्त कर आप भी अपने परिवार के साथ उसी व्यवसाय में कार्यरत हो गये। आपकी धर्म पत्नी का नाम श्रीमती रेखा जैन है। आपकी एक मात्र पुत्री अनकीता है।

आप सब प्रकाश जनरल स्टोर, कटला पुरोहित जी बडी चौपड, जयपुर अपने सस्थान में कार्यरत हैं सस्थान का फोन नंबर 66149

निवास—मकान नंबर 612 दिगंबर जैन मंदिर के पास, आदर्शनगर जयपुर में है।



श्री उत्तमचन्द जी नौलखा का परिवार परिचय

श्री उत्तमचंद जी

श्री उत्तमचन्दजी के गुलाबचन्द व राजकुमार दो पुत्र हैं। आपका मुलतान में ही स्वर्गवास हो गया था।

श्री गुलाबचंद जी

श्री गुलाबचन्द जी मुलतान में जन्मे, स्कूली शिक्षा के बाद डाक्टरी (मरहम पट्टी) का कार्य करने लगे। पाकिस्तान से आने के पश्चात् जयपुर में भी आप यही कार्य कर रहे हैं। अब आपको स्वाध्याय में काफी रुचि हो गई है और आप अपने व्यवसाय से प्रायः मुक्त हो गये हैं और काफी समय तत्व चर्चा में लगाते हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम लोका देवी है, आपके वीर कुमार, चन्द्रसेन व सूरज तीन पुत्र एवं दो लडकिया हैं। पुत्र आपके ही व्यवसाय में कार्यरत हैं। सस्थान का नाम जैन वीर फार्मसी, घी वाले का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर है। निवास—मकान नम्बर 489, गली 5, राजापार्क, आदर्शनगर, जयपुर में है।

श्री गुलाबचन्द जी के पुत्र

श्री वीरकुमार जी

श्री वीरकुमार जी गुलाबचन्द जी के प्रथम पुत्र शान्तिप्रिय एवं मूक हैं। अपने व्यवसाय में निपुण व्यक्ति हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम शीला देवी है। आपके विशाल एक पुत्र एवं दो पुत्रिया हैं। अपने पैतृक व्यवसाय डाक्टरी में कार्यरत हैं। पिता के साथ रहते हैं।

श्री चंद्रसेन जी

श्री चन्द्रसेन जी गुलावचन्द जी के द्वितीय पुत्र "डाक्टर" के नाम से प्रख्यात है। उत्साही, कर्मठ कार्यकर्ता, समाज सेवी, कुशाग्र बुद्धि युवक है। धार्मिक दायों में सक्रिय योग देते हैं और अपने व्यवसाय में निपुण है। आपकी धर्मपत्नी का नाम ललिता जैन है, आपके पकज, नीरज एवं पप्पू तीन पुत्र हैं।

श्री सूरज जैन जी

श्री सूरज जैन कुशल परिश्रमी एवं उत्साही युवक है। अपने कार्यों में अच्छी ख्याति प्राप्त की है। मिलनसार व्यक्ति है। जौहरी एवं सप्लाई का कार्य करते हैं। अभी अविवाहित हैं, पिता के साथ रहते हैं।

श्री राजकुमार जी जैन

श्री राजकुमार जैन उत्तमचन्द जी नीलखा के द्वितीय पुत्र हैं। अथक परिश्रमी व्यक्ति हैं। आप अपना अलग व्यवसाय करते हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम सुदर्शना देवी है, आपके क्रान्ति व राकेश दो पुत्र एवं 2 पुत्रिया हैं। पदमावती कन्यापाठशाला के सामने, घी वालों के रास्ते में रहते हैं। क्रान्ति एक होनहार उदीयमान युवक है।



वगवाणी परिवार

श्री राजाराम जी वगवाणी जिनका परिचय पूर्व में दिया जा चुका है के दो पुत्र थे, श्री किशनचन्द जी और श्री नेमीचन्द जी ।

श्री किशनचंद जी

आप मुलतान में जनरल मर्चेन्ट्स का व्यवसाय करते थे, पाकिस्तान बनने के बाद जयपुर आकर रहने लगे । थोड़े दिन पश्चात् आपका स्वर्गवास हो गया । आपकी धर्मपत्नी का नाम मेघीबाई था । आपके महावीर प्रसाद एवं ज्ञानचन्द दो पुत्र थे ।

श्री महावीरप्रसाद जी

श्री महावीर प्रसाद जयपुर में फोटोग्राफी का कार्य करते थे । मुलतान फोटो स्टूडियो हल्दियों के रास्ते में प्रसिद्ध सस्थान था । प्रौढावस्था में आपकी मृत्यु हो गई । आपकी धर्मपत्नी का नाम रतन देवी है । आपके सुभाषचन्द्र, सुरेन्द्र जैन व राजबाबू तीन पुत्र हैं ।

श्री महावीर 'जी' के पुत्र

श्री सुभाषचंद्र जी

आप महावीर प्रसाद जी के प्रथम पुत्र हैं, वर्तमान में दिल्ली में रहते हैं । आपकी धर्मपत्नी का नाम रेखा जैन है, आपके बबलू एक लड़का है ।

श्री सुरेन्द्र जैन जी

आप महावीर प्रसाद जी के द्वितीय पुत्र हैं । आपको गायन विद्या का अच्छा शौक है । आपकी धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिला है, आपके सोनू एक पुत्र हैं । व्यवसाय रिफ्लेक्स फोटो स्टूडियो, धी वालो का रास्ता । निवास—साभर फीनी वाले के मकान में ।

श्री राजबाबू जी

आप महावीर प्रसाद जी के तृतीय पुत्र हैं । आप भी फोटोग्राफी का कार्य करते हैं । आपकी धर्मपत्नी श्रीमती आशा है, आपके दो लड़कियाँ हैं । निवास एवं व्यवसाय मुलतान फोटो स्टूडियो, हल्दियों का रास्ता ।

श्री ज्ञानचंद जी

श्री ज्ञानचन्द जी का विवरण खण्ड-2 दिल्ली में दिया जावेगा ।



श्री नेमीचंद जी

श्री नेमीचन्द जी का भी विवरण विशिष्ट व्यक्ति परिच्छेद में दिया जा चुका है । उनके कन्हैया लाल मात्र एक पुत्र थे जिनका परिचय निम्न प्रकार है ।

श्री कन्हैयालाल जी

श्री कन्हैयालाल जी पुत्र श्री नेमीचन्द जी पौत्र श्री राजराम जी प्रपौत्र श्री प्रेमचन्दजी का जन्म मुलतान मे हुआ था । आप धर्मज्ञ एवं सरल स्वभावी प्राणी थे । आप व्यवसाय करते थे, शास्त्र स्वाध्याय में आपकी अच्छी रुचि थी । पाकिस्तान बनने के बाद आप जयपुर आकर बस गये । आपकी धर्मपत्नी का नाम शीला देवी है और आपके हरीशचन्द्र, जसवन्त राय व इन्द्रकुमार तीन पुत्र हैं ।



श्री कन्हैयालाल जी के पुत्र

श्री हरीशचंद्र जी

आप श्री कन्हैयालाल जी के प्रथम पुत्र हैं । आपकी धर्मपत्नी श्रीमती उषा देवी है । विजयकुमार व नीरज दो पुत्र एवं दो पुत्रिया है । आपने कसेरा बाजार सवाई माधोपुर मे होटल खोल रखी है ।

श्री जसवंतराय जी

आप श्री कन्हैयालाल जी के द्वितीय पुत्र है । सीकर जिला म किसी सिनेमा हाल मे मैनेजर के पद पर है । आपकी धर्मपत्नी सविता देवी है । आपके 3 पुत्र एवं एक पुत्री है ।

श्री इन्द्रकुमार जी

आप श्री कन्हैयालाल जी के तृतीय पुत्र है । आप अभी अविवाहित है । पदमावती स्कूल के सामने, धी वालो के रास्ते मे रहते है ।



श्री आसानंद जी वगवाणी

श्री आसानन्द जी के पिता के नाम का पता नही चल सका । आप राजाराम जी के भाई थे । आपके कोई सन्तान नही थी । आपने श्री सिद्धराम जी के पुत्र श्री खेमचन्द जी को गोद लिया ।

श्री खेमचंद जी

आपका जन्म मुलतान मे हुआ था । आपके पिता श्री सिद्धराम जी थे । आप मुलतान मे जनरल मर्चेंट्स का व्यापार करते थे । आपकी धर्मपत्नी यशोदा देवी (जेसी बाई) है । आपके श्रीपाल मात्र एक पुत्र थे । पाकिस्तान से जयपुर आ जाने के पश्चात् थोडे दिन के बाद ही आपका स्वर्गवास हो गया ।

श्री खेमचन्द जी के पुत्र श्रीपाल जी

आपका जन्म 25 मार्च 1939 को मुलतान में श्री खेमचन्द जी के घर हुआ। वी ए तक शिक्षा प्राप्त कर श्रीपाल जी अपने पैरो पर खड़े हुए और कटला पुरोहित जी में होजरी का व्यवसाय करने लगे। जिसमें इन्होंने अच्छी प्रगति की। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिला जैन हैं और आपके पुत्र आसीस एव दो पुत्रिया हैं। सस्थान खेमचन्द श्रीपाल कटला पुरोहित जी जयपुर। निवास 7 झ 8 जवाहर नगर, जयपुर। दूरभाष नं० 852482



श्री भोलाराम जी श्री थारयामल जी वगवाणी के पुत्र थे। भोलाराम जी के रिखवदास जी, आसानन्द व रगूलाल तीन पुत्र जिनमें श्री रिखवदास के श्री मनोहर लाल, प्रेमचन्द व पवनकुमार तीन पुत्र हैं, पूरे परिवार के लोग दिल्ली रहते हैं। इसलिए उन सबका परिचय दिल्ली खण्ड में दिया गया है। केवल मनोहरलाल जी जयपुर में रहते हैं, उनके परिवार का परिचय निम्न प्रकार है।

श्री मनोहरलाल जी वगवाणी

आप श्री रिखवदास जी के पुत्र एव भोलाराम जी वगवाणी के पौत्र हैं। आपके पिता श्री रिखवदास जी का युवावस्था में ही देहावसान हो गया और आप मुलतान में अपने फर्म भोलाराम रिखवदास जैन में कार्यरत रहे। आपको प्रारम्भ से ही स्वाध्याय में अति रुचि थी तथा घण्टों स्वाध्याय एव सामायिक आदि किया करते थे। पाकिस्तान बनने के पश्चात् आप जयपुर आकर बस गये और उसी तरह स्वाध्याय आदि का क्रम बनाये रखा। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती आशीबाई का कुछ समय पश्चात् बीमारी के कारण स्वर्गवास हो गया। आपके जिवेन्द्रकुमार एक पुत्र एव दो पुत्रिया हैं।

श्री मनोहरलाल जी के पुत्र श्री जिवेन्द्र कुमार जी

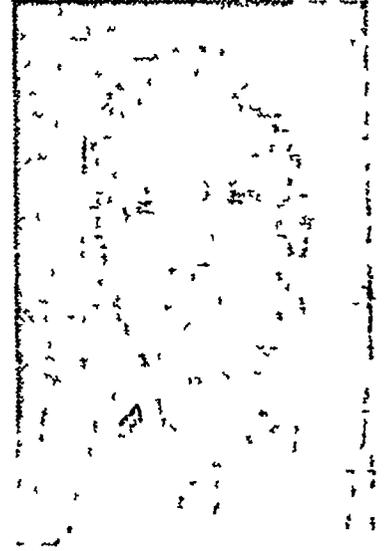
जिवेन्द्रकुमार का जन्म मुलतान में श्री मनोहरलाल जी के घर हुआ था। शिक्षा के बाद आप अपने पिता के साथ जयपुर में कार्य करने लगे। आप स्वभाव से शान्तिप्रिय व्यक्ति हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती मन्जु हैं। आपके अमित व उदित दो पुत्र एवं एक पुत्री हैं। व्यवसाय देहली जनरल स्टोर, कटला पुरोहित जी, जयपुर। निवास 573 आदर्शनगर, जयपुर में हैं।



श्री नेभराज जी के भी पिताजी के नाम का पता नहीं चल सका। आपके श्री उत्तमचन्द जी एक मात्र पुत्र थे, जो मुलतान में जनरल मर्चेन्ट्स का कार्य करते थे, उनके भी एक मात्र पुत्र श्री राजकुमार जी हैं। पाकिस्तान बनने के बाद आप जयपुर आकर बस गये और जनरल मर्चेन्ट्स का व्यवसाय करने लगे। आपकी धर्मपत्नी का नाम लवगी वाई था। थोड़े दिन पश्चात् आपका स्वर्गवास हो गया। आपकी फर्म का नाम नेभराज उत्तमचन्द था।

श्री राजकुमार जी

श्री राजकुमार जी का जन्म श्री उत्तमचन्द जी के घर मुलतान में हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद आप अपने पिता के साथ व्यवसाय करने लगे। छोटी अवस्था में ही आपके माता पिता का देहावसान हो गया। पहले कुछ समय आपने फिरोजाबाद (यू. पी.) में जाकर व्यवसाय किया। फिर जयपुर आकर व्यवसाय करने लगे हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम कान्ता देवी था जिनका भी युवावस्था में स्वर्गवास हो गया। आपके राकेश व अनिल दो पुत्र एवं दो पुत्रिया हैं।



श्री राजकुमार जी के पुत्र श्री राकेशकुमार जी

श्री राकेशकुमार भी पिता के साथ व्यवसाय करते हैं। उनकी धर्मपत्नी का नाम मन्जु है। आप अपने पिता के साथ 439 आदर्शनगर में रहते हैं। अनिल अभी अविवाहित हैं एवं शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।



ननगांशी परिवार

श्री ताराचन्द जी श्री आतूराम जी ननगाणी के पुत्र थे। ताराचन्द जी के श्री किशोरीलाल व श्री श्यामलाल दो पुत्र हैं। आतूराम तथा उनके पूर्ण परिवार का परिचय दिल्ली खण्ड में दिया गया है। किशोरीलाल भी दिल्ली रहते हैं। इनका परिचय भी दिल्ली खण्ड में है।

श्री श्यामलाल जी

श्रीमान श्यामलाल जी ननगाणी सुभुत्र श्री ताराचन्द जी ननगाणी के घर मुलतान में हुआ था। आपका मुलतान में जनरल मर्चेन्ट का व्यवसाय था। पाकिस्तान छोड़ने के पश्चात् कुछ समय तक दिल्ली रहे, उसके बाद जयपुर आकर बस गये, यहाँ पर भी आपने जनरल मर्चेन्ट का व्यवसाय किया। प्रौढावस्था में ही गभीर रोग के कारण निधन हो गया। आपकी धर्मपत्नी रतन देवी हैं तथा आपके तीन पुत्र सुरेन्द्र कुमार, विजयकुमार व राजेश जैन एवं तीन पुत्रिया हैं।



श्री श्यामलाल जी के पुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार जी

श्री सुरेन्द्रकुमार का जन्म दिनांक 29 अगस्त 1946 डैरागाजीखान में हुआ। आपने एम ए, एल एल बी, एम बी उच्च शिक्षा प्राप्त कर टेक्सटाइल मिल में कार्यरत हुए। आपकी धर्मपत्नी का नाम मधुवाला जैन हैं तथा सोनल पुत्र एवं दो पुत्रिया हैं।

श्री विजय कुमार जी

श्री विजयकुमार का जन्म 1954 में श्री श्यामलाल जी के घर जयपुर में हुआ था। आप शिक्षा प्राप्त कर निजी व्यवसाय में लग गये। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती विजयश्री हैं। राजेश अभी अविवाहित हैं एवं शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आप सब का निवास स्थान मकान न० 590, गली नम्बर 3, आदर्शनगर में है।



दुग्गड़ परिवार

श्री छोगमल जी दुग्गड़

श्री छोगमल जी दुग्गड़ श्री नारायणदास दुग्गड़ के पुत्र है। आप दयालदास दुग्गड़ के पौत्र है। आपका जन्म मुलतान मे हुआ था।

पाकिस्तान बनने के पश्चात् आप जयपुर आकर रहने लगे। आपके सुमति प्रकाश, महेन्द्र कुमार, पवन कुमार, शानु कुमार, व खुशहाल चन्द पाच पुत्र एव एक पुत्री है, जो अपने अपने व्यवसाय को बहुत कुशलता से कर रहे है। आपकी धर्मपत्नी का नाम आशीवाई है।

सस्थान—पिकी जनरल स्टोर, पवन जनरल स्टोर व मुलतान जैन सेल्स एजेन्सी।
निवास—तीसरा चौराहा, हल्दियो का रास्ता, जयपुर।

श्री छोगमल जी के पुत्र

श्री सुमति प्रकाश जी



श्री सुमति प्रकाश जी श्री छोगमल जी दुग्गड़ के सुपुत्र है। आपका जन्म आज से 51 वर्ष पूर्व मुलतान मे हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद आप व्यवसाय मे लग गये। पाकिस्तान बनने के बाद आप जयपुर मे मुलतान जैन जनरल स्टोर, 124 बापू बाजार मे जनरल मर्चेन्ट्स का व्यवसाय करने लगे। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती कान्ता देवी है, आपके सुनेल जैन मात्र एक पुत्र है। निवास—437 आदर्श नगर, जयपुर है।

श्री महेन्द्र कुमार जी

श्री छोगमल के द्वितीय पुत्र है। स्कूली शिक्षा के बाद आप व्यवसाय करने लगे। कठिन परिश्रम से आपने अपने व्यवसाय में बहुत उन्नति की। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी है, आपके राजकुमार एक पुत्र है।

निवास—घोषियो का चौक, रामगंज बाजार, जयपुर।

श्री पवन कुमार जी

श्री छोगमल के तीसरे पुत्र है, व्यवसाय करते है। आपकी धर्मपत्नी का नाम शिमला जैन है, आपके दो पुत्र है। निवास—घोषियो का चौक, रामगंज बाजार, जयपुर।

श्री शानुकुमार जी

श्री छोगमल जी के चतुर्थ पुत्र है, आप भी व्यवसाय करते हैं। आपकी धर्मपत्नी सरोज देवी है, आपके मोनू व रवि दा पुत्र ह।

निवास—गोधो का चौक, हल्दियों का रास्ता, जयपुर।

श्री खुशहाल चन्द जी

श्री छोगमल जी के पचम पुत्र है, आप भी व्यवसाय करते हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती स्नेहलता है, आपके तीन लडकिया है।

निवास—घोषियों का चौक, रामगज बाजार, जयपुर।



तातेड़ परिवार

श्री जिनवर लालजी

श्री डालचन्द जी के श्री जिनवर लाल मोती लाल दो पुत्र थे जो पहले नवगावों अलवर स्टेट में रहते थे उनकी बहिन मुलतान में व्याही गयी थी। इस कारण दोनों भाई भी मुलतान में आकर रहने लगे। जिनवर लाल की शादी डेरागाजीखान में गिरधारी लाल की पुत्री के साथ हो गई और कुछ समय पश्चात् आप दोनों भाई हरनाबाद (भावलपुर स्टेट वर्तमान पाकिस्तान) में जाकर व्यवसाय करने लगे। पाकिस्तान बनने के बाद वे जयपुर आ गये और श्री जिनवर लाल ने अपना व्यवसाय गणी जनरल स्टोर कटला पुरोहितजी में प्रारम्भ कर दिया जिसमें इन्होंने अच्छी उन्नति की। आपकी धर्म पत्नी का नाम श्रीमती देवी है और आपके सुरेशकुमार, तेजकुमार, अरुणकुमार तीन पुत्र हैं जो आपके साथ कार्यरत हैं। और चार पुत्रिया हैं।

सस्थान—शशि जनरल स्टोर। निवास—रामगज बाजार।

श्री सुरेशकुमारजी

आप श्री जिनवरलालजी के प्रथम पुत्र हैं। आपकी धर्म पत्नी इन्द्रा जैन हैं। आपके मात्र दो पुत्र हैं। आप अपने पिता के साथ रहते हैं एवं व्यवसाय करते हैं।



श्री मोती लाल जी

पाकिस्तान बनने के पश्चात् आप भी जयपुर आ गये और अपना अलग व्यवसाय करने लगे। आपका विवाह भगवती देवी सुपुत्री गिरधारीलाल पुत्र श्री त्रिलोकीचन्द के साथ हो गया। क्षय रोग हो जाने के कारण प्रोधावस्था में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके सजय एक मात्र पुत्र एवं दो पुत्रिया हैं।



अन्य परिवार

श्री बशीलालजी

बशीलालजी मुखराज जी के पुत्र पहले जम्मू (कश्मीर) में रहते थे। आपका विवाह श्रीमती प्रकाश देवी (सुपुत्री श्री माधोदासजी) के साथ हुआ। थोड़े समय पश्चात् आप जयपुर आकर रहने लगे। आपका रत्नो का व्यवसाय है। अधिकतर विदेशों को निर्यात करते हैं इसलिए आप अधिक समय विदेशों में रहते हैं। आपके पुत्र अनिल एवं सुनील हैं।



श्री राजीव जैन

आपके पिता का नाम चिमन लाल है। आप जम्मू में रहते थे। बाल्यावस्था में ही आपकी माता का देहावसान हो गया और आप अपने नाना श्री माधोदास जी के पास रहने लगे। शिक्षा के पश्चात् आप भी अपने मौसा श्री बशीलालजी के साथ रत्नो का व्यवसाय करते हैं।



श्री मोहन लाल जी बाफना किशनगढ

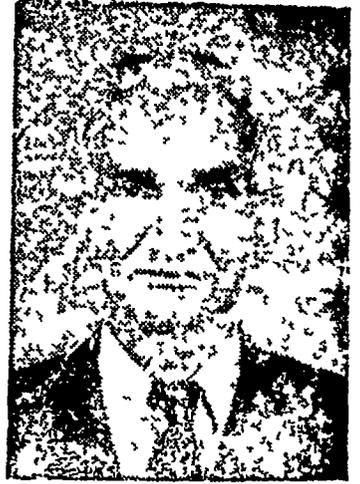
श्री मोहन लाल जी बाफना सुपुत्र श्री गनपति सिंघ
पौत्र श्री मनोहरमल बाफना का जन्म किशनगढ (अजमेर,
मे हुआ। शिक्षा प्राप्त कर आप भारतीय पश्चिमी रेलवे
मे एकाउन्टेन्ट के पद पर कार्यरत है। आपका विवाह
श्रीमती गीलादेवी पुत्री श्री प्रेमचन्दजी सिंघवी के साथ
मुलतान मे हुआ था। आपके नरेश कुमार एव राकेश
कुमार दो पुत्र है।



श्री नथमलजी सोगानी

श्री नथमलजी सोगानी सुपुत्र सेठ श्री कालूरामजी
का जन्म 6 मार्च सन् 1919 को जयपुर मे हुआ। आपने
बी ए तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भारत सरकार
(महालेखापाल राजस्थान) के कार्यालय सीनियर
आडिटर के पद पर कार्यरत रहे।

आपका विवाह श्रीमती फूल देवी सुत्री श्री
खेमचन्दजी जैन के साथ सन् 1948 मे हुआ था। आपके
एक पुत्र अशोक कुमार एव चार पुत्रिया हैं।



निवास स्थान-वी० 5, ध्रुव मार्ग, तिलक नगर, जयपुर।





श्री मुलतान दिगम्बर जैन समाज
दिल्ली

वगवाणी परिवार

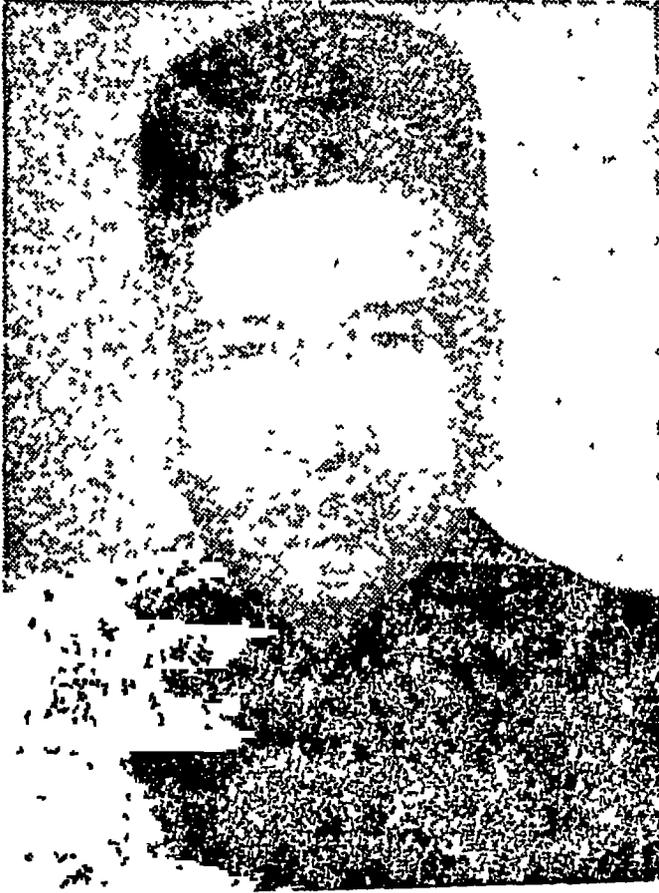
मुलतान मे वगवाणी परिवार मुख्यतया श्री भोलाराम सुपुत्र श्री थारयामलजी, श्री राजारामजी, एव नेभराज के थे जिनके पूर्वजो एव उनके आपसी सम्बन्ध का पता नहीं चल सका । जिनके परिवारो वा अलग-अलग परिचय दिया गया है ।

श्री भोलारामजी का परिवार

भोलारामजी का परिचय पूर्व विशिष्ट व्यक्ति परिचय मे दिया जा चुका है । आपके तीन पुत्र थे, श्री रिषभदास, आशानन्द एव रगूलाल ।

(1) रिषभदास का 33 वर्ष की युवावस्था मे ही स्वर्गवास हो गया । उनके श्री मनोहरलाल, प्रेमचन्द एव पवनकुमार तीन पुत्र है । जिनके परिवार का आगे परिचय दिया जा रहा है ।

(2) श्री आसानन्दजी



श्री आसानन्द जी का जन्म 27 जनवरी 1898 ई० मे मुलतान मे हुआ था । आप स्कूली शिक्षा प्राप्त कर 13 वर्ष की उम्र मे ही पिता के साथ व्यवसाय मे लग गये । थोडे समय पश्चात् पिता का व्यवसाय करने का त्याग कर देने एव दडे भाई श्री रिखवदासजी के स्वर्गवास हो जाने के कारण व्यवसाय का बडा बोझ आप पर आ जाने से आपने उसे बडी कुशलता से इतना बढ़ाया कि पजाब मे आपकी फर्म का नाम गिना जाने लगा ।

जहा आप व्यापार मे कुशल थे । वहा धार्मिक कार्यों मे भी रुचि आपकी कम न थी । 1930 मे मुलतान मन्दिर के जीर्णोद्धार मे आपका बहुत बडा योगदान रहा है । 1937 मे मुलतान दि० जैन समाज के अध्यक्ष मनोनीत हुए जो आजन्म रहे । आपकी तीर्थ

यात्राओ मे भी अच्छी रुचि थी । आप कई बार यात्रा करने भी गये और एक बार बहुत बडे तीर्थ यात्रा पर जा रहे सघ के संघपति भी बने ।

सन् 1947 मे पाकिस्तान बनने के पश्चात् मुल्तान से मूर्तिया एव शास्त्र भण्डार आदि को भारत ले जाने मे आपने बहुत योग दिया और अपने परिवार सहित दिल्ली आ गये, जहा आपने अपनी होजरी का व्यवसाय प्रारम्भ किया और उममे अच्छी उन्नति की ।

आदर्शनगर जयपुर मे बन रहे श्री दि० जैन मन्दिर निर्माण कमेटी के 1956 ई. मे सचालक मनोनीत हुए और उस कार्य को आपने बहुत योग्यता से पूरा किया और उसके लिए जयपुर खुद गये और वास्तुकला विशेषज्ञ पल्टु सिंह जैन को साथ लेकर मन्दिर की बहुत बडी छत आदि का कार्य सम्पन्न कराया । 27 मई, 1962 को दि० जैन मन्दिर आदर्शनगर जयपुर की वेदी प्रतिष्ठा के समय आपका बहुत योगदान रहा ।

आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती मुकुन्दीबाई था जिनका बीमारी के कारण असमय मे ही स्वर्गवास हो गया । आपके श्री वीर कुमार एक पुत्र तथा एक पुत्री है । आप धर्म ध्यान करते-करते इस नश्वर शरीर को छोड स्वर्ग सिधार गये ।

सस्थान — भोलाराम रिखबदास जैन, होजरी मर्चेन्ट,
सदर बाजार, दिल्ली ।

श्री वीर कुमार

श्री वीर कुमार जी का जन्म 8 फरवरी 1937 को श्री आसानन्द के घर मुल्तान मे हुआ था । मुल्तान एव दिल्ली मे स्कूली शिक्षा के बाद हिन्दु कालेज दिल्ली में 1959 में स्नातक की शिक्षा प्राप्त की तथा 1966 मे आपने अपनी फर्म भोलाराम रिखबदास का कार्य भार सम्भाल लिया । उसमे बहुत उन्नति की । नवम्बर 1972 मे आप मुल्तान जैन परिषद के अध्यक्ष मनोनीत हुए । आप भी शान्तिप्रिय, गम्भीर एव मिलनसार व्यक्ति है । आपकी धर्मपत्नी का नाम कुसुम जैन है । आपके पकज, प्रणय एव प्रशान्त तीन पुत्र है ।



सम्यान — भोलाराम रिखबदास जैन, सदर बाजार, दिल्ली ।

फोन • 515313

निवास — ए-2/1 सफदरगज डवलपमेन्ट एरिया, नई दिल्ली-16

फोन : 665353

(3) श्री रंगूलाल जी

सामाजिक कार्यकर्ता एव अध्यात्म-प्रेमी का जन्म मन् 1901 में 8 जनवरी को श्री भोलाराम जी के घर मुलतान में हुआ था । बाल्यावस्था में ही आपको व्यवसाय का भार सौंप कर आपके पिता व्यवसाय से विरक्त होकर उदासीन वृत्ति से अध्ययन आदि में लग गये । आपने अपने दो भाइयों के साथ कठिन परिश्रम से अपने व्यवसाय में बहुत उन्नति की और आपकी फर्म का नाम सारे पंजाब में प्रसिद्ध हो गया । पाकिस्तान बनने के पश्चात् आप दिल्ली आये और अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया और थोड़े ही समय में सदर बाजार के प्रमुख व्यापारियों में गिने जाने लगे और समाज के बड़े धनिक परिवारों में आपकी गिनती होने लगी । प्रारम्भ में ही आपको धर्म में अच्छी रुचि थी ।



आत्म कल्याण हेतु वस्तु स्वरूप समझने के लिए अब स्वाध्याय में आपकी विशेष रुचि है । इस हेतु आप कई बार सोनगढ़ भी गये और वहाँ पर अपने रहने के लिए मकान भी बनवाया ताकि समय समय पर वहाँ जाकर सत् पुरुष श्री कानजी स्वामी आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ ले सकें । आपने आदर्शनगर मन्दिर में भी महावीर कीर्ति स्तम्भ बनाने हेतु 25,000/- रु प्रदान किये हैं ।

आपके मन में परोपकार की भी तीव्र भावना है जिससे आप दिल्ली आदि में विधवाओं, अनाथों एवं दुखियों को हमेशा गुप्तदान देते रहे हैं ।

इसी भावना से ओत-प्रोत होकर आपने जयपुर में मुलतान दि० जैन समाज के कुछ महानुभावों की प्रेरणा से महावीर जीव कल्याण समिति की स्थापना कराई और उसमें परोपकार हेतु सर्वप्रथम बहुत बड़ा आर्थिक योगदान दिया ।

इसी प्रकार मसूरी, देहरादून में भी आपने एक आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय की स्थापना कराई । इसी प्रकार अनेकानेक परोपकार के कार्यों में भी अच्छी रुचि रही है ।

आपका विवाह श्रीमती कस्तूरी देवी के साथ हुआ था जिनकी युवावस्था में ही मृत्यु हो गई । उनमें से श्री जयकुमार जी एकमात्र पुत्र हैं । उसके बाद आपकी दूसरी शादी हुई । दूसरी पत्नी का नाम मोहनी देवी है जिनसे श्री अशोक कुमार, सुरेश कुमार, रमेश कुमार एवं अनिल कुमार चार पुत्र एवं चार पुत्रिया हैं ।

संस्थान — भोलाराम रंगूलाल जैन, सदर बाजार, दिल्ली

निवास — 4710 डिण्टीगज, दिल्ली । दूरभाष 512621

श्री रंगूलालजी के पुत्र

1 जयकुमार,

श्री जयकुमार जी का जन्म सन् 1925 को श्री रंगूलालजी वगवाणी के घर मुल्तान में हुआ था । मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर आप अपने भोलाराम रिखबदास जैन संस्थान में पिता के साथ कार्य करने लगे । पाकिस्तान बनने के पश्चात् दिल्ली आकर अपने पिताजी के साथ कार्य करते रहे और उसमें बहुत प्रगति की ।

थोड़े समय पूर्व आपने सयुक्त परिवार से अलग कागज का व्यवसाय कर लिया । आपकी धर्मपत्नी का नाम निर्मला कुमारी है । आपके राजीव कुमार जैन एक पुत्र एवं पाँच पुत्रिया हैं ।



संस्थान — 1 जैसन इन्टरनेशनल, 18 मैलाराम मार्केट
चावडी बाजार, दिल्ली-6, फोन 517274

2. भोलाराम रंगूलाल जैन, 4714 डिण्टीगज, दिल्ली

3. भोलाराम रंगूलाल जैन, 7 मिर्ची गली,
बम्बई-2, फोन . 324947

निवास — C-4/134 सफदर गज, डवलपमेंट, न्यू दिल्ली
फोन न० 668834

जयकुमार के पुत्र

राजीव जैन



आपका जन्म 27 वर्ष पूर्व जयकुमार जी वगवणी के घर दिल्ली में हुआ। एम बी ए. की उच्च शिक्षा प्राप्त कर आप अपने पिता के साथ व्यवसाय करने लगे और उसमें बहुत उन्नति की। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती सगीता रानी जैन है। आप अपने पिता श्री जयकुमार जी के साथ सभी फर्मों का कुशलता से संचालन कर रहे हैं तथा पिता के साथ रहते हैं।

श्री रंगूलालजी के पुत्र

श्री अशोककुमार जैन

आपका जन्म श्री रंगूलाल जी के घर मुलतान में 38 वर्ष पूर्व हुआ था। उच्च शिक्षा प्राप्त कर आप अपने पिता के साथ सस्थान श्री भोलाराम रंगूलाल जैन में कार्य करने लगे। व्यवसाय का अच्छा अनुभव है। आपकी धर्मपत्नी का नाम आशा जैन है तथा आपके तीन पुत्रिया हैं। आपके पिता श्री रंगूलाल जी ने अब अपने व्यवसाय से निवृत्ति ले ली है। अब आप उस सस्थान के एक मात्र स्वामी के रूप में कार्य कर रहे हैं।

सस्थान — भोलाराम रंगूलाल जैन, सदर बाजार, दिल्ली

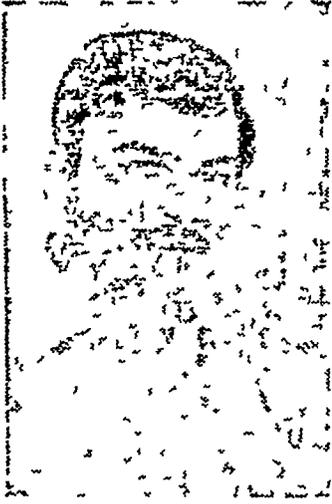
निवास — 4710 डिप्टीगज, दिल्ली-6

श्री सुरेश कुमार जैन

उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने के लिए कई वर्ष पहले अमेरिका चले गये वहाँ आपरेशन रिसर्च में डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। आजकल वहाँ विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं। अमेरिका में पढ़ने के साथ अनुसंधान में संलग्न हैं और बड़ी-बड़ी विज्ञान की सभाओं में भाग लेते हैं। योगासन व सगीत में रुचि है।



निवास स्थान — 1442 साऊथ मेन स्ट्रीट, केसीन, विस्कॉन्सिन 53403, अमेरिका।



श्री राकेश कुमार जैन

भारतवर्ष में दिल्ली विश्वविद्यालय से गणित में एम ए की उपाधि प्राप्त की। फिर अमेरिका से आपरेशन रिसर्च में एम ए की उपाधि ली। कई वर्षों से केनेडा में सफल वैज्ञानिक के रूप में विश्व की सबसे महान अनुसंधान कंपनी में मैनेजर है और महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। पत्नी अलका आर्टिस्ट है और केनेडा में पढ़ रही है। निवास स्थान है 625 हए मिल्टन, अपार्टमेंट 1002, मॉन्ट्रियल (पी क्यू) एच 2 एक्स। डब्ल्यू 7 केनेडा।

श्री अनिल कुमार जैन

आई. आई. टी कानपुर से इन्जीनियरिंग की उपाधि प्राप्त की और अमेरिका उच्च शिक्षा के लिये चले गये। सियाटल में वाशिंगटन विश्वविद्यालय से एम एस में मेकेनिकल इन्जीनियरिंग की उपाधि ली और आजकल में फ्रांसिसो केलिफोर्निया बड़ी कंपनी में काम कर रहे हैं। अभी अविवाहित हैं। निवास स्थान है 3081 नार्थ में स्ट्रीट, अपार्टमेंट 10, बालनट क्रोक, केलिफोर्निया, अमेरिका।

श्री रिषभदास जी

श्री रिषभदास जी के विषय में ऊपर हम बता आये हैं। उनके तीन पुत्र एवं एक पुत्री हैं। श्री मनोहर लाल का वर्णन खण्ड/जयपुर में दिया गया है। दूसरे पुत्र श्री प्रेमचन्द और तीसरे श्री पवन कुमार हैं।

श्री प्रेमचन्द जी बगवाणी

आपका जन्म श्री रिखवदास जी सुपुत्र श्री भोलाराम जी बगवाणी के घर मुलतान में हुआ था। आप अच्छे व्यवसायी एवं धर्मनिष्ठ व्यक्ति हैं। शान्त स्वभावी अपने व्यवसाय में निपुण मुलतान की प्रसिद्ध व्यवसायिक फर्म भोलाराम रिखवदास जैन मुलतान के भागीदार थे। दिल्ली में भी आप इसी फर्म के काफी दिनों तक भागीदार रहकर अच्छा नाम कमाया और फिर उसे अलग होकर अपना निजी होजरी का व्यवसाय प्रारम्भ किया जिसमें अच्छी उन्नति की।

आपका आदर्शनगर दिगम्बर जैन मन्दिर के साथ काफी सहयोग रहा है। आपकी धर्मपत्नी का नाम भगवानी देवी है। आपके कोई पुत्र नहीं, मात्र 4 पुत्रिया हैं। आपकी तरह आपकी



पत्नी भी धर्मात्मा एवं परोपकारी है । आपने उपकार की दृष्टि से महावीर कल्याण केन्द्र जयपुर एवं महावीर जीव कल्याण समिति जयपुर में अच्छा आर्थिक सहयोग दिया है ।

संस्थान — प्रेम ट्रेडिंग कम्पनी, गली प्रेस वाली,
सदर बाजार, दिल्ली

निवास — 5337 सदर थाना रोड, दिल्ली-6



श्री पवन कुमार जी

आपका जन्म 52 वर्ष पूर्व श्री रिखवदास जी के घर मुल्तान में हुआ था । शिक्षा प्राप्त कर मुल्तान में ही आप अपने संयुक्त परिवार के साथ व्यवसाय में लग गये । पाकिस्तान बनने के बाद आप भी दिल्ली आकर रहने लगे और अपने परिवार के साथ फर्म भोलाराम रिखवदास में कार्यरत रहे । उसके बाद आपने भी अपना अलग व्यवसाय प्रारम्भ कर दिया । आपने दि० जैन मन्दिर आदर्शनगर के मन्दिर में अच्छा आर्थिक योग दिया । स्वभाव से आप शान्तिप्रिय हैं । आपकी धर्मपत्नी का नाम शकुन्तला देवी है । आपके शशि कुमार एक पुत्र एवं एक पुत्री हैं ।

श्री शशि कुमार ने भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर आपके साथ व्यवसाय में लग गये । वे 31 वर्ष के हैं । उनकी धर्मपत्नी का नाम रेखा जैन है । इनके ऋषि जैन एक मात्र पुत्र हैं जो पिताजी के साथ रहते हैं ।

संस्थान — रिखवदास एण्ड संस, सदर बाजार, दिल्ली । फोन—511120

निवास :—2105, देशबन्धु गुप्ता रोड, करोल बाग, नई दिल्ली । फोन—569293



सिंगवी परिवार

श्री बिहारी लाल जी सिंगवी परिवार

श्री सानूरामजी भी श्री लुणिन्दा मल के वंशज हैं। सानूराम जी के पुत्र श्री बिहारी लालजी का जन्म डेरागाजीखान में हुआ था। बाद में आप मुलतान में आकर रहने लगे, आप धर्मज्ञ एवं सिद्धान्त के पक्के थे। आपने धर्म के विषय में परिस्थितियों से कभी समझौता नहीं किया, पूर्व परम्परा के अनुसार अटिग रहे और दूसरों को शुद्ध आम्नाय पर चलने के लिये प्रेरित करते रहे।

आप सानूराम बिहारी लाल के नाम से काले मण्टी मुलतान में व्यवसाय करते थे। आपके एक मात्र पुत्र श्री घनश्याम दास थे। जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

घनश्यामदास जी सिंगवी

आपका जन्म मुलतान नगर में बिहारी लाल जी के घर हुआ था। बचपन आपका साधारण स्थिति में व्यतीत हुआ पर जीवन के प्रति आपके उत्साह एवं उमंग ने आपको आगे बढ़ने के लिये प्रेरणा प्रदान की। युवावस्था में प्रथम चरण में आपने लुधियाना में होजरी निर्माण के सम्बन्ध में प्रयोगात्मक अनुभव प्राप्त किया और मुलतान आकर एक इन्द्रा होजरी मिल के नाम से उद्योग स्थापित किया जो कुछ ही समय में पंजाब में अच्छे व जाने माने प्रसिद्ध उद्योगों की गिनती में गिना जाने लगा। बुद्धि की तीक्ष्णता एवं दूरदर्शिता, से आपने व्यवसाय तथा समाज में अच्छी सफलता एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की। यही कारण था कि समाज का साधारण व्यक्ति भी आपसे परामर्श लेता था। भारत विभाजन के बाद आप कुछ समय के लिये जयपुर में आकर उपरोक्त उद्योग लगाया। आदर्श नगर में मन्दिर निर्माण की बात आयी तो आपने श्री कवरभान जी आदि के साथ योग देकर इसके निर्माण में काफी रुचि ली। उस समय समाज के कोषाध्यक्ष के नाते आपने मन्दिर निर्माण के लिये धन एकत्रित करने में भी पूर्ण योगदान दिया। मन्दिर निर्माण के समय श्री आसानन्दजी वगवाणी को जब मन्दिर निर्माण समिति का अध्यक्ष



बनाया गया तब दिल्ली समाज की अभिरुचि भी इस मन्दिर निर्माण के कार्य हेतु उत्पन्न करने में आपका प्रमुख हाथ रहा। आपने सन् 1958 में अपना व्यवसाय दिल्ली में स्थानान्तरण कर लेने पर भी मन्दिर निर्माण में आपकी रुचि कम नहीं हुई और आप उसी तरह से पूर्ण सहयोग देकर जीवनपर्यन्त अपने सहयोगियों के साथ कार्य करते रहे। आपका स्वर्गवास असामयिक हो गया। आपके पीछे आपका परिवार भी धार्मिकता से जीवनयापन कर रहा है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती विशनी देवी ने महावीर कीर्तिस्तम्भ निर्माण में अच्छा आर्थिक योगदान दिया है। आपके सुपुत्र इन्द्रकुमार एवं वीर कुमार भी आपकी तरह उत्साही एवं बुद्धिजीवी हैं। आपके द्वारा स्थापित उद्योगों में बराबर उन्नति कर रहे हैं। आपकी दो पुत्रियाँ भी अच्छी सुशिक्षित एवं प्रतिभाशाली हैं।

श्री घनश्यामदासजी के पुत्र

(1) श्री इन्द्र कुमार

श्री इन्द्र कुमार घनश्याम दास जी के बड़े पुत्र हैं। आप अपने पिता की तरह बुद्धिमान एवं होनहार युवक हैं। आपने इन्द्रा होजरी इन्डस्ट्रीज को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया और उसमें अच्छा धनोपार्जन कर समाज के सम्पन्न परिवारों में गिने जाने लगे। धर्म में भी आपकी अच्छी अभिरुचि है। आपने महावीर कीर्तिस्तम्भ बनवाने एवं उसकी प्रतिष्ठा कराने में समाज को अच्छा आर्थिक योगदान दिया है। आपकी धर्मपत्नी का नाम रेखा जैन है। आपके एक पुत्र एवं दो पुत्रियाँ हैं। व्यवसाय—इन्द्रा होजरी इन्डस्ट्रीज बस्ती हरफूल सिंह, सदर थाना रोड, दिल्ली।

(2) श्री वीर कुमार

श्री वीर कुमार, श्री घनश्याम दास जी के द्वितीय पुत्र हैं। आप भी अपने भाई की तरह सहनशील, बुद्धिजीवी एवं उत्साही युवक हैं। आदर्शनगर मन्दिर में आपकी अच्छी अभिरुचि रही है। महावीर कीर्तिस्तम्भ के निर्माण एवं प्रतिष्ठा में आपने प्रमुख भाग लिया और अच्छा आर्थिक सहयोग दिलाया।

आपकी धर्मपत्नी का नाम—मन्जु जैन है। आपके एक पुत्र एवं एक पुत्री हैं।

व्यवसाय—वी. के. इन्द्रा होजरी इन्डस्ट्रीज,
बिरला मिल के सामने, सब्जी
मण्डी घण्टाघर, दिल्ली।
फोन · 566254



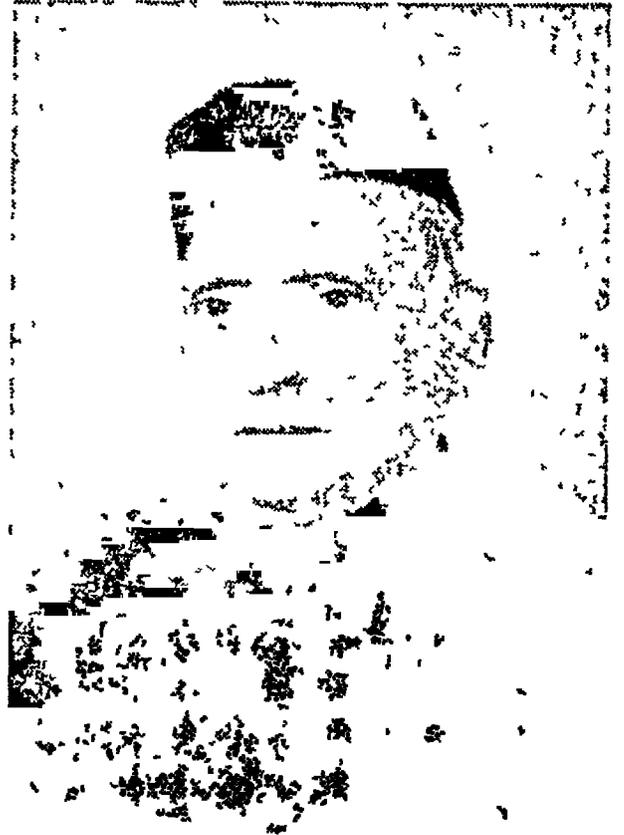
श्री छोगमलजी सिंगवी का परिवार

श्री छोगमलजी भी श्री लुणिन्दामलजी के वंशजों में से हैं। लुणिन्दामलजी के पुत्र ऋषिराम और उनके पुत्र घनश्यामदास तथा उनके छोमल हुए। इन सबका परिचय विशिष्ट व्यक्ति परिचय परिशिष्ट में आ चुका है।

छोगमल के श्री गुमानीचन्द एव बुद्धसेन दो पुत्र हैं। जिनका परिचय हम यहाँ दे रहे हैं।

श्री गुमानीचंदजी सिंगवी

श्री गुमानीचन्दजी का जन्म 70 वर्ष पूर्व श्री छोगमलजी पुत्र श्री घनश्यामदास सिंगवी के घर मुल्तान में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् आप पिता के साथ व्यवसाय में कार्यरत हो गये। आप भी अपने पूर्वजों की तरह धर्मात्मा एव समाजसेवी व्यक्ति हैं। पाकिस्तान बनने पर पहले आप जोधपुर में आकर रहे। कुछ समय बाद आप दिल्ली में आ गये और यहाँ व्यवसाय शुरू कर दिया। जयपुर-स्थित आदर्शनगर दिगम्बर जैन मन्दिर के निर्माण कार्य में आपकी अत्यधिक अभिरुचि रही। इस मन्दिर के निर्माणार्थ जयपुर समाज के सदस्य जब-जब दिल्ली आये आपने स्वयं अच्छा आर्थिक सहयोग दिया और मुल्तान दिगम्बर जैन समाज दिल्ली से हर प्रकार का आर्थिक सहयोग दिलाने में हमेशा तत्पर रहे तथा आदर्शनगर मन्दिर में शिखरों की कमी को पूरा करने के लिये तीन शिखरों में से एक शिखर बनवाने की स्वीकृति देकर मन्दिर की बहुत बड़ी कमी को पूरा करने का वचन दिया है।



आप दिल्ली मुल्तान दिगम्बर जैन समाज के एकाधिकार प्राण हैं। जो आप द्वारा निर्देशित की जाने वाली सर्व गतिविधियों को समाज पूर्ण रूप से स्वीकार करता है। इसके अतिरिक्त आप सामाजिक गतिविधियों में भी पूर्ण सहयोग देते रहते हैं। आपका शिक्षा के क्षेत्र में सस्थाओं को सहयोग करने में विशेष हाथ रहता है। आप दीन दुखियों व असहायों की भी यथाशक्ति सहायता करने में कृत सकल्प रहते हैं। समाज के किसी भी

व्यक्ति को विपत्ति ग्रस्त जानकर तुरन्त उसके निराकरणार्थ वहां पहुंच कर दुःख दूर करने में तत्पर रहते हैं। आपने अपने व्यवसाय में भी बहुत उन्नति की है और अपने परिवार में संगठन एवं व्यवस्था बनाये रखने में आप पूर्ण कुशल हैं। इसका यह परिणाम है कि आपकी छत्रछाया में आपका परिवार संगठित रूप में रह रहा है और अच्छी उन्नति कर रहा है। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती शकलीबाई है और आपके देवकुमार, मनमोहन, चम्पतराय, उग्रसेन एवं विनोदकुमार पांच पुत्र एवं दो पुत्रिया हैं।

निवास—सिगवी सदन-35 साउथ बस्ती हरफूलसिंह, सदर थाना रोड, दिल्ली—6

व्यवसाय—डी० के० जैन सूत गोला फैक्ट्री,

21—एन बस्ती हरफूलसिंह, सदर थाना रोड, दिल्ली—6

ग्राम—लीसोना, कार्यालय का फोन नं०—529548,—511934

घर का फोन नं०—529548 : 513989

श्री गुमानीचन्दजी के पुत्र

देवकुमार

आप गुमानीचन्दजी के बड़े पुत्र हैं। आपका पिताजी के साथ व्यवसाय के निर्माण में बहुत योगदान रहा है। आप कर्मठ कार्यकर्ता हैं और बुद्धिजीवी हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती प्रकाश देवी है और आपके अनिलकुमार और संजय दो पुत्र हैं। अनिलकुमार की पत्नी का नाम रीनाकुमारी है। आपका व्यवसाय एवं निवास अपने संयुक्त परिवार के साथ है।

मनमोहन

आप श्री गुमानीचन्दजी के द्वितीय पुत्र हैं। आपकी धार्मिक कार्यों में अच्छी अभिरुचि है। दिल्ली में समय-समय पर आप धार्मिक गतिविधियों का आयोजन करने एवं उनका प्रबन्ध करने में तत्पर रहते हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम ब्रिजेश है। आपके एक पुत्री है। आप भी अपने पिता एवं संयुक्त परिवार के साथ कार्यरत हैं और अपने संयुक्त परिवार के साथ रहते हैं।

चम्पतकुमार

आप श्री गुमानीचन्दजी के तृतीय पुत्र हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम कुसुम जैन है। आपके मात्र तीन पुत्रिया हैं।

व्यवसाय—जनरल मर्चेन्ट्स परिवार के साथ।

निवास—पिता के साथ।

उग्रसेन

आप श्री गुमानीचन्दजी के चौथे पुत्र हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम सुधा जैन है। आपके अमित कुमार एक पुत्र तथा एक पुत्री हैं।

व्यवसाय एवं निवास—पिता के साथ।

विनोदकुमार

आप श्री गुमानीचन्दजी के पाचवे पुत्र हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम कमला जैन है।

व्यवसाय एव निवास—पिता के साथ।



श्री बुद्धसेनजी सिंगवी—दिल्ली

बुद्धसेन जी का जन्म छोगमल सिंगवी के घर मुल्तान में हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद आप पैतृक व्यवसाय में कार्यरत हो गये। पाकिस्तान बनने के बाद आप पहले कुछ समय तक जोधपुर में रहे। उसके बाद आप दिल्ली आ गये और दिल्ली में अपना सूत गोले का व्यवसाय कर रहे हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम मोहिनी है। आपके संदीप जैन एक पुत्र एव तीन पुत्रिया हैं।

व्यवसाय—बस्ती हरफूलसिंह सदर थाना रोड, देहली



श्री दीवानचन्द सिंगवी

श्री दीवानचन्द जी सिंगवी

आपका जन्म गेलाराम सुपुत्र श्री जस्सुराम सिंगवी के घर डेरागाजीखान में हुआ था। आप कर्मठ कार्यकर्ता एवं अच्छे व्यवसायी व्यक्ति थे। पाकिस्तान बनने पर जहाँ लोग अपने परिवार को सुरक्षित भारत पहुँचाने के लिए व्याकुल थे वहाँ आप समाज एव धर्मायतन जिन प्रतिमाये एव शास्त्र भण्डार को भी सुरक्षित अपने साथ भारत लाने के लिए प्रयत्नशील थे। आपके सहयोग का ही यह परिणाम है कि हमारी बहुमूल्य निधि सुरक्षित भारत पहुँच सकी है। कुछ दिन जयपुर में व्यवसाय करने के पश्चात् आपने दिल्ली जाकर अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया। व्यावसायिक उन्नति के साथ साथ आपने धार्मिक



कार्यकर्ता के रूप में भी मुलतान समाज दिल्ली को नेतृत्व प्रदान कर धर्म के कार्यों को चालू रखा और देहली में अच्छी ख्याति प्राप्त की ।

डैरागाजीखान से लाई गई मूर्तियाँ दिल्ली के ऐतिहासिक लाल मन्दिर में विराजमान होने से समाज के धर्म साधन का मुख्य केन्द्र लाल मन्दिर ही रहा । लाल मन्दिर में मुलतान समाज की ओर से कार्यकर्ता होने के नाते वहाँ की गतिविधियों में भी अच्छे प्रतिष्ठित कार्यकर्ता रहे तथा समाज की गतिविधियों के संचालन में आपका बहुत बड़ा योगदान रहा । आपके असामयिक निधन हो जाने के कारण समाज में आपका अभाव आज भी बहुत खटकता है तथा उसकी क्षतिपूर्ति आज भी असम्भव है ।

आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती प्रेमवती है जो आपकी तरह सहनशील एवं धर्मात्मा है जो आपके पश्चात् अपना काफी समय स्वाध्याय आदि में व्यतीत करती है । आपके एक पुत्र एवं दो पुत्रियाँ हैं ।

श्री हंस कुमार — श्री हंसकुमार भी सहनशील शान्तिप्रिय एवं अपने व्यवसाय में कर्मठ व्यक्ति हैं । जिन्होंने अपने पिताजी के पश्चात् अपने व्यवसाय को बड़ी योग्यता से सभाला ही नहीं अपितु उसमें काफी उन्नति भी की । आपकी धर्मपत्नी का नाम सुपमा जैन है तथा आपके पुनीत कुमार, मुनीश, समीर, तीन पुत्र हैं

निवास—महेश घी के ऊपर खारी बावली दिल्ली में है ।

व्यवसाय—हसा मैनुफैक्चरिंग कार्पोरेशन 40—गांधी गली फतेहपुरी दिल्ली—6



श्री शिवनाथ मल जी कोठारी परिवार



श्री शिवनाथ मल जी कोठारी

श्री शिवनाथ मल जी कोठारी मूलत जोधपुर वासी है। आपकी बहिन मुलतान में श्री छोगमल जी सिगवी को व्याही गई थी। आप भी मुलतान जा कर बहनोई के पास रहने लगे। बाल्यकाल से ही आपके आदर्श एवं विनय का वृक्ष आगे पल्लवित एवं पुष्पित हो समाज को सुरक्षित करने लगा। आप एक होनहार व्यक्ति के रूप में समाज के सामने उभर कर आये। अपने बहनोई की फर्म घनश्याम दास छोगमल में कर्मठ कार्यकर्ता बनकर व्यवसाय को सम्भालने लगे एवं उसमें काफी प्रगति की। श्री छोगमलजी का डेरागाजीखान में आकस्मिक निधन हो जाने पर उनके व्यवसाय की आप

पर काफी जिम्मेदारी आ गई जिसे आपने बड़ी लगन एवं निपुणता से निभाया।

आपकी मात्र एक पुत्री श्रीमती शीलादेवी हैं जिनका विवाह आपने श्री विशम्भर दास के साथ किया और सूत का व्यवसाय कराकर उन्हें अपने पास रख लिया।

पाकिस्तान बनने के बाद जोधपुर आगये। कुछ समय वहा रहने के पश्चात् आपने दिल्ली आकर व्यवसाय प्रारम्भ कर दिया और वहा आपने इतनी उन्नति की कि दिल्ली में सूत आदि के अच्छे व्यापारी माने जाने लगे और आज आपकी समाज में बहुत अच्छे सम्पन्न घरानों में गिनती है। आपके कोई पुत्र न होने के कारण आपने अपनी लडकी के पुत्र श्री बाबूलाल को गोद लेकर अपना लड़का बना लिया और सभी एक सम्मिलित परिवार के रूप में रह रहे हैं। आप अपनी धर्म पत्नी श्रीमती गणेशीवाई को पटना के पास उपचार हेतु किसी स्थान पर ले गये थे जहा उनका आकस्मिक निधन हो गया।

आपकी प्रारम्भ से ही धर्म में काफी रुचि है। आप आदर्शनगर दि०जैन मन्दिर के निर्माणार्थ समय समय पर सहायता देते रहे हैं तथा अपनी पत्नी श्रीमती गणेशीबाई की स्मृति में नीचे विशाल प्रवचन हाल में फर्श लगवा दिया है जिससे कि मन्दिर की एक बड़ी कमी पूरी हुई है।

व्यवसाय—मगलदास विश्वम्भरदास, बस्ती हरफूल सिंह, सदर थाना रोड, दिल्ली।
निवास—बस्ती हरफूल सिंह, सदर थाना रोड, दिल्ली।

श्री बाबूलाल जी

बाबूलाल जी का जन्म विश्वम्भरलाल के घर हुआ था। आप अपने नाना श्री शिवनाथ मलजी के गोद आकर पुत्र बन गये। शिक्षा प्राप्ति के बाद अपने पिता एवं परिवार के साथ व्यवसाय में कार्यरत हो गये। आपकी धर्म पत्नी का नाम सुधा जैन है और आपके दो पुत्र हैं।

व्यवसाय एवं निवास—अपने पिता के साथ बस्ती हरफूल सिंह में है।



गोलेछा परिवार

गोलेछा परिवार मुलतान डेरागाजीखान मे प्राचीन परिवारो मे से है । परशराम गोलेछा के श्री देवीदास, ढालूराम, रेमलदास, मूलचन्द एव गेलाराम 5 पुत्र थे ।

- 1 देवीदासजी . शम्भुराम, दासूराम, सुखानन्द तीन पुत्र थे ।
2. ढालूराम कोई सन्तान नही थी अत उन्होने उत्तमचन्द सिगवी को गोद लिया
- 3 रेमलदास होतूराम, भूराराम दो पुत्र थे ।
- 4 मूलचन्द भजनदास एव लालचन्द ।
- 5 गेलाराम चेतनदास एवं धनेन्द्रकुमार ।

इन सबके परिवारो का परिचय जयपुर एव दिल्ली खण्ड मे अलग अलग दिया गया है ।

(1) शम्भुरामजी

शम्भुरामजी देवीदासजी के प्रथम पुत्र थे । उनकी युवावस्था मे मृत्यु हो गई थी । उनकी मात्र कस्तूरी देवी एक पुत्री थी जो डेरागाजीखान मे गिरधारी लाल पुत्र श्री करम चन्द सिगवी को ब्याही गई थी । आप समाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे । धार्मिक कार्यों मे आपकी बहुत रुचि थी ।



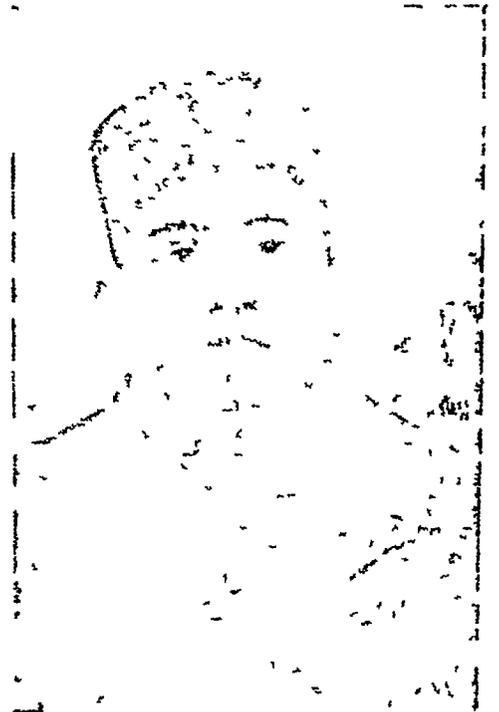
(2) दासूरामजी

दासूरामजी के परिवार का विवरण जयपुर खण्ड मे दिया गया है ।



(3) श्री सुखानन्दजी

सुखानन्दजी श्री देवीदासजी के तीसरे पुत्र हैं । आप बहुत बुद्धिमान एव प्रतिभाशाली व्यक्ति थे । आपका जन्म एक समृद्ध परिवार मे हुआ था । आप अपने पिता एव बड़े भाई शम्भुराम की तरह समाज के प्रमुख व्यक्तियों मे से थे । समाज की प्रत्येक गतिविधियों मे आपका प्रमुख हाथ रहता था । आप सस्कृत के अच्छे विद्वान थे । मुलतान की गौशाला आदि जैसी कई सस्थाओं के क्रियाशील सदस्य एव पदाधिकारी थे । आप धर्मज्ञ भी थे । शहर से बाहर बगीचे के नाम से एक फार्म बना रखा था जहा पर आपने भवन एवं चिकित्सालय भी बनवाया था जिसमे समय-समय पर व्रती आदि भी आकर रहते थे । उस चैत्यालय के लिये



आपने सम्मेलन शिखर में हुई पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव पर भगवान महावीर की एक मनोज्ञ प्रतिमा प्रतिष्ठित कराकर मुलतान लाये थे। सन् 1935 में समाज ने सात दिवसीय वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव बड़े स्तर पर बगीचे में कराया था। उस समय फिरोजपुर आदि से विशाल रथ मगवाया था। उस उत्सव को सफल बनाने में आप अथवा आपके परिवार ने प्रमुख योगदान दिया।

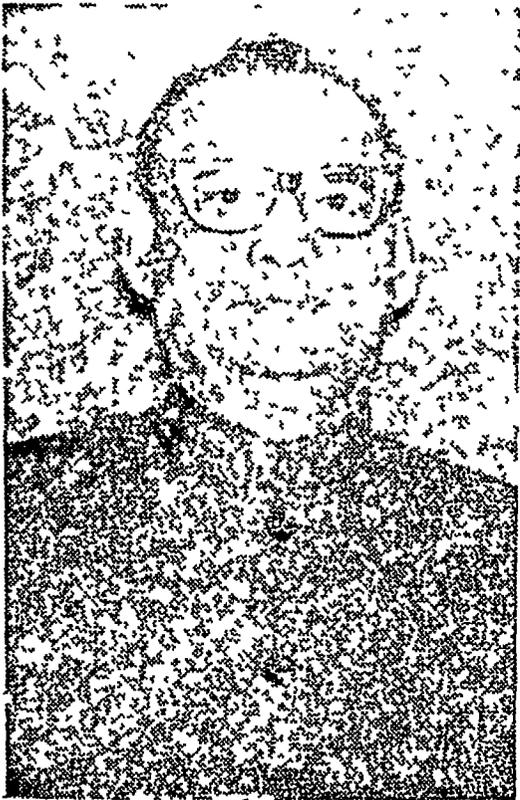
आपने अपने रंग के व्यवसाय में बहुत उन्नति की। पंजाब में रंग के प्रमुख व्यापारियों में माने जाने लगे और उसमें आपने बहुत द्रव्य उपार्जन भी किया। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती ईश्वरी बाई था। आपके श्रीनिवास, शंकरलाल, प्रेमचन्द, पदमकुमार, राजकुमार एवं सुभाष कुमार छ पुत्र हैं।

मुलतान में आपकी फर्म का नाम—सुखानन्द शंकरलाल जैन था।

सन् 1945 को मुलतान में हृदयगति रुक जाने से आपका असामयिक निधन हो गया।

श्री सुखानन्दजी के पुत्र

श्री निवासजी गोलेछा—बम्बई



आपका जन्म 15 अगस्त 1918, श्री सुखानन्दजी के घर मुलतान में हुआ था। आप प्रारम्भ से ही कर्मठ कार्यकर्ता, अच्छे व्यवसायी और धर्मप्रेमी महानुभाव हैं। पाकिस्तान बनने के बाद कुछ समय तक दिल्ली रहे, बाद में बम्बई जाकर व्यवसाय करने लगे। जयपुर से इतनी दूर रहते हुए भी दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्शनगर जयपुर के साथ आपका विशेष प्रेम है। आपके उत्साह का ही यह परिणाम है कि आपके परिवार ने मन्दिर में मुख्य वेदी का निर्माण कराया है और समय-समय पर आप यथा शक्ति तन, मन, धन का सहयोग देकर मन्दिर के निर्माण कार्य को पूरा करने में सक्रिय भाग लिया है।

मन्दिर में खटकने वाले शिखरों के अभाव की कमी को पूरा करने के लिये आपने बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ तीन शिखरों में से एक शिखर बनवाने की स्वीकृति देकर मन्दिर की बहुत बड़ी कमी को पूरा करने में सहयोग दिया है।

आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती कमला रानी है जो धर्मज्ञा एवं विदुषी हैं। आपके सतीशकुमार, विपिनकुमार दो पुत्र एवं तीन पुत्रिया हैं।

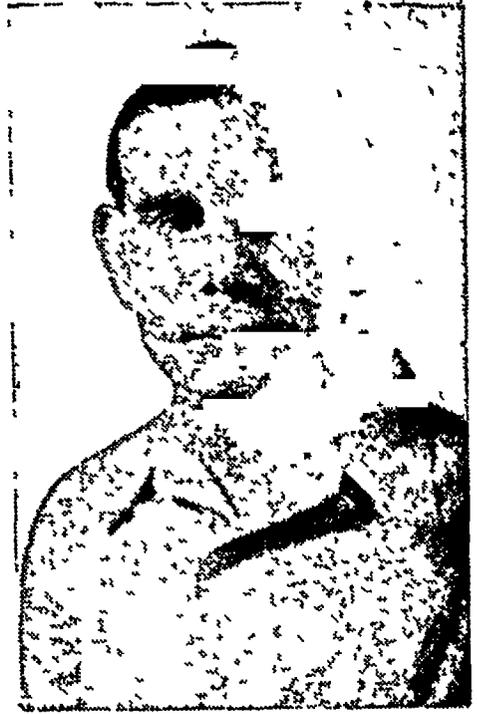
व्यवसाय—श्रीनिवास एण्ड कम्पनी एवं मयूर ड्राइकेम कार्पोरेशन,

47 दरिया स्थान स्ट्रीट बड़गादी, बम्बई-3



श्री शंकरलाल गोलेछा

श्री शंकरलालजी का जन्म 56 वर्ष पूर्व श्री सुखानन्दजी गोलेछा के घर मुलतान में हुआ था। आप प्रारम्भ से ही ओजस्वी, कर्मठ कार्यकर्त्ता नवयुवक थे। स्कूली शिक्षा के पश्चात् उच्च शिक्षा प्राप्त हेतु लाहौर गये और पंजाब विश्व-विद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। युवावस्था से ही आपको धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में अच्छी रुचि थी। मुलतान में सर्वप्रथम दि० जैन परिषद् की ब्राच की स्थापना की। पाकिस्तान बनने के बाद आप दिल्ली आ गये, वहाँ पर आपने राजनीति में भी अच्छा भाग लिया। फलस्वरूप स्वतन्त्र भारत में दिल्ली विधान सभा के प्रथम चुनाव में आप विधायक निर्वाचित हुए। उसी तरह धार्मिक गतिविधियों में भी आप अच्छा भाग लेते रहे हैं।



आदर्शनगर मन्दिर निर्माण में आप और आपके परिवार ने बहुत रुचि लेकर मन्दिर जी में वेदी बनवाई और वेदी प्रतिष्ठा कराने में प्रमुख सहयोग दिया। आपकी धर्मपत्नी का नाम सुन्दरी देवी है। आपके नरेन्द्र एवं अनिल दो पुत्र एवं एक पुत्री हैं।
निवास 16/2 डाक्टर लेन गोल मार्केट, नई दिल्ली।

व्यवसाय:—नरेन्द्र अनिल एण्ड कम्पनी, 2/184 तिलक बाजार, खारी बावली, दिल्ली।

श्री शंकरलालजी के पुत्र

1. नरेन्द्र कुमार जैन

आयु 24 वर्ष, धर्मपत्नी का नाम प्रीति जैन है। आपका अभी कुछ दिन पूर्व काला परिवार में जयपुर विवाह हुआ है।

2. अनिल जैन

आयु 21 वर्ष, अविवाहित, अपने पिता के साथ रहते हैं, व्यवसाय एवं शिक्षा के अध्ययन में रत हैं।



श्री सुखानन्दजी के पुत्र

3. श्री प्रेमकुमारजी

सुखानन्दजी के तीसरे पुत्र हैं। आप शांति प्रिय एवं समाजसेवी व्यक्ति हैं। दिल्ली समाज की सभी धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में प्रमुख भाग लेते हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम उर्मिला देवी है। आपके राजीव, विकी, आसीस तीन पुत्र एवं एक पुत्री हैं।

व्यवसाय :—सुखानन्द शंकरलाल जैन, तिलक बाजार, खारी बावली, दिल्ली।

निवास :—कोठी नं० 1 पंचकुइया रोड, नई दिल्ली।

4. राजकुमार

धर्मपत्नी का नाम मन्जु जैन पुत्र राहुल एक पुत्र एव एक पुत्री है ।
व्यवसाय :—सुखानन्द शकरलाल फर्म में अपने भाइयो के साथ ।
निवास —अपने भाइयो के साथ ।

5. पदम कुमार

धर्मपत्नी का नाम चन्दा देवी और दो पुत्रिया है ।
व्यवसाय —निवास एव व्यवसाय अपने परिवार के साथ ।

6. सुभाष कुमार

धर्मपत्नी का नाम मन्जू जैन आपके दो पुत्र है ।
व्यवसाय :—निवास एव व्यवसाय परिवार के साथ ।



श्री भजनदास गोलेछा

श्री भजनदासजी गोलेछा सुपुत्र श्री मूलचन्दजी गोलेछा का जन्म मुलतान नगर में हुआ था । शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् आप अपने निजी व्यवसाय में लग गये । पाकिस्तान बनने के पश्चात् आप दिल्ली आकर बस गये तथा व्यापार करने लगे । आपका स्वर्गवास दिल्ली में हुआ ।

आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती छिनको बाई है । श्री उत्तमचन्दजी, आडूरामजी, तोलारामजी, रोशनलालजी चार पुत्र एव आपकी तीन पुत्रिया है ।

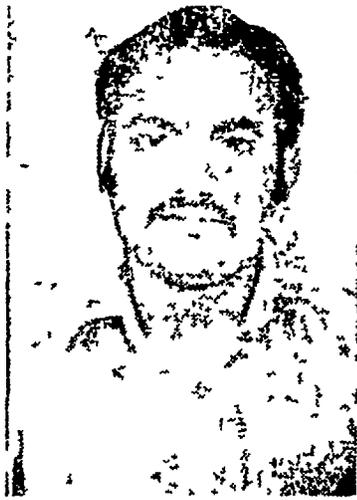
श्री उत्तमचन्दजी गोलेछा

श्री उत्तमचन्दजी गोलेछा सुपुत्र श्री भजनदासजी का जन्म मुलतान में सन् 1914 में हुआ । स्कूली शिक्षा के पश्चात् आप अपने निजी व्यवसाय में लग गये । पाकिस्तान बनने के बाद आप दिल्ली में बस गये पहले जैन स्कीन्स फैक्ट्री में अपने भाइयो के साथ पार्टनर थे अब मोजा बनाने की फैक्ट्री लगा ली है । आपके सुभाष चन्द्र एवं सुरेन्द्र कुमार दो पुत्र तथा दो पुत्रिया है तथा आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती मैना देवी है ।



आपका पता निम्न प्रकार है :—

निवास—5656 बस्ती हरफूलसिंह सदर थाना रोड, दिल्ली--6
सस्थान—सुरेन्द्र ट्रेडिंग कम्पनी, 5503 बस्ती हरफूलसिंह देहली ।
दूरभाष—516472



श्री सुभाष चन्द्र

आप अपने पिता के साथ व्यवसाय करते हैं एवं इनकी धर्मपत्नी का नाम स्वर्णलता है और एक पुत्र एवं एक पुत्री है।

श्री आडूरामजी गोलेछा—दिल्ली

श्री आडूरामजी का जन्म 60 वर्ष पूर्व श्री भजनदासजी के घर मुल्तान में हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद आप मुल्तान में व्यवसाय करने लगे। पाकिस्तान बनने के बाद आप दिल्ली आकर बस गये। सून गोले का व्यवसाय करने लगे। आपकी धर्मपत्नी का नाम दयावन्ती है। आपके अशोककुमार एक पुत्र एवं एक पुत्री है।

आपके संस्थान का नाम जैन स्कीन्स फ़ैक्ट्री प्रताप मार्केट दिल्ली--6

निवास—322 खजूर रोड़, करोल बाग, नई दिल्ली। दूरभाष—513610

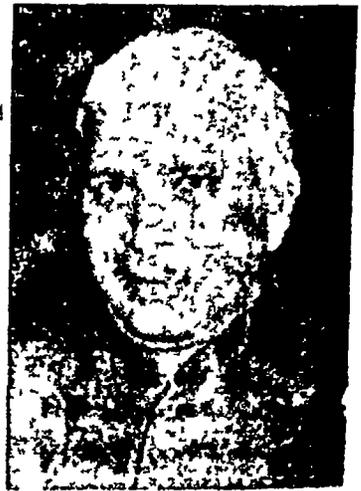
अशोककुमार

अशोककुमार की पत्नी का नाम 'रीना देवी' जैन है। शोकित जैन पुत्र एवं एक पुत्री है। उनके संस्थान का नाम 'स्टेचको एन्टरप्राइज' बैंक स्ट्रीट करोल बाग है।

निवास —अपने पिता के साथ।

श्री तोलारामजी गोलेछा—दिल्ली

श्री तोलारामजी का जन्म 56 वर्ष पूर्व भजनदासजी के घर मुल्तान में हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद आप व्यवसाय करने लगे। आपको लोगों की सेवा करने में रुचि थी। पाकिस्तान बनते समय हिन्दू मुस्लिम झगडों में आपने हिन्दू दंगल के माध्यम से लोगों की बहुत सेवा की।



पाकिस्तान बनने के पश्चात् आप दिल्ली आकर रहने लगे और अपने भाइयों के साथ व्यवसाय प्रारम्भ किया और उसमें बहुत उन्नति की ।

जहां आपने व्यवसाय में उन्नति की, वहां परोपकार एवं सेवा की भावना अधिकाधिक जागृत हुई और मुलतान सेवा समिति के माध्यम से आपने अथक प्रयास करके जनता की असीम सेवाएं की और मुलतान सेवा समिति के उच्च पदाधिकारी के रूप में अपने सहयोगियों की मदद से मुलतान सेवा समिति के नाम को दिल्ली में चार चांद लगवा दिए ।

मुलतान समाज की सेवा में भी हर समय आप अग्रणी रहते हैं । मुलतान दि० जैन मन्दिर आदर्शनगर के निर्माण में आपने समय-समय पर आर्थिक योगदान तो किया ही है । बाकी मुलतान दि० जैन समाज दिल्ली से भी आपने आर्थिक सहायता दिलाने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी ।

आपकी धर्मपत्नी का नाम लेखमती है । ओमप्रकाश एक पुत्र एवं तीन पुत्रियां हैं ।

निवास—7037 गली टंकी वाली पहाड़ी धीरज, दिल्ली । फोन नं० 527014

व्यवसाय—नेशनल सिल्क इन्डस्ट्रीज 11 अमृत मार्केट, सदर बाजार, दिल्ली ।

फोन—513610

श्री तोलाराम जी के पुत्र श्री ओमप्रकाश जी गोलेछा

ओमप्रकाश का जन्म 29 वर्ष पूर्व श्री तोलाराम जी के घर दिल्ली में हुआ था । B.A. तक शिक्षा प्राप्त कर आपने अपनी प्लास्टिक इन्डस्ट्रीज लगा ली और उसमें अच्छा कार्य करने लगे । आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती सन्तोष जैन है एवं आपकी मात्र एक पुत्री है ।

निवास—आप अपने पिता के साथ पहाड़ी धीरज पर रहते हैं ।

व्यवसाय—प्लास्टिक इन्डस्ट्रीज 52, रामा मार्ग नजफगढ़, दिल्ली । फोन नं० 588209 ।



श्री रोशनलाल जी गोलेछा

श्री रोशनलाल जी भी भजनदास जी के चतुर्थ पुत्र हैं। आपका जन्म 52 वर्ष पूर्व मुलतान में हुआ था। पाकिस्तान बनने के बाद आप भी परिवार के साथ दिल्ली में रहने लगे और उन्हीं के साथ ही व्यवसाय करने लगे। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती आशा रानी गोलेछा है। आपके प्रवीण व प्रदीप दो पुत्र एवं एक पुत्री हैं।

व्यवसाय—जैन स्कीनस फैक्ट्री, प्रताप मार्केट, सदर बाजार, दिल्ली में आप पार्टनर हैं।

निवास—5337, सदर थाना रोड दिल्ली-7 है।

फोन · घर—518391 दुकान—513610



श्री लालचन्द जी के पुत्र

श्री मदन गोपाल गोलेछा

श्री मदन गोपाल गोलेछा पुत्र श्री लालचन्द, पौत्र श्री मूलचन्द गोलेछा आयु 50 वर्ष धर्मपत्नी का नाम श्रीमती पुष्पा जैन है, सुनीलकुमार एक पुत्र एवं तीन पुत्रिया हैं। आप अच्छे उत्साही कार्यकर्ता हैं। आपने अपने परो पर खड़े होकर ही अपने जीवन का निर्माण किया है।

निवास—1358 कृष्णा गली, बुलियान, दिल्ली-110006

व्यवसाय—अधीक्षक, जीवन वीमा निगम, नई दिल्ली। फोन—42669



श्री भूराराम जी गोलेछा

स्व० श्री भूराराम जी का जन्म श्री रेमलदास के घर डेरागाजीखान में हुआ था। आप वहाँ जनरल मर्चेन्ट्स का व्यवसाय करते थे। पाकिस्तान बनने के पश्चात् आप दिल्ली आ गये। आपकी धर्मपत्नी का नाम चेतोबाई है, आपके दो पुत्र आतम प्रकाश एवं जगदीश कुमार एवं चार पुत्रिया हैं।

निवास—5476 वस्ती हरफर्लासह, सदर थाना रोड़, दिल्ली-6



श्री आतमप्रकाश जी सुपुत्र श्री भूराराम जी

आपका जन्म 60 वर्ष पूर्व डेरागाजीखान में हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद जनरल मर्चेन्ट्स का कार्य करने लगे। पाकिस्तान बनने के पश्चात् आप दिल्ली आकर रहने लगे। आपकी धर्मपत्नी का नाम सुमित्रा देवी है, आपके अशोक व अनिल दो पुत्र एवं दो पुत्रियां हैं।

निवास—5476 बस्ती हरफूलसिंह, दिल्ली।

व्यवसाय—गोलेछा ट्रेडर्स 5655, गांधी मार्केट, सदर बाजार, दिल्ली-6



श्री आतमप्रकाश जी के पुत्र

श्री अशोककुमार जी

अशोक कुमार आयु 33 वर्ष, आतमप्रकाश जी के पुत्र हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम कान्ता कुमारी है, राजा व मुन्ना दो पुत्र एवं एक पुत्री है। ईस्ट पार्क रोड करोल बाग, नई दिल्ली में रहते हैं और जनरल मर्चेन्ट्स का व्यवसाय करते हैं।

श्री अनिलकुमार जी

अनिल कुमार की उम्र 25 वर्ष है। आतम प्रकाश जी के पुत्र हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम इन्दु जैन है। पिता के साथ रहते हैं और जनरल मर्चेन्ट्स का कार्य करते हैं।

श्री भूरालाल जी के पुत्र

श्री जगदीशकुमार जी

जगदीश कुमार श्री भूरालाल जी के दूसरे पुत्र हैं। आपकी उम्र 33 वर्ष है। आपकी धर्मपत्नी का नाम कुसुम जैन है, आपके बब्बू एक पुत्र एवं दो पुत्रियां हैं।

निवास—सीताराम बाजार, दिल्ली में रहते हैं और किसी कार्यालय में सेवारत हैं।



श्री गेलाराम जी गोलेछा का परिवार

श्री चेतनदास जी

श्री चेतनदास का जन्म गेलाराम जी गोलेछा के घर डेरागाजीखान में हुआ था। प्लेग महामारी के कारण आपकी युवावस्था में मृत्यु हो गई। आपकी धर्मपत्नी का नाम चेतनीवाई था। उनकी भी युवावस्था में मृत्यु हो गई। सुमति देवी आपकी एक मात्र पुत्री थी जो शुभचन्द्र सुपुत्र श्री गेलाराम सिंगवी को व्याही गई।

श्री धनेन्द्र कुमार जी गोलेछा

श्री धनेन्द्र कुमार का जन्म 36 वर्ष पूर्व श्री गेलाराम जी गोलेछा के घर डेरागाजीखान में हुआ था। पाकिस्तान बनने के बाद आप दिल्ली आ गये। आपकी पत्नी का नाम विमला देवी जैन है, प्रवीणकुमार एक मात्र पुत्र है। आप दिल्ली राज्य डी० डी० टी० में सेवारत हैं।



श्री आसानन्द जी सिगवी के परिवार का परिचय।

श्री आसानन्द जी सिगवी के पूर्वजों का पता नहीं चल सका। आपके जमनीदास एव ठाकरदास दो पुत्र हैं। आप डेरागाजीखान में रहते थे।

(1) ठाकरदास जी के परिवार का विवरण जयपुर खण्ड में दिया जा चुका है।

(2) श्री जमनीदास जी के परिवार का विवरण निम्न प्रकार है। आपके श्री उत्तमचन्द, श्री नेभराज, सोहनलाल एव तीरथदास चार पुत्र थे।



श्री उत्तमचन्दजी गोलेछा

श्री उत्तमचन्द जी का जन्म जमनीदास जी सिगवी के घर डेरागाजीखान में हुआ था। श्री ढालूराम जी गोलेछा का असमय में ही निधन हो गया। उनकी धर्मपत्नी अर्थात् उत्तमचन्द जी की बुआ ने उन्हें गोद ले लिया।

आपने डेरागाजीखान में सर्वप्रथम उच्च शिक्षा प्राप्त की और आपकी फिरोजपुर (पंजाब) बैंक में उच्च पद पर 1930 में नियुक्ति हो गई। आप अपने छोटे भाइयों को साथ लेकर फिरोजपुर में रहने लगे।

आपका डेरागाजीखान में ही श्रीमती कस्तूरी देवी (सुपुत्र श्री प्रेमचन्द जी) के साथ विवाह हो गया। युवावस्था में ही कुछ बीमारी के कारण सन् 1935 ई० में निधन हो गया। आपके कोई सन्तान नहीं है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कस्तूरी देवी अब लक्ष्मीदेवी जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पहाड़ी धीरज, दिल्ली में अध्यापिका के कार्य में रत हैं। जिनका निवास—4974, सरदार विल्डिंग, चौक अहाता, किदारा बाड़ा, हिन्दुराव, देहली में है।



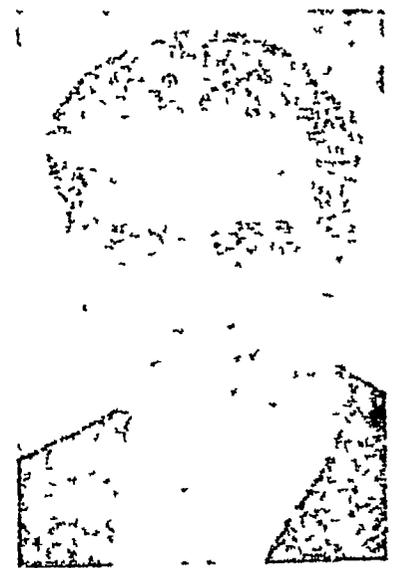
श्री नेभराज जी सिंगवी

आपका जन्म डेरागाजीखान मे श्री जमनीदास के घर हुआ था । आप उच्च शिक्षा प्राप्त कर फिरोजपुर (पंजाब भारत) मे आ गये । आप पहले से ही बुद्धिजीवी एवं धार्मिक विचारधारा के व्यक्ति है । फिरोजपुर मे रहते हुए आपने धर्म कार्य एवं मन्दिर जी मे पूजन प्रक्षाल आदि नित्य क्रियाये करते हुए अपने जीवन को सफल बनाते रहे । आपने आदर्शनगर मन्दिर मे जर्मनसिल्वर धातु की एक डेढ फुट की मनोज्ञ प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाकर विराजमान की । आपकी धर्म के प्रति काफी अभिरुचि है और धर्म के कार्यों मे सदा ही तत्पर रहते है । आदर्शनगर मन्दिर मे समय-समय पर आप सहयोग

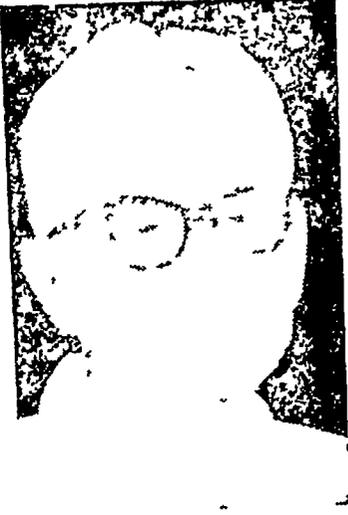
देते ही रहे है । आपने महावीर कीर्ति स्तम्भ के चारो ओर जमीन पर फर्श लगवा कर मन्दिर की शोभा बढाने मे योगदान दिया है । आप दिल्ली रहते है और फिरोजपुर मे रेलवे से सम्बन्धित आपका व्यवसाय है । आपकी धर्मपत्नी का नाम खेमीवाई है । वीरेन्द्र कुमार एक मात्र पुत्र एवं दो पुत्रिया है । वीरेन्द्र कुमार को आपने उच्च शिक्षा हेतु प० जर्मनी भेजा, जहां वह काफी दिनों रहकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर वापस दिल्ली आये ।

श्री वीरेन्द्रकुमार सुपुत्र श्री नेभराज जी

श्री वीरेन्द्रकुमार का जन्म फिरोजपुर मे 45 वर्ष पूर्व श्री नेभराज जी के घर हुआ था । B A तक शिक्षा प्राप्त कर उच्च शिक्षा हेतु आप प० जर्मनी गये, काफी वर्षों तक वहा अध्ययन किया । उच्चतर शिक्षा प्राप्त कर आप भारत आ गये और एक विदेशी संस्थान मे बहुत ऊंचे पद पर कार्य कर रहे है । आपकी धर्मपत्नी का नाम आभा जैन था जिनकी विदेश मे ही हृदयगति रुक जाने से असामयिक निधन हो गया । जिससे आपको दूसरी शादी करनी पडी । उनका नाम रेखा जैन है तथा आपके हर्ष एक पुत्र एवं दो पुत्रिया है ।



श्री सोहनलाल जी सिंगवी



श्री सोहनलाल जी सिंगवी का जन्म जमनीदास के घर डेरागाजीखान में हुआ था। आपने भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर पहले फिरोजपुर में कार्यरत हुए और बाद में दिल्ली आकर एक संस्थान में कार्य करने लगे। आप स्वभाव से बड़े सन्तोषी एवं शान्त प्रिय व्यक्ति थे। पाकिस्तान बनने के समय मुलतान से समाज को लाने के लिए हवाई जहाजों का प्रबन्ध करने में आपने समाज के महानुभावों को बहुत सहयोग दिया। आपकी धर्मपत्नी का नाम सरला देवी (पूरण देवी) है। आपके अखिल जैन एक पुत्र एवं दो पुत्रियाँ हैं। कुछ समय पूर्व हृदयगति रुक जाने से आपका असमय में ही निधन हो गया।

श्री अखिल जैन

अखिल जैन की आयु 28 वर्ष है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर आप पोद्दार सिल्क एवं सेन्थेटिक लिमिटेड, कटरा नील, चादनी चौक, दिल्ली में उच्च पद पर कार्यरत हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम नीरू जैन है। निवास-कोठी न० 1, पंच कुइया रोड, नई दिल्ली।

श्री तीरथदास जी सिंगवी



श्री तीरथदास जमनीदास के चौथे पुत्र हैं। आपका जन्म भी 60 वर्ष पूर्व डेरागाजीखान में हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद आप व्यवसाय करने लगे। पाकिस्तान बनने के बाद आप दिल्ली आ गये। आपकी धर्मपत्नी का नाम सरला देवी जैन है। आपके आनन्द कुमार, किशन कुमार एवं मुभाषकुमार तीन पुत्र एवं एक पुत्री हैं।

निवास-ए-48 जगपुरा वी, नई दिल्ली-14

व्यवसाय-स्टेशनरी के व्यापारी, 5392/23 गुप्ता मार्केट, सदर बाजार, दिल्ली-6 में हैं।

श्री आनन्दकुमार सिंगवी

आनन्द कुमार सिंगवी श्री तीरथदास के पुत्र है। आपका जन्म दिल्ली में हुआ था। उच्च शिक्षा प्राप्त के पश्चात् आप पहिले नौकरी करते थे, ट्रक दुर्घटना में आपको चोट आ जाने के कारण इस कार्य से मुक्त होना पड़ा।



इनकी धर्मपत्नी का नाम कंचन देवी है। आपके विनीत पुत्र एवं एक पुत्री है। अब आप कोटा में अपना व्यवसाय करने लगे हैं।



श्री गेलाराम जी पुत्र श्री जस्सुरामजी के छः पुत्रों में से पांच पुत्रों के परिवारों का परिचय जयपुर एवं दिल्ली परिशिष्ट में पहले दिया जा चुका है। श्री शुभचन्द्रजी के परिवार का विवरण इस प्रकार है।

श्री शुभचन्द्र जी सिंगवी

गेलाराम जी सिंगवी के तीसरे पुत्र है। आपका जन्म 59 वर्ष पूर्व डेरागाजीखान में हुआ था। स्कूली शिक्षा के बाद आप व्यवसाय में लग गये। पाकिस्तान बनने के बाद आप दिल्ली आकर रहे और वही व्यवसाय करते रहे हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम सुमित्रा देवी है और आपके मदनगोपाल एक मात्र पुत्र है।



श्री मदनगोपाल जी

मदनगोपाल की उम्र 38 वर्ष है। आप भी पिता के साथ रहते हैं, व्यवसाय करते हैं, श्रीमती कमलेश उनकी धर्मपत्नी है, अमित जैन एक पुत्र एवं एक पुत्री है।

निवास—5/22 ए, जंगपुरा-बी, नई दिल्ली-14



श्री खेमचन्द्र जी के पूर्वज एवं परिवार

श्री खेमचन्द्र जी सिंगवी भी श्री लुणिन्दामल के वंशज हैं। लुणिन्दामल के पुत्र लीलाराम, उनके पुत्र जेठानन्द, उनके पुत्र मोतीराम और मोतीराम के पुत्र श्री रामचन्द्र एवं रामचन्द्र के पुत्र श्री खेमचन्द्र जी हैं।

मोतीराम एवं वाकी उनके परिवार का परिचय जयपुर खण्ड में दिया जा चुका है। खेमचन्द जी के परिवार का परिचय इस प्रकार है।

खेमचन्द का जन्म डेरागाजीखान में हुआ था। आपके श्री बोधराज, श्री सन्त कुमार, श्री अजीत कुमार एवं श्री नेमीचन्द चार पुत्र हैं। पाकिस्तान बनने के बाद आप सत्र दिल्ली आकर रहने लगे।

श्री बोधराज जी

श्री बोधराज जी—आयु 62 वर्ष, धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा देवी। श्री अशोक कुमार एवं अनिल कुमार दो पुत्र एवं दो पुत्रिया हैं।

निवास—2/62 जगपुरा, मस्जिद रोड, नई दिल्ली-14

व्यवसाय—व्यापार।

श्री सन्त कुमार जी

श्री खेमचन्द जी के दूसरे पुत्र हैं। आपका जन्म 46 वर्ष पूर्व 'डेरागाजीखान' में हुआ था। पाकिस्तान बनने के बाद दिल्ली में आकर बस गये। आपकी धर्मपत्नी का नाम उर्मिला देवी है। आपके राजेश व मयक दो पुत्र एवं दो पुत्रिया हैं।

निवास—4080, गली मन्दिर वाली, पहाड़ी धीरज, दिल्ली।

व्यवसाय—सिंगवी मेटल स्टोर, 2186, वगीची रघुनाथ, सदर बाजार दिल्ली-6

श्री नेमीचन्द जी

नेमीचन्द का जन्म 43 वर्ष पूर्व खेमचन्द के घर डेरागाजीखान में हुआ था। पाकिस्तान बनने के बाद आप देहली आ गये। आपकी धर्मपत्नी का नाम कमला जैन है, सदीप जैन एक पुत्र एवं एक पुत्री हैं।

निवास—3794, नई बस्ती, सदर बाजार, दिल्ली।

व्यवसाय—विट्टू बक्स फैक्ट्री, 4763 अहाता किदारा बाडा, हिन्दुराव, दिल्ली

श्री अजीत कुमारजी

अजीतकुमार का जन्म 41 वर्ष पूर्व डेरागाजीखान में हुआ था। आप पाकिस्तान बनने के बाद दिल्ली आकर रहने लगे। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती, शान्ति देवी है, आपके एक पुत्र हैं।

निवास—3794, नई बस्ती, दिल्ली।

व्यवसाय—विट्टू बक्स फैक्ट्री 4763, अहाता किदारा बाडा, हिन्दुराव, दिल्ली



कनौड़िया परिवार

मगलदासजी कनौड़िया मुलतान मे सम्पन्न एव धर्मात्मा व्यक्ति थे। उन्होंने मुलतान मन्दिर मे कई चीजे बनवाई तथा भेट की। उनके श्री सुन्दरदासजी एक पुत्र थे—वे भी सज्जन एव उत्साही व्यक्ति थे। व्यवसाय आदि के लिए ब्रह्मा आदि मुलतान से दूर दराज क्षेत्र में गये थे।

उनके श्री ज्ञानचन्द एव श्री विशम्भरलाल दो पुत्र ह जिनका परिचय निम्न प्रकार है।

श्री ज्ञानचंदजी कनौड़िया

ज्ञानचन्द जी कनौड़िया सुन्दरदास जी के पुत्र है। आपको इस समय 62 वर्ष की आयु है। मुलतान से आने के पश्चात् आप दिल्ली में होजरी का व्यवसाय कर रहे है। आपकी धर्मपत्नी का नाम फूल देवी है, सुदर्शन, जिनेन्द्र, रमेश और सतीश चार पुत्र एव एक पुत्री है।

निवास—1128 बरतन मार्केट, सदर बाजार, दिल्ली।

व्यवसाय—ज्ञानचन्द नवीनकुमार जैन, 5015 नारायण मार्केट, सदर बाजार, दिल्ली-6।



श्री ज्ञानचन्द जी के पुत्र सुदर्शन कुमार

सुदर्शनकुमार आपके प्रथम पुत्र है जिनकी आयु 40 वर्ष है। धर्मपत्नी उर्मिला देवी जैन, रूपेन्द्र, नवीन और नीरज तीन पुत्र एव एक पुत्री है।

निवास—346 गली छापाखाना, सदर बाजार, दिल्ली।

व्यवसाय—पिता के साथ करते है।

श्री जैनेन्द्र कुमार जी

जैनेन्द्र कुमार ज्ञानचन्द जी के द्वितीय पुत्र है। आयु 37 वर्ष है। आपकी धर्मपत्नी का नाम कुसुमलता जैन है, अतुल और विमल दो पुत्र है। सरकारी कार्यालय में कार्यरत हैं।

निवास—1014 पान मण्डी, सदर बाजार, दिल्ली।

श्री रमेश कुमार जी जैन

रमेश कुमार जैन ज्ञानचन्द जी के तीसरे पुत्र है, उम्र 35 वर्ष, धर्मपत्नी का नाम सरोज कुमारी जैन है, रीतू व शिल्पी दो पुत्रिया है । निवास बडे भाई के साथ तथा स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन आफ इन्डिया, न्यू दिल्ली मे सेवारत है ।

श्री सतीश कुमार जी

श्री सतीशकुमार जी आयु 32 वर्ष, ज्ञानचन्द जी के पुत्र, पत्नी का नाम मन्जु कुमारी, अभित एक पुत्र एव दो पुत्रिया है ।

निवास—1128 बरतन मार्केट, सदर बाजार, दिल्ली ।

व्यवसाय—अपने पिता के साथ ।



श्री विश्वम्भर लालजी कनौडिया

विश्वम्भर लाल जी का जन्म 58 वर्ष पूर्व सुन्दरलाल जी कनौडिया के घर मुलतान मे हुआ था । आप वहा सूत गोले का व्यवसाय करते थे । आपका विवाह श्रीमती शीला देवी (पुत्री श्री शिवनाथमल जी कोठियारी) के साथ मुलतान मे हुआ था । शिवनाथमल जी के मात्र एक पुत्री होने के कारण आप उनके साथ रहने लगे और व्यवसाय करने लगे । पाकिस्तान बनने के बाद आप दिल्ली आ गये और उन्ही के साथ 35-एन बस्ती हरफूलसिह, सदर थाना रोड, दिल्ली-6 मे रहते है । आपके श्री बाबूलाल एव श्री मोहनलाल दो पुत्र हैं । शिवनाथमल जी के कोई पुत्र न होने के कारण बाबूलाल जी को उन्होने गोद ले लिया ।

व्यवसाय—मगलदास विश्वम्भरदास जैन, बस्ती हरफूलसिह, सदर थाना रोड, दिल्ली मे आप भागीदार है ।

श्री मोहनलाल जी

मोहनलाल विश्वम्भरदास जी के पुत्र है । आयु 34 वर्ष, निवास पिता के साथ । धर्मपत्नी का नाम चन्दा देवी, दीपक जैन एक पुत्र एव एक पुत्री है ।

व्यवसाय—विकास थ्रूड कारपोरेशन, बस्ती हरफूलसिह, दिल्ली-6

निवास—पिताजी के साथ ।



वगवाणी परिवार

श्री किशनचन्द के श्री महावीर प्रसाद एव ज्ञानचन्द जी दो पुत्र हैं । जिनमें महावीर प्रसाद के परिवार का परिचय भी जयपुर खण्ड मे दे दिया गया है । ज्ञानचन्द जी का परिचय निम्न प्रकार है ।



श्री ज्ञानचन्दजी वगवाणी

श्री ज्ञानचन्द जी का जन्म 55 वर्ष पूर्व किशनचन्द वगवाणी के घर मुलतान मे हुआ था । स्कूली शिक्षा के बाद आप अपने पिताजी के साथ व्यवसाय करते थे । पाकिस्तान बनने के बाद आप दिल्ली आ गये । आपकी धर्मपत्नी का नाम माला देवी जैन है । आपके दिजय एव नीरज दो पुत्र तथा एक पुत्री है ।

निवास—50/96 न्यू रोहतक रोड, न्यू दिल्ली ।
फोन • 566863

व्यवसाय—विजय इलास्टिक स्टोर, 340 प्रेस स्ट्रीट, सदर बाजार, दिल्ली-6

श्री विजय कुमार जी

विजय कुमार आयु 30 वर्ष, धर्मपत्नी का नाम वीना जैन, विपुल जैन एक पुत्र है । नीरज अभी अविवाहित है ।

निवास—पिता के साथ ।

व्यवसाय—पिता के साथ ।



नौलखा परिवार

नौलखा परिवारो का विस्तृत जानकारी पहले जयपुर खण्ड मे दी जा चुकी है। उन परिवारो मे निम्न नौलखा परिवार दिल्ली रहते हैं उनका परिचय इस प्रकार है।

श्री जयकुमारजी नौलखा

श्री जयकुमार जी नौलखा पदमचन्द जी के पुत्र मूलचन्द जी के पौत्र है। जयकुमार नौलखा का जन्म 58 वर्ष पूर्व पदमचन्दजी नौलखा के घर मुलतान मे हुआ था। पाकिस्तान बनने के बाद आप दिल्ली आ गये। आप एक कर्मठ कार्यकर्ता एव मजदूर वर्ग के मददगार एव हितैषी नेता है। आपने अपने जीवन का अधिक समय उनकी सेवा एव उनके हितो की रक्षा मे लगा दिया। आपकी धर्मपत्नी का नाम राजकुमारी है। आपके नरेश, सुरेश व राजेश तीन पुत्र एव एक पुत्री है।

निवास—8893 शीदीपुरा, फिल्मस्तान, नई दिल्ली।

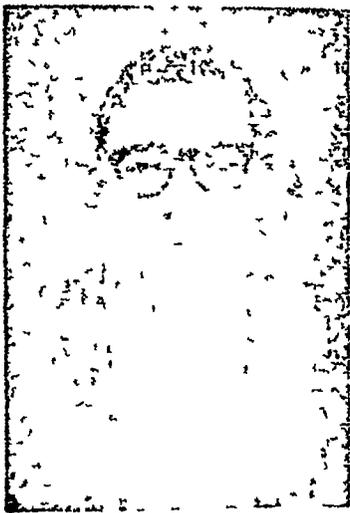
फोन—518942

श्री नरेश कुमारजी

नरेशकुमार 25 वष, धर्मपत्नी ममता जैन, निवास पिता के साथ।

व्यवसाय—रिखबदास जैन एण्ड सन्स, सदर बाजार, दिल्ली सस्थान मे कार्यरत।

वाकी पुत्र अविवाहित एव निवास आपके साथ।



श्री टेकचन्द जी

श्री टेकचन्द जी श्री सुखानन्द जी के पुत्र एव श्री मूलचन्द जी के पौत्र है। श्री टेकचन्द जी का जन्म 52 वर्ष पूर्व श्री सुखानन्द जी के घर मुलतान मे हुआ था। पाकिस्तान बनने के बाद आप दिल्ली आकर बस गये। आपकी धर्मपत्नी का नाम रोशनी देवी है, मुदर्शन कुमार व राजन बाबू दो पुत्र है। आपने होजरी फैक्ट्री का व्यवसाय प्रारम्भ किया।

आपें तथा आपके पुत्रों ने कठिन परिश्रम से उसमें इतनी उन्नति की कि अब समाज में सम्पन्न परिवारों में माने जाने लगे ।

निवास—11100 शीदोपुरा, डोरीवालान, नई दिल्ली ।

व्यवसाय—नौलखा स्ट्रिचवीयर, 4974 अहाता किदारा-6

फोन : 520378

नौलखा स्ट्रिचवीयर, 28-23/22 प्रताप मार्केट, दिल्ली-6

फोन : 518293

श्री टेकचन्द जी के पुत्र सुदर्शन कुमार जी

सुदर्शन कुमार टेकचन्द जी के प्रथम पुत्र है । आयु 25 वर्ष । धर्मपत्नी का नाम लक्ष्मीदेवी है ।

व्यवसाय एवं निवास—पिता के साथ ।

श्री राजेन्द्र बाबू

अविवाहित है । निवास एवं व्यवसाय पिता के साथ ।



ननगांशी परिवार

ननगाणी परिवार मुलतान के प्राचीन परिवारो मे से है । उनके विषय मे किवदन्ती है कि आतूराम जी के पिता श्री उदयराम जी मुलतान के पास मुजफ्फरगढ मे रहते थे । उनका सोने, चादी एव कपडे का व्यवसाय था और वह मुजफ्फरगढ के नवाब मुजफ्फरशाह के यहा आते-जाते थे और उनसे धार्मिक वार्ताए होती थी । एक बार शाह ने उनके अहिंसा धर्म की परीक्षा लेने के लिए उन्हे एक छोटा शेर का बच्चा दिया और कहा कि अगर आपके अहिंसा धर्म मे ताकत है तो इसे मास के बिना पालन-पोषण कर दिखाओ और इसे जैनी बना दो । वह उसे अपने घर ले आये और नित्य उसे हलुआ, रोटी आदि खिलाकर बडा करने लगे । जब दो वर्ष के करीब हो गया तो मुजफ्फरशाह के दरबार मे ले गये । जहा उसके सामने मास एव हलुआ रखा गया, उसने मास को सू घ कर छोड दिया और हलुआ खाने लगा, तब वहा नवाब ने उन्हे बहुत सम्मान एव इनाम दिया तथा उस पर अहिंसा धर्म की बहुत छाप पडी और उसने सदैव के लिए मास खाना छोड दिया ।

उन्ही के पुत्र श्री आतूराम जी थे, जिनके श्री नत्थूराम, श्री सन्तीराम, श्री ताराचन्द जी तीन पुत्र थे ।

श्री नत्थूराम जी

श्री नत्थूराम जी के श्री मघाराम जी एक पुत्र है । सवत् 1962 मे उनका जन्म हुआ था । उनके पिता वहा जमीदारी का कार्य करते थे, जिनका प्लेग महामारी मे स्वर्गवास हो गया । मघाराम जी मुलतान आकर रहने लगे । उनका विवाह काक्यावाली (पुत्री श्री उदयकरण जी) के साथ हुआ । किन्तु उनकी अल्पावस्था मे मृत्यु हो गई । मंघाराम जी ने दूसरी शादी नही की अत उनके कोई सन्तान नही है । वह विभिन्न स्थानो पर कार्यरत रहे । इनको तीर्थ यात्राए करने का अतिशोक है यह सभी तीर्थ स्थानो की कई-कई बार यात्राए कर आये हैं ।



श्री सन्तीराम जी

श्री सन्तीराम जी का जन्म श्री आतूराम जी ननगाणी के घर मुलतान मे हुआ था । आपके श्री रूपचन्द एव श्री टीकमचन्द दो पुत्र थे । आपके पूर्वज मुफ्जफरगढ (मुलतान पाकिस्तान) मे रहते थे । आपने भी वहा पर व्यवसाय किया और बाद मे आप अपने परिवार को लाकर मुलतान मे आकर बस गये तथा व्यवसाय करने लगे ।

श्री सन्तीराम जी के पुत्र रूपचन्द जी ननगाणी

श्री रूपचन्द जी ननगाणी श्री सन्तीराम जी के पुत्र है । आपका जन्म मुलतान मे हुआ था । पाकिस्तान से आप दिल्ली आये थोडे समय पश्चात् आपका आकस्मिक देहावसान हो गया । आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती जयदेवी था । जिनका भी आपके थोडे समय पश्चात् देहावसान हो गया । विजयकुमार, देशबन्धु दो पुत्र एव एक पुत्री है । जिनका निवास—2/58 जगपुरा एक्सटेन्शन, मस्जिद रोड, नई दिल्ली-14

श्री रूपचन्द जी के पुत्र विजय कुमार जी

विजयकुमार 39 वर्षीय आपके प्रथम पुत्र है । धर्मपत्नी का नाम कुसुम जैन, संदीप और अनु दो पुत्र है । निवास उपरोक्त परिवार के साथ ।

व्यवसाय—सर्विस

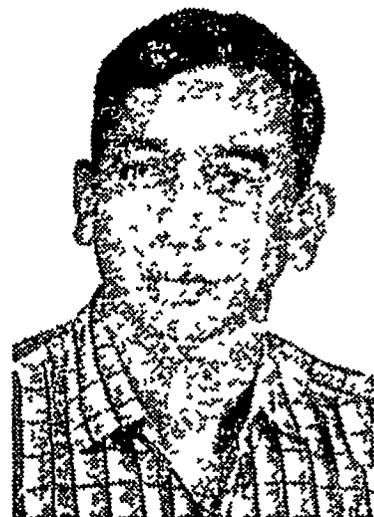
श्री देशबन्धु

देशबन्धु रूपचन्द जी के 36 वर्षीय द्वितीय पुत्र है । धर्मपत्नी का नाम निर्मला जैन । निवास—परिवार के साथ ।

व्यवसाय—अध्यापन ।

श्री सन्तीराम जी के पुत्र टीकमचन्द जी

श्री टीकमचन्द जी सन्तीराम जी ननगाणी के दूसरे पुत्र है । आपका जन्म 63 वर्ष पूर्व मुलतान मे हुआ था । वहा आप व्यवसाय करते थे । पाकिस्तान बनने के बाद आप दिल्ली आ गये । आप समाज मे कर्मठ एव उत्साही कार्यकर्ता है । आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती राजरानी जैन है । आपके प्रेमकुमार महेन्द्रकुमार एव राजू तीन पुत्र एव दो पुत्रिया है ।



श्री टीकमचन्द जी के पुत्र प्रेमकुमार जी

प्रेम कुमार की आयु 28 वर्ष है । उनकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती उषा जैन है । बाकी दो पुत्र अविवाहित है ।

आपका निवास—13/4506 पहाडी धीरज सदर बाजार, दिल्ली ।

व्यवसाय—(1) श्री एस आर हौजरी

(2) जैन ऐजेन्सीज

13/4506 पहाडी धीरज, दिल्ली



श्री ताराचन्द जी

श्री ताराचन्दजी श्री आतूराम जी ननगाणी के तीसरे पुत्र हैं। इनका जन्म मुजफ्फरगढ में हुआ था। बाद में मुलतान आकर रहने लगे जहाँ वे व्यवसाय करते थे। पाकिस्तान बनने के बाद वे दिल्ली आ गये जहाँ थोड़े समय बाद स्वर्गवास हो गया। उनके श्री किशोरीलाल जी एवं श्यामलाल जी दो पुत्र हैं।

श्री किशोरी लाल जी ननगाणी

श्री किशोरीलालजी ननगाणी का जन्म 70 वर्ष पूर्व श्री ताराचन्द जी ननगाणी के घर मुलतान में हुआ था। वहाँ व्यवसाय करते थे। पाकिस्तान बनने के बाद दिल्ली आ गये। आपकी धर्मपत्नी कस्तूरी देवी हैं। आपके श्रीमती कमलेश कुमारी मात्र एक पुत्री हैं।

निवास—आटो वर्ल्ड इन्डस्ट्री 65

मोडल वस्ती, नई दिल्ली

व्यवसाय—होजरी कारखाना।

श्रीमती कमलेश कुमारी का विवाह श्री सुरेश कुमार जी के साथ हुआ था। हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। आपके विकास, अतुल दो पुत्र हैं।

निवास—आपके पिता के साथ हैं।

श्यामलाल जी का परिचय जयपुर खण्ड में दिया गया है।



बांठिया परिवार

श्री अमृतलाल जी बांठिया मूल निवासी निगनगढ के थे । उनकी दो दहने डेरागाजीखान में श्री फरमचन्द एव श्री कवरभान को व्याही राने के वारण आप भी डेरागाजीखान में आकर रहने लगे और आपकी शादी सुपुत्री श्री उदयकरण जी के साथ हो गयी । किन्तु थोड़े समय बाद ही कुछ विशेष बीमारी हो जाने के कारण उनका स्वर्गवास हो गया और आप मुलतान आकर रहने लगे । आपके श्री रोशनलाल एक मात्र पुत्र है ।

श्री रोशनलाल जी

श्री रोशनलाल जी ने मुलतान में मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की और पाकिस्तान बनने के बाद जयपुर आकर रहने लगे । यहाँ आपकी स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर में केसियर के पद पर नियुक्ति हो गई । आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती भगवानी देवी का भी असमय में स्वर्गवास हो गया । आपके सन्तोष व अशोक दो पुत्र एव दो पुत्रिया हैं । कई जगह स्थानान्तर होते-होते आजकल आपकी दिल्ली ब्रांच में नियुक्ति है ।

श्री रोशनलाल जी के पुत्र श्री संतोषकुमार जी

रोशनलाल जी के प्रथम पुत्र हैं । स्नातक शिक्षा प्राप्त कर स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर में कार्यरत हो गये । आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती वाली देवी जैन है, आपके दो लडकिया हैं और आप शाहदरा (दिल्ली) में रहते हैं ।

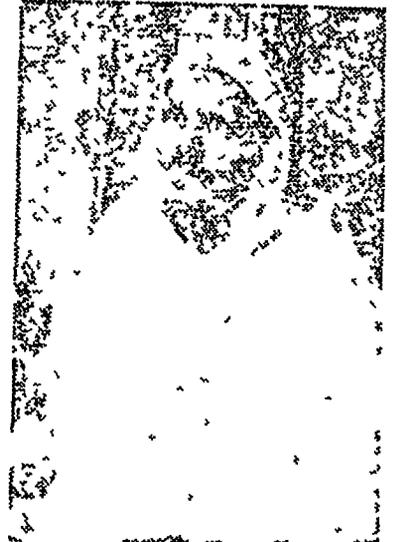
श्री अशोककुमार जी

रोशनलाल जी के द्वितीय पुत्र हैं । आप अभी अविवाहित हैं ।



श्री राजेन्द्रकुमार जी फिरोजाबाद

श्री राजेन्द्रकुमार पुत्र श्री जयन्ती प्रसाद पहले फिरोजाबाद में रहते थे । पण्डित श्री अजीत कुमार (बहनोई) के मुलतान में आ जाने पर आप भी मुलतान आकर रहने लगे । मुलतान में कमला देवी (कमोबाई) सुपुत्री श्री भोलाराम जी के साथ आपका विवाह हो गया और वहाँ व्यवसाय करने लगे । आप उत्साही और धर्मज्ञ नवयुवक थे, समाज के सभी कार्यक्रमों में अग्रणी होकर भाग लेते थे । पाकिस्तान बनने के बाद आप वापस फिरोजाबाद चले गये और वहाँ आपने व्यवसाय प्रारम्भ कर दिया । आपके खुशहालचन्द व चन्द्रकुमार दो पुत्र एवं एक पुत्री हैं । आपका सन् 1957 ई० को स्वर्गवास हो गया ।



श्री राजेन्द्रकुमार जी के पुत्र श्री खुशहालचन्द जी

श्री खुशहालचन्द जी श्री राजेन्द्र कुमार जी के प्रथम पुत्र है । आपकी उम्र 35 वर्ष है । आपकी धर्मपत्नी मोहिनी देवी जैन है, आपके दो पुत्र एव दो पुत्रिया है ।

व्यवसाय—मुल्तान जैन जनरल स्टोर, फिरोजाबाद (आगरा)

निवास—खुशहाल चन्द जैन, कम्बोआन मुहल्ला, फिरोजाबाद

श्री चन्द्रकुमार जी

आप श्री राजेन्द्रकुमार के द्वितीय पुत्र है । आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला देवी है । आपके दो पुत्र एव दो पुत्रिया है ।

व्यवसाय एव निवास—भाई के साथ ।



पारख परिवार

श्री तुलाराम जी पारख

श्री तुलाराम जी का जन्म 75 वर्ष पूर्व श्री तीरथदास पारख के घर डेरागाजीखान मे हुआ था । पाकिस्तान बनने के बाद आप दिल्ली आ गये आपकी धर्मपत्नी का नाम जमुनाबाई है, आपके पदमचन्द, कस्तूरचन्द, शाना कुमार, सत्येन्द्र कुमार एव हसकुमार पाच पुत्र एव पाच पुत्रिया है ।

निवास—A-3-4 जगपुरा वी नई दिल्ली-14 है ।

श्री तुलाराम जी के पुत्र श्री पदमचन्द जी

पदमचन्द जी आपके पुत्र है, उम्र 40 वर्ष पत्नी का नाम कुसुम जैन है । राजकुमार व सजय दो पुत्र एव एक पुत्री है ।

निवास—पिता के साथ ।

व्यवसाय—नौकरी

श्री कस्तूरचन्द जी

कस्तूर चन्द जैन उम्र 35 वर्ष, धर्मपत्नी पुष्पा देवी जैन है । अशोक एक पुत्र एव एक पुत्री है ।

निवास—पिता के साथ ।

व्यवसाय—नौकरी ।

श्री शानाकुमार जी

शानाकुमार उम्र 33 वर्ष, धर्मपत्नी सुनीता जैन है, एक पुत्री है ।
निवास—पिता के साथ ।
व्यवसाय—नौकरी ।

श्री सत्येन्द्र जी

सत्येन्द्र उम्र 32 वर्ष, धर्मपत्नी का नाम मोहनी देवी है, पुत्र अमित जैन है ।
निवास—पिता के साथ ।
व्यवसाय—नौकरी ।

श्री हंसकुमार जी

हंसकुमार अविवाहित है ।
निवास—पिता के साथ ।



श्री हजारीलाल जी

श्री हजारीलाल जी का जन्म 70 वर्ष पूर्व हीरालाल जी जैन के घर सरसा (हरियाणा) में हुआ था । आपकी बहन मुलतान ब्याही गई । इसलिये आप मुलतान जाकर व्यवसाय करने लगे । आपका विवाह मुलतान में ही कस्तूरी देवी (पुत्री श्री उदयकरण जी) के साथ हो गया । पाकिस्तान बनने के बाद आप दिल्ली आ गये । आपके शान्तीलाल व सतीश दो पुत्र एवं एक पुत्री है ।

निवास—2/63, 64 जंगपुरा एक्सटेंशन, मस्जिद रोड, नई दिल्ली में है ।
व्यवसाय—लाजपत राय मार्केट, चादनी चौक दिल्ली ।

श्री हजारीलाल जी के पुत्र श्री शान्तीलाल जी

शान्तीलाल जी हजारीलाल जी के 38 वर्षीय पुत्र है । धर्मपत्नी का नाम वीना कुमारी है । राजू व दीपू दो पुत्र एवं एक पुत्री है ।

निवास—3808 गली जमादार, पहाडी धीरज, दिल्ली ।

व्यवसाय—ज्ञानचन्द्र हेमराज जैन सदर बाजार दिल्ली के यहाँ आप कार्य करते हैं ।

श्री सतीश जैन

सतीश जैन 34 वर्षीय द्वितीय पुत्र है । आशा जैन पत्नी है ।

निवास—पिता के साथ ।
कार्य—नौकरी ।





श्री लखमीचन्द जी दिल्ली

रव० श्री लखमी चन्द जी स्व० श्री चादीराम जी जैन के पुत्र है। पहले आप टन्नू (सीमा प्रान्त पाकिस्तान) में रहते थे। आपका विवाह श्रीमती लक्ष्मीवाई सुग्री श्री उत्तमचन्द जी नौलखा मुलतान के साथ हुआ था, इसलिये आप मुलतान आकर रहने लगे। मुलतान में वैद्यक का कार्य करने लगे। पाकिस्तान बनने के बाद आप दिल्ली आकर बस गये। आपके प्रेमकुमार, बाबूलाल एव सुग्रीव तीन पुत्र और एक पुत्री है।

निवास—2/51 जगपुरा एक्सटेन्शन मन्दिर रोड,
नई दिल्ली-14

श्री लखमीचन्द जी के पुत्र श्री प्रेमकुमार जी

प्रेमकुमार श्री लखमीचन्द जी के प्रथम पुत्र है। उम्र 37 वर्ष है। धर्मपत्नी का नाम जसवन्त जैन है। सुनील एक पुत्र व तीन पुत्रिया है।
निवास—पिता के साथ।
व्यवसाय—व्यापार।

श्री बाबूलाल जी

श्री लखमीचन्द जी के दूसरे पुत्र है। आयु 34 वर्ष है। पत्नी का नाम सुनीता जैन है।

व्यवसाय—ज्वैलर्स

व्यवसाय स्थान एवं निवास—वम्बई।

श्री सुग्रीव जी

श्री लखमीचन्द जी के तीसरे पुत्र है।

निवास—वम्बई

कार्य—ज्वैलर्स



मुलतान दिगम्बर जैन समाज, जयपुर
संस्थान एवं दूरभाष-सूची

संस्थान का नाम	व्यक्ति का नाम	दूरभाष न० दुकान घर
अनिल प्लास्टिक इन्डस्ट्रीज, ठाकुर पचेवर का रास्ता, रामगंज बाजार, जयपुर	श्री पदमकुमार जी जैन श्री अनिलकुमार जी	
अनिल एजेन्सी बुलियन बिल्डिंग, हल्दियो का रास्ता, जयपुर	श्री अरुणकुमार जी	69465 P.P
इम्पीरियल जनरल स्टोर, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर	श्री इन्द्रभान जी श्री शेखर जी	
उत्तमचन्द शम्भुलाल जैन कटला पुरोहितजी, जयपुर	श्री शम्भुकुमार जी श्री भद्रकुमार जी	64722
उमेश बटन स्टोर कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री अनिलकुमार जी श्री उमेशकुमार जी	61629 P.P.
करमचन्द प्रेमचन्द जैन कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री सतकुमार जी श्री सुरेशकुमार जी	66992 P.P.
कान्टीनैन्टल ट्रेडर्स, घी वालो का रास्ता, जयपुर	श्री बसीलाल जी श्री राजीवकुमार जी	66885 63500 63748
खण्डाराम गिरधारी लाल जैन कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री गिरधारी लाल जी श्री हरिश्चन्द्र, दिनेशकुमार जी	61805
खेमचन्द श्रीपाल जैन कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री श्रीपाल जी श्री अशीषकुमार जी	67388 P.P. ~ [852482
गेलाराम देवीदास जैन चाकसू का चौक, हल्दियो का रास्ता, जयपुर	श्री देवीदास जी	62849

संस्थान का नाम	व्यक्ति का नाम	दूरभाष न०	
		दुकान	घर
घनश्यामदास गणेशदास कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री गणेशदास प्रकाशचद जी जवाहरलाल सुभाषकुमार जी	74541	
चौथूराम जयकुमार जैन 216, जौहरी बाजार, जयपुर	श्री जयकुमार जी श्री जम्बुकुमार जी श्री अशोककुमार जी	76104	
चचल एण्ड कम्पनी घी वालो का रास्ता, जयपुर	श्री मुलतानीचन्द जी श्री ओमप्रकाश जी श्री चन्द्रप्रकाश जी		
जयपुर नावल्टीज 21, नेहरू बाजार, जयपुर	श्री दिनेशकुमार जी	79327	
जेठानन्द चिमनलाल कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री शान्तिलाल जी श्री चन्द्रेशकुमार आदि	65005	
जगदीश जनरल स्टोर कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री भीमसेन, जगदीशकुमार जी श्री अर्जुनलाल जी	60073 P P.	
जैन वीर फार्मसी घी वालो का रास्ता, जयपुर	श्री गुलाबचन्द जी श्री वीरकुमार जी श्री चन्द्रसेनजी, सूरज		77910
जैन आटो रिपेरिंग पुलिस मेमोरियल, जयपुर	श्री वीरकुमार जी	68123	
ताराचन्द आसानन्द जैन 106, नेहरू बाजार, जयपुर	श्री सुरेन्द्रकुमार जी श्री महेन्द्रकुमार जी	72943	
तोलाराम जयकुमार जैन कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री आदीश्वरलाल जी श्री चन्द्रकुमार जी	61063	77623
त्रिलोकचन्द गिरधारीलाल कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री गिरधारीलाल जी		
देहली जनरल स्टोर कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री जिवेन्द्रकुमार जी		
देवीदास जैन एण्ड सन्स त्रिपोलिया बाजार, जयपुर	श्री जयकुमार जी श्री निर्मलकुमार जी	61063	77623

सस्थान का नाम	व्यक्ति का नाम	दूरभाष न०	
		दुकान	घर
नौलखा प्लास्टिक इन्डस्ट्रीज तीसरा चौराहा, मोतीसिंह भूमियो का रास्ता, जयपुर	श्री माणकचन्द, यशपाल जी श्री किशनचन्द जी		
प्रकाश जनरल स्टोर कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री न्यामतराम, प्रकाश जी श्री बशीलाल, शीतलकुमार जी	66149	
प्रभा जनरल स्टोर घी वालो का रास्ता, जयपुर	श्री प्रभाचन्द जी श्री राजकुमार जी		
फतेहचन्द दामूराम जैन, नवाब साहब की हवेली, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर	श्री माधोदास जी श्री बलभद्र कुमार जी	61643	63748
फैन्सी क्लोथ स्टोर 61, न्यू मार्केट, घी वालो का रास्ता, जयपुर	श्री हुकमचन्द जी श्री पवनकुमार आदि		
बेबी टायज सेन्टर 143, नेहरू बाजार, जयपुर	श्री उमेशकुमार जी		79965
भवरचन्द ज्ञानचन्द कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री बालकिशन जी		67199
भोलाराम द्वारकादास जैन शिव भवन, स्टेशन रोड, जयपुर	श्री द्वारकादास जी श्री न्यामतराम जी	76689	79965
भोलाराम ईश्वरचन्द जैन दूनी हाउस, नेहरू बाजार, जयपुर	श्री ईश्वरचन्द जी	79327	
भोजाराम पन्नालाल जैन कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री फूलचन्द, पन्नालाल जी एव श्री मोहनलाल जी	63438	
भोजाराम निहालचन्द कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री मनीषकुमार, धर्मपाल जी श्री निरंजनकुमार, सुरेशकुमार	76444	
मोतीराम कवरभान जैन जौहरी बाजार, जयपुर	श्री अर्जुनलाल जी श्री शम्भुकुमार जी श्री शीतलकुमार, नेमीचन्द जी श्री कैलाशचन्द, ओमप्रकाश जी	72769	63727 78464

सस्थान का नाम	व्यक्ति का नाम	दूरभाष न०	
		दुकान	घर
मैचिंग सेन्टर, चिमनी ब्लाक राजा पार्क, जयपुर	श्री विजयकुमार जी		
महावीर जनरल स्टोर त्रिपोलिया बाजार, जयपुर	श्री रमेशकुमार जी श्री जयकुमार जी	75694	
मुलतान जैन जनरल स्टोर 124, वापू बाजार, जयपुर	श्री सुमतप्रकाश, सुनीलकुमार जी		
मुलतान फोटो स्टूडियो, हल्दियो का रास्ता, जयपुर	श्री राजबाबू जी जैन	67840 P P	
रमेशचद जैन घी वालो का रास्ता, ' धान गड़ियो का चौक, जयपुर.		66102	67402
राजेन्द्र जनरल स्टोर कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री विशनलाल जी श्री राजेन्द्र, अनिल		
आर.के बटन फैक्ट्री 439, आदर्श नगर, जयपुर	श्री राजकुमार जी श्री राकेश जी		
राजेन्द्रकुमार एण्ड सस वाइस गोदाम, जयपुर	श्री राजेन्द्र कुमार जी	79780	
रोशनलाल विजयकुमार जैन कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री रोशनलाल जी श्री कमलकुमार जी श्री विजयकुमार जी		
राजेश एण्ड कम्पनी बुलियन बिल्डिंग, हल्दियो का रास्ता, जयपुर	श्री लाजपतराय जी श्री राजेशकुमार जी	69465 P P	67199
रिप्लेक्श फोटो स्टूडियो दूसरा चौराहा, घी वालो का रास्ता, जयपुर	श्री सुरेन्द्रकुमार जी	65302	
वीरेन्द्र जनरल स्टोर कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री वीरेन्द्रकुमार जी		67199

सस्थान का नाम	व्यक्ति का नाम	दूरभाष सख्या	
		दुकान	घर
विनोद जनरल स्टोर बुलियन बिल्डिंग, हल्दियो का रास्ता, जयपुर	श्री भगवानदास जी		
वी. राज एण्ड कम्पनी घी वालो का रास्ता, जयपुर	श्री बोधराज जी श्री विजयकुमार जी		67199
शशि जनरल स्टोर कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री जिनवरलाल जी श्री सुरेशकुमार जी	66608	
सरोज एन्टरप्राइज हल्दियो का रास्ता, जयपुर	श्री शानाकुमार जी श्री खुशहालचन्द जी		
सुभाष जनरल स्टोर कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री हीरानन्द जी श्री सुभाषकुमार जी		
हीरानन्द पोखरदास जैन कटला पुरोहित जी, जयपुर	श्री पोखरदास जी श्री भागचन्द जी श्री वीरकुमार जी	76822	
ज्ञान जनरल स्टोर चाँदपोल बाजार, जयपुर	श्री ज्ञानचन्द जी श्री अनिलकुमार जी	66672	67199



मुलतान दिगम्बर जैन समाज, दिल्ली
संस्थान एवं दूरभाष-सूची

संस्थान का नाम	व्यक्ति का नाम	दूरभाष न०	
		दुकान	घर
अखिल जैन, कोठी न 1 पचकुइया रोड, नई दिल्ली	श्री अखिल जैन		527180
इन्द्रा होजरी इण्डस्ट्रीज 3/4 वस्ती, हरफूलसिंह सदर थाना रोड, नई दिल्ली	श्री इन्दकुमार जी	513124	514345
गोलेछा ट्रेडर्स 5655, गाँधी मार्केट, सदर बाजार, दिल्ली	श्री आतम प्रकाश जी श्री अशोककुमार जी श्री अनिलकुमार जी		
जयकुमार जी नौलखा शिदीपुरा फिल्मस्तान नई दिल्ली		518942	
जैसन इन्टरनेशनल 18, मेलाराम मार्केट, चावडी बाजार, दिल्ली	श्री जयकुमार जी श्री राजीव जैन	517274 267472 272600	668834
जैन स्कीन्स फैक्ट्री प्रताप मार्केट, दिल्ली-6	श्री आडूराम गोलेछा श्री रोशनलाल जी	513610	518391
डी. के जैन सूत गोला फैक्ट्री 35 वस्ती हरफूलसिंह, सदर थाना रोड, दिल्ली-6	श्री गुमानीचन्द जी श्री देवकुमार जी श्री मनमोहन जी श्री चम्पतकुमार जी श्री उग्रसेन जी	511934 513989	529548
तीरथ दास जैन स्टेशनरी के व्यापारी 53/9223, गुप्ता मार्केट सदर बाजार, दिल्ली-6			
नरेन्द्र अनिल एण्ड कम्पनी 2/184 तिलक बाजार, खारी बावडी, दिल्ली	श्री शकरलाल जी श्री नरेन्द्रकुमार जी श्री अनिलकुमार जी		344027

संस्थान का नाम	व्यक्ति का नाम	दूरभाष नं० दुकान	घर
नेभराज जी सिंगवी, विरेन्द्रकुमार जी सिंगवी		344548	
नौलखा स्ट्रिचवीयर 4974 अहाता किदार, दिल्ली-6	श्री टेकचन्द जी	520378	
नौलखा स्ट्रिचवीयर 28-23/22 प्रताप मार्केट, दिल्ली-6	श्री टेकचन्द जी श्री सुदर्शनकुमार जी श्री राजेन्द्रबाबू	518293	
नेशनल सिल्क इन्डस्ट्रीज 11, अमृत मार्केट, सदर बाजार, दिल्ली	श्री तोलाराम जी	513610	527014
प्लास्टिक इन्डस्ट्रीज 52, रामामार्ग, नजफगढ, दिल्ली	श्री ओमप्रकाश जी	588209	
प्रेम ट्रेडिंग कम्पनी, गली प्रेस वाली, सदर बाजार, दिल्ली	श्री प्रेमचन्द जैन		525357
भोलाराम रिखबदास जैन सदर बाजार, दिल्ली	श्री वीरकुमार जी	515313	665353
भोलाराम रंगूलाल जैन सदर बाजार, दिल्ली	श्री अशोककुमार जी	513859	512621
भोलाराम रंगूलाल जैन मिर्ची गली बम्बई-2	श्री जयकुमार जी	324949	
श्री मदनगोपाल जी 1358 कृष्णा गली गुलियान, दिल्ली	श्री मदनगोपाल जी	42669	
मंगलदास विशम्बरदास, वस्ती हरफूलसिंह सदर थाना रोड, दिल्ली	श्री शिवनाथमल जी श्री विशम्बरलाल जी श्री बाबूलाल, मोहनलालजी		511972
रिखबदास जैन एण्ड सन्स सदर बाजार, दिल्ली	श्री पवनकुमार जी श्री शशीकुमार जी	511120	569293
वी के इन्द्रा होजरी इन्डस्ट्रीज बिड़ला मिल के सामने, सब्जी मण्डी, घंटाघर, दिल्ली	श्री वीरकुमार जी	222772	566254

सस्थान का नाम	व्यक्ति का नाम	दूरभाष नं०	
		दुकान	घर
विजय इलास्टिक स्टोर 340, प्रेस स्ट्रीट सदर बाजार, दिल्ली	श्री ज्ञानचन्द जी श्री विजयकुमार जी	566863	
विट्टूबाक्स फैक्ट्री, 4763 अहाता किदारा बाडा हिन्दूराव, दिल्ली	श्री नेमीचन्द जी श्री अनिलकुमार जी		
सुखानन्द शंकरलाल, तिलक बाजार, खारी बावली, दिल्ली	श्री प्रेमकुमार, राजकुमार जी श्री पद्मकुमार, सुभाषकुमारजी	255144	523257
सिंगवी मेटल स्टोर, 2186 बगीची रघुनाथ सदर बाजार, दिल्ली	श्री सतकुमार पुत्र श्री खेमचन्द जी		
सुरेन्द्रा ट्रेडिंग कम्पनी 5503, वस्ती हरफूलसिंह, देहली	श्री उत्तमचन्द जी गोलेछा श्री सुभाषचन्द एवं सुरेन्द्रकुमार जी	516472	
एस आर. होजरी जैन एजेन्सीज 13/4506 पहाडी धीरज, दिल्ली	श्री टीकमचन्द जी श्री प्रेमकुमार जी		
हंसा मैन्यू फैक्ट्रिंग कारपोरेशन 40, गाँधी गली फतेहपुरी, दिल्ली	श्री हंसकुमार जी श्री दीवानचन्द जी		
ज्ञानचन्द नवीनकुमार, 5015 नारायण मार्केट सदर बाजार, दिल्ली	श्री ज्ञानचन्द, जैनेन्द्रकुमार जी श्री रमेशकुमार जी		

